

कृष्णप्रिया ॥

अर्थात्

श्रीमद्भागवत दशमस्कन्धका भाषा उल्था

जिसमें

श्रीपरब्रह्मपरमात्मा कृष्णचन्द्र अविनाशी सच्चिदानन्दराशीकी लीलाओंका वृत्तान्त और कंस जरासन्ध आदिक राक्षसोंका वध अत्युत्तम छन्द प्रबन्धमें वर्णितहै

जिसका

विद्वद्वृन्द शिरोमणि मुंशीमङ्गलीलालजी मुख्य पाठक पैंतपुर प्रदेश सीतापुरके विद्यारसविलासियों और श्रीकृष्णलीला उपासकों के अनुरागार्थ संस्कृत श्रीमद्भागवतका व्रज भाषामें उल्था किया

द्वितीय बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
दिसम्बर सन १८९५ ई० ॥

सूचना॥

अनेक प्रकार की पुस्तकें इस यंत्रालय में मुद्रितहुईहैं उसमें से जितनी काव्य हैं उनसे चुनकर कुछ पुस्तकें नीचे लिखीजाती हैं जिन महाशयों को इसमें से किसी पुस्तककी आवश्यकता होवे इस प्रेसके मेनेजरको पत्र लिखकर मँगालें तथा पुस्तकों का जो सूचीपत्र छपा है वह भी मँगाकर देखलें ॥

विश्रामसागर ॥

जिसको महन्त श्री रघुनाथदास रामसनेहीने प्रेमियों के लिये बनाया जिसमें बहीं शास्त्र और अठारहों पुराणों के मत ओर नवीन रीति से श्रीकृष्णचन्द्र व रामजी के सरल चरित्र पद्य में रचे हुये हैं ॥

हफ़ीजुल्लाहखांकाहज़ारा ॥

बातसवीर जिसका संग्रह हरदोई प्रदेशान्तर्गत बन्नापुरके मुद रिंस हफ़ीजुल्लाहखांने किया है इसमें उत्तमोत्तम भाषा कवियों के कवित्त हरएक विषयके युक्तहैं जिसके देखने से रसिकोंको बड़ाई आनन्द प्राप्तहोताहै ॥

नखशिखहज़ारा ॥

जिसमें श्रीराधिकाजी महारानीके नखशिखका वर्णन पद्माकर पजनेश, प्रताप, प्रवीन, बेनी, बलदेव, बलभद्र, ब्रह्म, भूषण भगवंत, मतिराम, मुबारक, रघुराज, रघुनाथ, रसखानि, शम्भु, हठ दिवाकर, सेनापति दूलह इत्यादि कवियोंके बनायेहुये २३७ दोह व १००० कवित्त और सवैया विद्यमान हैं ॥

गोबर्द्धनविलास ॥

गोबर्द्धनदासकृत इसमें व्रजविलासकी सम्पूर्ण कथा मंगल

कृष्णप्रिया का सूचीपत्र ॥



अथ कृष्णप्रिया

पूर्वार्द्ध॥

सोरठा

धर्म अनुज पितु मित्र ता अरि तनय कृपाल चित।
जिनके अमित चरित्र बन्दौं पद तिनके सहित॥
सिन्धु सुता पति जौन रक्षक भुवन सुचारिदश।
दया करौ प्रभु तौन बन्दि चरण बरणौं सुयश॥
उमा रमण यशधाम पञ्च बदत सुन्दर सुखद।
द्रवौ सुदायक काम संत असंतन को दुखद॥
सरवरसुत सुत नाम वेद बदन शोभित सुभग।
बरणत हरिगुण ग्राम द्रवौ लहौं शुभ ग्रंथ मग॥
बंदौं शक्ति अनादि जाकृतत्रै अरु पंचदश।
लखत न सुर ब्रह्मादि द्रवौ सुवरणौं कृष्णयश॥

गुरुपदरज हरि कर सम जानी। बंदौं समुद जोरि युग पानी॥
कुमतितिमिरहरसुमतिबढ़ावनि। ज्ञान कंज सर उर हुलसावनि॥
भ्रम तारे अदृश्य कृत सोहै। कृष्णचंद मलिन द्युति जो है॥
दुबिधा निशा अंशजनु मेटनि। बुधि आतम चकईपति भेटनि॥
छल प्रपंच अज्ञान अपारे। विघ्न विषय तस्कर हियहारे॥

मन सुजान भल पाइ प्रकाशू। शुचिह्वै हरियश बरणहिआशू॥
गुरु उपमाके योग तिहुँलोका। कविकोबिद काहू न बिलोका॥
पुनि अब बन्दि मात पितु देवा। जिनके शुक्र बपुष मम एवा॥
दो॰ सोदयाल ह्वै मातु पितु आशिष दीजिय नीक।
नशै सकल कलिकालिमा होइ सुभग मति ठीक॥
बहुरि बन्दि हनुमान कपीशा। जिनयशसरवरभणतकबीशा॥
चारुघाट रघुबीर मिलानी। सिन्धु तरब शुभभरा सुपानी॥
सुरिसा तोषब निशिचर मारिब। लंकिनिहनबन अछुखउजारिब॥
रावण सुत संग्राम अपारा। बन्धन रावण बचन बिचारा॥
बढ़ब लँगूर लंककर जारन। सोइजनुबसतजीव जलचारन॥
सियसुधि रामहिं कहब सहेता। सेतु बंध रण चरित समेता॥
रजनीचर मारण बहुतेरे। ते जलजन्तु लसत जल नेरे॥
औषधिसहित द्रोणगिरिलाउब। शरअगाधता लषणजियाउब॥
दो॰ कुम्भकरण रण भांति बहु अपर निशाचर युद्ध।
सोहत सर ढिग वृक्ष जनु सफल सपल्लव शुद्ध॥
हरिजिनि रावण बिबिध लराई। सरतट चतुर चारु अमराई॥
दुहिता मिथिलप रामबिलावन। सोइनिरमलताजनुजलपावन॥
कहब भरतसन प्रभु आगमनू। बुध मधुरत्व सुजन दुखदमनू॥
अपर अनेक चरित हरिकेरे। प्रफुलित सरजस कमलघनेरे॥
राम भरत सन कह कपिकरणी। अलिवत ताहिपावीशनबरणी॥
हरिहयमखरण बिविध बिलासा। शुभ पराग मकरन्द सुबासा॥
अचल भक्ति रघपतिपदपावनि। मनुसमीरशुभबहत सोहावनि॥
ब्रह्मज्ञान रत हरिय अभंगा। शुचि तड़ाग जनुउठततरंगा॥
अबुध जेन हरिरस लवलीना। तृषा मनोरथ फिरत मलीना॥
बिषयक नैन सूझसर नाहीं। कौनभांति सरढिगलघुजाहीं॥
व्याकुलफिरत नरनजगबूझत। मधुरोदकसरसो नहिं सूझत॥
मेधा धाम चतुर भव जेई। मज्जत यहि सरसानँदतेई॥
दो॰ त्रबिधा दोष अनेक जे बिघ्न भयंकर भाव।

जानि मैल जनु आपुकर तनसे सकल छुड़ाव ॥
जाकरयश असशुभगसर सो कृपालकपिराज ।
विघ्न दोष सब नाशिये रहै दासकी लाज ॥
यह यशहौं वरणौं बहु बारा । सुन्दर कविता विविध प्रकारा ॥
आकांक्षा जो जीव मम भयऊ । कपिपतिदास जानिमोदयऊ ॥
अबकी बार भरोस तुम्हारा । करयो कृपा जेहिलागौं पारा ॥
दोष अमित ममतन अनुमानी । कोपन करयो क्षम्योजनजानी ॥
सा लंकार विविध कविताई । छन्द ग्रन्थ नानाविधि गाई ॥
नवरस कवित भाव कविलीनी । उपमा अमित भांति करिदीनी ॥
संधि दोषयुत भंग कराला । उत्क्रम छन्द दीख गणमाला ॥
देशकाल आगम विपरीता । अनरस कविता भणी अभीता ॥
अक्षर ललितअर्थ विधिनाना । कीन अमितथा कविनबखाना ॥
सो मोरे बल एको नाहीं । कहयों एकरस कवितामाहीं ॥
आश पवन सुतकी उर मोरे । बारबार तेहि कहौं निहोरे ॥
सकल दोष कविता के जोई । नाशिहिसकलकीशपतिसोई ॥
दो० दयासिन्धु अंजनितनय जानि दास निजमोहिं ।
विघ्न दोष रक्षाहि लागि याँचौं स्वामी तोहिं ॥
बहुरि शारदा पद जलजाता । विनऊंमनमुदजानि बुधिदाता ॥
चारि खानि संगम संसारा । तिनमहँ उत्तममनुजविचारा ॥
सो प्रताप वाणी करभाई । जेहिकरि विबुधकरतनिपुणाई ॥
होहु सहायकमे कमलासिनि । जिह्वाग्रेममहोहुविलासिनि ॥
पाइ प्रताप तोर सुनु माता । वरणौं कृष्णचारितसुखदाता ॥
दश दिग्पालन शीश नवाऊँ । दुवौसमस्त सुमतिजेहिपाऊँ ॥
सर्व देव जे तेंतिस कोरी । विनवौं सबहिं दोउकरजोरी ॥
निज जन जानि दुवौ सबसोई । मोर मनोरथ पूरण होई ॥
दो० पितृदेव ऋषिराज मुनि सब के चरण मनाइ ।
वरणौं विशद चरित्र यह सुनिकलिकलुषनशाइ ॥
सूरज चंद्र सकल तारागन । विनवौं दुवौ जानि मम निजजन ।

सनकादिक ऋषि नारदयोगी। परमारथ रत राग वियोगी॥
मुनि विज्ञसि जानि अनुगामी। बुधिवर वरदद्रवौमुनिस्वामी॥
कलाविबुध गुणखानि अपारा। वेदवाक्य भव करण प्रचारा॥
निर्णय करनहार आगमके। अपरमनुज भूसुरकेसमके॥
चरण तामरस तिनके ध्याऊँ। दयाकरैं निर्मल बुधि पाऊँ॥
ब्रह्मवंश सम तिहुँपुर माहीं। ज्ञानदृष्टिकरि दीसति नाहीं॥
चरण प्रहार सह्योंगरुड़ासन। चिह्नितअजहुं चिह्नलहदासन॥
दो० विप्रवृंदजन जानिनिज अमल बुद्धिवरदेहु।
अर्थभंग अचलितवरण शोभिसुधास्त्रोतेहु॥
बहुरि विप्रमंडलिहि प्रणामा। करिवरणौंयदुपति गुणग्रामा॥
भूत कालके कवि बुधिवाना। वरणेजिनहरियशविधिनाना॥
वर्तमान कवि विबुधघनेरे। जोगावत हरि यश हरिचेरे॥
होनहार जे अगमन भाई। प्रणवौं सबहि सप्रेम दृढ़ाई॥
करयो अनुग्रह बालक जानी। जेहि न होइ पाछेते ग्लानी॥
संतन सभा देवसरि वन्दौं। जिनअशीशविधिसकलअनन्दौं॥
प्रगटी धर्म हिमाचल सोई। जल विचार परिपूरण जोई॥
पर उपकार विराग करारे। शुभआचरण मिलतनदनारे॥
दो० भक्तिधार आवर्त शुभ तर्कविबुध विज्ञान।
जहँ तहँ सुजननहातजनुभल इतिहासपुरान॥
चलत विवेक समीर सुजाना। उठत तरंग ज्ञान विज्ञाना॥
दाहत कुमति क्रूरता रूखा। छहुऋतुसरसकतहुँनहिंसूखा॥
मोक्ष उदधि मिलत सोभाई। बड़भागी यहि सरि जो नहाई॥
निमिषमात्रसंगातिजलकणजनुपरतिभक्तिमनकरतिअचलमनु॥
सतसंगति जिनकी सुरसरिता। सबविधिफलदमनोहरचरिता॥
तेहरिभक्त जानि निजदासा। करौ दया पूजै मम आसा॥
मूरुख वादी सुमति विहीना। तिनमहँप्रथमआपुमैं चीना॥
हरिजन क्षम्यो मूढ़ता मोरी। करतकथाबढ़ि मममतिथोरी॥
दो० जिमि दारिदी जन्मकरकरतमनोरथराज।

बिन सहाय छलबलअनी अंतउठावत लाज ॥
यहिकारण मैं सन्त मनाऊँ । आशिष राज मनोरथ पाऊँ ॥
वेदव्यास विनवौं करजोरी । पुरवौ नाथ शुभेच्छा मोरी ॥
मीन कमठ बन्दौं पदकोला । नरहरि दायाकरौ अतोला ॥
बावन भृगुनायक रघुनाथा । द्रवौछोह निधिजानि अनाथा ॥
कहा कहौं तुम्हारि प्रभुताई । कृष्ण रूपधरि करयो गोसांई ॥
पुनि बसुदेव देवकी दोऊ । ध्यावति द्रवौ जान जनसोऊ ॥
तुम्हरे गेह जन्म हरिलीना । सुखदचरितनानाविधिकीना ॥
बहुरि नंद यशुमति पदध्याऊँ । जिनकी कृपा कृष्ण यशगाऊँ ॥
गोप सखा ज हरिके साँचे । परिहरि सकल कृष्ण रसराँचे ॥
धेनु बच्छ जे कृष्ण सँघाती । जड़ जंगम पुनिनाना जाती ॥
बन्दौं सब ब्रज भूमि बसेरी । जेहिते सदृढ़ होइ मति मेरी ॥
भानुज सरि प्रणाम करि आसू । कृष्ण स्थल विहार तटजासू ॥
दो० बन्दि बहुरि राधा जननि सखी सहेली तास ।
ह्वै प्रसन्न दीजो सुमति हरि यशकरौं प्रकास ॥
निजकुल पूज्य बड़े अरु बारे । सुहृद बन्धु जे हितू हमारे ॥
पद सरोज तिनके शिरनाऊँ । कृपाकरैं उत्तम मति पाऊँ ॥
शेषनाग पद कमल नमामी । करौ अनुग्रहलखि अनुगामी ॥
अबहौं दुष्टन करौं प्रणामू । अन स्वारथ भव जे अघधामू ॥
क्रूर कुटिल क्रोधी बिन कारण । धर्मवृक्ष करि मूल उपारण ॥
हरि हर यश हरिरूप निहारी । चपरिचलहिं खलजग छलकारी ॥
प्रफुलित पर अकाज कृत कैसे । लहिनिधि रंकमुदितमनजैसे ॥
पर अवगुण बरणत मुदपाई । जिमिजनहरियशकहहरषाई ॥
पिशुन कर्म महँ असबलदाई । नागार्जुन को सुररिपु भाई ॥
साधु समाज लखत नहिं सोई । अछत अक्ष अंधवत होई ॥
परतिय परधन लखत सहेतू । लहत प्रभुत्व जगोदय केतू ॥
हित अनहित सुसती व्यभिचारी । निरखतअधमाधमअघकारी ॥
दो० हरिहर अज गणपति गिरा अपर देव इन्द्रादि ।

प्रेत पूज्य चांडाल नर इनहिं कहत शठआदि ॥
ऐसे श्वान कराल खल गनिन सिरहिं अपार।
मनबच क्रम कर्त्तव्य तजिलेहु प्रणाम हमार ॥
भयकर भय मोहिं यहिथलनाहीं। जसहौं डरत खलन मनमाहीं॥
जोरेकर बिनवत यहि तेरे। ह्वै दयाल सुख लहहु घनेरे॥
बालक वय बुधि थोरि हमारे। दयादृष्टि सों रहेउ निहारे॥
यदपि विनय मैं कीन्ह बहूता। सुन्योनतिन जनुबाहिर सूता॥
जिमि सपेर कोउपाल भुजंगा। क्षीर पियाइ चढ़ावत अंगा॥
अतिहित सहरावत नित ताहीं। तदपि दुष्ट कतहुँक डसिखाहीं॥
हितुन अनहित हीये नीके। कटुते मग्न त्रिनय ते फीके॥
सत्य अनुख असत्य प्रियबाणी। मगविपरीतमिलतजड़प्राणी॥
दो० जो दुष्टन नयके चलत तासु करत खलनास।
बैर प्रीति मोहिं भाव नहिं संग तजब अनयास॥
अब बन्दौं श्रीकृष्ण कृपाला। जनमन रंजन दीनदयाला॥
बिपति बिभंजन सज्जन पालक। श्रीबसुदेव देवकी बालक॥
साधुबन्धुखलनिशिचरघालक। सुजनसुहृदअरुअरिउरशालक॥
नील सरोज रूप मृदुबोला। अधर बिंबशुचि सोह कपोला॥
दाड़िम पंक्ति दशन की शोभा। हास्यविलोकिउडुपमनलोभा॥
कीरतुंड नासा छबि सोहै। कर्णोपमा कहै कबि को है॥
अरुण नयन भृकुटी धनुमारा। बिशद त्रिपुंड्र बिराज लिलारा॥
मेचक कच कुंचित कंगोला। काकपच्छलखिमुनिमनडोला॥
दो० मुकुटसोह शिर नाग रिपु पच्छ कहत कविराज।
कंबु कंठ कंधासु हरि भुजा प्रलंब बिराज॥
अरुण कमल श्यामल यथा तथा हस्त ब्रजनाथ।
जेहिकर जलथल व्योमचर सबकोउहोत सनाथ॥
उर बिशाल कटि केहरि सोहै। पीत बसन तापर मन मोहै॥
कोमल कंज चरण अरुणारे। संत मनालि निरखि अपुहारे॥
नखद्युतिद्विजपतिकरकर हाँसी। तापइषूज्जंकुमतिलखिनासी॥

हिको कहै को कहिहै आगे। वरणत रूप चित्त अनुरागे॥
ो स्वछंद अद्वैत कहावै। पटतर तासु कहां कविभावै॥
पमा सकल कही यहनीकी। समुझत रूप लगतसो फीकी॥
प्रजासु अस अलख अपारा। कृपा करौ शरणागत पारा॥
उज्वल यथा छपाकर आहीं। तस चरित्र तव दूषित नाहीं॥
ानिअनाथदयानिधिस्वामी। करौ छोह हरि अंतरयामी॥
शातुम्हार अति अगम अपारा। कथनतासु हौं हृदय विचारा॥
भस हौं मूढ़ कहौं को ऐसो। ढुलिया चहत भूपपद जैसो॥
तोपै कृष्ण कृपा तव होई। कहौंकछुकनिजमतिसमसोई॥
दो० बंदि बहुरि रेवतिरमण दयाधीश सुख खानि।
सुमतिदीजियेकृपाकरि निजकिंकरअनुमानि॥
कृष्णमीत अर्जुनहिं मनाऊं। जानि धनुर्द्धर शीश नवाऊं॥
उद्धव उग्रसेनि इत्यादी। छपन कोटि यदुवंशी गादी॥
करि प्रणाम अति सहित सनेहू। कहा चहौं हरियशयुत नेहू॥
श्री शुकदेव परम विज्ञानी। द्वादश खंड पुराण बखानी॥
दशमस्कंध कृष्णकर. लीला। कही महामुनि ज्ञानसुशीला॥
सुन्यो परिक्षित नृपति सहेता। मिटीकुमति उपजी चितचेता॥
सोइतिहास विदित जगमाहीं। तदपिकथवअनस्वारथनाहीं॥
सुगम पंथ यश नृपकरि देहीं। धनीदुखी सो मगगहि लेहीं॥
दो० तिसिश्री शुककृत दशम शुभता आशय के तूल।
बंदिचरण रुक्मिणि रमण बरणौं कथा अभूल॥
रुक्मिणि सतिभामा बसुरानी। बिनवौंसबहिंकृष्णप्रियजानी॥
निजसुत जानि द्रवौ सबमाता। तवयशसुभगकथौंसुखदाता॥
स्थावर जंगम दुबिधि. जहाना। ध्यावतसकलसुलभकल्याना॥
अवहौं कहौं सुभग रुचिमनकी। जानतरीतिप्रीतिप्रभुजनकी॥
समय वृथा हौं जात निहारा। भैरुचि कथौं कृष्ण अवतारा॥
बुधि भरोसनहिं काछनि काछी। हैयकप्रबलआशहरि आछी॥
यथा मशक प्रणमेरु उठावन। अथवा पंगुपार गिरिधावन॥

तस यह अहै मनोरथ मोरे। पुरयहु कृष्ण कहौं करजोरे॥
दो० तराचहै सुरसरिहि जिमि लघुपपीलिका कोइ।
बिन तरणी सतसंग के पारलहै नाहिं सोइ॥
हठकरि जो उतरै तेहि माहीं। निस्सन्देह पारलह नाहीं॥
उडुप दशम चढ़ि कीट बिचारा। जैहै कृष्ण कृपा तरिपारा॥
मास नभस्य सुभगसित पाषा। अदितिजातगुरुदिनकृतभाषा॥
संवत जीव नदी तट देखे। भक्ति ब्रह्म संयुक्त विशेखे॥
शाकः राग योग के अंगा। भूधर धरा लखे यक संगा॥
कीन्ह कथा तेहि समया रंभा। ममभाति घोरि सोऊ सहदंभा॥
मन चंचलहि बहुत हौं रोंकत। तदपि दुष्टभव राग बिलोकत॥
जब यहि पौरुष रहै न रंचा। तबखल त्यागिहिबिषयप्रपंचा॥
दो० तजि प्रपंच है शुद्ध मन करै बुद्धि सतसंग।
अब निज मनको रोंकिकै वरणौं चरित अभंग॥
बंदि चरण शुकदेवके सुनि पुराण कृत तास।
भाषा करि वरणौं चरित कृष्ण सुनत अघनास॥
निज कर्त्तव न बिबुध चतुराई। श्रीशुकदेव कथा कथ भाई॥
कठिन ग्रंथ व्याकरण बखाना। समुझत पंडित चतुर महाना॥
भाषा माहिं कबिन बहुभांती। भन्यो कृष्णयशपातकघाती॥
पढ़िगुणि सुनि ते सुखदप्रबंधा। सहजस्वभाव कीन्हयहधंधा॥
देख्यों विषय बयारि कराला। कलि कुपंथ दम्भीचण्डाला॥
होत न सुरुचि कुरुचि मनकेरी। बिषनतजतजिमिमलयबसेरी॥
यहि मिसहौं कहिहौं हरिनामा। दुखनलहौंजेहिकरियमधामा॥
भाषा लखि भाषा यह गाई। सोइ गुणनिधिपढ़िदेइबड़ाई॥
दो० विद्या गुण नहिं अधिकतन सुखदाबिबुध सतसंग।
निज मति के अनुसार हौं गावत सुभग प्रसंग॥
सो० पढ़ि हँसिहैं बहुलोग लखि प्रबंध भाषा सरल।
भय न हँसे के योग प्रथम विचारौ हँसौ पुनि॥
बुधजन हँसैं होइ गिल्यानी। मूरुख हँसैं तर्क अनजानी॥

जिमि किरात कोउ पारस पावै । सुठरदेखि तेहि निजकरलावै ॥
पाथर जानि डारि मग देहीं । दुखनलगै कछु पारस तेहीं ॥
जो पारख कर पारस पाई । तिन परखे तेहि त्यागै भाई ॥
तौ बड़ दुख पारस उर होई । असजेहिकथिनसकैबुधकोई ॥
कथा रसाल कृष्ण करतूती । पढ़तसुनतलहविमलविभूती ॥
तेहिकरि मंजिमुकुर मन ज्ञानी । वरणतकथाविविधगुणखानी ॥
भरा भक्तिरस कविता माहीं । गूढ़ाशय अनरसयुत नाहीं ॥

दो० चहु कोउ गुणौ प्रवीणजन चहु कोउ हँसै गँवार ।
दुहूं भांति भल कृष्णयश गावत होइ हमार ॥
सर्वोपरि कीरति विमल हरि की हृदय विचारि ।
तीनिकाल श्रुति शास्त्र भण है दायक फलचारि ॥

मुक्ति चारि विधि वेद बतावत । यहगावतते सुलभहिपावत ॥
नवधाभक्ति भजन नव जोहैं । हरियशगुणतमिलतिसबसोहैं ॥
तीरथ ब्रत मख पूजा ठाने । जोफल सो हरि चरितबखाने ॥
सुरपादप जो भिक्षुक पावै । गृहप्रतिबहुरि जोमानगँवावै ॥
तौ बड़मूढ़ कुमति वश प्रानी । अभिमतदानितजोतदजानी ॥
इमि मतिमंद अहैं ते लोगा । हरियशत्यागिआनकृतयोगा ॥
कंजसुवन मृडादि सब देवा । हरिपद परसि कृतामितसेवा ॥
असमुरपूज्य विष्णु यश धामा । धरिनररूप कीन्ह जो सामा ॥

दो० श्रीशुकदेव सो सब कथा कही सहित विस्तार ।
समुद वरणि इतिहास सो कहौं तासु अनुसार ॥

छं०॥ इतिहाससोअतिसुखदपावन ज्ञाननिधि मुनिवर कही ।
सो समुझि सुनि गुणि बुद्धि निज समबरणि अब कहिहौंसही ।
कवि कुशलकोविद चतुर सज्जन कृष्ण गुणगायक मही ।
ते जानि वल दायालहू जो शरण हौं साँची गही ।

सो० बरणत कथा रसाल सुनौ चतुर कोविद कुशल ।
आनँदमय सबकाल कृष्णचरित पातकहरण ॥

जब कुरु पांडव समर सिराना । भये कृष्ण तबअन्तरध्याना ॥

पांडव क्लेश ग्रसित भे भारी। सुतजराज्यपद करिअधिकारी॥
हिमिगिरि प्राणतजनते गयऊ। गजपुरशोक मग्नसबभयऊ॥
प्रजापाल धार्मिक नृप कैसो। पुराभूप हरि बिधु भो जैसो॥
अमित महिपजित भूप बलिष्टा। सर्बकाल माधव पद इष्टा॥
गयेकाल यक दिन नरपाला। गयोअखेटबिपिनधनजाला॥
देखि धेनुयक बृषभ समेता। आगत तिनहिं नीच दुखदेता॥
मूशलकर पाछे ते मारत। कटुबचमुख निज शूद्र उचारत॥
निकट जानि तब भूप बोलाई। कह्यो क्रोधयुत बयन रिसाई॥
हे चांडालतुको अघ रूपा। हनत बृषभगो कह असभूपा॥
का जानसि मारग बिनधरनी। ताते अभय करत अघकरनी॥
पांडु बंश कब तू अस पावै। जेहि सन्मुख खल दीनसतावै॥
दो० असमणि भूप सक्रोधकरि गह्यो तीव्रकरबाल।
देखि शूद्र भयभीत ह्वै ठाढ़ भयो ततकाल॥
बहुरि नृपतिगो बृषभ कहँ निकटहंकारि सप्रेम।
पूछ्योको तुम कहो निज समाचार युत छेम॥
देव बिप्रको तुम केहि लागे। दुखितजात खल आगे भागे॥
निडर होहु जनि नीचहिडरहू। राज मोर निजहित चितधरहू॥
को समर्थ दुखदालुव भव मैं। रक्षक साधुअहौं जग सब मैं॥
सुखद बचननृप बृष सुनिबोला। शशिननाय सुबचन अमोला॥
महाराज यह शूद्र कराला। भयदायक मूरति बिकराला॥
कज्जल नगवत लसौ स्वरूपा। सन्मुख ठाढ़ सोहै कलिभूपा॥
आगम जानिजात अब भागा। चतुष्पाद हौं धर्म्म सभागा॥
सततप अरुबिद्या पुनिदाना। मोर चरण श्रुति बेद बखाना॥
गोतन धरे धरा सुनु राजा। कलिडरभागीजानिअकाजा॥
कृतयुग बिंश अंश ममराजे। त्रेता चतुर्भाग बिनआजे॥
द्वापर अर्द्ध सुकलि चौथ्याई। यहि कारण हौं चल्यौं पराई॥
कलि कुपंथ नृपममन निबाहू। तिमिर हरण हौं यहुखलराहू॥
दो० दीनबचन बोलीधरा सुनिय धर्म्म अवतार।

कलिमहँ किहिविधि रहौं अबसुनु नृप कलिव्यवहार ॥
नीच भूप ह्वै हैं कलिमाहीं । ते अधर्म करिहैं बहुताहीं ॥
तिनकर भारसह्यो नहिंजाई । हौंपलानि तेहिभय सुनुराई ॥
सुनिनरेश करिकोप महाना । कलियुगनिधनचित्तनिजठाना ॥
कह्यो आजुकरिहौं खलनासा । जेहिनबहुरिगोकुललइत्रासा ॥
नरपति गिरासुनत कलिकाँपा । पराचरण उपजी तन तापा ॥
बोल्यो दीन बचन करजोरी । पृथ्वीनाथ शरण मैं तोरी ॥
निज किंकर बिचारि भुवराई । कहौठाम निवसौं जेहिठाई ॥
अजकृत तीनिकाल युगचारी । मिटिहिन सोनृप देखुबिचारी ॥
समुझि दैवकृतकालि परवेशा । धरिधीरज इमिकहा नरेशा ॥
बसहु द्यूतगृह झूँठ अवासा । मदिरा गणिकालयतवबासा ॥
हिंसक भवन चोरके गेहा । हाटक महँ निवसो युतनेहा ॥
क्षोणिप वचनसुनत कलिआसू । नृप निदेश जहँतहँ कृतबासू ॥
दो० धर्महिं उर धरि भूपतब निजगृह कीन्ह पयान ।
मिलीधरा निज रूपमहँ मंगल हृदय जुडान ॥
पुनिनृप आइ राज्यमह धर्मा । लाग सुनीति करैनृप कर्मा ॥
इमि कछुकाल व्यतीते राजा । मृगयाकरसबसाजि समाजा ॥
अकसर भूप निबिड़बन गयऊ । तृषावंत व्याकुल तन भयऊ ॥
अर्जुन मुकुट शीश भुआला । कलियुगतहँनिबसतसबकाला ॥
औसर लहिकलि नृप बुधिनासी । भ्रमितभूपबनजिमिबनबासी ॥
इमि महीश खोजत की लाला । पहुँचे ऋषिलोमशाश्रमशाला ॥
बैठमहामुनि निज अस्थाना । मूंदे चक्षु करत हरि ध्याना ॥
भूपागमन ऋषय कछुजाना । नृप निजमनकृत इमिअनुमाना ॥
दो० तप मदवश मुनि अहै यह कस्यो न मम सन्मान ।
समय कठिन कलिकृत कपट भयउभूप अज्ञान ॥
धिषणालय महीप सब काला । द्विज तोषक बड़ दीनदयाला ॥
कठिन परंतु कमल भवअंका । मेटिसकै कोउभूप न रंका ॥
कुमति विवशनृप रह्यो निहारा । मृतकनाग लखितेहिथलडारा ॥

इषुधी करि उठाइ ऋषि ग्रीवा। मेलनराखि मुदित ह्वै जीवा॥
तदपिन जगा सहृद्मुनिध्यानी। गयोभूप तबनिज रजधानी॥
शीशमुकुट धरधरा उतारी। उपजो ज्ञान शोच भो भारी॥
जातरूप ममसुकुट विशाला। जहँनिबसतकलियुग सबकाला॥
बैर सम्हारि अधीय बनायो। तेहिखल अधमकर्म करवायो॥

दो० आसी बिष सबस्वकरहैं मुनि गल मेलो जाय।
भयोदोष अस मितिनजेहि भूप हृदय अकुलाय॥

बरण धर्मत्रिय धन परिवारा। किमिन नश्योयहुआजुहमारा॥
धृकहौं जीवत ऋषि दुखदाई। का जानिय कबयह अघजाई॥
इतबसुधेश शोक दधिमाहीं। पैरतथाह लगत जनुनाहीं॥
उत बालक खेलत तेहि काला। मुनि तट जातभये मुनिबाला॥
ऋषिकंधरअहिमृतकविलोकी। चकितबिकजभेजिमिनिशिकोकी॥
सम्मत करै परस्पर सोई। तदापधीर नहिंतिन तनहोई॥
एक कहिसि कौशिकि सरितीरा। इनकर सुतखेलत सुनुबीरा॥
ताहिकहौ कोउ मुनियक धावा। मुनिसुतबृंदमध्यँ चलिआवा॥

दो० तहँ शृंगीऋषि समुदमन करत खेल जिमिबाल।
कहिसि जाय तेहि बालते यहचरित्र तेहिकाल॥

का खेलत अशोच तैं भ्राता। चलुमम साथदेखु निजताता॥
वाके कंठ सर्प मृतहारा। नृपकाहू हौं नैन निहारा॥
सुनत सकोप भयो ऋषि कैसे। बीरभद्र बिधिसुत मषजैसे॥
अरुण चक्षु भृकुटी भै बाँकी। यथात्रिपुरलखिभयोपिनाकी॥
उठे रोम थर हरेउ शरीरा। कही महामुनि गिरागँभीरा॥
अबकलि भूपभये अभिमानी। धनमद मते अंध अज्ञानी॥
देहौंशाप ताहिहौं आजू। जिहि बशकालकीन्ह यहकाजू॥
असकहि मुनि कौशिकि तटजाई। जलकर लै बोल्यो अकुलाई॥

दो० जेहिभूपति ममतात गल डारमृतकअहिलाइ।
दिवससातवेंताहिकहँ सर्प अवशिडसिखाइ॥

दैअसशाप जनक ढिग गयऊ। कंधरसर्प निकारत भयऊ॥

ोनिपितुप्रति सविनयकहस्वामी । तनसुधिकीजियअंतरयामी ॥
तेहिखलहि शाप देदीन्हा । जेहि तवगलअहिमेलप्रवीना ॥
त्र गिरासुनि चेतमुनीशा । खोलि विलोचनदशदिशिदीशा ॥
हुरि ध्यान धरि देखत भयऊ । यहकर्त्तब भूपति करिगयऊ ॥
ातसन कहा नीकनहिंकीन्हा । शापशोत्रिनहिंभूपहिदीन्हा ॥
ाकेराज्य सुखी मुनि लोका । पशुविहंगनहिंदुखितविलोका ॥
ो हरि एक संग दोउ रहईं । बैर न प्रीति परस्पर लहईं ॥
नि ताके नृपता हम वासी । दुखनलग्यो कीन्हें नृपहासी ॥
ोष भूपलघु शाप कराला । दियउपुत्रकरि क्रोधबिशाला ॥
र अरु शापदिये बिन जाने । अमित पापजनुदोषनसाने ॥
ोसुत गुण तजि औगुणग्राही । शाप बिचारिन दीन्होताही ॥

दो० शीलवान संतोषशुभ सहजस्वभाव अमान ।
औगुण तजि गुणगहत जे तेहरिदास प्रमान ॥

ामि बहुभांति सुतहि समुझाई । शिष्य चतुरऋषिएकबुलाई ॥
ाहिनिजाइ भूपहि सुधि दीजै । शृंगी शाप कठिन सोलीजै ॥
ादपि अहै अनुचित सन्देशा । तदपिभूपसुनि सहित अँदेशा ॥
ारिहि उपाय शापजेहि मोचै । चलाशिष्यमगकृतअतिशोचै ॥
ाहँ आवा जहँ बैठनरेशा । सकुशभयोतनविगलितकेशा ॥
ाहाभूप शृंगीऋषि शापा । दीन्हातुमहिं सहित परितापा ॥
ुनिदिन गत तक्षकडासिखाई । तुमहिं रुचैसो करहु उपाई ॥
ोहिकृत कर्मपाशते मोचन । होइ करियसोज्ञानविलोचन ॥

दो० जोरि बाहु मुख सुनत नृप उठा कहाशिरनाइ ।
दोषशोक अर्णवतरत थक्योथाहनहिं पाइ ॥

ुनि गुणिशाप तरनिसमदीन्हा । बूड़तसिंधु पारजनुकीन्हा ॥
ायो शिष्य मुनि पहँ पुनिराजा । आश्रम बीतराग मनसाजा ॥
न्मेजय सुततासु प्रबीना । निजपदवीतेहिचोणिपदीना ॥
ाहा सुनीति प्रजापति होहू । गोद्विजादि रचहु करिछोहू ॥
ुखी प्रजारह सोइ बौसाऊ । कह्योतात कहि गमनेउ राऊ ॥

गै रनिवास सकुचि उठिनारी। शोक बियोग उदासितभारी ॥
बंदिचरण तिनकीन्ह बिलापा। निरषिभूपदिशिदुखितअलापा॥
मंदबुद्धि औगुण गृहनारी। तुमबिन कागति होइ हमारी॥
अपर समस्त बिपति दुखजोई। पतिबियोगसमत्रियहिनसोई॥
किमि सहिजाय नाथ दुखभारी। तवसँग प्राणतजैं सबनारी॥
कृत उपदेश भूप सुनिबानी। त्रियाधर्म नृपब्याज बखानी॥
पतिव्रत धर्म नारि कृत जोई। तासम अबला अपरन कोई॥
दो० कुलवंतिनि जो सलज तिय चातुरअरुधीमान।
अंबरगाभी बदनिसुनु सो जगनारि प्रमान॥
उचित नारि कहँ पति सेवकाई। करैसोजेहिंनसुपतिपतिजाई॥
किमपि करत पति शासन भंगा। अधिकचढ़ैअघत्रियकेअंगा॥
शुभकारजन करै हठिबाधा। यहभाषत कबिबुद्धिअगाधा॥
कहिअस धनजन तजि परिवारा। निरमोही तप लागि सिधारा॥
बैठयोग साधन गंगातट। सुनत लगी पुर रोदनकीरट॥
जेहि यह सुन्यो हाय विनठाने। रहानकोउनर बिनपछिताने॥
युवती युवा वृद्ध कुल नारी। रुदन करैं अति भई दुखारी॥
बृद्ध तरुण नर बालक जोई। करत विलाप सकुल सबसोई॥
दो० सुन्यो ऋषीशन हाल यह तजतभूपनिज प्रान।
सुरसरितट मुनिशाप बश जनु अथवत जगभान॥
तब श्रुति व्यास बाशिष्ठ दयाला। भरद्वाज कांती तेहि काला॥
बिश्वामित्र पराशर नारद। बामदेव गुण ज्ञान बिशारद॥
यमजमदग्नि आदि मुनि जोई। आये सहस अठासी सोई॥
डासि निजासन भूप समीपा। पंक्तिपंक्ति राजे मुनिदीपा॥
शास्त्रधर्म ऋषि अखिल बिचारी। कहँ नृपतिसन द्विजगणभारी॥
सात्विक श्रद्धा सहित भुआला। सुनतसप्रेमतजे भ्रमजाला॥
पुस्तककाँखि दिगम्बर बेखा। श्रीशुकदेवसो मुदितबिशेखा॥
तेहि अवसर आये तेहि ठाई। उठे ऋषय सबहिय हुलसाई॥
दो० अरुनरेश उठि जोरिकर सबिनय बाणी दीन॥

करि प्रणाम कह ऋषय सन अमितदया तुमकीन॥
ममसुधिलेउ समय यहि स्वामी। दयाधीश तव चरणनमामी॥
सुनि नृपविनय ऋषयतहँ वैसे। कहा मुनिनसन भूपति ऐसे॥
मुनि शुकदेव व्यासकेबालक। पौत्रपराशरके अघबालक॥
तिनहिं देखि तुम सर्वमुनीशा। ठाढ़ भयउ यहअचरजदीशा॥
अनुचित उचित भयोकेहिकारन। यह सँदेह ममकरियनिवारन॥
कहापराशर नृपहि बुझाई। वैबड़ हमहिंज्ञान लघुताई॥
आदर मान दया यह कारण। येमुनि अहैं तरण अरुतारण॥
जन्म दिवस ते भये उदासी। श्रीशुकदेव विपिनके बासी॥
दो० उदय भाग्य बड़ तोर नृप यहि अवसर भाजानु॥
अति उत्तम जो धर्मसो कहिहौं सुमुनि बखानु॥
जोसुनि जरामृत्यु ते राजा। तूछूटहि भलजुरा समाजा॥
बहुरि नृपति मुनिपदजिमिदंडा। पस्यो कहाकाधर्म्म अखंडा॥
कर्म पाश बंधन निरुवारा। जेहिकरिहोइकहियश्रुतिसार॥
सप्तम दिन सुनिकाल हमारा। किमि जैहौं भवसागर पारा॥
श्रीशुकदेव कहा सुनु भूपा। है अशौच सुनुधर्म्म अनूपा॥
पर्वत दिवस अवधि नृ गावत। मुक्तिचतुरन्वणमाहिं बतावत॥
पूरब नृपति षडांगुल एका। नारद तेहि कह ज्ञानविवेका॥
उभय दंड महँ मुक्तिहिपाई। सप्तदिवसबाड़ि अवधि बताई॥
दो० यक चित समुझौ आपुही ध्यान सहित नरपाल।
काशरीर को बसत को कृतप्रकाश सबकाल॥
यह सुनि भूपसहर्ष पुनि पूछ ऋषिहि शिरनाय।
उत्तम धर्म्म बिचारि अबकहो मोहिं मुनिराय॥
मुनि कह जिमिसब धर्मनमाहीं। धरम वैष्णव बड़ा सदाहीं॥
जिमि पुराण सकलोपरि राजा। श्रीभागवत कथा सुखसाजा॥
हरिजन जहँ यह कथासुनावैं। तीरथ धर्म्म तहाँ चलिआवैं॥
यदपि पुराण सकल गुणखानी। यहिसमतानकरहिंसुनुज्ञानी॥
रविस्कंभहौं महा पुराना। कहौंतोहिमोहिंव्यासबखाना॥

सानँदश्रद्धा युत चितदीजै। महापुराण सुखदसुनिलीजै॥
समुदसुन्योनृप सुऋषि बखानी। नवस्कंध कहि कथासिरानी॥
कहाराउ सुनु दीनदयाला। कहौ कृष्णकर चरित रसाला॥
दो० मोरसहायक पूज्यकुल माधव अहँ ऋषीश।
सुनिमुनि कह मोहिंदयोसुख सुनौ प्रसंग महीश॥
यदुकुल मध्यनाम भजमाना। भयो भूपयक बिबुध महाना॥
तासुतनय भो पृथिक नृपाला। बिदुर तासुसुत रिपुगणकाला॥
शूरसेन तासुत भटभारी। नवौखंड पृथ्वी अधिकारी॥
प्रमदा तासु मरिष्या नामा। दशसुत तासुभये बुधिधामा॥
शूरकन्या गुणरूप सुशीला। उपजीं तासुसुनौ नृपलीला॥
ज्येष्ठपुत्र बसुदेव कहावा। जादिन तासुमातु तेहिजावा॥
तादिन सुरपुर बजी बधाई। लहा अनंद अधिक सुरराई॥
अष्टम गर्भतासु त्रियकेही। प्रकटे कृष्ण साधु जननेही॥
दो० पंचसुता नरनाहकी बड़ीजो कुन्ती नाम।
सो व्याही नृप पांडुकहँ सकल गुणनकी धाम॥
जासुकथा भारत महँभाई। व्यासमहामुनिवरणि सुनाई॥
रोहिणि नृप रोहनकी जाता। सो बसुदेव व्याहि शुभगाता॥
तापाछे दशसत्त विवाहा। किय बसुदेव समुद नरनाहा॥
बहुरिभूप मथुरा पुर माहीं। कंसभगिनि देवकी बियाहीं॥
त्रिय लैचलो जबहिं महिपाला। भई व्योमबाणी तेहिकाला॥
यहिकरसुत अष्टम रिपुतोरा। उपजिहि कंसबचन सुनुमोरा॥
सुनिबाणी खल बंधन कीन्हा। बन्दी भवन बासलै दीन्हा॥
कृष्णचन्द्र जन्मे तेहिठाई। सुनिबोल्यो नृपगिरा सोहाई॥
कंसजन्म बरदान कहानी। बरणि कहौनिजसेवकजानी॥
प्रभु अवतार भयो जिमि स्वामी। सो चरित्र कहु अंतरयामी॥
पुनि गोकुल किमिगयो कृपाला। भणौमहामुनिसकलहवाला॥
श्री शुकदेव महामुनि ज्ञानी। कहीकथा अधिकारी जानी॥
दो० मथुरानृप आहुक यक भयो प्रथम महिपाल।

तासुतनय देवक अपर उग्रसेन रिपुकाल ॥
उग्रसेन बीते कछुकाला । भयोतहां मेदिनि प्रतिपाला ॥
नाम पवनरेखा त्रिय तासू । शोभित अंग अंगसब जासू ॥
पतिब्रत धर्म निरत बसुयामा । नृपनिदेश लंघक नहिंबामा ॥
यकदिन भई रजोवति सोई । बिधिगतिबामजातनहिंजोई ॥
पति अनुशासन रथ चढ़िनारी । सखिनसंगकाननहिंसिधारी ॥
सघनबृक्ष किंशुक बहुभांती । त्रिबिध बयारितहां लहराती ॥
कोकिल कीर कपोत कलापी । द्विजगण बोलिरहे तनतापी ॥
अगजगतट यमुना सुखखानी । उठतबीचिलखिक्षोभतज्ञानी ॥
दो० देखिमनोहर सघनबन अरु तमारिजाकूल ।
उतरि रानिरथते धरा चलीससुखगतशूल ॥
कानन सघनगई भ्रमि रानी । बन बीथिनसों फिरै भुलानी ॥
यातुधान द्रुमलिक जेहिनामा । दैवयोग आवा तेहि ठामा ॥
यौवनवती रूपनिधि नारी । देखि दुष्ट तन दशा बिसारी ॥
निजमननिशिचरकृतअनुमाना । किहिबिधिभोगकरौंअकुलाना ॥
अमित युक्तिकरि बासव माया । उग्रसेनवत रूप बनाया ॥
सन्मुख जाइ कही मृदुबानी । देरति सुनि उत्तर दिय रानी ॥
महाराज निशिकाम कलोला । करैकहा दिन रति खगकोला ॥
तियनर शील धर्म अरुकानी । अहरति रहत न बेद बखानी ॥
दो० तुम ज्ञानी सर्वज्ञ नृप निज मन करहु बिचार ।
सुनत बचन मन कामबश अधिकभयोनेहिवार ॥
गहिकर आकर्ष्योनिज ओरा । मनभावितकृतकरि खलछोरा ॥
यह प्रपंचकरि भोगेसि वाही । पुनि निजरूप दिखायो ताही ॥
बिकल नारि भइ बदन निहारी । सुखदकहा अस बचनप्रचारी ॥
सुनु पापी अधर्म चाण्डाला । यहुका कीन्हदीन्हदुखजाला ॥
धर्म पतिब्रत मोर निपाता । धृकखलतवअरुतवपितुमाता ॥
पुनिधृक तवगुरुजासु सिखावा । करिअघकृतममसत्य छुड़ावा ॥
बाँझ न भई जननि शठ तोरी । स्रव्यो न गर्भ अरे अघघोरी ॥

मानस देह जगत जे पाई। आन सत्य खल देत छुड़ाई ॥
दो० जन्म जन्मते अधम नर बास अधोगति लेत।
जानि अघी सूरज सुवन तिन्हैं महादुख देत ॥
द्रुमलिक कहा सुनो महरानी। शापदेहुजनि विधिकृतजानी ॥
बाँझजानितोहिं मोहिं दुचिताई। अहै रानि मम मन महँ छाई ॥
निजतप फलदीन्हा तेहिकारण। मन चिन्ताहौं कीन्ह निवारण ॥
गत दशमास सुवन यक होई। मम सम बली जान सबकोई ॥
नवौ खस्ड वसुधा बशताके। ह्वै है समर कृष्ण सँग जाके ॥
अब बृतांत सुनु मोर सयानी। कहौं कथा निज तोहिंबखानी ॥
पूरब कालनेमि मम नामा। हरिसँग अमित कियोंसंग्रामा ॥
पुनर्जन्म अब द्रुमलिक भयऊँ। पुत्रदान तव हित लगिदयऊँ ॥
दो० तजि चिंतमन सप्रेम त्रिय जाहु आपने धाम।
अस कहि द्रुमलिकअन्तरित भयउभूपगुणग्राम ॥
छं० जब गयो सो बिबुधारि। तब धर्यो धीरज नारि ॥
होनिहारि जसितसि बुद्धि। प्रगटी बिसरि सबसुद्धि ॥
तेहि काल सजनी तासु। गइपहुँचि ता ढिगआसु ॥
लखि रानि भंग शृँगार। बयसा कहा तेहिबार ॥
कहँ बिलम या बिधिकीन्ह। केहितोहिंयहदुखदीन्ह ॥
कह रानि बन घन जाल। अरुहौं सुभ्रकसरवाल ॥
सो० मिल्योबली सुखएक तेहि मोहिं दीन्हो विविधदुख।
किमिकरि कहौं विवेक जेहि डर कंपत अजहुँ तन ॥
रानिबचन सुनिसखि अकुलाई। रथचढ़ाइ रानिहिं गृह लाई ॥
समय पाय सुनु भूप सुजाना। उपज्योतनयअमित बलवाना ॥
प्रसवकाल अति चल्यो समीरा। डोलि धरा डगमग अहिधीरा ॥
जगतमनिबिड़नकर निजसूझै। दिननिशिसमभगचित्तअरूझै ॥
उडुगण पर्यो इलाघन गाजे। भादिग्दाह तड़ित गतिछाजे ॥
माघ सितात त्र्योदशि जीवा। जन्म्योअसुरजोकसमलसीवा ॥
पुत्र जन्म जब भूपति सुनेऊ। चितप्रफुलितबड़आनँदगुनेऊ ॥

अखिल मंगला सुखी नृपाला । जोतेहिनगरनिवसतेहिकाला ॥
दो० बोलि नृपति ताही समय मंगलचार कराय ।
विप्र वृन्द बोले बहुरि निजचर चतुर पठाय ॥
आवतभूप लखा द्विज वृन्दा । उठ्योसभासदसहित अनन्दा ॥
भाव भक्ति करिबड़ि सिवकाई । शुभ्रासन बैठारिसि आई ॥
करि विनती सुत जन्म सुनावा । सुनि भूसुरन महा मुद पावा ॥
शोधी लग्न शुद्ध ज्योतिषबल । ग्रह विपरीत परे थलहीथल ॥
धर्म रहित यह सुर रिपु क्रोधी । ह्वैहै असुर सुकर्म बिरोधी ॥
भूपहि कहा कंस यहि नामा । भयो सूनु तव बल करधामा ॥
यातुधान पति ह्वै है राजा । बुधहरिजनकर करिहि अकाजा ॥
जब अधर्म मिति आगेकरिहैं । तबनिजकरहरियाहिसँहरिहैं ॥
दो० सुनतभूपभ्रम वशभयो द्विजगे निजनिज धाम ।
आनकथा अब सुनहुनृप जो दायक मनकाम ॥
देवक उग्रसेन कर भाई । तासु चरितनृप सुनुमनलाई ॥
चारिपुत्र देवक के राजा । अरुषटकन्या सुखुखिसमाजा ॥
प्रीति समेत दीन्ह बसुदेवै । षटौ सुता विधुबदनी तेवै ॥
सप्तम सुता देवकी जोई । देवकि गृह उपजी पुनिसोई ॥
जन्मत सुरपुर आनँद भयऊ । भे प्रसन्नबुध संकट गयऊ ॥
उग्रसेन के भये दश बालक । सब महँ कंस जेठ सुरशालक ॥
जादिन ते उपजो खल सोई । करै उपाय अधम कृत जोई ॥
प्रजा बाल लघु सो गहि लावै । अग जग गुफा मूंदि तेआवै ॥
दो० पुनि न बतावै काहुकहँ तजैं बाल तहँ जीव ।
बड़ बालक जो तासु जिय दाबि निकारै ग्रीव ॥
प्रजालोग ते भये दुखारी । जिनसुत हने कंस अघकारी ॥
सबकोउनिजनिजसुतनचोरावै । तेहि भय बालनबाहिर आवै ॥
यूथ यूथ जुरि नर अरु नारी । कहैं परस्पर बैन बिचारी ॥
उग्रसेन कर सुत यहु नाहीं । असुर शुक्र लच्छण तनमाहीं ॥
जन्म दिवसते प्रजा सताई । तजोदेश निबसौ जनिभाई ॥

सुन्यो राउ सुत कर्म कराला। कंसहि बोलि लियो तत्काला॥
राजनीति मत तत्त्व सिखावा। नृप उपदेश न तेहि मनआवा॥
तज्यो न अधम कर्म नृप हारा। मन गलानि दुखभयउ अपारा॥
दो० उग्रसेन मन शोच प्रभु प्रजा दुखित लखितात।
अस सुतते बिन सुतन कस किय इंदीवरजात॥
गृह कपूत जन्मत जब आई। सुयश धर्म तब जात पराई॥
कंस बढ़िक्रम भई बसु वर्षा। दल बटोरि तब चल्यो सहर्षा॥
नगर राजगृह मगध प्रदेशा। अजित जरानिधि तहांनरेशा॥
मल्लयुद्ध तासन किय जाई। देखि कंस बल हिय हर्षाई॥
जरासन्ध हिय हारि महीपा। द्वै कन्या ताके गृह दीपा॥
करि उद्वाह सहित उत्साहा। कंस संग कीन्हीं नरनाहा॥
तिनहिं संगलै मथुरहि आयो। उग्रसेन सँग बैर बढ़ायो॥
यक दिन पितहिकहासुनुताता। रामराम जपि तजु दुखदाता॥
भञ्जुकामारि नाम सुख खानी। बोल्यो भूप दुखित मृदुबानी॥
मम कर्त्ता हर्त्ता दुख रामा। तिनतजि तरौंन सुनुसुतबामा॥
किमि परिहरौं राम अनुरागा। सुरतरुतज कोउ रंकअभागा॥
निजकर नैन सेराई खोंसे। पुनि जगकाहि देइ नरदोसे॥
दो० विबुध नदी तजि तृषित नर मृगजल धावैमूढ़।
अस मूरुखको जगतमहँ घृत जल मथि जो बूढ़॥
बिनशै धर्म जो हरि नहिंध्याऊं। बूड़ौं भव दधि पार न पाऊं॥
सुनि सकोपि पितुबंधनकीन्हा। सकलराजनिजवशकरलीन्हा॥
नगर फेरि खल आपु दुहाई। गृहगृह प्रति यह खबरिजनाई॥
दान यज्ञ जपतप शुभ कामा। करौ न कोउनजपौहरिनामा॥
हठ करिकिरिहि जो कोउनरनारी। ताहि दंड देहौं हौं भारी॥
मिथ्यो धर्मकर सेतु अपारा। सकलविवेक कटक जनुहारा॥
बढ्यो अधर्म धरा सुनुराजा। प्रगटीकुबुधिमिटा बुधिसाजा॥
गो द्विज साधु लहैं दुखभारी। मुदितअसुरखलचोरजुआरी॥
दो० जहँ तहँ निशिचर फिरहिंबहु करैं अमित उत्पात।

दवत मेदिनी भारसों किमि अनीति कहिजात ॥
चहुंदिशि कंस महीपति जीते। सजाकटकपुनिकछुदिनबीते॥
आखंडलपुर जीतन चाहा। मंत्री कहा सुनिय नरनाहा॥
तपबल प्राप्त होत इंद्रासन। बिनतपको जीतै मघवासन॥
बलमद आपु करै जनिस्वामी। सुनासीर हरिकर अनुगामी॥
अहंकार रावणहि नशावा। सचिवबचनसुनिकटकफिरावा॥
श्रीशुक कहा सुनो महिपाला। होइ महाअधमहितेहिकाला॥
दुखित कश्यपी भई महाना। धेनु रूप धरिरोदन ठाना॥
गई अमरपुर बज्री पासा। करिप्रहूननिज दुःखप्रकासा॥
दो० वासव सुनु संसारमहँ बढ़े असुर मिति नाहिं।
अति अधर्म ते करतहैं किमिसुख बरणे जाहिं॥
लोप्यो धर्म भानु जगमाहीं। तम अधर्म छायो बहुताहीं॥
जो सुरेश आज्ञा तव पाऊँ। तजि नरलोक रसातलजाऊँ॥
सुनि महि वचन चला अमरेशा। अजशिवादिमहिसंगनरेशा॥
पयनिधि गए मधुसूदन तीरा। सैन किये देखे रघुबीरा॥
सोवत जानि बिष्णु जनत्राता। त्रिदशवृंदनिजमनपछिताता॥
ब्रह्मा कहा शिवहि समुझाई। देवस्तुति अब करिय गोसाई॥
अमरविनयसुनिजागिहिकृपाला। वृंदारक समाज तेहि काला॥
शंकर सहित ठाढ़ ह्वै राजा। बिनवतहरिहिजानिमहिकाजा॥
दो० सकल दिवौकस जोरिकर कृत बिनती सुनु भूप।
जो सुनि जागे कृपानिधि असुर नाग हरिरूप॥
छं० जयंदेवदेवेशदेवारिहंता। जगज्जीवजयजयजगन्मातकंता॥
धरानागपातालत्रातापरेशं। त्वमेकंअनेकंस्वरूपंसुरेशं॥
नमस्कारचरणारविंदंकृपालं। नतोहंरमानाथसंसारपालं॥
निरीहंनिराकारअद्वैतव्यापं। नमामीशमव्याहतंत्वंअपापं॥
अकामादिरूपानवद्यंअमानं। स्वभक्तामरादिंसदारक्षमानं॥
त्वमाद्यांतहीनंदयाधीशस्वामी॥प्रसीदादिदेवंत्वपादंनमामी॥
छं० अतिअगममहिमानाथतोरि पारकिहिविधिकैलहैं।

तू देवदासन सदारच्छक अहै प्रभु आगम कहैं ॥
धरिमत्स्यरूप उबार वेदन कच्छ ह्वै भूधर धस्यो।
पुनिकोलबनिवरदशनऊपर धराधरिजगदुखहस्यो ॥
श्रसुकनककश्यपहत्योपुनि नरनागरिपुतनधारिकै।
प्रह्लाददुखप्रभुदूरिकीन्हो दासनिजसुधिचारिकै ॥
बलिछल्योबामनबपुष बनिकै इंदुसंशयनाशियो।
भृगुनाथह्वैजगछत्रभंज्यो राज्यकश्यपकोदियो ॥
अरु रामचंद्र बहोरिह्वै हनरावणै गतदुखमही।
जबजबनिशाचरबाढ़महिपर संतजननसतावही ॥
तबतबकृपानिधिमनुजतनधरिसकलखलननशाइयो।
अबकंसदुष्टप्रसिद्धभो जेहिकर बिबुध दुखपाइयो ॥
सो० विकल धरा सुनु ईश अब आई तोरे शरण।
करु रच्छा जगदीश धेनुरूप सन्मुख खड़ी ॥
देव स्तुति सुनतै सुनु बीरा। गगनगिराभइ सुखद गँभीरा ॥
तैं विधि देह देव समुझाई। होनहार मम जन्म सुनाई ॥
सारस जात सुरन सन कहेऊ। बाणीरुख जो निजहियलहेऊ ॥
सुनो दिवौकस भई जो बानी। आज्ञा तुमहिं दई यह आनी ॥
नरतनु धरि सब देव समाजा। मथुराबसहु सहितसुखसाजा ॥
तेहि पश्चात् ईश भव त्राता। प्रकटिहि चारिरूप सुखदाता ॥
यदुबंशी बसुदेव अगारा। देवकि जठर धरिहि अवतारा ॥
नंद यशोदा के गृह जाई। बालचरित करि हैं सुरराई ॥
दो० कंजजात समुझाव जब तब सुर मुनि गन्धर्व।
किन्नर यच्छ सबाम ब्रज जन्म लेत भे सर्व ॥
ब्रजमण्डल यदुबंशि ते गोप कहाये भूप।
वेदव्यास न विधिसों कहा सुनु नृपचरितअनूप ॥
जो अज तव अनुशासन पावैं। मोपी तनधरिब्रजहि सिधावैं ॥
बासुदेव सेवन हम करहीं। आपन धर्म नीक अनुसरहीं ॥
सुनिकैवचनबिहँसिकमलासन। वेदऋचनदीन्हों अनुशासन ॥

ते चलि ब्रजमण्डल कहँ आईं । नरतन धरि गोपिका कहाईं ॥
अखिल देव ब्रज उपजे राजा । किमिवरणौंकविजन्मसमाजा ॥
यहिविधिलियो सुरनअवतारा । तबहरिनिजमनकीन्हविचारा ॥
अबसबसुरनजन्म भुव लीन्हा । मोर रजायसु पूरण कीन्हा ॥
जेहिध्यावत सबश्रम मिटिजाई । सो चिंतवन करत भुवराई ॥
छं० चिंतवनकरि निज कृपानिधि लीन्ह यह सुविचारिकै ।
बलरामतन प्रथमहिंलषण अवतार लेइ सुधारिकै ॥
पुनि बासुदेव सुहोउँ हौं अरु भरत प्रद्युम्न होइ हैं ।
अनिरुद्ध ह्वै पुनि शत्रुह्ना हनि दुष्ट जग दुख खोइ हैं ॥
सो० सीता शक्ति अनादि सो रुक्मिणि तन धरै भव ।
मुनिजन सकल सुरादि लहै जन्म फल जगत तव ॥
दो० यह मत निज मन सदृढ़ किय श्रीजगदीशगुपाल ।
गावत मंगल कृष्ण यश मिटै कपट जंजाल ॥

इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदास विरचितायां पीड़ाबन्ध कंसजन्म देवस्तुति वर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥

दो० बन्दि चरण राधारमण निज गुरु चरण मनाइ ।
बरणौं सुखदचरित्र यह सुनि अघसकलनशाइ ॥
पुनिमुनिकहासुनियनरनायक । हरिचरित्रसबबिधिसुखदायक ॥
कंसराज कृत सहित अनीती । जस पूरब गायो करि प्रीती ॥
उग्रसेन दुख युत दिन भरई । काहि कहै जेहि ते दुख टरई ॥
अपर कथा सुनु नृप मनलाई । देवक उग्रसेन कर भाई ॥
तनुजा तासु देवकी नामा । ब्याहन योग भई बुधि धामा ॥
देवक कहा कंस सन जाई । तनया काहि देउँ कहु राई ॥
कंस कहा बसुदेवै दीजौ । आनबिचारनचितकछुकीजौ ॥
सानँद देवक बिप्र बोलायो । काम्यलग्नलिखितिलकपठयो ॥
दो० सूरसेन नृप समुद तब रचि बरात अभिराम ।
देश देश के महिप सँग आये मथुरा धाम ॥

कंस बरात नगर तट जानी। पितुपितुबंधुसहितसुनुज्ञानी॥
अगवानी करि नगरहि लायो। रम्यालय जनवास करायो॥
षटरस व्यंजन बिबिध प्रकारा। दीन्ही सबहि कंस ज्योनारा॥
मंडफतर पुनि सकल बराती। शोभितभये अखिलनृपजाती॥
जस बिवाहकी बिधि श्रुति गाई। प्रथम द्विजनसोंबिधिकरवाई॥
कन्यादान दियो पुनि राजा। भामरिफेरि बहुरिसुखसाजा॥
बिदा समय यौतुक बड़ दयऊ। कंस भूप आनँद सों छयऊ॥
तिथि सहस्र कंबोज ससामा। करभसहसफलादियअभिरामा॥
अरु बसु दश सहस्र रथ मोहर। दासी दास अनेक मनोहर॥
भरि कलधौत थार मणिजाला। पट भूषण दीन्हे तेहि काला॥
अगणित बित्त अपर नृपदीन्हा। पुनिबरातपहिरावनि कीन्हा॥
यहि बिधि तोषे सकल बराती। मिलतसबहिभरिआई छाती॥

दो० सँग बरात के कंस तब पहुंचावन के हेत।
चल्योमहीपतिमुदितमन दान अमितबिधिदेत॥

ताही समय व्योम भइ बानी। अरे कंस मूरुख अज्ञानी॥
जात सुसुख पहुँचावन जाही। अष्टम पुत्र प्रगटिहै ताही॥
ह्वैहै तोर काल सुत सोई। मोर वाक्य अन्यथा न होई॥
यह सुनि कंस महा भयमाना। कंप्योतनुजनु रहेउ न प्राना॥
पुनि आमर्षि देवकी केशा। निजकरगहि आकर्षिनरेशा॥
रथते दुष्ट तलातल डारा। मंडलाग्र रदपीसि सम्हारा॥
कहिसि सुनहु सबबचन हमारा। मैंनिजमन यहकीन्हबिचारा॥
जेहि पादपकर काटिय मूला। पुनिकसताहि लगैंफलफूला॥

दो० हतों देवकी को अबहिं मम सबशूल नशाइ।
करौं अकंटकराज्य जग फिरि मोहिंकालनखाइ॥

निजमन बसुदेव कीन्ह बिचारा। ममकरयहखल मरहिनमारा॥
जानत पुनि न सुकृत औपापा। अबयहिअधम दीन्हसंतापा॥
जो अब कोप करौं हौं भारी। तौ परिणाम होइहै रारी॥
बिगरिहि काज प्रबल रिपुआही। चमा कियेबिनअबभलनाही॥

कहत चतुर रिपु सबलजो होई । करै छमा मेघालय सोई ॥
जो अरिप्रबल गहै करवाला । कृत मनुहारिसाधुतेहिकाला ॥
आपु नीच लज्जित सोहोवै । जिमिजलअग्निपरेतनखोवै ॥
शत्रु सबल संग कृत रौताई । हारिहोइ अरु होइ हँसाई ॥
दो० इमि बसुदेव अनेकबिधि करिअनुमान नृपाल ।
जोरि हाथ तबहीं कहा सुनिये कंस भुआल ॥
तुम सम बली न कोउ संसारा । सकलमहीतुम्हरोअधिकारा ॥
सब नर बसत तुम्हारी छाहा । त्रियबधअनुचितअतिनरनाहा ॥
तापरपुनि यह भगिनि तुम्हारी । निधनकियेअघअमितसुरारी ॥
अस दुःकृत सोई नर करई । अमरहोइ जो कबहुं न मरई ॥
यह संसार असार महीशा । कहत ज्ञाननिधि सबमुनीशा ॥
जेहितन धरा अवशि मरसोई । सुर अजादिभा अमरनकोई ॥
कोटि सुकृत अघकरि तनपालै । तदपि अंत यहु संगन चालै ॥
धनयौवन प्रभुत्व नृप ऐसो । जल बुलबुला होतहै जैसो ॥
दो० निजमन शोचिबिचारुनृप सुनिकहनी पुनिमोर ।
पराधीन त्रियजानितजु बढ़ैसुयश नृपतोर ॥
सुनि बसुदेव बचन महिपाला । भृकुट्या कंसभयलोचनलाला ॥
लखिरुख पुनि बसुदेव बिचारा । यहखल बुधि आसुरीअगारा ॥
निजहठटेक तजिहिनहिं आजू । बड़अनरथ भा महाअकाजू ॥
अबत्राहिय उपाय असकीन्हा । जेहिकरिबधनजायत्रियदीना ॥
अमित युक्ति भूपति मनठानी । तदपि न कोऊ युक्तिठहरानी ॥
ध्यावतहारिहि मनहिंअसआवा । पंथी अमित मनो मगुपावा ॥
कहौं खलै उपजिहि सुत जोई । तुरत तोहिं देहौं मैं सोई ॥
यहिमिसिबचिहि देवकीकाला । फिरिदेखौंकाकरिहिगोपाला ॥
सो० सुताहोइ की बाल अथवा यहु जड़ जाय मरि ।
लिखेअंकबिधिभाल सो कौनिहुंकृतमिटिहिनहिं ॥
दो० मनबच क्रम यह समुझिनृप कंसै कहा बहोरि ।
यहि सुत करसों भूप सुनु मृत्यु होइ नहिं तोरि ॥

मैं निज मनयह कीन्हबिचारा । चित दै सो सुनु कंसभुवारा ॥
एक आदि बसु लगि सुतजोई । यहि त्रिय गर्भप्रगटि है सोई ॥
देहौं तुमहिं प्रसवहीं काला । अबलाबधन करियमहिपाला ॥
जो भवतव्य होत सुनु भूपा । उपजत बुद्धि तासु अनुरूपा ॥
बाचाबंध सुनत सुख भयऊ । तजिदेवकियदुपतिढिगगयऊ ॥
कहबसुदेव बड़े तुमज्ञानी । तुमसमचतुरनकोउजगप्रानी ॥
भल बिचार कीन्हो तुमभाई । अमितपापते लयो बचाई ॥
तिन्हहिंबिदाकरिनिजगृहगयऊ । चिन्तातदपि तासुउरछयऊ ॥
गयबसुदेव आपने धामा । आठौयाम जपत हरिनामा ॥
कंसशोचिपुनि चार बोलाये । सकलभेद कहिते समुझाये ॥
गृह बसुदेव जाहुतुमभाई । करौसदा तिनकी रखवाई ॥
सुतकन्या वाके जोहोई । दीजै सोध मोहिं पुनिसोई ॥

दो० तेप्रतिहारे कंस के रहत आठहूयाम ।
अपरकथा सुनुसुचितमन भूपतिधिष्णाधाम ॥
बहुत दिवस मथुराबसत गयेबीति बिधि एव ।
भयोपुत्र यकतासुके तेहि लैचल बसुदेव ॥

कंस सभा जहँ जुरा समाजा । रुदत सूनु धरिदिये तहँराजा ॥
यह न तात अपराधी मोरा । निधन किये संताप अघोरा ॥
निरखिकंसविस्मित ह्वैरहयऊ । आनँदसों बसुदेवै कहयऊ ॥
सतबादी तुमसम कोउ नाहीं । उपमा कासुदेउं भवमाहीं ॥
कपटत्यागिअरु तजि सुतमोहा । दिहेउपुत्र मोहिं परिहरिकोहा ॥
अब मैं अभय भयउँ नहिंत्रासा । दयउपुत्रलै जाहु अवासा ॥
अष्टम गर्भ शत्रु मम भाई । कही नाकबानी समुझाई ॥
सुनि बसुदेव मुदित मनभयऊ । करिदण्डवत ससुतगृहगयऊ ॥
तेहि अवसर नारद ऋषिआये । देखिकंस आतुर उठिधाये ॥
अभिबंदन करि प्रेम सभीता । शुभ आसन बैठार सप्रीता ॥
कथा समस्त देवऋषि पासा । कंसासुर नृप करासि प्रकासा ॥
कृपासिंधु सर्बज्ञ ऋषीशा । अबजसकहोकरियधरिशीशा ॥

दो॰ तव नारदमुनि कंससन कह्यो कहा यह कीन्ह ।
जो बालक बसुदेव कहँ फेरि भूप तुम दीन्ह ॥

तुमहिंनविदितत्रिदशसबजाती । यदुबंशी भय कर्बुक घाती ॥
बासुदेव सेवा हित लागे । जन्मे ब्रज हरि रस सब पागे ॥
अष्टम गर्भ देवकी केरे । शिरी कृष्ण जन्महिं सुनु एरे ॥
सो कर्ब्याद बंशकर नासा । करि हैं कंस कृष्ण अनयासा ॥
बसुधा भार उतारिहि सोई । यहिमहँ कुछ संदेह न होई ॥
पुनि नारद गजरेखा कीन्ही । यक यक बादि आठ गनि दीन्ही
जो कहि कंस सोई गनत्राई । सबते आठ आठ भइ भाई ॥
सभय कंस तब दूत बोलवा । बसुदेवालय सपदि पठावा ॥

दो॰ बालक सहित उताहिलै लावो मेरे पास ।
इत नारद उपदेशदै गये ब्रह्म आवास ॥

चरलावा बसुदेव ससूना । आइनृपहि तिनकीन्ह प्रसूना ॥
सुतलै निजकरहतसि चँडारा । यदुप सदुख निज भवनसिधारा ॥
जब जब पुत्र जन्म गृह तासू । कंसहि देइ करै सो नासू ॥
इमि षटसुत ताके तेहि मारे । दंपति यदुप लहे दुख भारे ॥
सप्तम गर्भ शेष भगवाना । निश्वस्यो आइ भूप बुधिवाना ॥
कीन्ह प्रश्न नृपइमि मुनिपाहीं । यह चरित्र कस बूझ्यो नाहीं ॥
परम भक्त हरिके ऋषि नारद । बैरागी बुधि ज्ञान बिशारद ॥
तिनसिख बालक बधलगिदयऊ । जाते अधिकपापतेहि भयऊ ॥
सो समुझाय कहौ मुनिकारण । ममाविस्मय प्रभुकरियनिवारण ॥
श्री शुक बिहँसि भूपसन कहेऊ । का नरेश यह भेद न लहेऊ ॥
नारद परम चतुर बिज्ञानी । तिन निजमन नृप यह अनुमानी ॥
जब यह अधमपाप बहुकरिहै । नरतन तब नारायण धरि है ॥

दो॰ ताते तासन भूपसुनु अमित करायो पाप ।
मंगल भूपतिको गयो सुनि बिस्मय संताप ॥

इतिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासबिरचितायांदेवकीवसुदेवबि
बाहनारदोपदेशबालकबधवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

सो० भवदधिकथाजहाज तेहिचढ़ि बुधजनसुजनसब।
खेवक सो ब्रजराज पारजात संशय नहीं॥
श्री शुकराजहि कहा बहोरी। सुनो कथामृतरस जनुबोरी॥
जिमिहरि गर्भवासनृप लीन्हा। ब्रह्मादिकजिमिअस्तुतिकीन्हा॥
मायाजेहि विधिखै बलरामैं। पहुंचायो सो नंदके धामैं॥
सो बृतान्त अब कहौं नरेशा। जोसुनि बिनशै कपटकलेशा॥
यकदिन कंस सभामहँ जाई। बैठि कहिसिसब दैत्यबोलाई॥
अखिल देव जन्मे महि भाई। अब पाछे रिपु जन्मेहि आई॥
मोहिं देवऋषि कहा बुझाई। मैं निज चित यह गुणाउपाई॥
मोर हितू सोई मम मीता। करै काज जो मम मनचीता॥
दो० जेहि बिधि यदुबंशीनशैं बचै न पावै कोइ।
सुनो सभासद सकल मिलि करो कर्म अब सोइ॥
आयसु पाय चले खल कैसे। मकरहि कूकुर धावत जैसे॥
जानत नहिं हरिचक्र आही। सो न भक्षि लेवै क्षण माहीं॥
करि दण्डवत चहुँ दिग धाये। जहाँ जहाँ यदुबंशी पाये॥
भोज्य रचत भक्षत कृत पाना। बैठ ठाढ़ निरबल बलवाना॥
चलत फिरत जागतअरु सोवत। यदुबंशिहिजहँकोउखलजोवत॥
तजत न ताहि तुरतगहि लेता। नाना बिधिन तिनहिंदुखदेता॥
जात बेद काहुइ लै डारा। बोरिउदक पुनि काहुइ मारा॥
पटकि पटकि मारे बहु धरणी। भनौं भूप किमि दुष्टन करणी॥
लघु दीरघ खल भयकर बेखा। नगरगांव प्रति फिरत अलेखा॥
शोधि शोधि यदुबंशी मारत। रूप अनेक अधमते धारत॥
यदुबंशी भयभीत पराने। देश बिदेश गये दुखसाने॥
ताहि समय सुनु भूप सुजाना। दुखित भये बसुदेव महाना॥
दो० देवकि बिन निज सकल तिय गोकुलदई पठाय।
जहाँ पर्म पीतमबड़े बसतनंद सुनु राय॥
अति हित सहित नंदते रानी। आश भरोस दइ गृह आनी॥
जानि मित्रत्रिय अससन्माना। प्रीति धर्म यश वेद बखाना॥

सानँद तहा रहै ते नारी। आनचरितसुनु भव दुखभारी॥
कंसदेव जब सकल सताये। अरु बहुदोष किये मन भाये॥
तब हरि निज चषते यकबाला। प्रगटी सो माया बिकराला॥
दोउ करजोरि ठाढ़भे आगे। तासन हरि इमि कहिबे लागे॥
सपदि भूमि धरु जाय शरीरा। मथुरा पुरी सूरजा तीरा॥
जहँ खल कंस राजकृत माया। मम दासन दुख देत अदाया॥

दो० पुराकाल कश्यप अदिति तप कीन्हो मम हेत।
देवकि अरु बसुदेव ते भये जाय ब्रज खेत॥

सो० तिनहिं कंस दुख देत बन्दीगृह करि बंदसुनु।
षटसुत तासु निकेत जन्मे ते कंसहि हने॥

सप्तम गर्भ लषण अब सोहै। देवकि जठर बिराजत जोहै॥
मोहनतन धरि ताहि निकारी। तैंगोकुल लगि आउ पनारी॥
रोहिणि उदर यतन सों धरिये। काहू जीवहि सुद्धि न करिये॥
अवशि दुष्टकोउ ताहि न जानै। तवयश जेहिते जगत बखानै॥
इमि मायहि समुझाय कृपाला। बोले बाणी बहुरि रसाला॥
जब सम्हारिहूँ जसि यहकामा। जन्मसि तुरत नन्दके धामा॥
पुनि बसुदेव भवन तेहि पाछे। मैं जन्मिहौं बीर कछ काछे॥
नंद निकेत आइहौं सांचू। फिरिसब खलन नचैहौं नाचू॥

दो० सुनि माया सानंद तब मथुरा आई भूप।
प्रविशी गृह बसुदेव के धरे मोहनी रूप॥

सो० लखो न काहू मर्म हस्यो गर्भ तेहि भूपतब।
आपु भई सो बर्म दयो रोहिणिहिजाइकर॥

जानत सब पहिलो औधाना। रोहिणि उदरराज भगवाना॥
श्रावण सितहर तिथि बुधवारा। नृप बलदेव लीन्ह अवतारा॥
उत गोकुल भव बजत बधाई। इतमाया मथुरहि पुनि आई॥
दयउ स्वप्न देवकि कहँ जाई। अरु बसुदेवहि कहा बुझाई॥
मैं तव गर्भहरेउं सुनु राजा। दयउंरोहिणिहिंजानिअकाजा॥
तुम चिंता आपनि परिहरहू। गई बिपतिचित आनँदधरहू॥

दंपति स्वप्न देखि अस जागे। चर्चा करन परस्पर लागे॥
यहतौ नीक कीन्ह करतारा। फिरिपाछे यह करयोविचारा॥
दो० यहि ध्वसरही कंस को सुधि कराइय जाय।
नतु पाछे सो अधमनर दंड देइहै आय॥
सत्वर भूप शोचि अपने मन। असबसुदेव कहापहरुनसन॥
सवउ गर्भ आइहु यहि बारा। सुनियक क्षिप्र चलारखवारा॥
कंस भूप ढिग खबरि जनाई। महाराज सुनिये चितलाई॥
अबकी गर्भ अष्टम गयऊ। सवविधिनाशजानिसोदयऊ॥
सुनत भूप विहवल भागाता। तनकंपो जिमिकदलीपाता॥
पुनि धीरजधरि चरहि बुझावा। यह तोअधिकभयोपछितावा॥
अष्टम गर्भ केरि रखवारी। करयोबुद्धिबल समयविचारी॥
मम रिपु सोइ जन्मि है आनी। सुनु चर चतुर कहा नभवानी॥
दो० बेगि जाहु चौकस रहौ वाही को भय मोहिं।
अपरचरित सुनुभूपश्रव समुद सुनाऊं तोहिं॥
संकर्षण जन्मे जेहि रीती। पूरव सो बरणयो सह प्रीती॥
अब सुनु कृष्ण जन्म नृपज्ञानी। कहौं सहित विस्तार बखानी॥
देवकि उदर कृष्ण जब आये। अमरलोक तब बजे बधाये॥
यशुमति उदर बसी तब माया। यहयुगतान्त काहुनलखिपाया॥
रहैं गर्भ युत दोनों नारी। पग पर्व यमुना कर भारी॥
गई देवकी तहां नहाना। उत यशुमतिहूं कीन्ह पयाना॥
विधि संयोग मिलीदोउ आनी। निजदुखदेवकि कहाबखानी॥
सुनतयशोदहि अतिदुखभयऊ। सानंद ताहि बचनयहदयऊ॥
दो० निज सुत तोकहँ देइहौं तूनिज दीजै मोहिं।
सो तू दीजै कंसकहँ मैं प्रतिपालिहौं ओहिं॥
वचनबंध करिदोउ त्रियगईं सो निजनिजधाम।
आनचरित सुनु महिपजो सुनिमनलहु बिश्राम॥
अष्टम गर्भ कंस जब जाना। तउखलनिजमनकरिश्रनुमाना॥
बहरजनीचर प्रबल हँकारे। यदुपसदन चहुँदिशि बैठारे॥

बहुरिलीन बसुदेव बोलाई । तिनहिं कहा इमि कंसबुझाई ॥
कपट त्यागि सुतमोकहं दीजे । अबकी बार सुयश बड़लीजै ॥
मोर शत्रु अष्टम यह बाला । दीजौबचन करयो प्रतिपाला ॥
कहि असदम्पति करपद माहीं । बेरीडारिदीन्ह खल ताहीं ॥
करिसि बन्द खल एक अगारा । तामहँ डारि दीन्ह दृढ़ तारा ॥
निज निकेत भयभीत सिधारा । सोइ रहा बिन बारि अहारा ॥

दो० जागि बिहान सकोप चलि गयो देवकी पास ।
कठिन बचन बोलतभयो लखिकै गर्भ प्रकास ॥
जठर न है यमगुफा यह बसत सो मोरा काल ।
अपयश डरते डरत नतु हनि मेटत दुख जाल ॥

नीतिशास्त्र अस कहत बिचारी । निजकर बीर बधै जो नारी ॥
ताहि दोष होवै मिति पारा । ताते मैं यह मंत्र बिचारा ॥
कोत्रियहनै अयश की खानी । उपजिहिबालसोबधिहौंआनी ॥
असकहि गजहरिश्वान मँगाये । चहुँदिशि निलयते सबबैठाये ॥
दनुजसबलजग जीतनलायक । रक्षक कंस कियेते पायक ॥
नितप्रति कंसजाय अरुआवै । क्षणकमात्र सोकल नहिंपावै ॥
दशदिशि जहँदेखै खल सोई । परतकाल बपुहरि तहँजोई ॥
आठौयाम ग्रसित भयरहई । आहिनिशिदुखितनींदनहिंलहई ॥

दो० इतहिकंस कीयहदशा उत बसुदेव महीश ।
देवकिसह चिंतागलित रहत मनावतईश ॥

कथित दंपति बिधुर महाना । प्रसवकाल हरिकर नियराना ॥
दिय बसुदेवै स्वप्न कृपाला । दुखितनहोउ तजौ दुखजाला ॥
बजन्मतहौं सपदि तलातल । सकल दुष्टहनिहौं अपने बल ॥
जनिपरिताप करौ निजजीवा । पीड़ामिटिहि आइ सुखसीवा ॥
जागेद्वौ असस्वप्न बिलोकी । गतदुखमनौं लखादिन कोकी ॥
तेहि अवसरशतमन्यअयोनी । त्र्यंबकादि सुरसुनुपतिक्षोनी ॥
सबनिजनिजबिमानचढ़िआये । यदुपतिसदनतुरतचलिआये ॥
अलख देह बृंदारक धारी । वेदध्वनि अस्तुति अनुसारी ॥

नभमें सकल विमान सुहाये। मानहु उडुगण अति नियराये ॥
दो० लखे न काहू देवते सबन सुनी ध्वनि सोइ।
प्रतिहारन अचरज लहा किमि कवि वरणै कोइ ॥
छं० कविवरणिकिमिकरिकहैसोगतिचारितजोकाहुनलहो।
वसुदेवदेवकिमुदितमनध्वनिसुनतनिजमनयोंकहो ॥
अब स्वप्न साँचो भयो हमरो दुःख हरि विनशाइहैं।
मंगल मनोहर कृष्ण कीरति सदा कविजन गाइहैं ॥
दो० निजनिज लोकन सुरगये करिविनती प्रभुकेरि।
आनँदभे वसुदेवअरु देवकि यह गति हेरि ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषांधकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांसंकर्षणजन्मगर्भस्तुतिवर्णनो
नामतृतीयोऽध्यायः ३॥
दो० बालरूप धरि कृष्णके चरण कमल धरि ध्यान।
बरणौं जन्म चरित्र अब सुनौ सोसकल सुजान ॥
जन्मकाल जब हरिकर भयऊ। जगतसकल आनँद सों छयऊ॥
अमरन सकल भयो सुखभारी। असुरसमूह डरे अघकारी ॥
भवदुख तिमिर नशासब अंगा। जन्मत हरि जिमि बालपतंगा॥
बन उपबन कुसुमित नवपाता। जोलखिमुनिमनविहँगभुलाता॥
सरवर सरित भरे सब नारे। बहुत दिनन के सूखे डारे॥
द्विजगण बोलत विविधप्रकारा। नगरग्राम प्रति मंगलचारा॥
करत नारि नर विथुर बिसारे। जहँ तहँ विप्रन यज्ञ सम्हारे॥
दशौं ककुभ आशापति हरषे। सानँद सबन फलपिता वरषे॥
व्रजमण्डल ऊपर घन छाये। चढ़िचढ़िनिजविमानसुरआये॥
दो० कुसुमावलि छोड़त विबुध विद्याधर गन्धर्व।
गावत हरियश भांतिबहु अन्य जाति सुरसर्व ॥
सो० ढोल दमामे भेरि ते बजाय प्रभु गुण भनत।
व्रज के सर्व बसेरि सुनत अप्सरा गान ते ॥
हरिजन सुनत बधिर खलनाहीं। हरिगतिअगमसोअहैसदाहीं॥

भादौं असित अष्टमि बुधवारा। सुभग रोहिणी-ऋक्षविचारा॥
अर्द्ध रैनि जन्मे भगवाना। सो चरित्र नहिंजात बखाना॥
शशिमुख मेघ बरण तनश्यामे। कमल नैन देखतमन लामे॥
शिरपर मुकुट बसन कटिपीता। जोलखि देवकि कर दुखवीता॥
उरसोहत वैजन्ती माला। भुजप्रलंब अरुद्दयविशाला॥
अभरण रत्न जटित तन राजत। सुभग चतुर्भुज रूपविराजत॥
चारुनैनउ नासिका कीरा। निरखत नशे अखिलभवभीरा॥
दो॰ शंखचक्र अरु गदाकर कंज मनोहर भूप।
देवकि अरु बसुदेवके सन्मुख याहीरूप॥
ठाढ़भयो गोविंदजू लखि अचरज तिनकीन्ह।
ज्ञाननैन दंपति बहुरि जानिईश कहैलीन्ह॥
छं॰ पहिचानिहरिजगपालदंपतिजोरिकरविनतीकरी।
जय देवदेव कृपालसज्जन दुष्टवनपावकहरी॥
बड़भागयहमरोउदितभो अवनाथदर्शनपाइकै।
छूट्योजराअरुमृत्युदुख किमिकहौंतवयशगाइकै॥
दो॰ करि विनती वसुदेव तब सकल सुनाय प्रसंग।
जेहिविधि दीन्हो कंस दुख कह्यो अंग प्रत्यंग॥
कह्यो मुरारि सुनो मम बानी। चिन्ता तजौ मोहिं सुत जानी॥
केवल तुव दुखलगि तनधारा। अबयहिविधि करिकरौ विचारा॥
गोकुल हमहिं देहु पहुँचाई। यशुमति अहै कन्यका जाई॥
पलटि लाइ कंसहि सो दीजै। निज कहनी परिपूरण कीजै॥
कारण मोर जानकर एहा। यशुमति नन्द प्रथमही देहा॥
उग्रकीन्ह तप मोहिं मनुजाई। रहों कछुक दिन तहँ लरिकाई॥
कंसमारि तुव सेवा करिहौं। भरौं पीर विपदा सब हरिहौं॥
कहि अस बालरूप बनि स्वामी। रोवन लगे नाग अरिगामी॥
दो॰ श्री हरि माया मोह लिय वसुदेव देवकि ज्ञान।
जानेउ सुत हमरे भयो यह निजमन अनुमान॥
धेनु सहस दशमन बसुदेवा। संकल्पी मनाइ सब देवा॥

सुतउछंगि निज हृदयलगावा। निशिकरबदनदेखिसुखपावा॥
पुनि दोउ भरैं उसासन भारी। इमि आपस में कहत दुखारी॥
जेहि बिधि बचै बाल कृत सोई। कीजै जो सहाय बिधि होई॥
को अस जहां राखिये याही। बचै कंसते भाइय काही॥
पुनि बसुदेव कहा सुनु नारी। लिखे भालबिधि अंकबिचारी॥
सो होनिहार मिटैगो नाहीं। कहा देवकी सदुख तहांहीं॥
प्रीतम बड़े नन्द पति तोरे। बचै पुत्र तिन गृह हद मोरे॥

दो० यशुमति हरिहि कलेश मम या महँ संशय नाहिं।
सुतहि तहां करिआउ पति जहां रोहिणी आहिं॥

सो० बिकल कहा बसुदेव किमि छूटै बन्धन कठिन।
करत बारता एव आपु छूटि गइ बंदि सब॥

सकल कपाट खुले चहुँ द्वारा। रक्षक सोइगये तेहि बारा॥
लखि यह यदुप कीन्ह प्रस्थाना। मेघ मंद ध्वनि नभघहराना॥
शूर्पधारि सुतधरिनिज शीशा। गोकुल गमन कीन्हअवनीशा॥
पाछे कंठीरव हुंकारा। सूझत कछु न निबिड़ अँधियारा॥
यमुना उमड़ानी लखि आगे। तटह्वै ठाढ़ बिचारन लागे॥
पाछे पुंडरीक कृत शोरा। अग्र निम्नगा बाह प्रघोरा॥
गोकुल जाउँ दैव केहि रीती। धरि धीरज हरिपद करिप्रीती॥
मारतंड दुहितहि धसि परेऊ। जीवनमरन शोच परिहरेऊ॥

दो० जिमि जिमि आगेजात सो तिमितिमि बढ़तप्रवाह।
अमृत नासिका लगि बढ्यो भो व्याकुल नरनाह॥

सो० जानि बिकल गोपाल पद बढ़ाय हूँकतभयो।
परशत पगततकाल थाहभई सरिता अगम॥

गये पार तरि गोकुल ग्रामा। पहुँचे जाइ नन्दके धामा॥
खुले कपाट पाइ प्रविशे तहँ। सोवत सब अचेत मंदिर महँ॥
माया असि मोहनि नृप डारी। कहत बनतनहिं अचरजभारी॥
यशुमति सुताजन्म नहिंजाना। लै बसुदेव सो श्रीभगवाना॥
निकट यशोदा दीन्ह सोवाई। ताकर कन्या लीन्ह उठाई॥

झटित जिष्णु लीन्हो तेहिबारा। सरिता उतरि भवन पगुधारा॥
देवकि तहँ शोचति जेहि भाँती। भूप दशासो नहिं कहिजाती॥
पति सुत शोच अमिततनतासू। पुनि बन्दीगृह शून्यअवासू॥
दो० कन्या लै बसुदेव सो ताकहँ दीन्ही आइ।
कुशल क्षेम फिरि नन्दकी ताहि कही समुझाइ॥
सुख प्रसन्न बोली तब नारी। सुनो प्राणपति बात हमारी॥
अब चहु कंस हनै नहिं शोचू। बच्यो पुत्र जगु कहै न पोचू॥
कहा महामुनि सुनु महिपाला। कन्या लै आये जेहि काला॥
बन्द कपाट भये तेहि बेला। हरिमाया कर अद्भुत खेला॥
बहुरिसुता रोदन तेहि ठाना। ध्वनि सुनि जगे पहरुवानाना॥
निज निज आयुधबलबनसम्हारे। लघु भुशुण्डि दागी चहुँद्वारे॥
शब्द अघात सुनत गजगाजे। पंचानन गूँजे मृग भाजे॥
श्वानशब्दकृतनिशिअँधियारी। नभघन घटा छटा छबिकारी॥
दो० हरषित चला अघोर गति ताहि समय रखवार।
कहाजाइ नृप कंस सों जन्म्यो शत्रु तुम्हार॥
सो० सुनत कंस बिन प्रान होत भयो पुनि गिरामहि।
मंगल हरिपद ध्यान बैर भाव लागो करन॥
इतिश्री मद्विविधकिल्बिषांधकारादिनमणि श्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदास विरचितायां श्रीकृष्णचन्द्रजन्मवर्णनो
नाम चतुर्थोऽध्यायः ४॥
दो० परिहरि रुक्मिणि रमण पद सेइय काको और।
सुखदायक संतन सदा कृष्ण देव शिरमौर॥
बालक जन्म सुनत घबरावा। असिकरगहिव्याकुलह्वै धावा॥
गिरत परत बिथुर शिर केशा। चलत प्रस्वेद शरीर नरेशा॥
उर धकधकी भयातुर भूपा। देवकि ढिग पहुँचो यमरूपा॥
कन्या छीनि लई जड़ तासू। तब देवकि किय बचन प्रकासू॥
जोरि हाथ कह सुनु ममभाई। यह भानजी तोरि मैं जाई॥
अवशि त्याग यहत्यागन योगू। यहि प्रतिपालि मेटिहौं सोगू॥

विदित शास्त्र सुत तें मम मारे। अति दुख तिनकर अहै हमारे॥
करत अलेख पाप केहि अर्थ। तजु कन्या तू अहै समर्थ॥
दो० कंस भनो विकलित तर्हि सुनु मतिमन्द महान।
जीवत दुहिता तजों नहिं जब लगि घटमें प्रान॥
जो यहि धेरै हने सो मोहीं। कहि असस्रपदि चलासुद्धीही॥
बाहिर भवन शिला पकड़ारी। पद गहि फेरि सुता बिधुरारी॥
पटका चहत बीचही छूटी। जीवन आस कंस की टूटी॥
जाइ अकाश कही अस बानी। रे मतिमंद कंस अभिमानी॥
आपन काल बचावै लागी। मोरहतनचह कुमतिहिपागी॥
उपज्यो तोर शत्रु जगमाहीं। अब भा काल बचै करनाहीं॥
विस्मय सुनत कंस उर छावा। कृष्णमातुपितुढिग चलिआवा॥
बंधन छोरि कटाइसि बेरी। कृत करजोरि विनय तिनकेरी॥
दो० अधिक दुरित यह कीन्ह मैं हने तुम्हारे बाल।
लागकलंक अगासवड़ कब छूटों केहि काल॥
मृषा भनंत बाक भइ पाछे। देवचकिकहिजिन बरयउआछे॥
कहिनि देवकी अष्टम बाला। उपजिहिकंस तोर सो काला॥
प्रगटो सो न सुता भइ आई। बचसत्य सो वन बास सिधाई॥
मोपर दया करो सुत नेहा। मोर दोष नहिं कारण एहा॥
लोगहि कर्माधस जग कैसे। जीव स्थावर चर सब ऐसे॥
यथा कीश बश नट के होई। जो चह नाच नचावतसोई॥
जन्मे जग संयोग वियोगा। जीवन निधनलहतसबलोगा॥
यह न मिटत कौनों विधिजगमें। पितुसुतद्वयपथीजिमिमगमें॥
सो० ज्ञानवान जे लोग जीवन मरण ते समलखत।
अरिहितु दुख अरु भोग मान अमान समानहीं॥
मायामद अहमित जग जोई। मित्रहि शत्रु लखत खलसोई॥
तुम बड़साधु अहो सतिवादी। जस भे हरिश्चंद्र जनकादी॥
मेरी मीचु बचावै देवा। दयउपुत्रनिज कोउनहिं देवा॥
बार बार अस कहि करजोरे। विविध भांति के करतनिहोरे॥

कह बसुदेव सत्य नृप कहयऊ। बिधिकर्त्तव अदोषतुमअहयऊ॥
बरण भाल मम लिख अजसोई। निस्संदेह अवशि नृपहोई॥
कंस प्रसन्न भयो सुनि बानी। प्रफुलितद्वौजन निजगृहआनी॥
रस रस व्यंजन सरस जेंवाये। भूषण बसन सुभग पहिराये॥
सादरकरि सब बिधि सेवकाई। दीन्हें दोउजन सदन पठाई॥
निज मंत्री सन कहसि हँकारी। अरिजन्म्यो यहसुता पुकारी॥
यहि ते प्रथम देववध कीजे। अमर लोक महँ रहै न दीजै॥
देव गिरा जिन मृषा सुनाई। ममभगिनी पुनिदुखितकराई॥

दो० अष्टम सुत बसुदेवको काल बतायो मोहिं।
सो उपज्यो नहिं तासु गृह कासमुझाऊं तोहिं॥

नृप रुख हेरि सचिव अस बोला। महाराज सुनु समर अडोला॥
त्रिदश हनव नहिंकठिन सुरारी। सुमनस सबदिनकेरभिखारी॥
जब कोपो तुम नाथ रिसाई। अखिलबिदौताचलिहिपराई॥
को समर्थ तुव संग्रम योगा। सुनौ बृतान्तकहतबुधलोगा॥
ब्रह्मा आठ याम हरि ध्याना। करत रहत सुनु नृप बलवाना॥
बिजया कनक भषत गंगाधर। जग प्रसिद्ध कौशिकनृपकादर॥
नारायण संग्राम न जानत। चपलासंग सदासुख मानत॥
बोल कंस सुनु सचिव सुभाषा। मम मन एक अहै अभिलाषा॥

दो० दानवारि मिलिजाय कहुं तासँग ठानौं रारि।
सुनु मंत्री संग्रामकरि मन को करौं सुखारि॥
जो कदाचि मिलिजाइकहुँ तौ किमि जीतौंताहि।
असउपायकोउशोचिभखु सकलशोचमिटिजाहि॥

सविनय सचिवकहा सुनुनाहा। सहज उपाय गुनो मनमाहा॥
जहँ जहँ करत निवास मुरारी। करौ उपाधि तहां तहँ भारी॥
ब्राह्मण विष्णुभक्त मुनि योगी। तपी जपी पुनि रागवियोगी॥
संन्यासी इत्यादि अनेका। जे बिवेक मग टेके टेका॥
इनसबकर अब करौ बिनासा। वृद्धतरुण बालक दोउ त्रासा॥
भक्तदुखितलखि प्रगटिहि सोई। सुनिनृपबोलिअजनिपति जोई॥

जे जे सचिव कहे तिन घाता। जाय करौ आयसु मम ताता॥
यह सुनि दैत्य सकलअनुराने। जिमि सुधर्म में साधु सयाने॥
कोटिन खल मंत्री सह धाये। दुष्टन बहु विधि रूप बनाये॥
दो० नगर ग्राम प्रति धेनु द्विज बालक औ हरिदास।
जेहि छलि पावत कपट ते दैहि बधत दुष्ट दै त्रास॥
मंगल इमि ते अधम नर कृत उपाधि बहुभाँति।
सोचरितनिन्दकअधिक किमिमोसनकहिजाति॥
इतिश्री माद्विविधकविविधान्यवरदिनमणिश्रीकृष्णप्रिया
यां मंगलदास विरचितायां कन्याबध कंसोपद्रववर्णनो
नामपंचमोऽध्यायः ५॥
दो० गुरुपद रज अंजन चषन हो लगाइ कविराज।
राधावल्लभको चरित भणत लवा अब बाज॥
श्रीमुनिनृपहिकहतपुनि भयऊ। यशुमतिनन्दप्रथमतपकियऊ॥
सुनो सप्रम सोइ इतिहासा। दम्पति तपकीन्होसुतआसा॥
उग्र तपस्या निरखि महीशा। आपुहिप्रकट भयउजगदीशा॥
वर दीन्हों तिनको यह भूपा। कछुदिनतुम्हसुतहुअनुरूपा॥
रहिहौं आइ सत्य करि जानू। जाहुनिलय कीजोमनमानू॥
तहां जात भय कारण ताही। भाद्रअसित बुधअष्टमि माहीं॥
अर्द्धनिशा जब जागियशोदा। देखा सौम्य सून निज गोदा॥
आनंदित सो भइ नृप कैसे। दीन अमरपत्री लहि जैसे॥
नंदहि बोलिलियो त्रिय आसू। सुतजन्मोपति निरखुप्रकासू॥
नन्द सुनत सहसा उठिधाये। अनुपम आनंदसों तनछाये॥
तदपि बुद्धि सम उपमा गाई। पूरण भनत दुखितई पाई॥
जिमि दारिद्र उपास नितकरई। अन्न आश बहु संकट भरई॥
दो० दैवयोग ते ताहि कहुँ नृपता बड़ि मिलिजाय।
फिरि आनँद तेहिपुरुषकर कहे त्रिबुधकागाय॥
ऐसेइ सुख्य नन्द नृप जान्यो। आपनजन्मसुफलअनुमान्यो॥
प्रात समय द्विज ज्योतिषज्ञाता। बोले नन्द सरुचि सनभ्राता॥

ज्योतिष ग्रंथ काँख गहि भूसुर। नन्दालय आये भूमीश्वर॥
करि आदर सत्कार महाना। साष्टांग दण्डवत सुजाना॥
स्वौतासन द्विज बर बैठाये। बिहँसिनन्द असबचनसुनाये॥
उपज्यो पुत्र लग्न शोभौवर। कहिविधिसबग्रह द्विजताकेपर॥
द्विजन वेदविधिसम्बत मासा। तिथिदिनऋक्षयोग अनयासा॥
लिखिसबविधिशुभलग्नविचारी। समुझिमहिसुरनगिराउचारी॥
दो० शास्त्र रीति तब सूनुके ग्रह ऋक्षादिक जोइ।
सबौ विधि पंचांग शुभ सुनु अब लक्षण सोइ॥
निश्चर तूल सखी यह ताता। धरा भार हर जिमि तृण बाता॥
दैत्य मही के सब यहहतिहै। याकर दूसर धाता गति है॥
गोपी नाथ कहैहै आगे। यहियशजग गाइहिअनुरागे॥
नन्द सुनत सुख लहा अपारा। उभय लक्ष गो नृपतेहिबारा॥
चामीकर रचि शृंग सोहाये। खुर नृप दुर्बनता मढ़ाये॥
ताम्र पृष्ठि वासांसि ओढ़ाई। मुदित नन्द संकल्प कराई॥
दान अनेक अपर तिनदीन्हें। दै दक्षिणाबिदा द्विजकीन्हें॥
आशिर्बाद पढ़त महिदेवा। गये सराहत गोपति सेवा॥
दो० बहुरि नन्द सानंदनृप मंगलबदनि बोलाइ।
सत्वर आईं सकल ते भाजन लगी बधाइ॥
बैजंत्री डफ ढोल बजावैं। नृत्यत नृत्यक गायक गावैं॥
बन्दीजन बिरदावलि साजत। जनु तिहुपुर मंगल तहँराजत॥
गोकुल ग्वाल बसत नृपजेते। नारिन सहित चले सबतेते॥
भांति भांति के बेप बनाये। नाचत गावत करत बधाये॥
दधिभाजन निजनिजशिरधारें। भेंट देनगये नन्ददुवारे॥
नन्दसदन भइ भीर नृपाला। जेहि अवसरआये सबग्वाला॥
लागतधका गिरत दधिभाजन। दधिकांदौकीन्हीं तिनराजन॥
गोकुलगृह बीथिका बजारा। दधि दधि दृष्टिपरत तेहिबारा॥
दो० खेलिचुके दधिकांदवहि जब सब ग्वाल नृपाल।
भोजन सबहि जिमायऊ नन्दमहर तेहि काल॥

सभन सवन पहिरायपुनि तिलक शीश करिभूप।
बिदाकरे सब नन्दजू निज निज रुचि अनुरूप॥
यहिबिधिबहुतदिवसलगिराजा। बाजिबधाइ सहितसुखसाजा॥
तेहि अवसर मांगा जेहि जोई। दीन्हा नन्द ताहिनृप सोई॥
जन्म कर्म श्रुति बिधिवतकीन्हा। दान भूप महिदेवन दीन्हा॥
है निश्चिन्त बधाई तेरे। बोले सकल ग्वाल निजनेरे॥
बांधव सुनो सुना हम आहीं। बालक बधत कंस जगमाहीं॥
का जानिय प्रपंच करि कोई। दुष्टहिं कहै बाल बध होई॥
ताते उचित यहै सब मिलिकै। देआवैं बरसौंड़ी चलिकै॥
नन्द बचन सुनि केहि भलभाये। घृतदधि पय मुद्रासबल्याये॥
दो० भरिभरि शकटन नन्दसँग गोकुल ते सबग्वाल।
तुरतगये मथुरा नगर भेंटन कंस नृपाल॥
जाय सभातिननृपहि जोहारा। सबहि यथोचित वर बैठारा॥
देइभेंट महि दंड चुकाई। पलटे सब ग्वाल भुवराई॥
पहुँचे सब हंसजा समीपा। समाचारलहि यदुकुलदीपा॥
नंदहि मिले जाइ तब आतुर। पूंछि कुशल बोले नृपचातुर॥
तुम सम मीत सगा जगमाहीं। हमरे कोउ अब दूसर नाहीं॥
कठिनविपतिबश जबहमभयऊ। तुवघर नारि पठइ तब दयऊ॥
गर्भवती रोहिणि मम नारी। तुमप्रतिपालिदियोसुखभारी॥
जन्मो ताके सुत तव गेहा। पाल्योतनयसो सहितसनेहा॥
कहँलगि सखा तोरि करतूती। वरणिकहौं मोरीमति सूती॥
पाछे अब आगे तिहुँ काला। भो न अहै न होइ हितुपाला॥
उपमा कासुदेउँ सुनु मीता। करै सदा हरि तुव मन चीता॥
कहि अस रामकृष्ण कुशलाई। रानि न सहित पूंछि भुवराई॥
दो० कहा नन्द बसुदेव सन तव दाया दिन राति।
भवन हमारे सकल बिधि सुख छावा सब भाँति॥
तनय तुम्हार मोर जिय मूला। है बलदेव कुशल गत शूला॥
जिनके जन्मतपूरुय तुम्हारे। भयउ प्रगट यक पुत्र हमारे॥

दुख लव लेश रहा नहिं मोरे। दुखित परन्तु अहौं दुख तोरे॥
सुनत नन्द कहनी दुखसानी। यदुकुल कंजरस्मि कहवानी॥
सुहृदसुनो विधि गति विपरीता। होतन अहै अपन मनचीता॥
कर्म रेख नाशत नहिं भाई। परारब्धि सन कछु न बसाई॥
नरनागर बुधि सागर ज्ञानी। शोचत नहिं असार भवजानी॥
मात पिता सोदर सुत नाती। प्रमदा आदि सगे सबभांती॥

दो० अंत समय सुतबन्धु प्रिय होत न संगी कोइ।
दुख सुख जग व्यवहार है बुध न विचारतसोइ॥
पैंठहाट जिमिजाइकोउ निजस्वारथ अनुमानि।
मिलै बाटमहँ आन नर संगचलै मुदमानि॥

छं० मुदमानि सँगते जात पैंठहिं पंथ महँ कोउ छूटहीं।
सब ताकि निजनिज स्वारथहि पुनिपैंठमहँ सबफूटहीं॥
कहुकासुदुखसुख मिलन बिछुरनबिबुधजनसो मानहीं।
संसारइमि सुवजारसम सुनु मित्र हम सच जानहीं॥
यहिभांतिकहिपुनिनन्दसों भए जाहु बेगि निजालये।
चाण्डाल कंस नृशाल कोटिन बाल निजकर सों हये॥
जहँलागिमहिमहँ चलत बश तहँलागिसुतन ढुँढ़ाइकै।
मारत महीपति दीन कें अस अधम सो मँगवाइकै॥
तुम सकल जुरिमिलिइहांआये कंसको करभरिदियो।
उत फिरत ढूँढ़त असुरबालक हाय तुमयहु काकियो॥
कोजान कोउखल जाइ गोकुल सून लखिछलबलकरै।
यह सुनत मिलिवसुदेवको तब नंद धावत भे घरै॥

दो० ग्वाल सकल निज साथलै मथुराते अकुलाइ।
चलत भये गोकुलहितब मंगल हरिपदध्याइ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रिया
यांमंगलदासविरचितायांकृष्णजन्मोत्सवनंदमथुरा
गमनवर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः ६॥

दो० शमन कलेश विचारि मन राधारमण चरित्र।

वरणतहौंबुधजनसुनों यह किल्विषतममित्र ॥
बोले पुनि मुनि गिरा सोहाई। सुनुकुजमातु कंत चितलाई ॥
सचिव कंसकर सँग रजनीशा। हनत फिरत चहुँ ओरमहीशा ॥
सो वृतांत प्रथमहिं हमगावा। अबसुनु अपरचरितमनभावा ॥
यक राक्षसी पूतना नामा। सो छल कर्म चतुरबुधिधामा ॥
नंदहि विदा कंस जब कीन्हा। ताकहँअधम बोलितबलीन्हा ॥
कहिसि जहांलग हैं यदुबंशी। तिन्हकेसुततैं आउ विध्वंशी ॥
पाइ रजायसु बन्दन कीन्हेसि। चितप्रसन्नगोकुलमगलीन्हेसि ॥
शोचिसिमन पुर सूना आहीं। बधौं सुतन यामहँ भ्रम नाहीं ॥
दो० उपजे तनय जे नन्दके ते गोपी तन धारि।
छलबलकरिवधिआइहौं इमिनिजमनहिंविचारि ॥
षोड़श रचि शृंगार सोहावन। रव्याभरण सजे मनभावन ॥
चली कुचामृत लाइ सयानी। रूप मोहनी माया ठानी ॥
जलज कुसुम कर सोहत वाके। अंग अंग प्रति सुन्दर ताके ॥
नखशिखकरितनसाज सहेली। बनीराक्षसिनित्रियअलबेली ॥
उपमा कहत बनत नहिं कोई। लक्ष्मी बदत दोष कछुहोई ॥
शिवा कहत अर्द्धांगिनि नारी। रंभा भणत मोरि मतिहारी ॥
सत्योपमा एक अनुमानी। सूपनखा रघुनाथ कहानी ॥
यकु परंतु भ्रम है यहि माहीं। आनसकल पूरणघटिनाहीं ॥
जबगोकुलगइ अली प्रपंचिनि। नंदभवनपैठी त्रियबंचिनि ॥
निरखि सकल सुंदरता तासू। मोहीं नारिभयउ बुधिनासू ॥
बैठि यशोदा तट सुख मानी। कुशलक्षेमपूंछी प्रियबानी ॥
पुनि दीन्हीं असीस मुदपाई। चिरजीवै तव कुंवर कन्हाई ॥
दो० कोटि वर्षलागि होइबै तव सुतकी सुनु रानि।
बारम्बार असीसअस कहि छलसहित बखानि ॥
प्रीति बढ़ाइ सप्रेम तेहि यशुदा करते बाल।
गोदलयो मुख कुचदयो सुनुभलचरितभुवाल ॥
देखौ माया मोह अपारा। अग्नि नशावन कीट विचारा ॥

चक्षुस्रवीचह द्विजपतिमारा । तिमि यहि दुष्टिनि कर्मपसारा ॥
यथा शशी हरिश्चमनठाना । तथा करयो जड़नी अज्ञाना ॥
धौकरकुचगहि कृपानिधाना । तासु प्राण सहकृत पय पाना ॥
तब ह्वै विकल पूतना टेरो । यशुमति यह कस बालक तेरो ॥
सुनु मनुजादन है यमदूता । रजु धोखे पकर्‌यो अहि पूता ॥
जीवत आजु बचौं यहिहाथा । हे शंकर शंकर भव नाथा ॥
ऐहौं यहि पुर नाहिं बहोरी । असकहि चपरि चलीमतिथोरी ॥
दो० गहे व्याल व्यालारिके चहु बचिजाय प्रवीन ।
दानवारिकर असुर परि उबरत संशय पीन ॥
बाहिर ग्राम गई भजि नारी । तदपि न तज्यो उरोज मुरारी ॥
क्षीरपानकरितेहिजियलीन्हा । आपन मन भायो प्रभुकीन्हा ॥
गिरी महीतल प्राण निपाता । शब्दभयउअसजस पविपाता ॥
दारुण शब्द सुनत त्रियधाई । आतुर तासु निकट चलिआई ॥
रोदत बदत रोहिणी रानी । जनु धन खुयउ दरिद्री प्रानी ॥
यशुदाअस अकुलानी मनमें । शव समभई जीव नहिं तनमें ॥
ग्राम लोग सब पाछे धाये । नर नारी समूह चलिआये ॥
दीखपरा तन योजन आधे । पय हरि पियत उरजकर साधे ॥
दो० आशु यशोदा झपटि सुत कर उठाय हियलाय ।
चूमिबदनआनँदभई जिमिअहि मणिगतपाय ॥
आतुर सद्म गई लै श्यामैं । बोले गुणी बसत जे ग्रामैं ॥
तिनहिंपूछिधनकरिन्योछावरि । समुझितासुगतिहोतसुबावरि ॥
गोपी ग्वाल पूतना पासा । करत परस्पर बचन प्रकासा ॥
गिरी मही जेहि बेरियाँ भाई । घोर शब्द तब दयउ सुनाई ॥
अबलग धकधकात भयछाती । बालक बच्यो दैव केहि भाँती ॥
ताही समय नंद तहँ आये । देखतही मन संभ्रम छये ॥
परी मृतक राक्षसी कराला । घेरेचहुंदिशि तेहित्रियग्वाला ॥
पूछिनि यह उपाधि कसभाई । कहिसिग्वालयकशीशनवाई ॥
दो० सुंदर तन धरि भवन तब गई प्रथम यह राज ।

मोहीं अबला देखिमुख भूला सकल समाज ॥
सो० यहिहरि लयउ उठाय पयप्यावन लागी तुरत।
पुनि जानान उपाय मरी कौनबिधि सुतश्च्यो॥
बोलेनंद कुशल बड़ि भयऊ। पुत्रमोर यहि करवाचि गयऊ॥
अरुन गिरी पुर ऊपर आई। नतजातो सब ग्राम नशाई॥
यहितल परत मरत शकनाहीं। कहि असनन्द गये गृहमाहीं॥
विप्रबोलि दीन्हो बहुदाना। इतग्वालनलै आयुधनाना॥
काटि देहपल अग्नि जराई। अस्थि महीमहँ दीन्ह गड़ाई॥
जरत शरीर उठी शुभवासा। छाइरही जगसो दश आसा॥
सुनत महीप जोरियुग पानी। चकित चित्तकहि कोमलबानी॥
महाराज राक्षसिनि चँडारी। मनमलीन मदपल आहारी॥
दो० ताके तनते गंधिशुभ क्यों निकरी मुनिराय।
कहौमोहिं समुझाइ कै ममभ्रम सबबिनशाय॥
छं० बिनशाय भ्रमसो कथा सिगरी कहौ प्रभु बिस्तारिकै।
मुनि कहा सुनुमहिपाल हरि पयपान कियसुविचारिकै॥
जगवन्दिते तेहिं मोचियो यहिते सुवासित तन भयो।
नरनाहको भ्रमसुनतहीं तेहि समय बुधजन सब गयो॥
दो० अधम निशाचरिमलिन मन पाप गलित तन जासु।
मुक्ति दई तेहि कृष्ण जेहि मंगल भजु पदतासु॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांपूतनावधवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥
दो० भवदधि अगम अपारहै नीर जान जसईस।
तुव तापर आरूढ़ ह्वै पारजात त्रिसरीस॥
कुरुकुल दीप सुनत मन काया। श्रीशुकमुनिचरणतकरिदाया॥
जन्म नक्षत्र कृष्ण कर आवा। मातु यशोमति कस्रोबधावा॥
आयसु नंद चरहि असदयऊ। बैसरिच दिन सुतकरभयऊ॥
दसुधा मर ममनगर बसेरी। सबहि निमंत्रबिनयकहिमेरी॥
नलवासी जे ज्ञानि अज्ञानी। निवतसकलनरनियसतनारी॥

चल्योदूत पावत अनुशासन । गयोप्रथम उर्बरा सुरासन ॥
नृप सँदेश भणि निवता दयऊ । आनसमस्तगृहन पुनिगयऊ ॥
दै निमंत्र घर घर फिरि आवा । आवतसबकहि नृपहिसुनावा ॥
दो० आये तबहिं समाजजुरि बिप्रादिक सब लोग ।
करि आदर बैठारेऊ जो जेहि आसन योग ॥
दै बहुदानकुंभिनी देवा । बिदा किये करिकै बड़िसेवा ॥
आनजाति जो कोउजसभावा । करिसत्कार अनंद घुमावा ॥
ज्ञाति बन्धुजो तेहि दिन आये । उज्ज्वल बमनसबहिपहिराये ॥
छविधि भोज्य रचि सब बैठाई । चतुर सुआर परोसतभाई ॥
तिनसँग मातु यशोदा रानी । लगी परोसन आनँदसानी ॥
रोहिणिकरत टहल गृह केरी । जेंवत सब प्रियबन्धु बसेरी ॥
तहँ गोपिका गीत बहुगावैं । आनँद सों डफ ढोलबजावैं ॥
यहि सुखमगन नारिनरभयऊ । बिसरिश्यामसुधिसबकहँगयऊ ॥
दो० शकटी पर्म बिशालयक तेहितर पालन माहिं ।
सोवत परे अचेत हरि काहुइमो सुधि नाहिं ॥
लागिक्षुधाजागे खल भानन । पदअगुष्ठदियो निज आनन ॥
रोवंत दशदिशि हेरत स्वामी । मन बिहसत प्रभु अंतरयामी ॥
नभमारग खलयक तेहिबेला । जातलखा हरिबाल अकेला ॥
निजमन शोचत सुर आराती । सुतनिरखन बिहरत ममछाती ॥
महाबली उपजो यहुकोई । अबहीं हनों जाइ दुखखोई ॥
प्रबल पूतना यहि सुनभागी । बैरलेउँ असमनहिं बिचारी ॥
शकटरूप धरि शकट समाना । प्रभु अंतरयामी सबजाना ॥
शकटासुर तेहिते तेहिनामा । भो महिपाल सैमुखीधामा ॥
दो० चटक्यो शकटा मारतेहिं लखि श्रीहरि बिलखाइ ।
चरण प्रहार्यो शकट महँ गिर्यो दूरि भहराइ ॥
चक्रादिक शकटी करटूटे । गिरत दुग्ध भाजन बहुफूटे ॥
गोरसबहा भवन असभाई । जस पावस पयबहत तोराई ॥
शकटी भाजन टूटे फूटे । शब्द भयउ जसपवि हरि छूटे ॥

सुनत शब्द नरतिय गणधाये। सत्वर कृष्णचंद पहँ आये॥
यशुदा गोहरि बच्छ निहारी। सहसा लीन्ह उठाइ मुरारी॥
चूँवि मुखारविंद हिय दीन्हों। क्षीर पियाइ सुखी सुत कीन्हों॥
यह आश्चर्य्य बिलोकत जोई। शोचत ठाढ़ठगोसो सोई॥
जो जेहिमन आवत अनुमाना। तेहि अनुसारसोकरतबखाना॥
दो० काहूलखोन कामयो शकटटूट किमिभूप।
चकितविचारतलोगसब निज निज मति अनुरूप॥
कहत परस्पर विधि भल करेऊ। बचासूनु शकटा खसिपरेऊ॥
टूटाशकट शोच नहिं आई। दबत बचा यह बाज कन्हाई॥
ऐसइठाम नीचकृत बाधा। होइजहां सुन्दर मलश्राधा॥
इन्द्री मास भई बय हरिकै। कंसमहीपति चिन्ताकरिकै॥
तृणावर्त्त बोल्यो अकुलाई। गोकुल जाहु कहा समुझाई॥
पठई प्रथम पूतना नारी। तहां ताहि केहु बीर सँहारी॥
जो जीवत होती सुनुताता। आवति तौदिन भे यहिबाता॥
धरि बकरूपसो गोकुल आवा। उहाँ कृष्ण असकीन्ह बनावा॥
सोहत श्याम उछंग यशोदा। करिमाया भारी भे गोदा॥
निजबल समर्थाँभा नँदनारी। थँभेन तब महि दिय बैठारी॥
धरावौंडरा रूप निशाचर। बिकलहोतलखिताहि चराचर॥
अंधकार गोकुल खलछावा। तिमिरनिदान न मगकोउपावा॥
दो० दिननिशि समदीसन लगा भयउ घोर अँधियार।
प्रबल धनंजय बहत नृप गोकुलमहँ तेहिबार॥
पत्री गिरि पत्री भहराने। अंधकार महँ दुखित भुलाने॥
अस्मउड़ात यशोदा देखी। हरिहि उठावन लागि बिशेखी॥
उठेन करि पौरुष सोहारी। कर सरोज तब लीन्हसिटारी॥
तृणावर्त्त तेहि अवसर आयो। गहिहरि अधमनाककहँधायो॥
पुनिनिजमनअसकरतविचारा। हनौं सुतहि कोकरै उबारा॥
उतकृत अस बिचार बशकाला। इतयशुमति नलखा गोपाला॥
नागाकथा कहन समभाना। कहि बिलखानी भूपमहाना॥

रुदनशब्द सुनि गोपीग्वाला । अविचट धाइचले महिपाला ॥
दो० टोहत सब आवत ममहिं सूझत कछुन अँधेर ।
ठोकर लागिमहि गिरिपरत महा विपति तेहिबेर ॥
युवा बाल अरु जरठ गोपाला । ढूंढत हरिहिबिकलतेहिकाला ॥
कृष्ण मातु रोहिणी समेता । रुदिबादि महितलपरतअचेता ॥
नंद पुकार मेघ ध्वनि करहीं । खोजत हरिहिदृष्टि नहिंपरहीं ॥
सकलबिकलहरिमनअनुमानी । पटक्योखलहिशिलापरआनी ॥
मरतहि असुर यम्हापवमाना । सकलतिमिरकरभयउनिदान ॥
भमे जे तमते पाइ प्रकाशू । निज निज गृहआयेसबआशू ॥
सो खल परा नन्द अँगनाई । खेलत उरपर बाल गोसाँई ॥
देखि यशोदा कण्ठ लगाये । दान हेत द्विज वृन्द बोलाये ॥
दो० दान बिबिधबिधि भूसुरन देइ बिदा करि दीन ।
मंगल दुखश्रमजगतको दूरि कृष्ण सबकीन ॥

इतिश्रीमद्विविध किल्विषान्धकारदिनमणि श्रीकृष्ण
प्रियायांमंगलदासविरचितायांशकटासुरतृणावर्त्त
बध वर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

दो० जग पालक परमात्मा धरयो स्वरुचि नर देह ।
ताहित्यागिकबिबिबुधजन काकर करियसनेह ॥
श्रीशुक कहा सुनिय बुधिबोधा । गर्गनाम यदुवंश परोधा ॥
बड़ज्ञानी मुनि ज्योतिष ज्ञाता । कहि वसुदेव बोलि असबाता ॥
दयासिन्धु गोकुललागिजाइय । नामकरण सुतकर करिआइय ॥
सगरभ रोहिणि गइ नँद धामा । ताके उपज्यो सुत गुणग्रामा ॥
तासुनाम बल बुद्धि पराक्रम । लग्नसाधिपुनि लिखियबाहिक्रम ॥
अरुयक पुत्र नंदगृह भयऊ । सोऊ तुमहिं बोलि मुनिगयऊ ॥
चित प्रसन्न सुनि यदुपति बानी । गोकुलगमनकीन्हद्विजज्ञानी ॥
पुर तट जब पहुँचो महिदेवा । नंदहि काहु कह यह भेवा ॥
दो० आवत हैं यदुकुल गुरू नाम सुभग गर्गर्षि ।
सुनत सभासदउठिचल्यो नन्दभप सुनि हर्षि ॥

भेंटि भेंट दै विनय बखानी। निजसुभाग्य सराहिमृदुबानी॥
डासि फाल्गुण भल पटआसन। कृत पूजा लाये निज आसन॥
पदपखारि लीन्हा पग पाथा। यशुमति नन्दजोरिदोउहाथा॥
सानुराग सविनय मृदुबाता। ऋषिसनकहीप्रफुल्लितगाता॥
मम बड़ भाग्य लखे पद तोरे। अब कलेश कोउरहा न मोरे॥
कियउ पवित्र हमार अगारा। चरण कृपा करि धरिदुखटारा॥
तव प्रताप द्वै सुत मम गेहा। प्रकटे सुनहु विप्र युत नेहा॥
यदुबंशी यक रोहिणि जायो। एक यशोदा सूनु कहायो॥
नामकरण अब लगिभा नाहीं। भणौनाम गुणि ज्योतिषमाहीं॥
बोले गर्ग सुनो प्रिय भाखा। गुप्तनाम राखौ गुणि राखा॥
मधुर बाक्य सुनि द्विजबर केरे। बिस्मित नन्द कहा भ्रम मेरे॥
केहि कारण न प्रकटकृतनामा। सोवृतान्तभणु द्विजगुणग्रामा॥
दो० प्रगट सभा महँ नाम कृत होइ बिदित जग बीच।
कंस सुनै मम आगमन तौभ्रम समुझै नीच॥
देवकि सुत बसुदेव चोराई। नन्द सदन दीन्हा पहुँचाई॥
सो सुधि लहि तहँ गर्ग पधारा। यह्मनसमुझिकंस बिकरारा॥
बन्धन मोर करै सुत लागी। कटु बचकहै मूढ़ता पागी॥
तुमरो दैव जानका करई। बधै तुमहिं नहिंआपुहि मरई॥
यहि कारण एकान्त अगारा। कहौंनाम गुणि ज्योतिषसारा॥
बोले नन्द विप्र भल शोचेउ। आगमन लखिहमारदुखमोचेउ॥
कहि असऋषिसहगे गृहबीचा। बैठे भवन अर्गजा सींचा॥
तवसुनिजन्मदिवसतिथिकाला। पूछिलग्न शोधी गुणपाला॥
दो० ज्योतिषमत मनयांचिकरि कही सुनो नँदराय।
रोहिणिसुतके नामअब कहौं तुमहिं समुझाय॥
संकर्षण रेवतिरमण बलदाऊ बलराम।
कालिंदीभेदन बहुरि शुभ बलबीर सुनाम॥
अरुजेहि आपन पुत्रबतावत। तासुनामअगणितश्रुतिगावत॥
तदपि उचितचाहिय कोउनामा। जन्मयो कतहं देवकी धामा॥

वासुदेव संज्ञा यहि कारण । जगप्रसिद्धकरि करौउचारण ॥
दोनों सुत ये नन्द तुम्हारे । चहुँयुग सँग उपजेगुणभारे ॥
नन्दकहा अवग्रहगुण भाखौ । निजजनजानिगुप्तजनिराखो ॥
कहमुनि सुत दूसर करतारा । गुणइनकरअतिअगमअपारा ॥
तदपि भविष्य कहौं यकबाता । ये सुतकरिहैं कंस निपाता ॥
अरु महिभार उतारिहिं भाई । इमिकहिमुनि निजगृहगेराई ॥
दो० कहाजाय बसुदेव सन गोकुल चरित ऋषीश ।
प्रफुलितचित गद्गद भये सुनतवृतांतमहीश ॥
नामकरण अस भयउ भुवाला । अपर अब्र सुनु कथारसाला ॥
रामकृष्ण दिनप्रति बाढ़तअस । शुक्लपक्ष निशिकरबाढ़तजस ॥
करत बाललीला दोउ भाई । लखिहरषत चितपितुअरुमाई ॥
नीलपीत भँगुली तन सोहै । निरखत महामुनिनमनमोहै ॥
उत्तमांग लघु लसत सिरोरुह । राजततनघनबिधुकरछबिमुह ॥
यंत्रित कठुला उर बर राजै । रुचिर खिलौना करन बिराजै ॥
भृकुटि भंग भवभय बिनशावै । तेहिका कोउकियंत्र पहिरावै ॥
जेहि निज इच्छा पुरनिहुँकीन्हें । जननीताहि खिलौनादीन्हें ॥
दो० यहि मनोहर चरितलखि भूलिजातमतिहीन ।
चीन्हतनहिं परमात्महिं जहँतहँ फिरतमलीन ॥
आंगन रुचिर न अणिसेराई । जहँ खेलत हरि दोनों भाई ॥
बातैं करत तोतरी राजा । सुनिहरषत पितुमातुसमाजा ॥
जानुपाणि धावत गिरिपरहीं । यशुमतिरोहिणिसँगसँगफिरहीं ॥
जनि काहुइ हरिगिरहिंकन्हाई । यहि कारण लागीं सँगजाई ॥
गहि गोवत्स पुच्छ उठिगिरहीं । लेहिं मातु ऊपर गहिकरहीं ॥
हृदयलगाइ पियावत क्षीरा । इमिबहु करत चरितदोउबीरा ॥
जब बड़भये श्याम असुरारी । ग्वालबाल तब लिये गुहारी ॥
पयदधिमही चोरिबे काजन । संध्या प्रात फिरैं सुनुराजन ॥
दो० शून्यालय लखिदुग्ध दधि माख खात लुटाइ ।
बचत न कौनौंबिधि चतुर चहुजस करत चोराइ ॥

ऊंच अवास धरा दधि देखी। अस कौतुकहिकरैं विशेखी॥
पीढ़ा पटा उलूखल धरिकै। तापर सखा ठाढ़ यककरिकै॥
तासु कन्ध पुनि चढ़ैं मुरारी। सींके ते दधि लेहिं उतारी॥
अल्प भखैं भाजन गहि फोरैं। पुनिदूसर गृह जाइ ढँढोरैं॥
यहिप्रकार प्रति गृह प्रतिवासर। कृतचोरी दधिनाथ चराचर॥
चोरी करत गहा त्रिय चाहैं। कौनौंविधि नश्यामकहँलाहैं॥
सम्मत नारिन तब असकीन्हा। हरिहि जाइ घरभीतरदीन्हा॥
चहूँदिशि चितै शून्यगृह जानी। जातदेखि यकअली लुकानी॥
दो० प्रविशि सद्ममाखनदही चहा चोरावन श्याम।
तबहीं हरिकर करगहे झपटि ग्वालिनी बाम॥
कहि नितप्रति दधिचोर सुत आवत संध्याप्रात।
चलुतोहि सौंपौं यशुमतिहि कहि अससो मुसकात॥
पुनिमोहन करकर निज करिकै। यशुदा पासचलीं सब जुरिकै॥
तबमाया करि दीनदयाला। तेहिसुत तेहि गहाइ नरपाला॥
दौरिसखन सँग मिले बिहारी। गइसखि जहँराजत नँदनारी॥
बन्दि चरण उरहन असदीन्हा। सुनौंमातुनिजसुतकृतकीन्हा॥
दधिमाखन ये खात चोराई। अहनिशि यहउपाधिव्रजछाई॥
धरिय गुप्त गृह बचत न सोई। लेतमनौं निजकर धरहोई॥
पावत स्वल्प लुटावत रानी। यहिसुतकरअतिअकथकहानी॥
भरा असपदधि निरखैं जबहीं। कहैं श्याम दधिखायो अबहीं॥
उतरु देहिंतौ तोहिं खवायो। पलटि मोहिंतैं चोरु बतायो॥
यहि निमित्त गहि लाइउँ आजू। पहिचानैं सुत सकल समाजू॥
हँसिहरि मातुकहा सुनु आली। काकर सुतलाई वाचाली॥
मोरसूनु नहिंसुनु मतिथोरी। श्यामहिं वृथालगावतचोरी॥
दो० मेघ बचन कहि लगि बदत लाजन आवत तोहिं।
प्रथम चीन्हु यहि बालकहि फिरि उरहनदे मोहिं॥
लखो पाणिनिजबाल निज भई विलज्जित सोइ।
बोलियशोदा कृष्णसन कहा चंद मुख जोइ॥

कृतचोरी किमर्थ परगेहा। निंदक कर्म बताइसि केहा॥
सबकुछु भवनमस सुतखाहू। जनि काहूके मन्दिर जाहू॥
श्रीहरि विहंसि मातुप्रति बानी। कहउजननिवृथलिपितियानी॥
मृषागोपिका सकल बखानें। ममसंग अमित ठठोलीठानें॥
कतहूँ बच्छ दोहनी थम्हावें। कतहुँक सदन टहल करवावें॥
द्वारकतहूँ मोहिकरि रखवारा। जाहिकाजलगिआनअगारा॥
रचिप्रपंच तवढिग ये आवें। मृषाकर्म भाखिमोर सुनावें॥
सुनि गोपिकन कृष्ण मुखदेरा। निजनिज भवनगई तेहिबेरा॥
दो० भुवनचारिदश जासुकर भृजतपलन नशिजात।
सो परमात्मा भक्तिवश दधि चोराइ व्रजखात॥
श्यान प्रमोदक चरित भवसुनिय सध्याननृलाल।
यकदिन श्रीहरिरामजी करत ख्याल सँगबाल॥
भयेलाग भूतिका तहँ श्यामा। यशुदहि सखाकहा प्रभुकामा॥
क्षोभअर्धभित करसाँठी आई। बालवृंद जहँआइ तहाँहीं॥
क्रोधित जननी हरि अनुमानी। ह्वै रहे ठाढ़सभाय सज्ञानी॥
आनन पोंछिआनन भयहारी। तेहिछन तहँआई महतारी॥
कहाकान्ह तें माटीखाई। सभपसकंप कहा यदुराई॥
मिथ्या काहुतोहि भरकाये। कहु केयातव सखा बताये॥
सरिस सुहृद दिशिनैन तेरे। कबहूँ भखी मृत्तिकापेरे॥
हरिख निरखि त्रास तनताहीं। कहत तात में जानत नाहीं॥
दो० सखासाय बतरातहीं गहा यशोमति माय।
विहासिभन्यो श्रीकृष्णजू तु जनिमातु रिसाय॥
सो० मनुजन माटीखात कातोरी बुधि विधिहरी।
कहायशोमति मात मुखुहलालममवचनशुभ॥
ये अटपटि बातें नहिं जानों। मुख दिखराइ सत्यकरिमानों॥
तबहि श्याम आनन फैलावा। अलखचरित मातहिदेखरावा॥
तीनों लोक भुवन दश चारी। मुख भीतर हेरेउ महतारी॥
दीख अजीश फणीश गणेशा। त्र्यंबक पासनाथ अमरेशा॥

हंस छपाकर सरिता नाथा। त्रिदशअसुरयमयमचरसाथा॥
रंभा ब्रह्मायणी भवानी। दशौ महा विद्या गुण खानी॥
नरनराधि पशु खगत्रसुब्याला। भून प्रेत बैताल कराला॥
तिहुपुर जो विभूति सुनुराजा। लखा मातुमोसकलसमाजा॥
दो० जोन सुना देखा न जो सो देखामुखमाहिं।
भयो ज्ञान जाना हरी रहानेक भ्रम नाहिं॥
अहह दैवमति मति कतनाशी। सुतकरिलखा पुरुषअविनाशी॥
जो हर मन मानसहि मराला। जेहिध्यावत अजादिसुरपाला॥
अरुजेहिलगिकृतजपमखलोगा। करिउपकासकठिनतजिभोगा॥
सो अवतरेउ मोर गृह आई। मैं मति बिनतेहिमारन धाई॥
यह चरित्र श्रीहरि सब जाना। प्रगटिमोह हरिलीन्हेउज्ञाना॥
पुत्र भाव पुनिह्वै अनुरागी। सानँद सुतहि सराहनलागी॥
कंठ लगाइ सप्यार भुवाला। गई गेह सँग मदनगोपाला॥
जानि चराचर पति अस स्वामी। भजतनताहि मंदमतिकामी॥
दो० जन्मजन्म श्रीकृष्ण जू जानिदास निज मोहिं।
भक्ति दीजिये कृपाकरि ध्याऊं स्वामी तोहिं॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकृष्णबाललीलायशोदाविश्वदर्श
नवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९॥
दो० सारस अरुण अश्यामवत चरण श्याम के ध्याय।
जेहि रसममतिसदृढ़ अलि हरियशकहै बनाय॥
एक समय दधिमथने काला। जगी यशोमति प्रातनृपाला॥
सकल सखी दधि मथने हारी। ते बोलीं यदुपति महतारी॥
अलिन मुदित गृह आइ बहारा। लीपि पोति घररुचिरसम्हारा॥
सानुराग पुनि मथनी भाजन। लैलै मथन लगीं तहँराजन॥
नूतन कलस भरा दधिरानी। शुभथल लै बैठी सुखसानी॥
चारिपदी लघु सुरुचि बिछाई। बैठि मथन रजु मथनिमँगाई॥
नवदधि भाजन पाछि सयानी। रामश्यामहित धरिनंदरानी॥

पुनि नृपदधिहिबिलोवनलागी। शोचतजगहिनहरिरिसपागी॥
दो० शब्द भयो दधि मथन कर जनु गरजे घनघोर।
जागिपरे ध्वनिबड़ि सुनत तबहीं नन्द किशोर॥
रुदत पुकारत जननि कहि सुन्यो न मथरवघोर।
उठिधाये तब आपुहीं जलभरि नैननकोर॥
जननी निकट ठाढ ह्वै आगे। गहि बड़स्वासरुदनहरिलागे॥
कहा वचन प्रभुपुनि तुतराई। बहुत बार तोहिं टेर्यों माई॥
तदपिन उठी काज प्रिय तोहीं। दारुण क्षुधा लागिसुनुमोहीं॥
मचल मही असकहिभगवाना। करसरोज गहि रईसुजाना॥
दधि भाजनते बाहिर डारी। फेंकत दधि डोंकरन निकारी॥
अंचल खैंचि चरणमहि मारे। तब रिसाइ यशुमति बैठारे॥
कहा कहाँ मचलापन सीखी। अबलगिसुत तू पुरुषमनीखी॥
चलो कलेवा तुम कहँ दीजै। पुनि पश्चात कार्य गृहकीजै॥
दो० श्याम कहा अब लेउँ नहिं प्रथम न दीन्होमात।
यहकहि ठुनुकत मातुढिग यशुदामन भुँझुलात॥
फिरि परिणाम प्यारकरि पोटी। चूमिगोदलै दीन्हेसि रोटी॥
मिसिरी माखन स्वकर मिलाई। कहाखाहु, यह कुँवरकन्हाई॥
लगेखान मुसकाइ कृपाला। चंचल चहुँदिशिचितैनृपाला॥
अंचल ओट करेनँदरानी। लगै न दृष्टिचित्त अनुमानी॥
नशैकाल लखि भृकुटी जाकी। जननी दीठि बचावततांकी॥
तेहिक्षण कहागोपिका आई। कानिश्चिन्त बैठि तू माई॥
पयउफनाइगयो चहुँ ओरा। झपटिचलीतजि हरितेहिंठोरा॥
क्षीरउतारि मही धरि दयऊ। इतहरियहकौतुक नृपठयऊ॥
तोरि मथानी भाजन फोरी। लीनी माखन भरी कमोरी॥
बालसखा सँगलै यदुराई। बैठ उलूखल रीतो पाई॥
चहुँदिशि सखा घेरि बैठाई। हँसिहँसि माखन दयउखवाई॥
उतयशुदामहि धरिनृप क्षीरा। सहसा फिरि आई हरितीरा॥
दो० घर बाहिरदधि बहत लखि तबकरिकोप अपार।

गहिकर साँटी चलभई आतुर नृप तेहिवार ॥

खोजत यदुकुल कैरवचन्दा। गईजहाँ शोभित सुखकन्दा ॥
मंडलीक हरिबाल समाजा। खात सत्रासत माखन राजा ॥
शनय शनय पगधरि हरिभाई। पाछे तेगहिलियो कन्हाई ॥
अरु कहतैं दधि माखन नाशा। आजु तोहिं देहौं बड़ित्राशा ॥
हाहा करि कहरोइ मुरारी। गोरस मैं न जान महतारी ॥
दीन वाक्यसुनि जो मुसकानी। रिसमुदमग्नपकारिगृहश्रानी ॥
चहत उलूखल बाँधा ताहीं। प्रभुमाया करि दीन तहाँहीं ॥
जेहि रजु बाँध छोट सो होई। काहूरजुनबँधा सुत सोई ॥

दो० तब सरोष सहचरिन सन सब गृह रजुनमँगाइ।
बाँधेउ तदपि न हरिबँधे यशुदामन अकुलाइ ॥

देखौ मोह प्रबलताभारी। जेहिनिजवलयशुदामतिहारी ॥
भवबंधन दारुण जेहि नामा। छूटत मातु बाँधतेहि दामा ॥
कहत आजु बाँधे बिनु तोहीं। तजौं नशपथतोरिसुतमोहीं ॥
जानि बिकल बड़ि सौंहविचारी। लघुदामरिबाँधि गये खरारी ॥
पुनि गोपिकन कहानँदनारी। करै मुक्त तेहि शपथ हमारी ॥
कहि असगेह काजसो लागी। बँधेउखूलखल जन अनुरागी ॥
नरइव चरित सुनत पुनिजोई। भ्रमत चतुरनहिं मूरख कोई ॥
दामबँधे दामोदर स्वामी। मन पछितातदेखिसँगगामी ॥

दो० जाकरअस अद्भुतचरित जानिसकतनहिंकोइ।
बिनवत मंगल जोरिकर दया करौ प्रभुसोइ ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णचंद्रदामबंधन
वर्णनोनामदशमोऽध्यायः १० ॥

दो० विघ्न दोष दुख रुजलवा जगबन करत बिहार।
भागत सुनतहि दशौदिशि हरियशश्येनप्रचार ॥
बिशदवाक्य बोले सुमुनिसुनु अवनिप चितलाइ।
सुधि आई श्रीकृष्णकी भूत समय की राइ ॥

धनद सुतन नारद दियशापा। तिन उद्धार करिय हरितापा॥
सुनि संदिग्ध भूप मुनिबानी। कीन्ही प्रश्न जोरि युगपानी॥
सुत कुबेर के पुरुष प्रबीना। का अपराध ऋषयकर कीना॥
जेहिलगिशापदीन्हमुनिनारद। सब प्रसंग बढ़ ज्ञान विशारद॥
मुनिकह सुनहु भूप नयधामा। धनद पुत्र नल कूबरनामा॥
गिरिकैलास बसत ते दोऊ। शिव सेवा विधि जानत सोऊ॥
लखि तत्परता सेवा शंकर। अप्रमाण धनदयउ कृपाकर॥
रास बिलास करैं गिरिऊपर। उपमा काहु देउँ नृप भूपर॥

दो० एक समय भामन सहित बन बिहारगय सोइ।
धन मद तापर मद पिये मतवारे मति खोइ॥
साबलान है नग्न ते धुनन्दा के बीच।
सकल स्नातसप्रेमनृप जल दोउ करनउलीच॥

कंधर बाहु डारि नर नारी। कृतकिलोलनिजमनअनुहारी॥
अकस्मात तेहिसमय महीशा। तहँ आवत भे देव ऋषीशा॥
तिनहिं बिलोकतनारिरिसानी। पहिरे बसन निकरितटआनी॥
ते द्वौ गलित महा मतवारे। नग्नठाढ़ मुनि नैन निहारे॥
यक्षप सुतन देवऋषि देखी। निजमनकियचिंतवनबिशेखी॥
श्री मद मद ये गर्वित भारी। यहिते निंदा करत हमारी॥
काम क्रोध जानत सुखसीवा। इनते भले रंक जगजीवा॥
अहमित होत कतहु ते नाहीं। भजत ईश दुखवश मनमाहीं॥
धर्माधर्म धनिहि नहिं सूझत। केवल चित्त कुकर्म अरूझत॥
भणत पुराण बेद इतिहासा। सम्पतिकरत सुमतिकरनासा॥
मूरुख करत देह अनुरागा। लहतअवशिदुख अंतअभागा॥
जानत सर्व शरीर असारा। बुध न होत धन मद मतवारा॥

दो० गृह कुटुम्ब लखि चतुर नर नहिं भूलतमतिधीर।
समुझतसकलअसत्यही जिमि अंजुलिकरनीर॥

सुखदुखसम्पति विपतिसमाना। जानत संत मान अपमाना॥
इनके समजड़मति जग कोई। मनुज देह मम जानि न होई॥

ममअपमानयदपि इनकीन्हा। पहिचाना अथवा नहिंचीन्हा॥
तदपि शापबिन त्यागौं आजू। तौ होवै परिणाम अकाजू॥
निंदिहिमुनिनआनखललोगा। यहितें अवशिशाप के योगा॥
असमन शोचि सुरर्षि पुकारी। कहा सुनौ द्वौ गिरा हमारी॥
कियोजड़खकर्म तुमजड़मति। याहिअघयक्ष लहोगे जड़गति॥
पादप तन उपजौ भव जाई। गोकुलग्राम शाप मम पाई॥
दो० मुक्ति लहोगे कृष्णकर सत्य सत्य मम बयन।
नारद शाप कराल दै जात भये बुध अयन॥
कारण भूपति शापकर तुम्हैं सुनायो सर्व।
विकल भये द्वौशाप सुनि यथापरे शशिपर्व॥
यहि कारण धनपति सुतभूपा। वृक्ष भये यमलार्जुन रूपा॥
तिनहिं निरखिकृपालशकटारी। कठिनशापऋषिहृदय बिचारी॥
निजबल तब आकर्षिउलूखल। लै आये यमलार्जुन के तल॥
मूल मध्य विटपोभय केरे। आड़ि उलूखल खैंचि करेरे॥
टूट मही कुज परे समूला। भयो शब्द बड़ तरवर थूला॥
वृक्षन ते द्वौ पुरुष सोहावन। प्रगटे तरुण धरे तन पावन॥
जोरि हाथ है ठाढ़ अगारी। अस्तुति कृत द्वौ जीव सुखारी॥
दीनबन्धु तुम बिनको ऐसो। मोचत अघबड़ हमरो जैसो॥
दो० बहुत दिवस तरु देह महँ लहा कलेश कृपाल।
कमलचरण तव परसि अब दुखछूटो यहिकाल॥
बोले बिहसि थाक घनश्यामा। सुनो यक्षपति सुत गुणग्रामा॥
नारद बड़ि दाया करि शापा। गोकुल मुक्ति लहेउ गततापा॥
जन्म अनन्त करततपज्ञानी। अन्तसमयमाहिंलहत न प्रानी॥
सहजहितुमहिंमिल्यौंमुनिदाया। परम पुरुषहौं आदि अमाया॥
अब प्रसन्नमोहिंसब बिधिजानी। याँचौबर निजमनअनुमानी॥
नीलोत्पल पद हरिके देखी। परे दण्डवत युगुल बिशेखी॥
नारद कृपा दरश तव पाये। दुरितसमस्त सहज बिनशाये॥
पूजी इच्छा सकल हमारी। परसि चरण तुव देव मुरारी॥

छं० पदपरसि तुम्हरे दयासागर पूजि सब मन कामना।
अचलहा सुख्यअशेष स्वामिन भयउ थिरचंचलंमना॥
जनजानि तदपिदयाल केशवभक्तिअविचलदीजिये।
तब भक्ति वरप्रभुदेइ तिनसन कहागृहमग लीजिये॥
दो० प्रभु आयसु लहि बंदि पग गये यक्ष निज धाम।
मंगल मन मम सीख सुनि भजिले मोहनश्याम॥

इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदास बिरचितायां यमलार्जुनमोक्षवर्णनो
नामैकादशोऽध्यायः ११॥

दो० जासु रोम प्रति कोटिधा झूलत हैं ब्रह्मागड।
सो बिराट तन मनुषवानि भयो कृष्ण वसुधाखड॥
तासुचरण कोमल कमल अमल बंदि मनमाहिं।
बरणौं सुखद चरित्र यह जो सुनिपाप बिलाहिं॥
गिरत बिटप सुनिपुनि कहराजा। घोर शब्द भो जनु घनगाजा॥
चौंकितुरत यशुदा उठिधाई। आतुर कृष्णपास चलिआई॥
जेहिठाँ हरिहि उलूखल बाँधा। मिले न तहँतब रोदन नाधा॥
ते पश्चात आन त्रियगोपी। यशुदा निकट पहूँचीं सोपी॥
ग्वाल युवा बृद्ध लघुकाली। आय तिहिठाँ सबनर आली॥
लखि रोदति नँदनारि दुखारी। कहत कृष्ण हे कृष्ण पुकारी॥
पीड़ित सकल रुदत बहुतेरे। तेहिच्छण सखिआईं गणनेरे॥
कत निरर्थकृत गहन कराला। मैं हेरो बुधिसों नँदलाला॥
दो० वृक्षपरे टूटे जहाँ तहँ स्वभावहीं श्याम।
खेलन मिस प्रभुजानि मम चलेगये गुणग्राम॥
नेककाल पीछे अबहिं भयो शब्द बिकराल।
दाहिगिरे द्रुम तिनहिंकर असभाषा जबबाल॥
तबसब झपटि चले सुनि आगे। निश्चय वृक्षपरे महिलागे॥
बँधे उलूखल तिनके बीचा। सकुच बैठ हरिमूल नगीचा॥
देखि यशोमति धाईकैसे। धेनुबच्छ कहँ धावत जैसे॥

खोलि उलूखल हृदय लगाये। नरनारी समूह जुरिआये॥
कोउ करतालदेहिं बहिलावैं। कोउ मध्यमा अँगुष्ठ बजावैं॥
जोनि सशंकित लोग लोगाई। चाहत हँसैपुत्र सुखदाई॥
जासु त्रास त्रासित यमकाला। सभयताहि जानत गोपाला॥
नंदुपनंद परस्पर कहई। चिरकालीन वृत्त ये अहई॥
दो० सहज टूटि धर गिरि परे यह अचरजकी बात।
भेदकाहुविधि मिलतनहिं तबबोल्योयकतात॥
आड़ि उलूखल कृष्णहीं तरुवर दिये गिराय।
जानिबाल सुनु चतुरनृप कोउनतेहिपतिआय॥
कोउकहै बालबेग यह चातुर। समुझिचित्तपुनिकोउकहैचातुर॥
हरिमाया गोपार अपारा। कोउन बुध ऋषि जाननहारा॥
बाल कहत कहुँ ऐसयहोई। ईश्वर जान भणत असकोई॥
कहत अनेकानेक प्रकारा। निजनिजबुधिअनरूपविचारा॥
हरि संयुक्त धाम सब आये। विविध भाँतिके करत बधाये॥
अगणितदानद्विजनदियनन्दा। कीन्हबधायो सहितअनन्दा॥
यहि प्रकार कछुदिनचलिगयऊ। द्रुमवृतान्त जगछावतभयऊ॥
हरिकर जन्म दिवस पुनिआवा। सकलकुटुंबहि निवतपठावा॥
दो० मंगलचार करायके सूत्र ग्रंथि तिन कीन्ह।
उतआगम रससरसशुभ भोज्यतियनरचिलीन्ह॥
जुरि मिलि सब बैठेभवन तबनृप नन्दअगार।
जेंवत हरिहि समेतसब किमि बरणौं ज्योंनार॥
कहा नन्द सब भाइहु सुनहू। मनबच कम गुणिउत्तरभनहू॥
नित नव विपतिहोतियहिग्रामा। सूझतमोहिं कठिनपरिणामा॥
सुथल बिचारि भूमिभल जोई। यह पुर त्यागिबसाइय सोई॥
तब उपनन्द नन्द सन भाखा। सुंदरथल यक हमसुनिराखा॥
वृन्दाबन नृप कीजिय बासा। तहांतृणोदक सकलसुपासा॥
कहिभल नन्द सबहि अँचवावा। पानखवाय सभा बैठावा॥
ततक्षण एक ज्योतिषी आवा। सादर ताकहँ नन्द बोलावा॥

यात्राकेर मुहूर्त्त बताइय। वृन्दावनै बसे कब जाइय॥
दो० करि विचार द्विजवरकहा प्रातकाल सुनुराव।
वहिदिशिकी यात्रा सुभग निवसो वृंदागाँव॥
योगिनिवाम पृष्ठि दिगशूला। सन्मुख सिन्धुतनय सुखमूला॥
निस्संदेह प्रात प्रस्थाना। करौराउ गुणि विप्र बखाना॥
सुनि सब गोपी ग्वाल सिधाये। सातुरसकल भवन चलिआये॥
रजनियकरि सबवस्तु सम्हारा। भिनसारहि सबशकटिन डारा॥
जुरिनर सहित तनुज अरुनारी। नन्दद्वार पहुँचे गण भारी॥
खरभर रव न बात सुनिपरहीं। जहँ तहँ बोलिरहे खगवरहीं॥
सजन कुटुम्ब सहित नृपनंदा। कहिजै सिधिदाता शिरचंदा॥
चलि अवतीतरि संध्याकाला। वृंदावन पहुँचे सँग ग्वाला॥
दो० वृन्दा देवी के चरण सारस बंन्दि सप्रेम।
बसे नन्द उपनन्द तहँ रहे लगे युतक्षेम॥
यहि सुख बीते दिन घने वृन्दावन नँदग्राम।
सुनु नरेश इतिहासबर है प्रमोददा धाम॥
भै कृष्णायु शराब्द प्रमाना। तब हठ अस मातासनठाना॥
मम मन रुचि यह बच्छ चराऊं। कहुबल बोलि संग मैं जाऊं॥
तजहिनविपिन अकेलाजानी। सुनिसुतवचनबोलिप्रियवानी॥
बच्छ चरावन हार अनेका। दास तुम्हार तजौ सुतटेका॥
तुम जनि होहु बिलोचन ओटा। बन बीथिन लागै कहुंचोटा॥
जो न मातु कानन मैं जाऊं। तौ काहू विधि अन्न न खाऊं॥
जानि कठिन प्रणहठ बिकराला। बोलें सकल ग्वाल सुतबाला॥
जे नित बच्छ चरावत कानन। सौंपे तिनहिंमातुबलभानन॥
दो० जो रक्षक तिहुँलोकको ध्यावत जाहि मुनीश।
ग्वाल सुतन कहँ मातु तेहि सौंप्यो सुनोमहीश॥
कहा दूरि घनवन जनि जायहु। दिनते संग घरहि लैआयहु॥
अकसरगहनविपिनजनियागेउ। रहेउसदृढ़इनकेसँगलागेउ॥
असकहि मिसिरी माखनलाई। राम कृष्णहित सखहिंबँधाई॥

भोजन हरिहि करायहु पोसी। कहितिनकेसंगसुतहिकरोसी॥
कृष्णा तट सब कृष्ण समेता। बच्छ चरावन गये सहेता॥
जमी निकट तजिधेनु किशोरा। खेलत ग्वाल बालचहुंओरा॥
ताही काल दैत्य यक आवा। प्रबल जानि नृपकंसपठावा॥
करिमाया धरि बच्छ स्वरूपा। कपट सानि तेहि देखतभूपा॥
दो० सभय बच्छ चहुँ दिशिभजे रम्यकूदि अकुलाइ।
कृष्णकहा पहिचानिखल रामहिंसैन बुभाइ॥
हलधर यह कौतुकी निशाचर। बच्छ बपुषधरि आवायहिथर॥
बारबार हरि ओर बिलोका। कालरूपलखि हृदयसशोका॥
मरण ठानि निजघात बिचारी। प्रभु समीप आये बिपुधारी॥
पाछिल चरण गहे हरिधाई। महि मर्यो बहुबार भ्रमाई॥
मरतिबारनिजतनखलखीनसि। कृष्णकृष्णकहितनतजिदीनासि॥
कंससुना बच्छासुर घाता। मन गद्गदअरु बिगलितगाता॥
बोलि बकासुर सुभट सप्रीती। कथाकही सब पूरबबीती॥
सुनि सकोपसो अधम कराला। बृंदावन आयो बशकाला॥
दो० महिषध्वज अनुजा निकट खल बिचारिनिजघात।
बकतन भूभृत सम बिरचि बैठ असुर सुनुतात॥
देखि सभीत भयउ सुत जूहा। कृष्णहि कहा सबनकरिहूहा॥
बन्धु दैत्य यह बकनहिं होई। यहिते आजुबचे नहिंकोई॥
इत इमि बालकहरिहिजनावत। सुरराति उत घातलगावत॥
निजमन बदतनिकट जड़सोई। बधौं कृष्ण भूपति भलहोई॥
तेहि समाजहरि तासुसमीपा। सहज गये कौरव कुलदीपा॥
प्रमुदितअसुरचोंचगहिश्यामैं। भक्षिमुख मूंदि बैठेहि ठामैं॥
आतुरबिकलित बाल समाजा। सिन्धु दिशालखि रोवतराजा॥
हे हरि कहि टेरत बिललाता। निजकर उरमर्दत पछिताता॥
दो० कहत न यहि अनमिष यहां हलमुशल धरहाय।
यशुदाहि उत्तर कासु हम कहब दैवघरजाय॥
गोरी रंगानन सबकेरा। अन्यवरण मिटि भो तेहिबेरा॥

आरत सखाजानि भयहारी। मायामुख महँ श्याम पसारी॥
धस्यो धनंजय रूप कृपाला। तबसो असुर भयउ बेहाला॥
दहतजानि निज अंक सुरारी। उगिलिदयो खल तुरत मुरारी॥
उठिकर चिबुक चरणकरसाधी। आकर्ष्यो सो सहज नराधी॥
चीरि फाँकडारी महिदोई। जिमितृण चीरिडार सुतकोई॥
अघरूपीखल जड़बुधि कामी। कीन्ह कृतारथ ताकहँ स्वामी॥
को असदीनबंधु सुनु राजा। अरिउद्धारक तजि ब्रजराजा॥
दो० मिले सखन सँग आइहरि लखि हरषे सबबाल।
घेरि बच्छ जुरि घरचले जान्यो सायंकाल॥
बिहँसत खेलत पंथसब आये निज निजधाम।
गृह गृह बालन कहा यह प्रभुकर अद्भुतकाम॥
सुनिसचु मानो काहुनर मृषाकाहु मन माहिं।
मंगल हरि नित प्रात उठि बच्छ चरावन जाहिं॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासविरचितायांगोकुलवासपरित्यागवच्छा-सुरबकासुरवधवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

दो० यथा सिंहको शब्द सुनि गजगण चलत पराय।
तथा कृष्ण यश सुनतहीं भजत पाप अकुलाय॥
सुनु कौरवकुल कमल दिनेशा। प्रातसमययकदिनहृषिकेशा॥
धेनु जात चारण बन गयऊ। तिनकेसाथग्वाल सुतभयऊ॥
दही मही घर घर ते ल्याये। चलिसमस्तकाननमहँआये॥
बच्छ चरनहित बन तजिराजा। बैठे यकठां बालसमाजा॥
गेरू खरीलाइ तन चीता। भल कौतुकतेहिअवसरबीता॥
बनफूल कुसुमाभूषण कीन्हें। कोन भूलसुत कर्त्तब चीन्हे॥
भाषा पशुखग बोलत नीकी। पशुविहँग भाषा कृतफीकी॥
ख्याल रचा पुनि विविध प्रकारा। मनफूले खेलत तेहिवारा॥
दो० पठयो कंस अघासुरहि बीर प्रबल अनुमानि।
आयो सो सुररिपुतहाँ काल आपुनहिं जानि॥

उरग प्रथुलवत बिरचि कलेवर। श्यामशृंग जनुगिरि गिरितेतर॥
बैठा अधम बिकट मतिहीना। तासुचरित सुनुराय प्रवीना॥
दैवयोग सँगबाल मुरारी। खेलत तेहितट गये बिहारी॥
देखा पन्नगतन परिनाहा। मुखपसारि बैठा मृतुचाहा॥
हरिमाया गतिनृप बिपरीती। प्रभुजो चहत करत मनचीती॥
ग्वाल सुतन तेहिदेखि बिचारा। बड़ भूधरासितो रग डारा॥
कोउसुत कहैं ऊँच गिरिकैसो। अबलागि हमन बिलोकोऐसो॥
दीरघ गुफा जासु हिंमितूला। कहत चलौ देखिय नगथूला॥
दो० यहि बिधि करतसो बतकही काकोदर तट जाय।
गिरिकन्दर मुख देखितब कह सुतेक शिशुभाय॥
बांधव गुफा भयानक भारी। यहिप्रविशाहिंनहिंशक्तिहमारी॥
जाकहँ लखत सभय मनहोता। पैठि बनहिं मूरख गुणपोता॥
तोषनाम यकसखा सुजाना। कहाघुसौ रक्षक भगवाना॥
संग हमारे जबलगि भाई। तबलगि भखनारे भयखई॥
जो कोउखल कृतशैल शरीरा। काल बिबशतो जानिय बीरा॥
यथा बकासुर प्राण गँवावा। बैर भाव हरिकर फल पावा॥
तथा निशाचर जाइहि मारा। त्राता हमरो नन्द दुलारा॥
कलुककुरि मुखते सबठाढ़े। करत बारता आनँद बाढ़े॥
दो० निकटजानि तेहिक्षण असुर श्वास मलंचाकर्षि।
बालबच्छ भखे सकल कपट नागउर हर्षि॥
ताती बिषयुत तन पव माना। लाग्यतत्रासितदुखितभयनाना॥
रँभतबच्छ बाल कृतशोरा। त्राहित्राहि प्रभु नन्दकिशोरा॥
वेगिराखु रक्षक भगवाना। तनभय भस्म गये अवप्राना॥
दीनबन्धु सुनि दीन पुकारा। प्रथमन गये चले तेहिद्वारा॥
आतुर आनन महँ घुसिगयऊ। मुदितमूँदिमुखतब खललयऊ॥
मूंदत बक्र निबिड़ तम छावा। बच्छबालकन अतिदुखपावा॥
तब प्रभुनिज शरीर बिस्तारा। अधिक मणी वपुतेतेहिवारा॥
बाढ़तकाय उदर तेहि फूटेउ। बालकबच्छ बन्दितें छूटेउ॥

दो० अघासुरहि यहिविधि बधो लखिहरषे सुरसर्ब ।
छोड़त कुसुमावलिभली हरिपर सकल अखर्ब ॥
पुनिहरिजू धरि बालबपु ठाढ़भये तेहि ठाम ।
गरलमिलत स्वासा प्रथम खैंची अघअघवाम ॥
बालकवच्छ विषम विषस्वासा ।लगिअधमरकोउप्राणननासा ॥
सुधावृष्टि तबकीन्हि दिवेशन । बालबच्छ विषहर रह लेशन ॥
आनँदयुत सब कहत कुमारा । जोनहोत सँगहरि रखवारा ॥
आजुमरण होतेउ शकनाहीं । बचेउ असुरहरि करिबलबाहीं ॥
मारणहार यदपि बलदाई । रक्षक तदपि बड़ाहै भाई ॥
श्यामहिंकहतमनुषतुमतातन । असगुणहोत मनुजके गातन ॥
महाबली यह असुर कराला । पन्नग छली शरीर बिशाला ॥
ताहिहतो तुम क्षणमहँ भाई । प्राण सबनके लियेबचाई ॥
सो० बाल बरूथ अपार विनय करत हरि की चतुर ।
निजनिज मतिअनुहार कहौंकहांलगि बरणिकै ॥
दो० शिशुतामें अस प्रबलखल जेहिमारो क्षणमाहिं ।
मंगलकी रक्षाकरौ सो प्रभुकृष्ण सदाहिं ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांअघासुरबधवर्णनो
नामत्रैदशमोऽध्यायः १३ ॥
दो० प्रसव कालते अंतलागि नहिंबूझत ममजानि ।
जेहिमायाते जीवजग तहियश कहौं बखानि ॥
मारि अघासुर हरि पुनिभूपा । धेरेबच्छ स्वरूप अनूपा ॥
बालसखा सँगचले मुरारी । कदमविटपतट पहुँचि विचारी ॥
तरुतल ठाढ़होइ मुरलीकर । ताहि बजावतभे मुरलीधर ॥
बोलिसखानविहँसि कहिबानी । थलभलयह भाइहु ममजानी ॥
आगे सुथल और को ऐसो । यमुनानिकट कदम तटजैसो ॥
सबजन द्रुमतल आइ विराजैं । माखन दधि भोजन इहँसाजैं ॥
सनतवच्छतजि बनपनिमिगरे । कदमतरे बैठे अनविगरे ॥

पातमदार पलास सरोजा । बहुपद तूलनीय करिखोजा ॥
दो० लाइ बनाई पातरी करिउज्जल तररूख ।
पंक्तिबाँधि शिशुसकलते बैठे व्यापीभूख ॥
सो० सबके मध्य अघारि राजत कर भोजनलिये ।
पारस करत बिचारि यथायोग्य तनबल निरखि ॥
प्रभुहि परोसतलखि सुतग्वाला । आतुरपरसि चले महिपाला ॥
आपन और आनकर आपू । भाग यथोचितखै तजितापू ॥
ठाढ़होइ हरि जेंवन लागे । भक्षणलगे सखा अनुरागे ॥
किमिवरणौं शोभा तेहियरकी । छुवि अनुरागत होतअतरकी ॥
शिरपर मुकुट मयूर बिराजत । बनमाला गल शोभा साजत ॥
लकुट कमलकर रूप त्रिभंगी । मुखछबिलखिलाजतद्युति अंगी ॥
पीतपाट पटकाछनि बाँधे । तद्वरणी शोभित पट कांधे ॥
कुंडल लोल श्रवण छबिदेता । लाजतलखिहरिजलचरकेता ॥
दो० हँसनि चंद्र उडुगण दशन मुखनभरूप अनंत ।
लजत हँसत लखि तापखल विकसतकुमुदसुसंत ॥
हँसि हँसिमोहन बांटत खाता । प्रफुलित गात तिहूंपुर त्राता ॥
अपर बालकर भोजन खाई । षटरस तासनकहत बुझाई ॥
कटुअरु अमिल मधुरअरुखारा । रस चरपरा कषैला सारा ॥
बाल मंडली हरि भा मोहति । उडुगावली मनोबिधुसोहति ॥
तीने काल अजा दिवराका । निजनिज यानारूढ़सुनाका ॥
निरखत यह चरित्र चितदीन्हे । कोउकोउ भोजनलालचकीन्हे ॥
गोपसुतनसँग खात निहारी । कमलजात मनभ्रमभाभारी ॥
हरिअवतार सुना अरु जाना । सो प्रभुत्वनहिंविदितदेखाना ॥
दो० ब्रह्म जोव्यापक अखिलयक तेहिलीन्होअवतार ।
सोकिसुतनसँगखाइदधि बिधिबुधिभ्रमितअपार ॥
बिना परीक्षा भ्रम नहिं जाई । परखिगयेपुनि मन न भ्रमाई ॥
अस बिचारिहरि बच्छ बिधाता । भूधर गुफा राखिसुनु ताता ॥
[illegible]

बेरजानि इत गोप कुमारा। कहत कृष्ण सन मैं चड़िवारा॥
हम तुम इहां अचित बिराजत। सानँदसबमिलिभोजनसाजत॥
बच्छनकी सुधिकाहुइ नाहीं। काजानिय ते अबकहँआहीं॥
कहा कृष्ण तुम जेंवहु नीके। बच्छ गये सब मध्यबनीके॥
सो हौं अबहिं घेरिकरि लाऊं। उठ्यो न कोउ रह्यो यहिठाऊं॥
दो० पुनि बिलम्ब मोहिंहोइजो तौन कह्यो औसेरि।
असभणि प्रबिशेबिपिनहरि दूरिगयेचितहेरि॥
जब जाना बिधि हरिलैगयऊ। तब प्रभु तहां ठाढ़ है रहाऊ॥
इत बिरंचि हरिबालसमाजा। गयउ दूरि मन भ्रमदृढ़राजा॥
बच्छ बनाइ कृष्ण फिरि आये। कदम बिटपतल सखानपाये॥
निज प्रपंच तब बाल बनाई। संध्या जानि चले घरराई॥
बालक गोसुतनिजनिजभवना। पूरबवत कीन्हों नृप गवना॥
युवति पुरुष काहू नहिं जाना। जो कछुचरितरचाभगवाना॥
गो गोपिका सून निज जानी। नित नवप्रीतिकरैं सुखसानी॥
ते बालक ताही गिरि सोहा। बन्दकियेबिधिमतिबसमोहा॥
दो० निज मायाबल कंजसुत निद्रा शिशुन बढ़ाइ।
जानिगेह सब बच्छ शिशु सोइ रहे हरषाइ॥
ब्रह्मलोक कहँ बिधि गये गई भूलि सुधि ताहि।
इत गोबिंद चरित्र नित करत नये दुख नाहिं॥
संवत गये अजहिं भा शोचा। कीन्हों कर्म स्वकर हौं पोचा॥
यदपि मोरयक बिपल न बीता। तदपिनराब्दगयउबिधिभीता॥
चलि देखौं ब्रजगोतिय जिनके। हरे सूनकस दुख भा तिनके॥
अस बिचारिप्रथमहिं गिरिकंदर। देखेबाल बच्छ बिधि भूधर॥
घोर सुषोप्ति दशा तिन हेरी। ब्रजकहँ चल्यो करत औसेरी॥
वृन्दावन अयोनि जब आये। चरत बच्छ खेलत सुतपाये॥
अमिताचंभितमनकमलासना।चल्योसपदिपहुँच्योगिरिआसन॥
गुफा उपल अजटारिनिहारा। सुत धेनुज बश नींदअपारा॥
दो० सहमा घमि स्वयंभ ब्रज देखे गोसत बाल।

विस्मय बश तहँ ठाढ़ हवै कृत विचार महिपाल।
का मम बुधि भ्रम देखत आजू। दोऊबल गोसुतबालसमाजू॥
केवहनगन कि ब्रजनहि अहई। पूछौं काहि कौनु यह कहई॥
जेहिउँजेहिविधिसुतनसोवायों। गिरि कंदर तौनीविधिपायों॥
स्वे सुरभीसुत सुत ये ठाढ़े। अथवा कृष्ण नये गढ़िकाढ़े॥
असमनसोचिबहुविधिविगयऊ। कूट खोह सुत निरखतभयऊ॥
पलटि ब्रजातुर जबलगिआयो। तबलगिप्रभुहतबालबनायो॥
धेनुज गोपति जाकरि माया। रूप चतुर्भुज सबहि बनाया॥
बालक बच्छजिते अजतेते। शंकर बासव त्रिदश समेते॥
दो० यकयक के सन्मुख खड़े कृत बिनती कर जोरि।
भ्रजबिलोकि अद्भुतचरित भईतासुमति थोरि॥
सो० यथापूतरी चित्र तथा भ्रवाकित सो भयउ।
मिटोज्ञान उरमिटत भ्रायो भ्रमकैबलतिमिर॥
भ्रम जिमि पाथर देवसुजाना। दृश्लित होत पूजाबिन नाना॥
जवविधिचकितभयउमहिपाला। कंप्योतन उपजा भयजाला॥
अजाधैर्य बैठेमहि माहीं। धरषसतजियतनसुधिनाहीं॥
प्रभु सर्वज्ञ संत सुख दायक। धाताशतविलोकिधनुनायक॥
एकमये सकलांश बटोरी। असजिमिजलधरउडिघुँधोरी॥
बर्षत समय होत यकरूपा। तिमिप्रभुकरयहचरितअनूपा॥
विधिन चंदधन नहिं अमरेशा। बालबच्छ कोउरहन नरेशा॥
हरिनिज माया सकल समेटी। यथा सूत्र सूत्रक कृत फेंटी॥
दो० सुन्दर रूप अनूप हरि सकलाभरण शरीर।
शोभित विधि सन्मुख खड़े मंगल दर्शापीर॥
इतिश्रीमद्विधिकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांब्रह्मावच्छबालकहरणकृष्णमाया
वर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥
दो० सुखधामजल बीचिजिमि बासयश्रर्थतिमिएक।

तातै अलखालख समुझि जीव ईश भ्रमटारि।
निजगुरुपद शिरनाइकै हरियश कहौंबिचारि॥
तत्पदवी त्वं पद बदत असिपद जानत जोइ।
श्रीशुक मुनि ज्ञानी परम कहत भूपसन सोइ॥
जबहरि निज माया हरि लीनी। अरुदाया बड़िअजपरकीनी॥
तब बिरंचि कहँ तन सुधि आई। चीन्हों हरिमनध्यान लगाई॥
चित पछितायजोरि दोउपाणी। प्रभुतट जाय बदारतबाणी॥
अमित दया करिदयानिधाना। हरानाथ मम भ्रम अज्ञाना॥
रंचक गर्बरहा अब नाहीं। जेहि बशभ्रमितफिराढोंठाहीं॥
सूझा कुछुन ज्ञान दृग हेरा। धनि मायाजेहिवशमनमेरा॥
बर्त्तमान भावी अरु भूता। अहै होइ भोको बुधि पूता॥
जो चरित्र तव जानत जानै। जान्योतेहि नबुद्धिअनुमानै॥
मायातीत अगम्य अजाना। सो तुम बालरूप भगवाना॥
तव माया मोहत सब काहू। यक प्रभु तू माया करनाहू॥
मायाबिवश करयोंछल स्वामी। क्षमाकरोलखिनिजअनुगामी॥
तिहु पुर संभव लयकर पालक। अनुपम रूप धरे प्रभुबालक॥
दो० रोमरोम ब्रह्मांड बहु जगपति बिधि ममतूल।
तुव सन्मुख गणनाम ममक्षमाकरो जनमूल॥
मम अपराध क्षमो जनजानी। दयासिंधु दायक सुखखानी॥
विनयपितामहकीसुनिश्यामा। मुसुकाने तबनृप गुणग्रामा॥
बिहसतलखिरुखचला बिधाता। शलगुफा पहुँचो पछिताता॥
बालक बच्छ तुरत लै आवा। लज्जित मन बृन्दावन ठावा॥
मायाहरि गोसुत तजि कानन। तरुनर सुत करिलैअनुशासन॥
जोरिकर स्तुतिकरि गृह गयऊ। अघकथा सुनुनृप जसभयऊ॥
भोजन भाजत गोप कुमारा। जिमि पूरब बरनो बिस्तारा॥
बर्षदिवस बीतानहिं जाना। ग्वाल सुतन प्रथमै दिनमाना॥
दो० गईनींद सब सुतनतब हरिगो सुतसब घेरि।
लैआये तट कदम के कहतबाल हरिहेरि॥

कृष्ण बेगि गोसुत तुमलाये। दूरि न रहैं निकटहीं पाये॥
हमभोजन करिभेन गोसांई। सुनितव विहसि कहा यदुराई॥
चिन्तामोहिं सखातव रहेऊ। लावा आशु निकटहीं लहेऊ॥
अवसव मिलिनिकेत पगधारौ। प्रातहिके आये सो विचारौ॥
सुनिकहि अच्छा बच्छा सबलाये। विहसतसकलसदनचलिआये॥
मातपिता केहि जानन भेवा। गुप्त चरित कीन्हा हरिएवा॥
हरिमाया दुस्तर संसारा। जाहि निरखि बिधिनिज हियहारा॥
बानरतरतेहि जीतन चाहत। सिंधुपिपील कतहुं अवगाहत॥

दो॰ यथा दिवाकर एकवपु कृत प्रकाश तिहुंलोक।
तथा कृष्ण घटघट प्रगट हरत जननके शोक॥

सो॰ कोजग अस सामर्थ जेहिन मोहमाया प्रबल।
कतकौं बकिय निरर्थ मंगल जीतत हरिकृपा॥
होइ अपावन पूत कृष्ण कृपा माया तरत।
चारि खानि भवभूत मुक्तिलहैं संशयनहीं॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासविरचितायांब्रह्मामोहवर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः१५॥

दो॰ बीतराग सुबिवेकसम दम सुमुक्षुमिलिचारि।
कर्त्तासब साधनन के ते मुनि कहत बिचारि॥

जवहरि आयुवर्षत्रसु भयऊ। यकदिन तव मातासन कहेऊ॥
यह लालसा जननि मनमेरे। धेनु चरावन जाउँ सबेरे॥
तूपितु प्रतिकहु अवशिबुझाई। ग्वालन सँग मोहिं देइँ पठाई॥
कहानन्द सन तिन करजोरी। कहिभल विप्रबोलि गुणथोरी॥
शुभ मुहूर्त्त पूछा नँदवाहीं। पूजन खरिक कृष्णकब जाहीं॥
कार्त्तिक सित अष्टमी बताई। तेहिदिन नँदसब ग्वाल बुलाई॥
राम कृष्णसन खरिक पुजावा। कुल लौकिक व्यवहारकरावा॥
शिवबिरंचि जेहिपदमन लायो। तासन पिताखरिक पुजवायो॥

दो॰ बचन मनोहर तबकहा ग्वालन सों नँदभूप।
मोंपतलमकहँ तनजद्दौ तममससखा अनूप॥

नितप्रति सुतन संगलै जायउ । कानन सघन धेनु चरवायउ ॥
विपिनगहननहिं तज्योअकेले । रहियो सुत समान परहेले ॥
कहिइमिभोजनदीन्हनृपाला । पुनिदधितिलककरयोहरिभाला ॥
रामहु के माथे दधि लाई । गोपन सँग बनदीन्ह पठाई ॥
प्रभु सौ बन्धु मग्न मन चाले । धेनु चरावन दीन दयाले ॥
कानन जाइ विपिन छबि देखी । हलधरप्रतिभणबचनविशेखी ॥
दाऊ भली सोहावन ठाऊँ । जेहि निरखतमनउपजतचाऊ ॥
पादप नयनय महि नियराने । नवपल्लव नहिं जातबखाने ॥

दो० तिनपर नभगामी सुवर बाणी बदत रसील ।
कृतकिकोलनानाबिधिन कहिअसलखिय कटील ॥

तापर हरि पाटाम्बर डासी । क्षणक बैठेबिहँसतअबिनासी ॥
पुनि उठि प्रभु पीताम्बर फेरी । द्या दृष्टि चतुराशा हेरी ॥
कारी गोरी पीरी कारी । धौरी धूमरि पीत पुकारी ॥
नीली इत्यादिक लै नामा । मधुर बाणि टेरेउ गुणग्रामा ॥
सुनत धेनु सब आतुर धाई । चहुँ दिशिनिकटश्यामकेआई ॥
कोउ रंभत कोउ कृत हुंकारा । मध्य कृष्णअस लसतेहिबारा ॥
जनु घनघटा चहूंदिग सोहति । तेहिके मध्य सूर हरि मोहत ॥
चरैलागि गोहांकि बहोरी । कहदाऊसन प्रीति न थोरी ॥

दो० भोजन करिय सप्रेम अब कहा राम भलतात ।
सानँद दोनों बन्धुमिलि बिहँसिबिहँसि दधिखात ॥

करिभोजन गय तलतरुगंधा । दिव्यबिलोकि हर्षिदाउबन्धा ॥
तहँबैठे तब प्रभु अलसाई । शिरधरि सखाजंघ सुखपाई ॥
शयनकीन्ह हरि उर सुखपागी । रामहिं कहाबहुरि असजागी ॥
ममनखेल करौ यह आजू । दुठाजोरिदल सखा समाजू ॥
करियसमर भणिइमि यदुनाथा । बाँटिसखा दुठा निजहाथा ॥
पुनि फल फूलायुधन बनाई । दोउ बांधव कृत बिबिधलराई ॥
गोमुख भेरि ढोल सहनाई । डफ दमाम मिरदंग तोराई ॥
सकल शब्द रसनाग्र बजावत । शाब्दिक पूरब लाजलजावत ॥

दो० मारु मारु धरु धरु बदत मुदित ग्वाल दुहुँ ओर।
खेलरहा यह बार लगि करतजगत चितचोर॥
गो रक्षक गोभाग सम वृंदविरचि ताजिग्याल।
ईषधाग्र चखि वृष जननि चारतभे जगपाल॥
तेहि क्षण सखा आइकहरामें। अल्पकु दूरि तालबन नामें॥
दिव्य स्थल मोहन मनलोभी। अहैं तात बनफल बिषक्षोभी॥
तहां परंतु एक भय भारी। असुर खरा कृति कृत रखवारी॥
सुनि संकर्षण सहित उछाहा। तेहि बन जात भय नरनाहा॥
संग सखा बालक गो त्राता। अभय प्रबिशिबनकृतउत्पाता॥
मृति कोपल लकुटी तरुघातें। अल्प भखें फल वृक्षनिपातें॥
ध्वनिसुनि धेनुक राक्षस धावा। गर्द्धभरूपी प्रथम बतावा॥
जागतनिज सुरबल तट आई। घूमि दुपादी हृदय लगाई॥
पदगहि फेरि धरा धरिमारा। मरानखल उठि सम्हरि प्रचारा॥
मर्दिरसा श्रुति अधकरिधावा। हटहट बदत बहुरि तटआवा॥
घुमरि घुमरि पदघात चलावै। जिमिपिपील भूधर डरपावै॥
हँसि हँसि राम खेलावत ताको। मनों सहत वृकमेष धकाको॥
दो० विपुलबार लगि समरइमि धेनुक कियबल साथ।
तब हलधरउर क्रोधसिखि ज्वलित भयउ कुरुनाथ॥
पाछिल चरण दुकर गहि फेरी। पादपैक आयत वल हेरी॥
डारा ताहि तासुके ऊपर। तरवर सहित गिराखलभूपर॥
परत प्राण बिन भो खल सोई। अचरज लहासखन यहजोई॥
जौन समय तरुखल महिपरेऊ। शब्द अघातकठिनबनभरेऊ॥
विटप निकर हाले सुनि शोरा। बोलेकृष्णनिरखि तिन ओरा॥
ग्वालवेश कासु सुनि जाहीं। साखी डुलिखगनिकरउड़ाहीं॥
तेहि क्षण नीलाम्बर चर आई। बिहँसिहरिहियहखबरिजनाई॥
कृपा सिंधु राक्षस यक मारा। बल तेहिकारण तुमहिंपुकारा॥
दो० चले कृष्ण सुनि मग्न मन पहुँचे हलधर,पास।
सुहृद बन्धु सेवक असुर जुरि आये चहुँ ग्रास॥

सो० अस्त्र शस्त्र गहिहाथ युद्ध काज मनमरण गनि।
ते घाले यदुनाथ क्षण महँ बिनहिं प्रयास नृप ॥
जब दुर्नोद रहित बन भयऊ। तब ग्वालनके संशय गयऊ॥
फल अक्षोभ खाये तिन तोरी। मन मानताश भरी पुनि फोरी॥
सुरभी सकल घेरि ते ल्याये। हरिहि चलो बारके आये॥
असकहि युगुल बन्धु मुदपाई। बिहँसत भवन चले सुराई॥
संग गोप सुरभी गण भारी। गये सदन सानंद मुरारी॥
लाये तोरि मधुर फल जोई। घर घर प्रति बँटवाये सोई॥
रैनि शयन करि प्रात चुपाला। करि भोजन टेरेगण्ग्वाला॥
कहि जय जीव धेनु तिनहांकी। सुंदर स्थ्या ले बन धोकी॥
दो० राम कृष्णहु संग तिन गये चरावन गाय।
चारत चारत भूप सुनु कालीदह पै जाय॥
सो० लखि मध्याह्न समेत गोपसुरभि जल पियतभे।
सुनु नृप तू सह नेम पान करतही विषचढ्यो॥
दो० माहि लोटत तब शव मनौं बदत पाहिहरि पाहि।
सुधादृष्टि देखत भये सबहि कृष्ण तेहि ठाहि॥
विष समस्त सबकर हरयो आनँद भे गोपाल।
मंगलअसप्रभुत्यागकरिकेहिभ्यािइयकलिकाल॥
इतिश्रीमिहिबिधिकाव्यपन्थकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियार्यामंग लदासबिरचितायांभेनुकवधवर्णनोनामपोडशोऽध्यायः॥१६॥
दो० ऊसरपर बर्षत घनो पावस अन मिप माहिं।
तृण संपन्न न होत अरु होत शरद मिटिजाहिं॥
तिमि मूरुखके चित्त में उपजत सद्वद न ज्ञान।
विधि सम गुरुके प्राप्त भे सुने समस्त पुरान॥
मूरुख सो जा उर बसत तमरूपी अज्ञान।
तेहिते अज्ञानी नरन डरत चतुर बुधिवान॥
अज्ञानिहिं ज्ञानी करत हरि जन ज्ञान प्रवीन।
काठक काठ सुपुतरी नट नागर आधीन॥

हरि चरित्र उत्तम गुण दायक। बर्णतसुमुनिसुनतनरनायक ॥
सुनु नरेंद्र हरि विष करुणाकर। कंदुक खेल रचो करताकर ॥
काली जेहि दह बसत नरेशा। करिन सकत तहँ जीवप्रवेशा ॥
योजन एक प्रयंत गजाशा। ज्वलितविषाहिपाणमृतुपाशा ॥
जलचर थलचर नभचर योनी। अँचवतजलभूलिहुपतिछोनी ॥
तजत प्राण अवलंब बिहीना। सरिगिरिपरत लिंगतनपीना ॥
भँवर कूल साखी लघु थूला। कदमरहित लखिपरत न भूला ॥
सो द्रुम अक्षय समय चिर केरा। वेद चक्षु विष सहत घनेरा ॥
दो० जासु गरल भवभूत सब बिकल तजैं निज जीव।
केहिकारण द्रुम अक्षय सो कहौ कथा गुण सीव ॥
एककाल खगपति भुवराई। त्रिदशभोग निजचोंचदबाई ॥
तेहि तरुपर बैठा नृप आई। विधिवश बिन्दु परा द्रुम जाई ॥
अमर भयउ सुर भोग प्रसादा। तेहिते सदा कुशल मरयादा ॥
काली कारण श्याम विचारी। चढ़ बृक्ष सहजाहि बनवारी ॥
अधते सखा गेंद ताकि धरेऊ। प्रभु बचिगयउ गेंद दह परेऊ ॥
गिरत देखि कूदे दह आपू। आहट सुनत नाग उर तापू ॥
बमतहलाहल सिखि समश्वासा। फुंकृतमन चिंततमनत्रासा ॥
अब लागि जीवतको यह धाता। विषैलगिकिधौंद्रुमामरपाता ॥
वा कोउ पशु पक्षी बलखानी। आयउमृतुवशमग अनजानी ॥
असमनसमुफ्तदशशतआनन। उगिलतगरलभूपहरिभानन ॥
पैरत दहमधि नभगप गामी। प्रभु कृतज्ञ उर अंतरयामी ॥
रोदत सखा पसारि भुजानी। रंभाहि सुरभिजीवअकुलानी ॥
दो० कहत ग्वाल हे कृष्ण अब निकरि आउजलपार।
एक गेंदकी बीसहम रचि देहैं यहि बार ॥
तुम बिन कहब कहा गृह ताता। पूछिहि आइ यशोदामाता ॥
इतदुख मग्न गोप भूपाला। उत गृह सुद्धिदई यकबाला ॥
कालीदह कूदेउ हरि आजू। सुनिबिलखानेउसकलसमाजू ॥
रोहिण यशुदा नन्द सिधाये। गोपी ग्वाल रुदत सब आये ॥

उरकत मर्दत गिरत अचेता । कालीदह गये सकल समेता ॥
तहँन कृष्ण देखा नँदरानी । गिरनचलीदहजियअकुलानी ॥
गोपिनधाइ ताहि गहिलीन्हा । जीवदानुजनु यशुदहिदीन्हा ॥
कोउ करगहे नन्द कर ठाढ़े । हरि वियोग उर आरत बाढ़े ॥
दो० कहत महावन त्यागिके बसे आइ यहि ठाम ।
तदपि सतायो खलनबहु कुशलभई परिणाम ॥
अबदह गिरेउ कृष्ण करतारा । निकरतकठिन महाविष धारा ॥
नंदव्यवस्था अकथमहाना । जिमिफणिमणिविनतनविनप्राना ॥
दीप रहित गृह सरिविन बारी । पक्ष विहीन किधौं नभचारी ॥
यशुदा दशा निरखि तेहिकाला । थकतभारती बुद्धि विशाला ॥
उपमा कहत तदपि उतरीसी । भई अवाक चित्र पुतरीसी ॥
तजनचहततन तेहिक्षणरामा । आये तहाँअखिल गुण धामा ॥
सबहि बुझाइ जननि तट जाई । कहा होत बावरि कसमाई ॥
अविनाशी श्रीकृष्ण बिचारी । परिहरि शोक धीर धरु भारी ॥
दो० काल काल भवंक जेहि को काली विषमात ।
आवत हैं श्रीश्याम जी तू काहे पछितात ॥
सो० आजुन आयउँ संग मोचिनहरि दहप्रविशियो ।
तजौ सकलदुखअंग जानि स्वतंत्रस्वछंदहरि ॥
तोषत इतहि तालध्वज सबहीं । उतहरिगये फणी ढिगजबहीं ॥
तब उठि सरुष उरगतनश्यामा । वेढ़ाशा लिपटो मति बामा ॥
प्रभुनिजतनहिं विपुलविस्तारा । तजिहरि तब चक्री हुंकारा ॥
जिमिजिमिसरुषकालिफनमारततिमितिमिप्रभुबचितताहिप्रचारत
पुरुशारथ विषगर्व बिलासी । चीन्हानाहिंपुरुष अविनासी ॥
लवाश्येन जिमि शशपंचानन । झपटत तथाहृगानिलभानन ॥
मूढ़ कुमति बश जानि मुरारी । अरुव्रजवासी दुखित बिचारी ॥
सहजउचकिशिरअहिचढ़िगयऊ । शिरशिरप्रतिहरिनृत्यतभयऊ ॥
दो० तनविराटभारी अतुल भयो श्याममहिपाल ।
नृत्यत काली शीशपर नट नागर नँदलाल ॥

अधपगोद्द बाजत करतालो। बोम्फित भारविकलभोकाली ॥
मर्दि मही फण रसना काढ़ी। क्षतजधार तिमते अतिबाढ़ी ॥
विष पौरुष वैभव नशिगयऊ। तब गूढ़पा जानि हरिलयऊ ॥
आदि पुरुष धरि बालशरीरा। मम मदभंज्यो सहिविषभीरा ॥
नत समर्थ को आन जहाना। विषमगरलममतजतन प्राना ॥
जीवनआशतजीयहजानी। शिथिलभयउनृपअहिअभिमानी॥
काकोदर कलत्र कर जोरी। नाइशीशकृतविनय न थोरी ॥
कृपासिंधु भल कीन्ह विचारा। जो ममपतिकर गर्ब प्रहारा ॥
दो० बड़भागी यहिते अधिक अपरनदूसर कोइ।
तव दर्शन पायेहरी गये सकल अघ खोइ ॥
सुर अजादि सनकादिकनारद। भवभय हरणसुबुद्धिविशारद ॥
जप तप यज्ञादिक करिध्याना। जेपद ध्यावत कृपानिधाना ॥
स्वै सरोज पगविमल तुम्हारे। काली शिरराजत अरुणारे ॥
यहि समधन्य आनको आजू। सुधरिगयउ सबबिगराकाजू ॥
अब दयाल ह्वै प्रभुपरिहरहू। नतपति संगमोरवध करहू ॥
नीतिभणत पतिविनत्रियऐसी। खगपति बिनाभामिनी जैसी ॥
प्रमदा पतिबिन तजै कलेवर। पतिव्रता अबलासो सूवर ॥
प्रभु बिचारि देखिय मनमाहीं। रंचकदोष स्वामि ममनाहीं ॥
दो० ज्ञाति दोष यह नाथ है विष विरुद्ध पयपान।
सुनिसनीति वाणीविमल उतारिपरेभगवान ॥
करि प्रणाम काली कह बाता। मम अपराध क्षमौ अज्ञाता ॥
संगर करि फण तुमहिं चलाये। नाग अधमहमजगतकहाये ॥
ज्ञान रहित किमि तुमकहँ जानै। बड़े हृदय लघु दोषन आनै ॥
जो भवतव्य लिखाविधिकाली। भयउसोअवतुममम्मचपाली॥
रमणक द्वीप कुटुम्ब समेता। बसौ जाय परिहरि व्रजखेता ॥
सभय कंपि कह सुनो गोसाईं। उहांजात खगपति मोहिंखाईं ॥
जासुत्रास भजियहिथलआयउँ। सौभरिशापकवच जनुपायउँ ॥
निरभय तहि जाहु वहि देशा। अबनगरुडकरकछौ अंदेशा ॥

दो० चरण चिह्न मम शीश तव को समर्थ दुखदाय।
असकहिकालीमद हरण लीन्हीद्विजपक्षीलाय॥
प्रभु काली उरगारि मिलावा। अरु सब पाछिलबैर मिटावा॥
तब फणीश विधिवत हरि पूजा। यकचिततजा मनोरथ दूजा॥
विपुल भेंटराखी पुनि आगे। बिनती कीन्ह भक्तिरसपागे॥
लै निदेश काली जब चलेऊ। तबकहप्रभुमम सबदुखदलेऊ॥
वेद दण्ड मम उत्तम अंगा। विरचेउ नाथ नृत्य रस रंगा॥
निज किंकरलघु जानिकृपाला। राखेहु प्रीतिमोरि नँदलाला॥
पुनिपुनिकरिअहि दण्डप्रणामा। गो कुटुम्बमह रमणक ठामा॥
इत श्रीकृष्ण एकव्यालारी। दह बाहर आये बनवारी॥
दो० तरणि श्याम प्राचीभँवर प्रगट नशातम शोक।
मंगल ब्रजवासी कमल फूले बिहँसे कोक॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणि श्रीकृष्णप्रियायां मंगलदास विरचितायां कालीमर्दनोनाम सप्तदशमोऽध्यायः १७॥
दो० यशवेद गावत चतुर तथा लखा कलिकाल।
कलिगिनुसुत हितमीतसन अरु पाखण्डविशाल॥
जे साँचे राचे जगत तिनकर झूँठ विचारि।
मन विस्मित हर्षित कलुक सकल पुरुषअरुनारि॥
बनि न परत करणी कठिन सहज नामसोउ नाहिं।
हरियश गावत मुदितहों तजे सबै छल छाहिं॥
भूपति प्रश्न कीन्ह मुनि पासा। ऋषिरमणकथलसर्वसुपासा॥
सो काली तजे कारण काही। बूझतिहों यह बूझा नाही॥
रमणक द्वीप भूपहरि जाना। बसत सदासुमिरत भगवाना॥
अति बलवन्त महारणकारी। लखितासन सब अहिगयहारी॥
नित प्रतिव्यालदेइयककीना। कह्योसबनमिलिविनय अधीना॥
ठाम नियत किय तरु यकताहीं। जात एकअहि चूकत नाहीं॥
वैनतेय निरयहि भषि जाहीं। निजस्थानप्रमुदितमनमाहीं॥

एक दिवसकी रुचिर कहानी । कद्रू सुत काली अभिमानी ॥
दो० निजपियबलअहमितअमित सुनुनरेशचितलाय ।
खगपति भय भच्छण गयउ उर आनंद बढ़ाय ॥
तस्मिन् काल खगेश तहँ आवत भयउ महीश ।
भिरेयुगल भट सेमबली जनु द्वै रूप गिरीश ॥
सो० करी विविध विधि रारि बहुत काल बीते लरत ।
तबकाली हिय हारि निज मनकृतचिंतमन अस ॥
रिपुकर बचत लखत कठिनाई । बचौं कहां भजिजाय लुकाई ॥
वृन्दावन पतंगजा तीरा । जाउँ तहां शोचेउ अहि बीरा ॥
उहां गरुड़ नहिं जाइ सकाई । समर पलाय रहा तेहि ठाईं ॥
यहि कारण काली नरनाहा । बसा आइ यमुना दह माहा ॥
नागाराति नाथ भय कासू । तेहिथलजात न करियप्रकासू ॥
एकसमय सौभरि ऋषि भूपा । करत रहें तप तहां अनूपा ॥
हरिबाहन ऋषि तटगाहि मीना । भच्छत भयउ नरेश प्रवीना ॥
सो बिलोकि दीन्हो मुनिशापा । सुनुखगेशमम बचनप्रतापा ॥
दो० बहुरि आइ है ठाम यहि तौ ह्वै है तुवनाश ।
छम्यों आजुअपराध यह जाहुभवन अनयाश ॥
ऋषि भय तहां न जात खगेशा । सब वृतान्त मैं भणेउँनरेशा ॥
काली जबते करयो निवासू । भयउ नाम कालीदह तासू ॥
अबसुनु आनकथा मनभावनि । दोषशोकरुजसकलनशावनि ॥
कृष्ण चन्द आवत लखि गोपी । सबकोकी चिहँसी दुखलोपी ॥
जीवन मूरि देखि नँदरानी । प्रथमशोकआनँदअकुलानी ॥
तोष सहित दीन्हे बहु दाना । जब आवत हेरे भगवाना ॥
मुखभा विधुमा शरद निहारी । बिकस बच्छसर मन सुतवारी ॥
रोम पंक्ति तन गदगद भयऊ । हरि अनुराग प्रगट उरछयऊ ॥
दो० ब्रजबासी नर नारि नृप जुरे कूल सरि जोइ ।
मृतक सुधा छबि पान करि आनंदे सबसोइ ॥
करत मुखाब्ज अमृत सब पाना । नैन रंध्र छवि पान बखाना ॥

रजनी मुखभा बासर बीता। कहत परस्पर बचन बिनीता ॥
दिवस भरे के क्षुधित पियासे। कहां जाइँ कहिअसतहँवांसे ॥
रैनि व्यतीतत होत बिहाना। बृन्दाबन चालिब मतठाना ॥
अर्द्ध निशा असभा नृपयोगा। सोइगये जब सब ब्रजलोगा ॥
अंधकार यकआत्र विशाला। लागदवाचहुंदिशिशिखिमाला ॥
काननतरु बनचर अकुलाने। जरत बचत नहिं कतहुंपराने ॥
गोपी ग्वाल चौंकि सबजागे। दावानल लखिआरत पागे ॥
भुज पसारिकृत त्राहि मुरारी। रचहु दास जानि सुखकारी ॥
नातरु भस्म होत नहिं फेरा। जलज प्रवाह खानिगो घेरा ॥
त्रासिलजननिजनकअनुमानी। उठे भक्त मन रंजन ज्ञानी ॥
आमिष मध्य सहज यदुराई। पान दवाग्नि कर्यो सुखपाई ॥

दो० गति नाशी पवमानकी मिल्यो अनल चहुंओर।
सुख सोये पुनि रैनितहँ चले सकल उठि भोर ॥
मंगल आनँद सहित सब गृह गृह पहुंचे आये।
भयउ बधायो नगर बहु गयउ क्लेशबिनसाय ॥

इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायां दावाग्निमोचनोनामा
द्वादशोऽध्यायः १८ ॥

दो० क्षुधित पुरुष जिमिहीनमति क्षुधा चितमन माहिं।
निशिदिन कल पावतनहीं तिमि गृहधर्मसदाहिं ॥
लोभवस्त्र भूषण कपट मोहपाग शिर सोह।
काम कामप्रिय क्रोधजन गृहीनिवश दुखद्रोह ॥
ये पांचौ पञ्चकूट सम यकमत होत न जानि।
वरण्यों मैं यदुपति चरित सुखदायक अनुमानि ॥

ऋतु वर्णन अत्र सुनौ नरेशा। मुनिवर कहत दिगम्बर भेशा ॥
जोक्रीड़ानितप्रति घनश्यामा। कीन्हकहत सो नृपबरकामा ॥
ग्रीषम प्रथम दुखद ऋतु आई। आइ भूमि नभ दयउ तपाई ॥
हारक सुखदायक पुरनीनी। पाथसूनजन्तु देह नवीनी ॥

तदपि न वृन्दावन तप ब्यापी। सुरस्थल तमसकतकिझांपी॥
शुभ ऋतुराज त्रिबायुर्वहई। लगत शरीर सकलतपदहई॥
राजत जहां अग्नि सुखआपू। ताथतहां कोउ करतकितापू॥
कुंजै घन द्रुम बेलि सोहाई। तिनपर सुखदनभजलहराई॥
नानावरण कुसुम बन फूले। तिन गुंजरत शिलीमुख भूले॥
सुख स्थल कूक कल कंठा। नाची नृत्य जगत उतकंठा॥
सुमनभगनिकानन्न लखिमोहै। शुभथलवरणि कहैकविकोहै॥
विलसत जहां त्रिलोकविलोचन। अजहूंसोथलशोकविमोचन॥
दो० सुरभिनसँग आतहि प्रभू गये तहां दिन एक।
ललगोतजि हलधरसखा करत ख्याल अनेक॥
सो० तलसमये खल एक नाम प्रलंब प्रपंच करि।
आयउ सखाअनेक ग्वालजानिआदरकरत॥
तेहि विलोकिप्रभु रामहिं भाषा। ग्वालरूप यह असुर समाषा॥
कंस पठाव अबल अनुमानी। मारा हमहिं बधे अभिमानी॥
जिम्ह [illegible] सखा न भाई। निधन उपाय रचो बिलखाई॥
मित्र बपुष घालत अघभूरी। बिहँसे हरि बाणी कहि रूरी॥
निज बपु जन भी यह नीचा। तबतुमयहिमारयो क्षणबीचा॥
भेद समस्त बंधु प्रति गाई। हँसि प्रलंब तट गये यदुराई॥
सहज गहा कर निजकर तासू। मधुर बचन कह रमाविलासू॥
सकलोपर उत्तम तव बेखा। तैं मम मीत कपट अनरेखा॥
दो० भणिअस संग लिवाय तेहि चले श्यामनरनाह।
गोप सखा अधिकाइ रच ख्यालसहित उत्साह॥
एक ओर मूशली प्रधाना। दिशिद्वितीयस्वामी भगवाना॥
द्वै सुत पठइ नाम फल पाता। बुधि बतावत सज्जन दाता॥
ठान्यो खेल यदुनाथा। गये हारिहरषो बल साथा॥
तब मूशलीसंग के ग्वाला। काँध हरि सखन चढ़ेनृपाला॥
निजनिजसंग जोरिअनुगामी। चले लहाइ बदत मृदुबानी॥
असुर काँध हलधर असवारा। कंस काज मन नीच बिचारा॥

भूरिद्रूरि अगमन चढ़ि गयऊ । निज शरीर विस्तारत भयऊ ॥
कज्जल नगाकार तन जासू । विपिन सघनवन काँपे तासू ॥
दो० जनु दधिसुत भासत रुचिर जलद घटा पर भूप ।
दीपत कुंडल तड़ित सम स्वेद बिन्द अनरूप ॥
पाइ यकान्त असुर बलदाऊ । चाहत हतन बनत वैसाऊ ॥
जिमि लेलिहचभ अहिर विचारा । किधौं श्येनचह लवासँहारा ॥
अथवा जिमि वातप हरिघाता । चहततथाखलमनअकुलाता ॥
जानि प्रपंच रोहिणी पूता । खल मल राशि कंसकेरदूता ॥
प्रथम श्याम कहि भेद बतावा । सो सुभिहोत रोष उर छावा ॥
कोपि मुष्टिकन मारि गिरावा । विबुधसमाजनिरखिसुखपावा ॥
जानितीब्र असि निजगलमारे । किमिन चतुरयमसदनसिधारे ॥
धोखेउ पिये हलाहल कोऊ । अवशि मृत्यु पावै नर सोऊ ॥
दो० मंगल तिमि खल जानिहरि भिरतआइबरिआइ ।
बनिन परत पौरुष कछू चलत शरीर गँवाइ ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रिया
यांमंगलदासविरचितायांप्रलम्वासुरवधवर्णनोनामै
कोनविंशोऽध्यायः १९ ॥
दो० जिमि आरत नर उर बसत द्रव्यचाह दिन राति ।
तिमि संतन के हृदयमहँ हरिपद प्रीति हृदाति ॥
असी लच्छ भ्रमि योनि मन मनुज देह शुभपाइ ।
परमात्मा पद प्रीति बिन वृथा गमावत भाइ ॥
महिधर तर छिति छोरलौं काल बचैगो नाहिं ।
हरिभजुतजि छल अमरपद पावैमिलिहरिमाहिं ॥
परम बिवेकी मुनि शुकदेवा । समरथ आदि पुरुषकर भेवा ॥
भूपहि कह्यो प्रलंब निपाती । घूमे हलधर सुख अधिकाती ॥
सखन सहित संमुख ते श्यामा । मिले तबहि कौतुक [illegible] ॥
ग्वाल अपर बन चारत धेना । असुर मरण सुनित्रसेसुसेना ॥
देखिनि सघने आथ खल सोई । शृंगासित गिरितनि जनहोई ॥

चकित ग्वाल घूमे उत्ताला। गहरजानिसँग रामगोपाला॥
दर्भ कास तजि तवलगिधाई। चरत मूंज बन पहुँचीं जाई॥
त्रिविभ्राता त्राता गो साथा। आये काँस दर्भ कुरुनाथा॥
दो० तहाँ एक सुरभी नहीं जोहत चहुँ दिशिग्वाल।
गोवियोग बिछुरे सखा फिरत मूंज बन ताल॥
छं० चढ़ेवृक्षतट ैचहुँओरवाल।सखानाम लैफेरिवासांसि जाला॥
कहामीतकान्हतवैजो।रिपानी। किगोमूंज आरण्यहैजूभुलानी॥
दो० ग्वाल बाल भूले फिरत ढूँढ़त कानन गाय।
सुनि यहप्रभुनदि कदमपरवंशीदई बजाय॥
ऊँचे सुर मुरली सुनि राजा। धेनु गोपकर सकल समाजा॥
मगकुघाट आये चहुँ ओरा। दाविहिमिलतजिमिनभसरिजोरा॥
घेरयो हरिहि सबन तजिशंका। जस दुर्भिक्ष उदारहि रंका॥
तदनंतर देखन का भूपा। प्रजरत अग्नि भयंकर रूपा॥
चतुराश्रा द्रुम जूह जरावन। पशुखगभषतप्रलयजनुआवत॥
गह्वर बाल सखा हरि केरे। आरत वचन वदत असटेरे॥
पाहि पाहि नँदलाल दयाला। शुक्र करालकाल यहिकाला॥
भस्मी भूत करिहि जनत्राता। रक्षा करहु जगत पितुमाता॥
दो० हरिविलोकि दावाग्नि बड़ि कहा सखन समुझाइ।
मेटहुत्रासहि मूंदिदृग सुनिलिय सखन उपाइ॥
मूंदत नैन सिखीहरि नाशी। आन रुचिरमायापरकाशी॥
गोधन ग्वालन युत यदुराई। बन भांडीर दीन्ह पहुंचाई॥
तब सब सन कह नैन उघारो। विनशादुखचहुँ ओरनिहारो॥
निरखत अक्ष खोलिसबग्वाला। कहतकहाँहरिवहासिविसाला॥
अरुयहि विपिनकौनुलै आवा। अत्याश्चर्यन परत लखावा॥
सुनि यदुनाथ मन्दमुसुकाई। सबहि साथलै घरगये राई॥
प्रति आगार सबन बनलीला। कहा नरेश सप्रेम सुशीला॥
बधप्रलम्ब दावाग्नि कहानी। विधि पूर्वक भणीजसिजानी॥
छं० जस जानितस सब गोप बालन कथा घरघर नृपकही।

सुनि नन्द पुर बासीसुकानन चरितदेखन गयसही ॥
माया विकट यदुनाथकी कछु भेद काहून पाइयो।
तवभूमि निजनिज सद्म आये कृष्ण पद मनलाइयो॥
दो॰ मंगल बपुरे गोपको हरि अनंत गुन भूरि।
तजिप्रपंचभजुहरिचरणविधिपितुजीवनमूरि॥

इतिश्री मद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रि
याग्रांमंगलदासविरचितायांदावाग्निहरणोनाम
विंशोऽध्यायः २०॥

दो॰ बाल तरुण वृद्धवश अज्ञकाम इरषाहिं।
जात विचारत सुमति शुभकुमति अशुभतेनाहिं॥
बिन सेये नीरजचरण राधापति के तात।
जन्म सुतनवमन मनोअरुमा किमि सुरझात॥
सो॰ कूकू निशा बुधतात दृष्टि परे संशय नहीं।
बिनध्याये जगत्रातकठिन सुकिपदवी चतुर॥
ग्रीषम ऋतु नृप प्रथम बखानी। अनय महीपति करणीठानी॥
पावस भूप प्रचंड कराला। खग पशुजीवजंतु तपशाला॥
लखि दयाल ह्वैचहुँ दिशिराई। जलद चमूसमीर बोलाई॥
विजय लागि ग्रीषम सहरोसा। छाइसुवर्षे मही मन पोसा॥
घन गाजत बाजत रण मारू। पावस भूप जगत सुख सारू॥
नाना वरण बलाहक ऐसे। भट प्रचार रावत रण जैसे॥
कामकमन्द चंचला भासा। अस्त्र शस्त्र जनु समरप्रकासा॥
वक अवली राजत ध्वज श्वेता। भूप मनोहर सो छवि देता॥
दो॰ दादुर बरही गण वदत जनु विरदावलि बंदि।
शुचि पावस नृपतिसुरुचि यशगावत आनंदि॥
इन्द्र कमठ पावस धनु सोहैं। जेहिबिलोकिग्रीषमरिपुरोहैं॥
वृष्टि बुन्द दीरघ झरभारी। भट जीमूत हनत शरधारी॥
अरि वैभव दारुण अनुमानी। ग्रीषम तजि रणभूमि परानी॥

मेघनाद महि तिय सुख दयऊ। तपफलसार प्रगट जनुलयऊ॥
पति वियोग धर अबलाभूरी। पलसुंडाल कीन्ह तपरूरी॥
तेहि फल कुच भूधर शितलाने। तपवियोगदुख मिलतनशाने॥
पतिहि प्रसंगति गर्भहि धारा। उपजे पुत्र दुगुण निधिभारा॥
तेलै भेंट फूल फल पाता। करतप्रणामपितहिजनुताता॥
दो० तेहि अवसर वृन्दा बिपिन भूमि सोहावन तात।
जिमि शृंगारित कामिनी किमिबरणी छबिजात॥
स्रवती सर नारे जल पूरे। सोहत राजहंस खग धूरे॥
धवल विटप शाखा शुभ झूमें। सघनउदार लसत जिमिभूमें॥
चातृक पिक कपोत अरुकीरा। करत कुतूहल सुखद गंभीरा॥
अपरनभग गण नाना जाती। बोलत कामकला सरसाती॥
जहँ तहँ नर युवती नृप जूहा। पहिरे बसन कुसुंभित सूहा॥
झूलत गावत राग मलारा। प्रगटतमुनिमनोजअधिकारा॥
तिनके निकट जाय हरि रामा। करत बाललीला सुखधामा॥
प्रमुदित सो लखि नरअरुनारी। बीती इमि बरषा दुख हारी॥
दो० जग जीवन नँदलाल तब कहा सखन समुझाय।
पावस गत आई सहज सुख दशरद ऋतुभाय॥
सब तपहरणिकरणि सुखसोहर। शरद किधौंममभक्तिमनोहर॥
स्वादगंधि जग मोदक भयऊ। जलप्रवाहजहँतहँ घटिगयऊ॥
रजनी ऋक्ष नाक उजियारा। मनो प्रकाश अगुणकरतारा॥
पन्थी भिक्षुक वणिक समाजा। वर्षा विगत चले निजकाजा॥
मंद मंद गति शीन सोहावा। धीर दंभि जनु पन्थ चलावा॥
निरमल उदित क्षपाकर कैसो। परउपकार सुयश जग जैसो॥
शरदतापअति असहकराला। जिमिअनीतिशासनमहिपाला॥
जानिसुगमऋतुकरिदलसाजा। चले आन नृप जीतनराजा॥
दो० सकल शरद ऋतुधर्म हरि सखन कहा बहुभाँति।
सुनिआनन्दितभे अखिल किमिकरिवरणौ जाति॥
पुर कानन नित श्याम जू लीला करत अपार।

भजु मंगल श्रीकृष्ण पद तजि के कपट बिचार ॥
इतिश्रीमद्विविधाकेल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रिया ां
मंगलदासविरचितायांवर्षाशरदवर्णनो
नामैकविंशोऽध्यायः २१ ॥

दो० ज्ञानदिवाकर व्योमउर जब लागि उदिननहोत।
तबलहुतम अज्ञानवश उगत नशत दुख पोत ॥
क्रीयमान गुण दोष जे भ्रमत न ज्ञानिहि सोइ।
परारब्धि आधीन है संचित हूं गय खोइ ॥
पूरण ज्ञान प्रताप हिय प्रगटै हरि की भक्ति।
अभयफिरै भव बीथिका बँधै न माया शक्ति ॥

सुठि सोहर सुनु चरित महीपा। कहौं वुझाइ तोहिं कुरुदीपा ॥
इमि प्रबोधि सब हरिनरनायक। करैलागशिशुकौतुकभायक ॥
जबलहु हरि बन धेनु चरावैं। तबलगि गोपी हरियशगावैं ॥
कथाअलौकिकयक दिनभयऊ। कानन श्याम बेणुरव ठयऊ ॥
बंशी शब्द सुनत ब्रज नारी। सकलविरहवशकाजबिसारी ॥
तरस ग्राम बाहिर यक ठांई। सुश्रोणी मिच जोरि अथाई ॥
बैठीं हरि दर्शन अभिलाषा। तब यक सखी परस्पर भाषा ॥
लोचन सफल होइँ हरि दरशी। कर पवित्र होवैं पग परशी ॥

दो० अबहि कान्ह बन नृत्य करि गावत धेनु चराय।
गृह प्रदोष आवत दरश मिलिहैं जानिअकुलाय ॥

जल्पत कत निरर्थ अलिबोली। ध्वनिसुनुबंशीवजन अमोली ॥
बेणु बंश पावन करि दयऊ। केहिगुणश्यामनेहअतिठयऊ ॥
अरुणोदय ते निशिमुख लागी। हरि मुख लगीरहत अनुरागी ॥
करत सदा अधरामृत पाना। कोसखियहिसमधन्य जहाना ॥
आनँदवृष्टि पयद ध्वनि बाजत। कलरवसुनत कलाधरलाजत ॥
अति हमते प्रिय हरि कह बेनू। निशिदिन ढिगकरचारतधेनू ॥
मम सन्मुखनिर्मित बित नासी। प्रीतम प्रियावनी मुख बासी ॥
अजहूं बय मानत जग जंगम। जड़मति निंदिबड़ीहरिसंगम ॥

दो० पोंछि पीतपट याहि जब श्याम बजावत हर्षि ।
सुर किन्नर गंधर्व मुनि लेत सबाम अकर्षि ॥
तेअम्बर प्रफुल्लित मुदित निजनिज यानारूढ़ ।
श्रुति सध्यानदै श्रवणकृत बदत वाक्यमृदुगूढ़ ॥
सुनत विमोहत चित्र लिखेसे । सबथित होत अमोल बिकेसे ॥
को महान तप किय विकराला । यहि आधीन तीनितिहुंकाला ॥
प्रत्युत्तर सखि आन बखाना । दारुण तपकष्टित यहि ठाना ॥
बेणु वंश उद्भव भा आदी । भजेउ हरिहिदिनकीननबादी ॥
हिमि बतासआतपअघशीशा । सह कराल जससहत तपीशा ॥
दुख अनीक खंडन सह थूला । छिद्र कायकर क्लेश अतूला ॥
धूमपान करि भई प्रसिद्धा । तपन कीनकहनारिनिषिद्धा ॥
तपसा यह न आपको आली । पूत जानि प्राही खलशाली ॥
दो० कसन बेणु मुरलीहमहिं विरच्यो पितुवरआदि ।
रैनिदिवस हरिसँग रहत कहतआन सुखबादि ॥
सुनि क्षितीश धरमात्मा जबलगिहरि तेहिं ओर ।
आवत नहिं बन बेणुते सकल जगत चित चोर ॥
सो० गोपी तब लगिराय विविधभाँति हरि यशगुणें ।
दरशन करि सुखपाय जाइ गेह आनंद सों ॥
इतिश्री मद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्ण
प्रियायांमंगलदासविरचितायांवंशीआख्यानव
र्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥
दो० जिमिचकोर पात्रकभषत तजत न को सुख जानि ।
विकलहोत दारुण चतुर निजकुलप्रण अनुमानि ॥
तिमि प्रवीण हरिगुण भणत तजत न पाइकलेश ।
हरिकी कृपा कटाक्षसों रहत न दुखकलेश ॥
कहत अलख लख अगुण गुण सो भ्रमहीं निरुवारि ।
बरणों यदुबर चरितवर लखि दायक फलचारि ॥
सुनुनरेश गतशरद बिचारी । आई हिमि तुषार बढ़वारी ॥

नागलता बिकलित भैकैसे। लखत गवास पयस्वनि जैसे ॥
ब्रज युवतिन सम्मत असकीना। न्हाइयमार्गशिरसखीप्रवीना ॥
जन्म अनेक कलुष नशन्हाता। जिमिहरि चंडउड़त तरुपाता ॥
पूजतमन लालसा सहेली। वर्षापाय मुदित जसवेली ॥
नरकालीन बदतयह सजनी। मारगभरि न्हाइय गन रजनी ॥
जो निरविघ्नहोय प्रणपूरा। मिलैं कृष्णवरमम बनफूरा ॥
सुनिसबके मनदृढ़ मतआवा। मुदइच्छित फलफुर उरछावा ॥
दो० उठिप्रभात बस्नाभरण पहिरि अनंदित नारि।
जुरिसप्रेम यमुनहिं चलीं मारग न्हान बिचारि ॥
करि अस्नान उदक रबिदेई। मृतिका चिकन बाहिर लेई ॥
उमा स्वरूप बिरचि रुचिमानी। आवाहन अस्थापन ठानी ॥
पाद्यासन शुभअर्घ सुदीना। अचमनन्हानसबिधिसुठिकीना ॥
मलयज कुसुम चढ़ाय सप्रीती। धूप दीप नैवेद्य सरीती ॥
आरति ताम्बूल युतपूजी। करिप्रदक्षिणातजिरुचिदूजी ॥
नौमि जोरिकर बिनय बखानी। इमिषोडश बिधिपूजिभवानी ॥
वरयाचहिं अस आरतबानी। तवमहिमागिरिजाजगजानी ॥
कर्म पोच हम जड़मति नारी। अहहरि बरचाहहिं बरभारी ॥
दो० हैदयालु लखि चेरिनिज हे त्रिपुरारि पियारि।
बरयांचा सो दीजिये कीरति बिमल तुम्हारि ॥
यहि प्रकारनित न्हाइ भुलावा। करैंदिवस निरजल व्रतवाला ॥
दधि ओदन संध्या कहँपावैं। भूमिशयन करिहरि गुणगावैं ॥
मिलैशीघ्र फलव्रत यहि हेतू। मारगन्हाइ सधर्म सुचेतू ॥
रुचिर वारता यकदिन केरी। सुनु भूमीश सदृढ़ मतितेरी ॥
ब्रज बनिता जुरिन्हान सनेमा। आनघाट गईं सुरुचि सप्रेमा ॥
पट भूषणउतारि सरिकूला। नग्नन्हाइ मनहरि रसभूला ॥
गुण अनुवाद श्याम बखानैं। क्रीड़ाहिंसकलसमुदअविषादैं ॥
तस्मिन्काल बंशिवट छांहा। राजतराम रहित जगनाहा ॥
दो० दैवयोग ते गानसुर पस्यो श्याम श्रुति आइ।

गुणरूप करुणानिधे जातभये तहँराइ ॥
अलखठाढ़ देखत जलक्रीड़ा। सत्यसिन्धुहरिमनहिंअब्रीड़ा ॥
कौतुकीय मनकौतुक आयउ। बसनाभूषण सर्व चोरायउ ॥
गाठरिबांधि प्रियक आरूढ़ा। भयउश्याम सुनि मोहतमूढ़ा ॥
निजप्रिय वेदऋचा अनुमानी। ठगी भूपवश कामनजानी ॥
नेककाल गत आपते बाला। निकरिदीख नहिंचीरनृपाला ॥
श्रुतिकन्या हेरैं उठिगोपी। विकलमहामतिथिरता लोपी ॥
वादैं चकित परस्पर सोई। अबलागि तटसरि आवनकोई ॥
हारक जो मम चीर विधाता। प्रगटहु सोकृतज्ञ गुणत्राता ॥
दो० नतकेहि मिसतन नग्नगृह जाइब हे करतार।
कदम शाख घन पात सखि लखतभई तेहिबार ॥
मोरमुकुट शिरफल पितुगाथे। सुरबल्लभा तिलक भलमाथे ॥
करसरोज लकुटी भादाई। उरबन स्रक उर्बशी सोहाई ॥
पीत बसन शासित हरिचीरा। बैठेमौन साधि यदुबीरा ॥
निरखतहीं तेहिसखि कियशोरा। अलिहमलखाचीरचितचोरा ॥
करि प्रपंच सब बस्त्र अगोटी। राजत हरितरु परलै पोटी ॥
तासुबचन सुनि सकल निहारी। द्रुमघन सखा बैठ बनवारी ॥
हरिविलोकित्रियलाज लजानी। आतुर प्रविशि गईं नृपपानी ॥
जोरि भुजा ग्रनवाइनि शीशा। आरत विनयकीन्ह धरणीशा ॥
दो० रुजपातक घातक वृजिन दीनबन्धु यदुनाथ।
सत्य सेव किनि लाखिदरश दैकरकरयो सनाथ ॥
सो० अब दयालु है श्याम बस्त्रदान दीजिय सुरुचि।
सुनिबोले गुणग्राम इमिन देहुँपितु शपथशुचि ॥
सबरस बाहर सकल उघारी। आवहु चीर लेहु दुखहारी ॥
सरुद पोषि तनकहँ कुटिलाई। पढ्यो नीकगुण बढ़ि चतुराई ॥
बिहँसि बदतघन रसबरु त्यागौ। नग्न आइपटममढिग माँगौ ॥
जनक सहोदर हमरे जानैं। गहैं तुमहिं कहिचोर बखानैं ॥
तबपितु अंबहि देहिं गिलानी। भूलिजाय लालन मुसुकानी ॥

हमकृति कानिमानि यकनाता। तुममेटत प्रिय पूरब बाता।
अब कौनौ बिधि चीर न देहूँ। निजजन बोलु चोरुबनि लेहूँ॥
सभयनारि कह दीनदयाला। ममसुधि लेनहार गुणकाला॥
दो० तुमते बड़ीतिहुं पुरसगा अन्यन आपन कोइ।
करें दुहाई जासुसन लखिन परत हरिसोइ॥
जनपति रक्षक आपु मुरारी। जिमिपोषक नीरज बनवारी॥
मारग मासन्हात तब हेना। केवल चरण राग श्रुतिसेता॥
जोपै फुर दोहद पद मोरे। कृतस्नान मारग छल छोरे॥
सत्य मित्रसन तौ कस लाजा। तुमसखिकरहु भणतब्रजराजा॥
परिहरि छद्मभाव निजचीरा। लीजिय मिटैसकल भवभीरा॥
सम्मत कीन्ह सुनत प्रियबानी। बस्रलेहु सखि तजहु गलानी॥
हरिकृतज्ञ तन मन बच केरे। बनायोग शुचि पायहु नेरे॥
असमत ठानिसुनौ भुवराई। गुह्यस्थल कुचकरण छपाई॥
दो० सकुचि नारिजल बाहिरेजब आईनर नाह।
बिहँसि कहाहरिठाढ़ि अबहोहु जोरि भुजबाह॥
पटभूषण तबदेहुँ तुम्हारे। हैं निरर्थकहि काज हमारे॥
सरल प्रकृतिहम त्रियमति भोरी। कहत बात तुम छलरस बोरी॥
तब माया दुस्तर संसारा। जेहिबश होतशंभु करतारा॥
कुमति बिवश त्रियनाथ सदाहीं। ठगेउश्याम कछुबड़ कृतनाहीं॥
जोठग बिबुध चतुरठगि आवै। मूरख ठगतन बड़ पदपावै॥
व्यापक अखिलबिश्वतुमएका। अरुअनंत हमकीन्ह बिवेका॥
मनभावित कृतकरौ कृपाला। हम परिहरीलाज यदिकाला॥
इमि कहिकर सरोज तिनजोरे। करहिंनवनि बड़िही तृणतोरे॥
दो० सत्य प्रेम लखि बस्त्रतब दिये समस्त मुरारि।
निकट आइ मायापते कह इमिबचन बिचारि॥
हास्यन करेहु बिलगु जनिगुनहूँ। दयउँ सीखमो कारण सुनहू॥
नीराध्यक्ष बरुण दिशि नाथा। तीनहुँ काल बसत सो पाथा॥
मज्जन नग्न असृत मनुजादा। खोवत मनहुँ धर्म्म मर्य्यादा॥

वरुण वास जल जानि प्रवीना। नग्नन्हातनहिंबद बुधपीना॥
चीर हरण कीन्हा यहि भेदा। पुनिनन्हाउपय नग्नअखेदा॥
अबगृहजाउ मुदित तजिशोचा। पाप तुम्हार आजुहौं मोचा॥
रास मास दामोदर माहीं। करिहौं तव सँग संशय नाहीं॥
सुनि निबन्ध रासावधि नारीं। प्रमुदितनिजनिजगेहसिधारीं॥

दो० श्याम जाइ बंशीबटहि सखा धेनु लै संग।
कानन घनकहँचलतभे छबिलखिलजतअनंग॥
फल प्रसून सम्पन्न द्रुम रहे भूमि निय राय।
निरखितिनहिंश्रीश्यामजू कहतसखानबुझाय॥
यथा वृक्ष ये तथा जग हैं उदार नर धीर।
आपुसहैं दुख आन हित करैं हरहिं सब पीर॥

सो० इमिहिं बुझावत श्याम जातभये यमुना निकट।
मंगलतजि भवकाम भजु हरिकूटे भव विकट॥

इतिश्री मद्विविध किल्विषान्धकार दिनमणि श्रीकृष्ण
प्रियायां मंगलदास विरचितायां चीरहरणवर्णनो
नाम त्रैविंशोऽध्यायः २३॥

दो० उपजतजलतेलौन जिमि बहुरिमिलत पयमाहिं।
तिमि सब देहीं ब्रह्मते उपजै नाशि मिलिजाहिं॥
यथा विरोचन स्वबलहीं देत पसारि मयूष।
कर्षि लेत निज कौतुकै समुझत चतुर अदूष॥
तथास्वतंत्रित ब्रह्म बुध निज कृत ते क्षेत्रज्ञ।
अमित रचत अरु हरत है जानत अज्ञ न तज्ञ॥
सो अनादि अज अंत बिन पारब्रह्म परमीश।
स्ववश धस्योमानव वपुष नौमि तासुपद शीश॥
विशद यथा हिमकर तथा दूषण बिनगुण तासु।
बरणतहौं बुधजन सुनौ दायकफल श्रुतिआसु॥

कुरुकुल भूषणसों ऋषिराई। कही बहुरिइमि कथा बुझाई॥
जबकृतांत अनुजा अविदूरी। पहुँचे नृपजगती बनमूरी॥

कुंज अभिराम छांह भे ठाढ़े । तब गोपाल सुदारत बाढ़े ॥
नाथ क्षुधा व्यापी बिन सीमा । होत अधीर जबै कलजीमा ॥
निज निकेतते जो कुछ लाये । क्षुधान मिटी तासु के खाये ॥
धूमसमूह परत जो देखी । कंसत्रास संक्षिप्त बिशेखी ॥
मथुरा भूमि देव मखनाधत । भक्तिसहितहरिपद अनुराधत ॥
तिनढिग जाहुनाम ममलीजौ । जोरिहाथ अभिवंदन कीजौ ॥
दो० जिमि भिक्षुक साधीन ह्वै याँचत तिमि तुमतात ।
माँगेहु भोजन मानतजि सुनि इमिहरि सुखबात ॥
ग्वालसुदितमनगय तिनपासा । प्रबलक्षुधाव्यापित भ्रमभासा ॥
दूरिहिते गज अंग प्रणामा । कर्योसभय भूपतिगुणधामा ॥
जोरि हाथ आरत गय भाषा । कठिनक्षुधा अहार अभिलाषा ॥
बिदित जगत यह चतुर बतावैं । भूखबुद्धि बल तेज नशावैं ॥
कृपानिधान बिप्र मखकारी । तुमहिं प्रणामकहा असुरारी ॥
अरुयह सानँद कहा सँदेशा । हमहिं क्षुदा लागी धरमेशा ॥
अल्पाहार दयाकरि दीजिय । सुयशमहानसमययहिलीजिय ॥
सुनिसरोषद्विजभण क्षुधिनासी । बड़मूरख तुम गोप कुबासी ॥
दो० मख पूरण बिन रंच भष देईं न हम गोपाल ।
मीत सखा सोदर चतुर बरु मांगै यहिकाल ॥
परिपूरण करि यज्ञपुनि शेषभाग रहिजाय ।
बाँटेंगे सो लीजियो कृष्णहि कहौ बुझाय ॥
मृदुभाषा आरत रससानी । गोपन बहुरि महीश बखानी ॥
अतिथितोष समधर्म न आना । कहत बिबुध कबिबेद पुराना ॥
अतुल पुण्यलीजियक्षितिदेवा । ईषद भष दीजियक्षण देवा ॥
सुमन यज्ञ कृत द्विजबर सोईं । बकिथाके पुनि बोलनकोईं ॥
महिसुर भूप परस्पर कहईं । पशुपालकजड़ पशुसमअहईं ॥
यज्ञमध्य यांचत मख भाषा । कुमतिक्षुधावशगुणइनकागा ॥
ग्राम बाक्य सुनिपलटे ग्वाला । आये जहँ शोभितनँदलाला ॥
दीन बचन कह सुनौ गोसांईं । मान महत निजदीनगमांईं ॥

दो० भिक्षाटन निंदक करम कीन्ह तुम्हार निदेश।
परुषाक्षर स्योब्यंग्यता कहे न भष दियलेश॥
अबका करिय दया जलराशी। दारुण क्षुधा शिथामनभाशी॥
द्विज प्रमदा करुणालय सोई। अति धर्मज्ञ भक्ति रस भोई॥
पांचौ तिन ढिग जाइ अहारा। देहैं तरस करौ जनि बारा॥
हरिआयसु शिर धरि सब धाये। आतुर द्विजवनितनतट आये॥
भोजन रचहिं मुदित मननारी। गोप विलोकत भये सुखारी॥
नौमि जोरिकर प्रभु सन्देशा। दीन गिरामय कहा नरेशा॥
सुनौ मातु यहि क्षण हरि देहीं। उपजी क्षुधा बिपुलहिततेहीं॥
तुम पै भोजन मांगि पठावा। दीजिय दर अहार मनभावा॥
दो० सुनि भूसुर प्रमदा मुदित भईं भूप अधिकाइ।
भोज्य तर्क रसपात्र हरि भरिधाईं अकुलाइ॥
निजबलसम रोक्यो द्विजन तदपिरुकी नहिंकोइ।
एक नारिके कंतने बरजि राख त्रिय सोइ॥
परिहरिकाय ध्याइ शकटारी। प्रथममिली हरिकहँ वर नारी॥
जिमि जल तुंग तरंगहि फारी। मिलतनीर तिमि बालमुरारी॥
तेहि पश्चात नारि निकरंबा। हरितट गईं सग्वाल कदंबा॥
सखा सिरोधी कर हरि धारे। रुचिर त्रिभंगी रूप सम्हारे॥
कर सारस अंभोज प्रसूना। लसतचारु अनुपम तेहिजूना॥
भोजन पात्र क्षमा धरि नारी। सुख अनूप लखिभवभयहारी॥
सानुरागसेन्द्रियनतिकीन्हा। सकलसाखिनतचानिजप्रभुचीन्हा॥
यककहदेखआलिखबिलोनी। बरणिसकतनहिं शेष अयोनी॥
दो० नयन दशन नासाकरण अकथ सखा चहुँओर।
ऋक्ष व्यूह मध्येन्दु विन तर्क सो नन्दकिशोर॥
कीरति बिमल चंद्रिका जासू। बिकसकुमुद जनखलतमनासू॥
श्रवत भक्ति रस अमी अपारा। दुरितानन्त तापहर धारा॥
जाकर ध्यान करत मुनिज्ञानी। मनगोतीत बदत श्रुतिबानी॥
सो सच्चिदानन्द गोपाला। निज इच्छा तनरचाकृपाला॥

प्रथमगुणिनसुखसुनाजोआली। नटवरबेष सुभग रिपुशाली॥
नित उर दरश लालसा जाकी। भयेसुफलचपलविलासिताकी॥
नर शरीर फल पायउ आजू। अबन आनजगतीसनकाजू॥
इमि बतराय जोरि द्वौ पानी। अतिआरतमय विनयबखानी॥
शरणागत बत्सल भगवाना। विभव प्रताप अजानपुमाना॥
विधि महेश लम्बोदर सूरा। उडप महीधर कतहुँकि पूरा॥
गाय सकत कौ असुर अराती। दया देखि उर दया जुड़ाती॥
प्रणतारत विभंज श्रुति सेतू। जनपालक वड़िकृपासमेतू॥

दो० जावत कृपा न कृपानिधि होत दास पर भूरि।
तबलहु दरशन रावरे वेद वदत हैं दूरि॥

हमरे तुल्य धन्य नहिं आना। संचितअघपददरशिनशाना॥
बिप्र कृपण मूरुख अज्ञानी। मोहलोभवशअतिअभिमानी॥
आगम निगम पुराण बखाना। तव मायावश तदपि नजाना॥
पुरुषोत्तम अनादि तुम एका। पहिचानैं जेहि देहु विवेका॥
बेधा बामादिक वश माया। को महिदेव धरे नर काया॥
तपव्रत मख साधिय जेहिलागी। तेहिभोजननदयउमतिखागी॥
दाया उदन्वान हैं सोई। नर तन पाइ भक्ति तव होई॥
धन क्रीड़ा जन धन्य जहाना। तुम्हरे काज लगे भगवाना॥

दो० मैथुन क्षुत्तृष्णा तथा सम सबही के होत।
विद्यावतजन हृदय खल करत अविद्य उदोत॥

ज्ञान बिराग तपस जप सोई। तवयश भजन जासुमहँ होई॥
सुनि हरिविनय पूछिकुशलाता। पुनिहँसिश्यामकहीमृदुबाता॥
जनिप्रणाम मोहिं करौ सयानी। नंद सूनु निजमन अनुमानी॥
तुम जग पूज्य विप्र त्रिय अहऊ। अनुचितवचन देविकसकहऊ॥
जेनर द्विज कर आपु पुजावैं। ते भव कुछ न बड़प्पन पावैं॥
हमहिं उचित तुम्हारि सेवकाई। क्षुधितजानि भोजन लैआई॥
पर काजी भूतल नर थोरे। भाषत सत्य चतुर दृढ़ मोरे॥
दया शीलनिधि जे जग प्रानी। अंतवास दिवि लहत सयानी॥

दो० कहा करिय आदर इहां हम तुम्हार गुणखानि।
दुरिभवन बनि परत नहिं आवत मनहिंगलानि॥
यहि बेरिया घर होते आजू। करते शिष्टाचार समाजू॥
मम हित बिथुर सदा तुमभारी। दैभोजन पुनि कीन्हसुखारी॥
हमसों बनिन परी पहुनाई। नहिं पछिताव जन्मभरिजाई॥
इमि प्रबोधि हरि नारि समूहा। कहत भये फिरि असशत्रूहा॥
श्रद्ध बिलम्बभा तुम कहँ आये। अवगृह जाहु मोहिं उरलाये॥
तव बर्त्तम पति हेरत ह्वै हैं। पन्थ बिलोकनकारण द्वै हैं॥
प्रमदा बिन मख फलित न होई। कारण प्रथम परत यह जोई॥
द्वितियेनारिहीनपतिकानन। अवशिजाहुयहममअनुशासन॥
सो० त्यागि ज्ञाति कुलकानि नेह कुटुंब बिरागमन।
सुख पूरण अनुमानि लंघिसेतु जग यज्ञकर॥
दो० परिहरि लज्जा गुरुनकी पति अनुशासनटारि।
पदकौशीश स्नेह बश आई हम अनुसारि॥
बाम बान पतिशासन टारै। श्रुति बिपरीतकर्म्म अनुसारै॥
कन्त रजायसु अगमत नारी। बासव नगर लहत सुखभारी॥
आज्ञा भंजि भर्त्त हम आई। उहाँतजाइ सकहिं यदुराई॥
हठकरिगये ब्यंग द्विज बैना। कहि बिहँसें सुनुकुमुदिनिनैना॥
जो कोपहिं तौ देहिं निकारी। फिरिहम कहाँजाहिं बनवारी॥
तव शरणागत कारण एही। रहैं सुखेन अनादर तेही॥
अरु यक नारि हमारे संगा। धाई तव पद प्रीति अभंगा॥
तासु कंत राखा हठि ताहीं। तनअकुलाइ तजाक्षणमाहीं॥
दो० बिहँसि देखाई श्याम तब सबकहँ सो सुकुमारि।
बचन भक्तिसाने मधुर पुनि बोले सुखकारि॥
जेहरि रस पागे छल हीना। कतहुं होत तिन नाश सखीना॥
अद्भुतचरित लखतद्विजबाला। चकिभा दारु पुतरि समहाला॥
पुनि धरिधीरहरिहिशिरनावा। सुखद मनोहर प्रभु यशगावा॥
अति बिकशलनाथतवमाया। जेहिवश तिहुँपुरजीवनिकाया॥

तबसबालकरिभोजन श्यामा। नारिन कहा जाहु निज धामा॥
तबते अब आदर अधिकाई। करि हैं तुव पति हृदय लजाई॥
करिप्रह्लन युवतिन कर जोरी। निजथल चली सुवगुण धोरी॥
उतमहिदेव करत पछितावा। हरि अवतार प्रसंग चलावा॥

दो० श्रुतिइतिहास पुराणमहँ सुनीप्रथम यहबात।
भूत समय स्योवाय नँदतव कियसहि दुखगात॥

देखि उग्रतप सुर शिर मौरा। पुरुष अनादि प्रकट तेहि ठौरा॥
करिप्रबोध यहबर शुभदीन्हा। नरतन यदुकुल धारि प्रबीना॥
बाल चरित तुम्हरे गृह करिहौं। विपदा द्विजगोजनकीहरिहौं॥
बूझिपरत अससोइ भगवाना। जन्मागुत बचन परमाना॥
बाल विनोद करतहे सोई। भोजन काज पठाये लोई॥
अहहदैव हमरी बुधि नाशी। माँगास्वमुखपुरुषअविनाशी॥
अरुन दीन्ह हम अल्प अहारा। हम समको अज्ञान अपारा॥
जेहिलगिमखनाना विधिकीन्हे। तासुदरशचखिआज़ुनलीन्हे॥

दो० अकल अनीह अमान अज आदि पुरुष भगवान।
मानस करि जानत भये विधि हर ज्ञान सुजान॥

ग्वाल थकित भय विनयसुनाई। तदपि न हृदयदया दृढ़आई॥
शठकुभाग्यअहमितहमपापी। धृकअसकुमतिसुमतिजेहिझाँपी॥
दोषिक यज्ञकर्म यह भयऊ। सुकृतअतिथितापननशिगयऊ॥
हरिपहिचानि दरशनहिंकीन्हा। रंकपरमनिधिजनुतजिदीन्हा॥
हमते भल सब विधिने बाला। जिन तप मख देखा जनपाला॥
निजकरभोजनश्यामहिंदीन्हा। पूरब सुकृत लाभ यह लीन्हा॥
इमि पछिताइ विप्र बर राजा। आई तेहिछणनारिसमाजा॥
देखि द्विजन उठि जोरे हाथा। कहा धन्य तव अक्षर माथा॥

दो० करि दर्शन जगदीशके जन्म सुफल करिलीन्ह।
असकहि आदर सह सबन बैठहु आसनदीन्ह॥
जानिदास जापर सहज दयाकरैं गोपाल।

मंगलताहिन छलिसकै ठगरूपी कलिकाल ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांद्विजपत्नीदर्शनोनाम
चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

दो० व्योमानिल जल मित्रमहि पंचभूत गुणथूल।
शब्द परस रस रूपयुत गन्धितत्त्व गुणमूल ॥
करणत्वचा रसनानयन सहित नासिकापांच।
ज्ञानेन्द्रिय शरतत्त्वकी बदतवेद बुधसांच ॥
ये सिगरे मिटि मिलत हैं अहंकार में जाय।
महाप्रकृति महँ मिलतहैं अहंकार बिनशाय ॥
परमात्मा अव्यक्त में महाप्रकृति मिलिजात।
सांख्यधर्म बुधजनबदत यह प्रसंग विख्यात ॥
जो न नशत काहू समय पारब्रह्म अज्ञात।
भक्ति हेत सो नर भयउ कृष्णरूप साक्षात ॥

कीरति तासु अमोघ सप्रेमा। मुनि भागहि बरणी युतनेमा ॥
नृपसुतु जिमि गिरिवरनखधारा। वृन्दारक नायक मद हारा ॥
सो प्रसंग बिस्तार समेता। बरणतहौं अबकुरुकुल केता ॥
ब्रज बसेरि सम्बत गत एका। हरतिथिअसित ऊर्जसबिबेका ॥
न्हाइ प्रात सुर प्रिय श्रीखण्डा। रुचिरलाइरचिचौक सुभण्डा ॥
बिबिध प्रकार स्वाद मिष्ठाना। रचि पुनीत सुन्दर पकवाना ॥
धूपदीप करि इन्द्रहि पूजैं। आनँदसहितअशनपुनिभूजैं ॥
ब्रज मंडल यह रीति सनातन। आवत चली भूपभ्रमबातन ॥

दो० जानि जलद पति बासवै अर्चत ग्वाल सनेह।
सुनुद्रोणिप एकाग्र चित कथा रम्य है एह ॥

सोई दिवस पर्यो जब आई। ग्वाल नारिनर करहिं बधाई ॥
सामा अशन नन्द बहु कीन्हीं। प्रतिगृह सोइदशाहरिचीन्हीं ॥
प्रभु अंतर्यामी क्षितिपाला। नरइव चरित करतनँदलाला ॥
पूछेउ जननि कहा है आजू। जेहिहितप्रतिगृहअशनसमाजू ॥

सुनुसुकुमारन मोहिंअवकाशा। सकलकथाजो करौं प्रकाशा॥
जनकहि पूंछु जाउँ बलिहारी। गये सभा हुलसत बनवारी॥
जहँानन्द उपनन्द समाजा। बोले मधुर गिरा ब्रजराजा॥
ममउर पिता परम सन्देहा। अधिकासनविरचन गुणकेहा॥
दो० कौन देवकी आजु पितु पूजन है सो मोहिं।
कहौ बुझाइ सप्रेम जेहि परचि जाउंहौं ओहि॥
भक्ति मुक्तिदाता प्रकट को असदेव प्रमान।
नामग्राम गुणकहौ मोहिं पूछतमनो अजान॥
बोले नन्द मन्द मुसुकाई। अब लगि तैं बूझा न कन्हाई॥
सुदिरनाथ जो बाला राती। जेहि अनुकम्पा क्षमा जुड़ाती॥
अणिमादिक पावत संसारा। जल तृण अन्नहोतअधिकारा॥
फलत पल्लवत वन उद्याना। चहुँनिधि जीवलहतकल्याना॥
पूजन करत समोद सदाहीं। ताकर लखिस्वारथ मनमाहीं॥
प्रति पुरिषान मेघ पति अर्चा। आवतचली नवीन न चर्चा॥
बचन सुनत श्रीपति मुसुकाने। बोले बचन भद्ररस साने॥
वश अयानता पितु कालीना। पूज्यो सुनासीर सुधि हीना॥
दो० अब तुम तात सुजान है गहत कुबाट अलीन।
कुबुधी वरणाधम पुरुष पूजत वासव हीन॥
पूजत शचीनाथ निःकाजा। भक्ति मुक्ति दानहिं सुरराजा॥
अणिमादिक वर्चादिक कासू। मघवा दीन्ह कीन्हदुखनासू॥
अरु जग केहि उत्तम वरदाना। दिविपतिदयउसुकरौबखाना॥
तम मख मध्य दिवौकस ताता। मानतसाँचु निजाधिपनाता॥
इन्द्रासन कमनीय महाना। तहां बसत सुरभूप समाना॥
तेहिते भा ईश्वर नहिं सोई। समुझौ तात वदत श्रुतिजोई॥
इन्द्रहि निशिचर बारम्बारा। जीतहिं संग्रम ठानि अपारा॥
कादर समसो समर पराई। गिरि कंदरमहँ जाइ लुकाई॥
दो० तासु भजन पूजन पिता करत न कोउ जगमाहिं।
जानि धर्म निज शुचि सुकुल तजौ इन्द्र अर्चाहि॥

को बापुरो क्रूर पुरहूता। आपुहि रचितसकतन कपूता॥
अंकानीक लिखे अज जोई। तात मृषा नहिं होवतसोई॥
सम्पति सुखकंदेन सुननाती। प्रमदा सुताआदि सबभाँती॥
मिलत समस्त कर्म्म आधीना। केहिहरिपुपाकदीन्हकेहिलीना॥
सोखत नीर सूर बसुमासा। बर्षत बर्षाऋतु अनयासा॥
तेहिकरि वसुधातृण अरुनाजू। उपजत है न कर्म सुरराजू॥
चारिवरणशुचि रचे बिधाता। द्विज चत्री बै शूद्रकहाता॥
पृथक पृथक शुभकर्म्म बताये। तेहिमग विचरत चतुरसोहाये॥
दो० पढ़ैं बेद विप्र सुरुचि अरुतप करैं महान।
रुचिर धर्म्म यह विप्रकर भाषत निगमपुरान॥
अस्त्र शस्त्र गहि रचाहि देशा। जेहिकरखहै न प्रजा कलेशा॥
दान देइ यज्ञादिक करई। क्षत्री धर्म पुरुष जो धरई॥
कृषी कर्म बाणिज्य अनेका। करैं वैश्य करि धर्म विवेका॥
सेवा धर्म शूद्र अधिकारा। रच्योशोचि प्रथमहिंकरतारा॥
पितु तुम वैश्यबरण हौ आछे। सुना वेद बक्तन सुख पाछे॥
सुरभी वृद्धि भई गण नाना। यहिहितगोकुल नामबखाना॥
ज्ञाति बन्धु सब गोप कहाये। सश्य बणिज द्वै कर्म्मसोहाये॥
गो द्विजादि सेवन सहप्रीती। कीजिय तात बखानत नीती॥
दो० श्रुतिशासन है धर्मनिज करिय न कतहूँ त्याग।
माया बश मूढ़त्व मय आन धर्म्म जो लाग॥
सोअतिकुटिलकुमति आधीना। जिमिकुलबधूआनरतिकीना॥
यहिकारण सुनि विनय हमारी। बासव पूजन देहु बिसारी॥
गिरिकानन तटनी शुचि पूजौ। पितु परिहरौ अपरसुर दूजौ॥
तृण आरण्य ठाम नग दाता। सलिलद्वीपवतिपाण अघाता॥
जिनके राज्य सकल सुखपाइय। तिनतजि हरिपुरेपद ध्याइय॥
हैअनुचित पितु कर्म अलीका। अगमनयाहिकृतअपयशटीका॥
लै अन्नेक्षु सार पकवाना। पूजियगिरिवरममनमाना॥
सुनत श्याममुख वचनविनीता। उठे नन्द उपनन्द अभीता॥

दो० जेठर बहिक्रम ग्वाल जहँ बैठे हैं मुद पानि।
जातभये सत्वर तहां यदुनाथहि उर आनि॥

जेहिप्रकार प्रभु कहि समुझावा। सो प्रसंग नृपनन्द सुनावा॥
बोले गोप वृद्ध सुनि बानी। तात बात हरि सत्यबखानी॥
बय शिशुता बूझौ जनि वाकी। भ्रमवशबात न मेट्योताकी॥
तुम सज्ञान विचारौ हीमें। अचेत शक्रहि कौनु महीमें॥
नहिं कर्त्ता पालक लयकारी। आपु दुखित सब दिनव्रत्तारी॥
जो त्राता सबकर निरबाधा। तज्यो मोह मय तासुअराधा॥
दिविनायकसों को निजकामा। सरि बन नग पूजौ लै सामा॥
अन्य गोप बोले हरषाई। भलमत कीन्हा बालकन्हाई॥

दो० भूधर गोबर्द्धन बड़ो पूजिय सब मिलि ताहि।
अपर देव इन्द्रादि सों कहा काज निजआहि॥

जब सबकर सम्मत नँद पावा। तब प्रसन्न मन चार बोलावा॥
पुर प्रति सदन सुद्धि करुजाई। प्रात सर्व मम आयसु पाई॥
चलि गोबर्द्धन पूजो भाई। लै सामग्री असन मिठाई॥
पाइ रजायसु होत बिहाना। शौचक्रिया करिन्हाइसध्याना॥
व्यंजन छरस पात्र भरि नाना। गिरि पूजनगमने गुणवाना॥
सोपनन्द नँद सुजन समेता। गोपन सँग नृप चले सहेता॥
बाजत ढोल तूर्य सहनाई। सभत्र शैलतट पहुंचे जाई॥
भूभ्रत निकट चारिहू ओरा। स्वच्छ पवित्रकीन्ह जलछोरा॥
बहुप्रकार मिष्टानके भाजन। धरे भूमि प्रमुदित सुनुराजन॥
भोजन अमित जाति तहँधारे। बरणि सिराय न भाँति अपारे॥
कुसुममालअवली भाजनप्रति। पहिराई निरखत मोहत मति॥
पाटवस्त्र शुचितानि बिताना। गाइ सकतनहिंकविबुधिवाना॥

दो० कांतिदरी भ्रत ता समय बरणि जात न भूप।
वस्त्राभूषणभूषि जनु नखशिख नारि अनूप॥

तब नँद निजकुल पूज्यभुदेवा। बोलत भये समुद युत सेवा॥
ज्ञाति बन्धु अन जाति समेता। निशा चुनु तंदुल कुरु केता॥

प्रथम चढ़ाय धूप दै दीपा। अर्चत भये नैवेद्य समीपा॥
घोटा आदि बल्लरी बहोरी। सहित दक्षिणा धरिकरजोरी॥
श्रुतिवत महिसुर आयसु पाई। शिखरिबर ध्यावत चितलाई॥
द्विजवर कहा तजो दुबिधाई। जेहिते दरश देहिं गिरिराई॥
सुनि मोहन बिचित्र-धुम ग्वाला। दम्पति नन्द वृद्ध लघु बाला॥
मूँदि नैन दोउकर सब जोरी। शीश नवाइ रहे मति थोरी॥
दो० कौतुकही भगवान उत बिरचि दूसरी काय।
असबिशालजनु द्वितियगिरिकरपदथूलबनाय॥
नीरज नैन मैन मद खण्डा। इन्द्रानन शिरमुकुट शिखण्डा॥
गल बनमाल पीतपट मोहै। रत्न जटित भूषण तन सोहै॥
मुख पसारि हरिगति पथगामी। चले गूंग सम अन्तर यामी॥
इत आपुहि प्रभु कहत पुकारी। गिरिवर दरश करौ नरनारी॥
पूजा सबिधि तुम्हारि बिलोकी। प्रगटदरशदै कीन्ह अशोकी॥
कहि असप्रथमदण्डवत कीन्हा। अभिनन्दहुपुनिआयसुदीन्हा॥
युवती नरन करयो परनामा। अति अनंदमय लै लै नामा॥
कहत परस्पर लोग सयाने। इन्द्रहि हम पूजा बिन जाने॥
दो० दरश प्रसिद्ध न कतहुँ तेहि दीन्हो आइ सुरेश।
समुझि पितामहका सगुण पूज्यो ताहिगवेश॥
इमि प्रत्यक्ष सुर गिरिवर त्यागी। यह चरित्र भ्रामिक अनुरागी॥
होत बतकही अस तेहि काला। सबहि पुकारिकहा नँदलाला॥
जो भोजन भूधर हित भूरी। लाये सकल प्रेम तन पूरी॥
सो गिरिदेवहि मुदित जिमावौ। जेहिते मनवांछित फलपावौ॥
सुनि सानन्दगोपि अरु ग्वाला। षटरस भोजन लै महिपाला॥
लागे देइ सकल निज हाथा। जेमन लगे गोवर्द्धन नाथा॥
जो सामग्री तहँ सब आई। बचीन नेक सकल हरिखाई॥
पुनि सो मूरति अद्रि समानी। सबन सत्य पूजा अनुमानी॥
दो० अद्भुत लीला श्याम करि सबकहँ संग लगाय।
परिक्रमा गिरिकी समुद करत भये नरराय॥

सो० प्रफुलित मन मुनिधाम सकल संग आवत भये ।
वर्णत गिरिगुणग्राम अकथसौख्य मयनारिनर ॥
दो० ग्वालगाय बच्छानके रँगरँग किंकिणि ग्रीव ।
पहिराई कौतुकहि युत वृन्दावन सुख सीव ॥
प्रगट शैलतन जेहि स्यो खायो सुरपतिभाग ।
मंगलवृतजिमानमद करु तेहिपद अनुराग ॥
इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायां गोवर्द्धनपूजनवर्णनोनाम पंचविंशोऽध्यायः २५ ॥
दो० मुक्तिसरूप्य सलोकयशुचि अरुसायोज्यसमीप ।
चारों पावत चतुरजन धरे ज्ञान उर दीप ॥
ध्यावत साधारणको राग द्वेष बिसराय ।
सो जनु चारिप्रधान मय बनो भूप सुखपाय ॥
सुनो नृपाल रुचिर हरि लीला । तुम श्रोता नृपसुमतिसुशीला ॥
तजिदिवीश गिरिपूजा कीन्ही । यह सुधि देवनइन्द्रहिदीन्ही ॥
सुनि सकोपि सब बिबुधहँकारे । सादर निकर निकटबैठारे ॥
भ्रातहु पाय मर्म्म यह काऊ । जानत होउन कस्यो दुराऊ ॥
ब्रजग्वालन पूज्यो कहिकाली । त्यागेउमोहिंगोपालकुचाली ॥
ऋषि कौतुकी समय तेहिआये । देखत तुरावान हरषाये ॥
करि प्रणाम आसन बैठारा । कौतुकहीं मुनिवचन उचारा ॥
कहिय कहा रिपुपाक कहानी । तव महिमाप्रसिद्ध जगजानी ॥
दो० देवराज मान्यता तव करत सगौरव सर्व ।
ब्रजवासिन अवपरिहरयो पूजामिरिकरि गर्व ॥
नन्दसुत जोइ आयसु देता । करत गोप सोइ प्रेम समेता ॥
तेहि सुत तुव पूजन मिटवावा । प्रेरि सबहि भूधर पुजवावा ॥
सुनि उर दह्यो पुरंदर कैसे । सिंधु अगस्त्य बातसुनिजैसे ॥
भृकुटी बक्र अरुण चषभयऊ । हरिमायावश बुधिभ्रमिगयऊ ॥
कह घनवान भये ब्रजवासी । तामद मम पूजा निनवासी ॥

मख व्रत जप तपममनभुलायो। मूढ़न अवशिदरिद्रबोलायो॥
जानत परमात्मा नर श्यामा। करत तदज्ञावत जगकामा॥
शिशुता विवश अज्ञ सुत सोई। मूरुख अभिमानी जिमिलोई॥
दो० मदबाढ़ो विधि रचनि सम आजु विभंजौं सोइ।
गोधन श्री नाशौं सकल तब निज मारगहोइ॥
इमि बहु जल्पि इन्द्र मतिहीना। घनपतिबोलि रजायसुदीना॥
तात सर्व निज चमू कराला। संगलाय गमनौं यहिकाला॥
प्रलयकाल वर्षाभरि लावो। गोबर्द्धन नग घोरि बहावो॥
अरु ब्रजमंडल देहु नशाई। पुनि न चिह्नकहुं परै लखाई॥
पशु मनुजादिक रहै न कोई। तब ममहृदय प्रफुल्लित होई॥
नीरदनाथ रजायसु पाई। करि प्रणाम गमनो भुवराई॥
निज निकेत मुखिया जीमूता। बोले निकर कही गतिभूता॥
त्रिदश राज शासन है आजू। बोरौ ब्रज पशु सरन समाजू॥
दो० सुनि सानँद मेघाधिपन निज निजजोरि सहाय।
सानुराग बलकत चले संग मेघपति पाय॥
क्षणमहँ ब्रजमंडल घन छायो। गिरिधिनपति तर्जनहिबतायो॥
दिवस क्षपासम निकरनिहारा। लखिनपरत निजहाथपसारा॥
गर्जत घोर मनो पविपाता। मूशलधार बुन्द सरसाता॥
महाप्रलय घनघटा कराला। अभ्रअखण्ड देखिसबग्वाला॥
वृष्टि अपार असन जस देखी। व्याकुलनन्द सधाम विशेखी॥
गोप नारि नर नगर निवासी। भीत देखिं बरषा मृतु पासी॥
सभय कम्पतन जनु विनुप्राना। कहतत्राहि यदुपति भगवाना॥
प्रभुपहँ जाय पुकारत भयऊ। रघुनाथ नतरु जिय गयऊ॥
दो० महाप्रलय की वृष्टि यह सूझत कोउ न उपाय।
करिय कृपा आरतहरण भई मृत्यु अहि ठाय॥
कोउकहत तुमनगहि पुजायो। हरि पूजा कालीन मिटायो॥
अब पर्व्वतहि पुकारो ताता। रक्षा करै जीव नतु जाता॥
निमिषमात्रमहँ ब्रज लय होई। थावर जंगम बचिहि न कोई॥

नन्द सहित नृप गोप सयाने। सोपि गये भ्रमि बुद्धिनशाने॥
वयप्राचीनकर्म्म तजि दीन्हा। व्यर्थ महीधर पूजन कीन्हा॥
सखिकाकहिय सुमति कौसनी। बालक कहे तजा पति पानी॥
इमि नरनारि बकहिं बुधितूला। सकल भयातुर गोपिनशूला॥
जानि व्यथित सबकह यदुराई। धीरज धरौ तजौ कदराई॥
दो० गिरिवर अबहीं आयकर रक्षा करिहि तुम्हारि।
उत गोवर्द्धन अग्निसम तप्त करयो असुरारि॥
शोकानन्द रहित करुणाकर। गिरिहिउठायो यदुकुलभाकर॥
बामे कर कनिष्ठिका धारा। बिनु श्रमजनु छत्रकमहिपारा॥
छांयालखि त्रियग्वाल निकाई। तेहि तर बैठ ठाढ़ सुरराई॥
पशु अम्बरगामीचर जीवा। भे थित नगतल सुखकी सीवा॥
अबलां मनुज परस्पर कहई। आदिपुरुषहरि नरनहिंअहई॥
देव देव शिरमौर कृपाला। मोहन मानव नहिंजलपाला॥
सुनु सखि करअंगुलिगिरिधारी। को अस नरशरीर बलभारी॥
उत सकोपि वर्षत जलराशी। मूशलधार पयद मतिनाशी॥
दो० बड़वानल इव ज्वलितगिरि इत जल तापरराय।
होवतभस्म अशेष सो हरिगति अकथ सदाय॥
यह सुधि पाइ आपु अमरेशा। आयो व्रजमण्डलहि नरेशा॥
कथित वृष्टि भूधर दिन ठानी। दिविगति बुधिहरिमायाभानी॥
प्रभु प्रताप सर्वदा प्रचण्डा। अभिमानीमदकृतशातखण्डा॥
पाथ रहित सब भे क्षीरोदा। बुन्द न व्रजपर भयउनओदा॥
हारि पयदपति सहित सहाई। द्वौ कर जोरि कहा सुनराई॥
दयाधीश जल प्रलय सिराना। तदपिनव्रजबूड़्यो भ्रममाना॥
को उपाय कीजिय यहि बेरा। देवराज यह करिय निबेरा॥
जलदवचनसुनि अमरप्रधाना। तनसकम्पमन बहुअकुलाना॥
दो० धरिधीरज त्रिबुधेश पुनि मनमहँ कीन्ह विचार।
हरणभारमहि मनुज तन आदिपुरुष अवतार॥
को समर्थ नत अस महि भाई। महाप्रलय पय देइ नशाई॥

अरु नग छत्रक सम कर धारे । कोटिहु मानव गिरिहिनटारे ॥
भै बड़ि चूक अगास अपारा । कृपा कृष्ण बिन लहौंनपारा ॥
इमि पछितात जलद युतसोई । निजपुरगमनेउ जलमदखोई ॥
उये प्रभाकर तिमिर नशाना । अकथसौख्यग्वालनतनमाना ॥
युवती मनुज आइ हरिपासा । वचनप्रसन्नित सबन प्रकासा ॥
गिरि महिधरिय दयाजलराशी । भाप्रकाशनभ घनगयनाशी ॥
बिहँसे प्रभुसुनि गोपति बानी । भूधर भूधाख्यो सुखमानी ॥

दो० नाशो मद सुरराजको ब्रजजन लिये बचाइ ।
मंगलको अस दूसरो उपमा जेहि हरिभाइ ॥
निष्प्रपंच मनकायवच तू भजु नन्दकिशोर ।
सबप्रकार सुख जगलहै अंत मुक्तिपदतोर ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांइन्द्रमानभंगवर्णनोनाम
षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

दो० काम क्रोध को त्यागिके लोभ मोह बहिराय ।
मानभंजिअपमानतजि निजमनबुधिवशलाय ॥
जो ध्यावत निज आतमा योग पंथ नर नारि ।
मुक्ति लहत सायोज्य सो जरा मरण दुखटारि ॥
प्राणायाम बिशेषि कृत सुषमन मारग पाय ।
पूरक कुंभक सविधि बुध रेचक करत सदाय ॥
करत आतमाशुद्ध निज बिषय भोगको त्यागि ।
पावतगति जो मुनिलहत रहतअमीरस पागि ॥
सोगतिसहजहि कलिचतुर हरियश गावतलेत ।
यामें संशय रंच नहिं सत्य साखि श्रुति देत ॥

मुनिवर महाप्रमोद कहानी । कुरुनायकप्रति बहुरिबखानी ॥
जब उर्वरा कूट प्रभु थापा । बासव मान नशो तनतापा ॥
ग्वाल चतुर धिषणालय जोई । करत परस्पर चर्चा सोई ॥
अद्भुत चरित बिलोका आजू । हरि सबको नर देव समाजू ॥

जेहिनिजशक्तिकरजगिरिधारा। इन्द्रमान मथि सबहि उबारा॥
ताहिकहिय किमि नन्ददुलारा। आदिपुरुषनिजवशतनधारा॥
उग्र तपस दंपति नँद साधा। प्रथमहिं पारब्रह्म आराधा॥
सुनहु तात प्रभु कारण तेही। नन्द सूनुभा सज्जन सनेही॥
दो० बड़भागी हम पुण्यजन नित्य दरश कृततात।
परमात्मा करि आजुते मानब ताजि नरनात॥
गोप सखा सानँद नृप आई। पूछहिं श्यामहिं कंठ लगाई॥
कोमल कमल सरस कर तोरा। बिदित शैल बड़तात कठोरा॥
वै सुकुमार छत्र नर जैसे। साधत तिमि साधा गिरिकैसे॥
कहौ तात यह अकह कहानी। गद्य पद्य गूढ़ाशय बानी॥
निज कौशल वैभव बड़ुराई। दास जानि प्रभु कहौबुझाई॥
सखावचन सुनि श्रीभगवाना। नरइव बयन सनीति बखाना॥
सब पर आदि अंत बिन जोहै। कर्ता हर्ता पालक सोहै॥
तत्प्रतिकूल करत कृत जोई। लहत गलानि मसीमुख सोई॥
दो० मघवा बुधि माया हरी आपुहि ईश्वर जानि।
ब्रजनाशौं मनचिंतमिति तब रक्षो गिरिआनि॥
यशुमति नन्द हरिहि उरलावा। निजकरप्रभुकर पाणिदबावा॥
पाणिजलजनगधर दिनसाता। होइहि कोमल हाथ पिराता॥
गोपिन नृप यशुदा ढिगजाई। कथाभूत कहिकाहि समुझाई॥
मातु तोर सुत पुरुष अनादी। बदत निकर परमारथ वादी॥
चिरुजीवो ब्रजपालक स्वामी। जनरक्षक पद सरजनमामी॥
बिपदा बहुप्रकार भै पाछे। टारयोहरिनिजजनलखिआछे॥
खल भंजक पालक श्रुति सेतू। सुत तुम्हारनर नहिं सुरकेतू॥
यथा गर्ग ऋषि कहा सयानी। भई बातसो परी न हानी॥
दो० इमि वतरायसप्रेम सब निज निज कारज लाग।
मंगल परिहरि मोह भ्रम करुहरिपद अनुराग॥
इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासविरचितायांपरस्परवार्तावर्णनोनामसप्तविंशोऽध्यायः२७॥

दो॰ जिमि कुधात पारस परसिहोत कार्तस्वर रूप।
तिमि मूरख सतसंग में पावत ज्ञान अनूप॥
याते उत्तम सबनते सत संगति भव बीच।
सो न मिलत बिनभाग्य भल यद्यपि होतनगीच॥
जड़ चुंबक लखि लोहको चेष्टित होत प्रवीन।
तिमि साधुजन जगत महँ हरियश सुनतअधीन॥
अरुजस दर्पण बमत शिसिलखि कर दिनमणिदेव।
मूढ़ कृतघ्नी अपयशी हरियश सुनि तेहि भेव॥
पातक हर दायक सदा भक्ति मुक्ति अनुमानि।
श्री राधावर चरित हौं बरणत सुखकी खानि॥

सुनमहीश पुनि रुचिर कहानी। रुज अघतूल शिखीबरबानी॥
सुरभी ग्वाल सखा लै प्राता। हलधरसहित चलेजनत्राता॥
वेणु मन्दध्वनि सुरुचि बजावत। मधुर मनोहर सुरहरिगावत॥
बृन्दाबनहि जाहिं सुनु भूपा। धेनु चरावत नर अनुरूपा॥
उहाँ सुराधिप मन पछिताई। निज सँग लायदेव समुदाई॥
गो कामदा अग्र निज कीन्हे। विह्वलहरिपद दृढ़मनदीन्हे॥
ऐरावत आरूढ़ दिवेशा। बृन्दाबन आयो बिबुधेशा॥
मध्य बाट ठाढ़ा सो राजा। सँग लीन्हे सब देवसमाजा॥

दो॰ आवत लखि जन पालको तजिगज महितल आय।
नग्न पाद कर जोरि करि चला कम्पतन छाय॥

सो॰ पर्‍यो चरण तर जाय त्राहित्राहि कहि त्राहि पुनि।
बिनय करत सुरराय बिकलितमन गदगद गिरा॥

छं॰भु॰ नमोदेवदेवेशदेवाधिकर्ता। नमोचंडदेवारिकेप्राणहर्ता॥
नमोमत्सआकाररूपाधिकारी। नमोकच्छकायाकृतंभूमिधारी॥
नमोकोलवद्रूपस्वच्छंदस्वामी। नमोभक्तपालंनृसिंहेति नामी॥
नमस्कार मद्राज्य रच्छंस्वरूपं। नमो भूसुरेन्द्रं हतंभूमि भूपं॥
नमो जानकीवल्लभंदेवनाथं। नमोकृष्ण गोपीहितुंशुभ्रगाथं॥
नमो बौद्धकल्कीदयाकैवनौगे। स्वदासानहेतंकुकर्मीहनौगे॥

महामोहमैंनाथहौं बुद्धि हीनो। त्वमौदासआगासदुर्कर्मकीनो॥
भ्रमावेसयैनाथ मायातुम्हारी। चतुर्पंचत्रकःदि को छोहमारी॥
नजानातुम्हैंतुच्छहै बुद्धिमेरी। कृपासिन्धु देवाधिहौं शर्णतेरी॥
तुकर्तार तू भंग कारी सुरारी। सदारच्छमानं त्वमेकं खरारी॥
त्वभूनीर अग्निर्सदाचारनाकं। स्वयं कारणंलिंगथूलंसनाकं॥
त्वतत्वं असीरूपमेकं प्रकासं। त्वमोंकारसोहं महामंत्र भासं॥
त्वमाद्यंत मध्यं विनाकालकालं। सदैवामरादिदयाधीशपालं॥
नयावत्त्वभक्ति उरमे निवासं। दुखौघंरमानाथ तावद्विलासं॥
दयाकैक्षमाकीजियेदोषशोकं। नतूकोपकारत्तकंतीनि लोकं॥
लहादर्शनं पाप पुंजै नशायो। प्रसीदंकृपासिन्धुत्वंशर्णआयो॥

दो० अहंकार वश तामसी हौं जगदीश कृपाल।
दोष चूककर जानिजन च्छमाकरौ यहिकाल॥

मम उर धन अभिमान अपारा। जाना रंचन भेद तुम्हारा॥
परमात्मा अनादि अज एका। सकल अनीह नागखलभेका॥
भव सरोज सुत आदिक देवा। तव दीन्हो पावत पद तेवा॥
जग पितु मातु एक असुरारी। हौ अनूप उपमा न तुम्हारी॥
लक्ष्मी सर्व काल तव दासी। आदिपुरुषप्रभुतुमअविनासी॥
दासन हेत रच्यो नर काया। तिहुँपुर रचत तवाज्ञामाया॥
सकल काल रच्छक भगवाना। जनअपराधक्षमौ अनजाना॥
मघवा विनय सुनत यदुराई। है दयाल बोले मुसुकाई॥

दो० कामधेनु के संग अब तू आवा सुर भूप।
क्षमाकियो अपराधबड़सुनि तव विनयअनूप॥

सो० गर्व न कीजौ भूल होवत मदते ज्ञान हुत।
कुमति बढ़ावत थूल देत कुमति अपमानदुख॥

उठ्यो अमरपति सुनि प्रभुबानी। कीन्ह पदार्चा वेद बखानी॥
चरणोदक समोद तव लीनसि। सह प्रमोद परिक्रमा दीनसि॥
तेहि बेला नभ बजे दमामा। गावहिं गंध्रव पूरण कामा॥
निजनिज यानारूढ़ दिवौकस। बरषिकुसुमचरणतसबहरियस॥

अस आनंद भयो तेहि काला। जनुफिरिजन्मलीन्हगोपाला॥
करि अर्चन रिपुपाक सनेमा। हरि प्रसन्न लखि पाइसि क्षेमा॥
सविनय भूप जोरि दोउ पाणी। कह्यो शची पति आरतत्राणी॥
अव प्रताप वैभव तव जाना। प्रणतारतहर श्री भगवाना॥
दो० हे अनादि पूरुष परम का आज्ञा अब मोहिं।
विहँसिश्यामतव असभन्यो दयोइंद्र शिषतोहिं॥
अब गृह जाहु करहु मम सेवा। जानेहुआदि पुरुष मोहिंदेवा॥
करिदंडवत पाइ अनुशासन। वासव गयो भूप अमरासन॥
इहां श्याम रजनी सुख पाई। गये भवन सँग ग्वाल अथाई॥
गोपन नृप गृहगृह प्रति जाई। विपिन अवस्थासकलसुनाई॥
श्रीमुनि कहा सुनौ नरपाला। जो चरित्र गावा यहि काला॥
यहि प्रसंग कर वक्ता श्रोता। अधिकारी चहुँ गतिकर होता॥
चारिपदारथ बिनु श्रम पावत। जोसमोद रुचिसों यहिगावत॥
हरियश समन आन कछुताता। यह संक्षिप्त कही तोहि बाता॥
दो० मदभ्रम नाश्यो इन्द्रकर जेहि विनु श्रमयकवार।
मंगल भूलत क्यों जगत तेहि भजु बारम्बार॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांइन्द्रस्तुतिवर्णनोनाम
अष्टविंशतितमोऽध्यायः २८॥

दो० जैसे हरिकर परसतहि तिमिर भ्रमित लहनाश।
हरिगुणवरणत तिमिबिबुध पावत पाप विनाश॥
अथवा गंगा दरशते जिमि बिनशत अघ थूल।
गावत हरियश तिमि चतुर होत पाप अनमूल॥
मूरख सो संसार में जो न भजै यदुराइ।
महा अपयशी पातकी होइ मुक्त यशगाइ॥
जेभूले कामादि में तेनर सदा अचेत।
भवदधि में माया तिन्हैं पाप हिलोरै देत॥
वाहित सम श्रीकृष्णयश सहजकरतजनपार।

बरणतहों आनंदमय श्यामचरितसुखसार ॥
ऋषिकह सुनु रसाधि सुचिताई। व्रत एकादशिकिय नँदराई ॥
न्हान ध्यान जप पाठ अपारा। कीन्हादिन व्यतीत साचारा ॥
पाइ प्रदोष जागरण ठाना। गत शर्वरी विहान तुलाना ॥
दर्शन दंड तमस्विनि जानी। तिथि द्वादशी भूपनियरानी ॥
उठि करि प्रात कर्म नँदराजा। यमुना न्हानचले सुखसाजा ॥
अपर अनेक ग्वाल सँग धाये। सूरसुता तट भूपति आये ॥
करि प्रहन तिन वसन उतारे। प्रविशे आय आपुसुख भारे ॥
बरुण चारु जल रक्षक रहई। निशिनकोउअस्नानहिलहई ॥
दो० जाइकहा निज नाथसन न्हात यमुन जलकोय।
महाराज हम करहिं सो जो आज्ञा तव होय ॥
सुनि आज्ञा लंघन जलपाला। बोल्यो धाइ धरो यहि काला ॥
चले दूतद्रुत यमुना आये। गहि नँदराय बरुणपुरलाये ॥
नागपाश बन्धन दृढ़कीन्हा। शुभथल तिनहिं वासलैदीन्हा ॥
सुरभीपाल आन नृप साथा। तिन सबकहा कृष्णसोंगाथा ॥
करुणानिधिभइ अनुचितवाता। समुझतहमहिं होतदुखगाता ॥
पाय नाथ चरगहि नँदलाला। लैंगे वेगि लोक जन पाला ॥
सुनत गोप बाणी घनश्यामा। है क्रोधित अचिंत्य गुणग्रामा ॥
क्षण महँ बरुण धाम गये भूपा। अग जग नाथ धरे नररूपा ॥
दो० हरिविलोकि करजोरिदोउ जलपति उठा महीश।
करिविनती बोलत भयउ जयजय श्रीजगदीश ॥
पाइ दरश तव श्री असुरारी। पूजी मन कामना हमारी ॥
जन्म समस्त सफल भा आजू। नश्योनिकरअघजनितसमाजू ॥
बंधन पिता नन्द कर ठाना। सो यह कारण श्रीभगवाना ॥
राम लोक तुम तात गोसाईं। तुम्हरे पिता भये दुचिताई ॥
जानत मोर धर्म्म यदुनायक। रजनी रक्षक पय मम पायक ॥
ते अबूझ निशि न्हात विचारी। मम शासन लाये असुरारी ॥
यहि मिस भयउँकृतारथ स्वामी। होहु प्रसन्न जानि अनुगामी ॥

इमिकहि दीनबयन बहुभांती। धरी भेंट मणिगण बहुजाती॥
दो० करि प्रबोध धनजातपति पिता सहित यदुराय।
आये गोकुल मोद मय सुनु प्रवीन कुरुराय॥
निरखि नन्दपुर लोक सुखारी। भये इलापति आनँद भारी॥
वृद्ध वहिक्रम गोप सयाने। मिलिसप्रेम नन्दहि हरषाने॥
पूछिनि सकल व्यवस्था आई। बरणि पूर्ववत नन्द सुनाई॥
सुनिवैभव प्रताप हरि केरे। मुदित परस्पर सुरुचि घनेरे॥
जादिन गोवर्द्धन कर धारा। हम वाही दिनचित्त विचारा॥
नन्द तनय नर तन जन नाहीं। आदि पुरुष प्रगट्यो जगमाहीं॥
सकल गोप सम्मत करि राजा। आये जहँ जनपालकभ्राजा॥
भारत गिरा कीन्ह परणामा। कहिजयजयअघमोचनश्यामा॥
दो० अमित भ्रमायो हमहिं प्रभु निज मायामहँ नाथ।
जान्यो अतुल प्रभाव अब जय जय उत्तमगाथ॥
तुमको शीशजात हैदेवा। विरचत भुवन वेद दिशिएवा॥
पुनि तुमहीं वृषभध्वज होई। नाशतअखिल विश्वयहजोई॥
नारायण तुम आपु मुरारी। तीनिलोक रक्षक बनचारी॥
किंकर जानि सुपद अधिकारी। एक लालसा सुखद हमारी॥
सो पुरवहु वैकुंठ लखाई। हरि क्षणमहँ निज लोकबनाई॥
दरशायो दुखपुंज नशावन। कीरति जासुनिकरजगपावन॥
निरखत अनुभव भयउप्रकाशा। सकल मोहवाहनी विनाशा॥
क्षमाशीशधरिविनयसुनावत। प्रफुलितमुदितश्यामयशगावत॥
धन्य कृष्ण प्रतिपालक हर्त्ता। वामाजादि दिवौकसकर्त्ता॥
तव महिमा अपार गोपाला। अल्पबुद्धि हम मन्दविशाला॥
मायापति मायागति चीन्हे। मायारहित मनीषा कीन्हे॥
पारब्रह्म तुम अलख अपारा। नरवपुरच्यो हरण महिभारा॥
दो० नाशिदुष्ट भव सकल प्रभु करहु धर्म्म परचार।
ज्ञानभयउ पूरण हृदय समुझिपर्यो कर्त्तार॥
भूप गोपसब विगत विमोहा। कामक्रोध बराजित मदकोहा॥

करत निरूपण पूरण ज्ञाना। सोप्रभाव यदुपति सबजाना॥
सत्वर निजमाया बल ठानी। हरिकिय निकरगोप अज्ञानी॥
हस्यो सतोगुण निजपुरसोई। अलख अगोचर जाननकोई॥
स्वप्न समान सबन अनुमाना। प्रगट चरित्र सुप्रगटन जाना॥
नन्दराय सैमुखी निकेता। हरि मायावशरहान चेता॥
कीन्ह सनेह ब्रह्मसुत जानी। प्रभुइच्छा अपार सुनुज्ञानी॥
अति अपार दुस्तर हरिमाया। जेहिबहु अजभव पारन पाया॥

दो० सोमायापति कृष्णप्रभु दायक सब मनकाम।
मंगलतू तजिमोह भ्रमभजुतेहि आठोयाम॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषपान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांवरुणलोकवैकुण्ठचरित्रवरणनो
नामऊनत्रिंशतितमोऽध्यायः २९॥

दो० कारण लिंगहु थूलहू जबन रहै कोउतत्त्व।
पंच प्राणमन बुद्धिनहिं पूरण पुरुषप्रभुत्व॥
व्यापिरह्यो ब्रह्मांड महँ परिपूरण आकास।
पारब्रह्म परमात्मा तामें करत विलास॥
ताइच्छा ते प्रगटभा नारायण जग पाल।
वाके नाभीकमल ते जन्म्यो विधिततकाल॥
तत्त्वादिक पुनि सबरचे जीवसमस्तबनाय।
पंच तत्त्वके मेलते दीन्हे सबै हढ़ाय॥
महाप्रलय में पुनिसकल मिलिहैं जामें जाय।
सोइ निरंजन अगुणप्रभु कृष्णभयो भवआय॥

रास विलास कीन्ह जसस्वामी। गोपिनसाथ परम गुणग्रामी॥
सो पंचध्यायी सुख सागर। निजमतिसरसभनौंनृपनागर॥
चीरहरण जबकीन्हा रहई। रासवचन गोपिन दियअहई॥
दामोदर जब लागिहि मासा। तबहौंकरिहौं रास विलासा॥
गोपीतबते आश लगाये। दामोदर हेरहिं चितलाये॥
सुखद शरद आई महिपाला। मुदितगोपिकानिरहविशाला॥

पावस ग्रीषम शीत समाना । निर्मल जल भयसरवर नाना ॥
विकसे नलिन विचित्र अपारा । कुमुद चकोर निशा सुखसारा ॥
दो० उदय छपाकर अमल लखि कोकसरज उरदाह ।
यथा निरखिपरविभव खल पावतकष्ट अथाह ॥
नाक अमल सोहत सुखदानी । जिमिहरिपायमुदित विज्ञानी ॥
तारागण निकरंब प्रकासा । सन्तसहृदकरजिमितपभासा ॥
तटिनी सरवर निरमल बाहा । परउपकार सुयश यशलाहा ॥
पाय बाट पन्थी जन चाले । कामजीतिजिमिजनप्रणपाले ॥
तिथिराका दामोदर माहीं । कौतुक श्याम चले बनघाहीं ॥
दीख सोहावन पावन नाका । हरभूषण पूरण श्रुतिराका ॥
स्त्रवतसोम करसोम समाना । बहत रामगति शुभ पवमाना ॥
सघनविपिनलखिउत्तम शोभा । राससुद्धि आई चितलोभा ॥
दो० पूरब गोपिन सों कियो हौं निबन्ध हित रास ।
सो अब पूरण कीजिये होत शरद करनास ॥
यह विचारि बंशीध्वनि कीनी । मनौगोपिकनकहँ सुधिदीनी ॥
मुरली सरस विरह परचारा । आतुर सकल चलीं तेहिवारा ॥
परिहरि कान पिता पतिकेरी । अवलनरास अवधि हियहेरी ॥
तजिकुललाजकाजगृहत्यागी । केवल श्यामदरश लवलागी ॥
शिरभूषण भुज गल कर डारी । गईनिकर जहँ जनसुखकारी ॥
सीमंतिन यक तजिनिजनाहा । धाइचली तेहिपति गहिबाँहा ॥
बरबस ताहि सुलाव निकेता । बिनवत नारिसो जानन देता ॥
करिहरि ध्यान कलेवर त्यागी । मिलीप्रथम सोप्रभुहि सभागी ॥
दो० देखिप्रीति साँची सहृद श्री गोपाल दयाल ।
मुक्तिभई तेहि सहजहीमुनि दुर्लभ तिहुँकाल ॥
सुनि सुनि वाक्य भूपउरशंका । पूछा मुनिहिबंदि पद पंका ॥
दयाराशि गोपी उर माहीं । हरिपद प्रीतिब्रह्म रतिनाहीं ॥
विषय वासना दृढ़ अनुरागा । दरश वियोग कलेवर त्यागा ॥
कारण कौन मुक्तभइ सोई । कहो बुझाइ दूरि भ्रम होई ॥

हरिमहिमा नृपजान अजाना । गावत भक्ति मुक्ति कल्याना ॥
जिमि अयानकृतपान पियूषा । निजगुणप्रगटतअभय अदूषा ॥
बूझत सकल पदारथ जैसा । होवैकरहि पर्म्म गुण तैसा ॥
हरि सनेह सब विधि अनवाधा । दाता मोक्ष नराधम साधा ॥
छं० लहैमुक्तिनर उत्तम अधम हरिचरण रतिदृढ़ लायकै ।
बहुपतित उधरे अगम भवते सहज हरिगुण गायकै ॥
भीलिनि जटायू नीच दोऊ ध्याव हरिशुभ भायकै ।
भेमुक्त मंगल मानि मुद गोविंद भजुसुख पायकै ॥
दो० तिलक मान छापा दिये जपतप किये महान ।
मुक्ति पदारथ कठिन है विन ध्याये भगवान ॥
आन अनेकन भावसो मोक्षभये जेहि भाँति ।
सो प्रसंग मोदक प्रथुलसुनु महीपगुण पाँति ॥
यशुदा नंदसुनू अनुमाना । जिनप्रताप श्रुतिसत्य बखाना ॥
प्रीतम निकर गोपिकन बूझा । कंसशत्रु सम चित्त अरूझा ॥
मित्र समान गोपगणजानी । लही मुक्ति जो याचत ज्ञानी ॥
पांडुजात सबजानि सनेही । पद निरवाण लहातजि देही ॥
प्रबल अरातिबूझि शिशुपाला । जरामरण नाश्योमख शाला ॥
यदुकुल सकल विचारि सुझाती । सहज समस्त बैठ सुरपाती ॥
योगी जन मुनिवर संन्यासी । ध्यायउजानिपुरुषअविनासी ॥
चारि मुक्तिमहँ जो जेहिलायक । अन्त ताहिसोदेइ यदुनायक ॥
दो० गोपी हरिपद रसमती तरीं ध्याय असुरारि ।
नहिंआश्चर्य्यमहीशसुनु कहासोतोहिविचारि ॥
नृप कह अबन रहा भ्रम ताता । रास बिलासभनो सुखदाता ॥
त्रिय समूह आतुर हरि पासा । यहि प्रकार गमनी हितरासा ॥
जस सैवलिनी पल नभ माहीं । सातुरस्वपतिअर्णवहिजाहीं ॥
तत क्षण जससोहत गुणखानी । सो परमानहिं परत बखानी ॥
निकराभूषण भ्राजित श्यामा । वियकहिंभाविलोकिवहुकामा ॥
नटवर वेष मोहिनी साजी । सुन्दरत्व सुन्दरता भ्राजी ॥

देखि मनोहर रूप बिहारी । ब्रजयोषितनसुबुधि गतिहारी ॥
स्वागत सबहि पूछ जन पाला । उदासीन पुनि कहगोपाला ॥
दो० गौर्य्योद्धर कारण कवन भूत प्रेत बैताल ।
फिरत विपिन आयहुसखी वरणिकहौउत्ताल ॥
इमिसाहसकृत त्रियहि अभावा । निगमपुराण धर्म असगावा ॥
नारिधर्म नहिं निशिपतित्यागै । आनपुरुषपहँ निजमतिखागै ॥
यदपि होइ पति कायर क्रूरा । कुमति विवशकपटी अघपूरा ॥
रूप रहित कोढ़ी चख हीना । करपदबिनाकाण अतिदीना ॥
अथवा आनदोष युत होई । पतिव्रता तिय तजै न सोई ॥
उचित कन्त सेवन श्रुतिभाखा । अपरकर्म बरजित श्रुतिराखा ॥
सोइ कल्याणरूपिणी बाला । तजिछल पतिसेवै सबकाला ॥
यहि संसार उच्च पद पावै । सपति अन्तमम लोक सिधावै ॥
दो० करि वंचण भर्तार त्रिय अन्य मनुज ढिगजाय ।
कोटि जन्म लगि निरयपद पाय नारिपछिताय ॥
कानन सघन क्षपा उजियारी । निरखिं तीर पुत्रिकातमारी ॥
पायहु दरश जाहु निज गेहा । उचित अहै तुमकहँअनएहा ॥
पूजी आश दरश मम पायो । पुनिनमताअसउर फुरलायो ॥
मन वच क्रम पति सेवहु जाई । दहौ लहौ त्रैताप बड़ाई ॥
प्रभुमुख बचनसुनत सुविनाशी । शव समभैजनुभ्रूगिहरिगाँसी ॥
तत्पश्चात सुद्धि तन आई । महामलिननहिं बरणिसिराई ॥
इला नखाग्र खोखि अधहेरैं । शीतल श्वास भरैं उर फेरैं ॥
नीरज नयन सीप भय राजा । स्रवत बुन्दमुक्ताहल साजा ॥
दो० क्लेशमग्नह्वै सकल त्रिय करहिं रुदनमहिपाल ।
जोरिपाणिकह श्याम सों हौ ठगरूप कृपाल ॥
प्रथम बजाई बंशिका सुनत नश्यो गुण ज्ञान ।
अब भाषत कर्कशवचन कहौ तजैं हम प्रान ॥
बंश विभूति कन्त कुल लाजा । तवलगिसकलतजीव्रजराजा ॥
हैं अनाथ शरणागत स्वामी । राखशरण हरि अन्तरयामी ॥

जो जन तवपद कमल सनेही। तन धन राजन भावत तेही॥
नहिं ऐश्वर्य्य चहैं प्रभुताई। दुखगत सौख्य भक्तिरसपाई॥
नाना जन्म कर्म्म के कन्ता। प्राणरूप प्रभु श्री भगवन्ता॥
गवहि किमर्थ अगारहि नाथा। जीवन तवपद नीरज साथा॥
कहहरि अवनदोष मोहिंआहीं। रुचिरुपदेश कहा तवपाहीं॥
सो न सुना तुव तज्यो गलानी। गनिमतिसवनननमनकीजानी॥
दो० यदपिअकर्तव कर्म्महै रुचि तुम्हारि अनुमानि।
करि वसमोदित रासअव संगतुम्हारा आनि॥
करौ रास जुरि मिलिसकल अति आनंदवढ़ाइ।
सुनत सुधा साने बचन फूले तनन समाइ॥
यश उत्कर्ष सुनत अकुलानी। तसप्रफुलितभै सुनिमृदुवानी॥
सवसव सम भइ प्रथम भुवाला। अभ्यायस लहि जीवनपाला॥
घेरिगवो दधि गोप किशोरी। लखहिं मुखेन्दु प्रभाहिचकोरी॥
राजत मध्य कृष्ण कृतलीला। पुरटवलिचहुँदिशिगिरिनीला॥
मायहि दीन्हवहुरि अनुशासन। रासकरन विरचहुथलतिआसन॥
रहो उपस्थित रास समाजा। जोजो चहै देउ सोइ साजा॥
प्रभु रुख पाय सूरजा तीरा। अगमभूमि बिरची जड़िहीरा॥
भल रमणीय सोहावन ठामा। जोलखिवुधिभूलहिअजवामा॥
दो० बिधि मख कन्या सहद्द थल रंभस्तंभन साजि।
पूरण कुसुमावलिरची तिहुँपुर निरखतलाजि॥
विरचि भाव्यथल प्रभुपहँआई। दोउकरजोरिकाढ़िमिशिरनाई॥
छमा पयोधि काम्यरच ठामा। सुनत प्रसन्न चलेघनश्यामा॥
जाय रासगृह श्यामबिलोका। थलकमनीयविजजतिहुँलोका॥
लहैं गलानि सोमथा हेगी। वरणिकहौंकिमिलघुमतिमेरी॥
चमकत चहुँदिग सोहर वालू। मनो चंद्रिका विकस विशालू॥
बहतअनिल बिनुअनलप्रसंगा। तीनिप्रकार ताप तिहुँ भंगा॥
घन आरण्य लसत द्रुम पाता। छविगृहमनो सुछविसरसाता॥
जो माया निरमित सवठाऊं। हरिइच्छा किमि पूरणगाऊं॥

दो० देखि समाज मनोज मद उमहित गोपी सर्ब।
मान सरोवर नाम सर तेहि तट गईं अखर्ब॥
शुचि ह्वै रुचिर वस्त्र तिनधारे। पुनिषोड़श शृंगार सम्हारे॥
नख शिख लगिसुन्दरताखानी। कृष्णप्रियाकिमिकहौं बखानी॥
बीन पखावज ताल मृदंगा। सर्ब मिलाये तान तरंगा॥
हरिढिग आइ प्रेम मदमाती। गदगदतननाहिंकाय समाती॥
तजिसंकोच शोच हरिसाथा। तेहिथलभईं सकुलकुरुनाथा॥
गीतनृत्य अद्भुत गति करहीं। जो बिलोकिबिधिहरमनहरहीं॥
सबै राग रागिनी नृपाला। तनधरिधरि आये तेहिकाला॥
रासमंडली महँ ब्रजराजा। द्विजसमाजजनुअत्रिजभ्राजा॥
दो० जानि सुबस गोविंदकहु ज्ञान विवेक बिहाय।
गोपिन जान्यो विषय पतिश्यामहिं सुनुभुवराय॥
प्रभु सर्बज्ञ बिश्व करतारा। जानिकुमतिमतिकीन्हबिचारा॥
सत्यकहतकवि कोबिद लोगा। सुनुधिनारिसहिसकनवियोगा॥
निजबशहमहिंसबनपहिचाना। विषयवासनिकपतिअनुमाना॥
मिथ्यो बिवेक समाज अपारा। अतन प्रतापताप अधिकारा॥
अंक भरहिं मोहिं लाज बुराई। सत्य प्रेम दीन्हा बिसराई॥
होहुँतिरोहित क्षणयकलागी। पुनिनिरखौंकसकरिहिसभागी॥
गुप्तभयउ प्रभु अस जियठानी। श्रीराधाअधि प्रियसँगआनी॥
सार्गस्थिति लयकारक जोई। विषयभाव सो कसरत होई॥
दो० मंगल मतिके हीनजे ते सम्मुख कछु आन।
तूतजि राधा श्याम पद आनतत्त्व जानिजान॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णअंतर्द्धानवर्णनोनाम
त्रिंशतिमोऽध्यायः ३०॥
दो० अंतसमय हरिजात पुर अधिकपाप ठहराय।
तौ पावत है निरयपद और अधोगति भाय॥
जों पै सुकृतबहुहोइतौ सुरपुरलहै निवास।

पाप पुण्य दोउ समभये नरहोवै सुखबास ॥
नरकभोग पुनि जन्मको पावैगो भवमाहिं।
क्षीण सुकृत भे पुनर्जग जन्म लहै भ्रम नाहिं ॥
ये दोनों देसकत नहिं मुक्ति पदारथ कोय।
जो ध्यावै श्रीकृष्ण पद आशु जाय दुख खोय ॥
जरामरण बंधन कटै सुनु मंगल मन मीत।
याते तू यदुनाथ भजु क्यों भरमत विपरीत ॥
बहुरिमुनीश कहा सुनु भूपा। गुप्त भये जब अकल अनूपा ॥
सब गोपिकन चक्षु अँधियारा। हरि बिनु छायगयो निकरारा ॥
महागहन वन गहन कराला। असव्याकुलगोपिकानृपाला ॥
जस मणिगतआकुल अहिहोई। अथवा यथा रंक निधि खोई ॥
अरुजिमिदुखितमीन बिनुपाथा। बिरहाकुल त्रियगणनरनाथा ॥
रोदहिं बदहिं परस्पर कहईं। कितभे गुप्त कासुसुधि लहईं ॥
पलन बितीत सिराधी वाहीं। मोरे डारिहृदय लपिटाहीं ॥
क्रीड़ा रास करत हे संगा। बहु प्रकार राचे रसरंगा ॥
दो० जातन देखाकाहु सखि बिधिदुख लिखा लिलार।
हायकृष्ण हाकृष्ण कहि विकल सकल तेहिबार ॥
अहह श्याम प्रणतारतमोचन। अज अद्वैत अगोचर शोचन ॥
प्रेरितकाल भयो संसर्गा। किमघ वियोगवृक्ष बिनुवर्गा ॥
पूछहिं काहि आलि कहँजाई। जगसमरथ न योग मनुसाई ॥
पाद चिह्ननहिं मारगहोरौ। जेहिकृत मिलैं सुकरौ सबेरौ ॥
इमि वतराय क्लेश विरहागी। कानन कुंजन खोजनलागी ॥
हायश्याम केहिदोष बिसारी। जन्म जन्म हमदासि तुम्हारी ॥
तुमसरवज्ञ अनीह कृपाला। अकला नन्तरूप तिहुँकाला ॥
सुकुल बधू हम लाज दिहाई। सर्वसुत्यागि शरण तव आई ॥
दो० विथकीं खोजत काननहिं मिले न माधवराय।
महाविकल जियकलनहीं कहै त्रिया यहिभाय ॥
यककह सकल खोजहमकानन। मिलेन कौनो कृतखलमानन ॥

संत मनोरंजन खल गंजन। बूझहिं कौन मिलै दुख भंजन॥
कोउ कह सुनो सत्य हमभाखैं। जेहि विपिनाथ दरशरसचाखैं॥
पशु अनंत गामी द्रुम जेते। यहि थल बसहिं मुनीश्वरतेते॥
प्रभु लीला लगि जड़चरभयऊ। लखि रसरासचषनसुखदयऊ॥
इनजाने जितगये मुरारी। प्राणनाथ प्रणतारतहारी॥
सन्तनसबहिं पूछि किनलेहू। आयवताय देहिं दृढ़ एहू॥
तासु बचन सुनि हरिरस भीनी। थावरचरहिं प्रश्नअसकीनी॥
दो० हेबहुपद अहि अशनप्रभु पाकरि पिक हितकारि।
महा सुकृत बश उच्चतन पाया परहितकारि॥
दुख आतप पावस अरु शीता। परहितहितुमसहो अभीता॥
डार प्रसून फूल त्वक पाता। देत परार्थ परम पद दाता॥
तन मन धन हरि हरे मुरारी। देखे हमहिं कहो सुखकारी॥
हे कदंब तुम विटप अनादी। देहु बताइ श्यामअविषादी॥
हे अशोक हरिपुष्प गोसांई। जात बिलोके तुम यदुराई॥
हे तुलसी आनंद विलासिनि। हरिसेवकउरभक्तिप्रकाशिनि॥
हरिवल्लभा आजु हरि देखे। प्रमुदित भई समोद विशेखे॥
निज किंकरिनि जानि तू माई। नन्दकिशोरहि देहु बताई॥
दो० अपर वृक्ष जे जगतमें पूछैं सबहि अधीर।
मृग पच्छी सबसन दुखित कहैंहरो घनपीर॥
यहि बिधि पूछत खग मृगबेली। विरहाकुल बनफिरहिंअकेली॥
जबन मिले घनश्यामकृपाला। गहवर बन अशोचसबबाला॥
लागि प्रशंसन प्रभु प्रभुताई। शिशु ताते जो कीन कन्हाई॥
उमगत उर अनुराग अपारा। दूरि गई तजिथल रस सारा॥
चरण चिह्न देखे तब भागी। जनु सोपान भक्तिपुर लागी॥
अंबुज जव ध्वज अंकुश सोहैं। जो बिलोकि गिरजापतिमोहैं॥
जेहि बाल ऊपर पद चीन्हा। सबयुवतिनप्रणामतेहिकीन्हा॥
जोरज सुरमुनि खोजतअहईं। स्वपनौ कोटि यतननहिंलहईं॥
दो० सोरज माथे लाय तिय चलीं अगमने भूप।

कळक अग्र चलि चारिपद देखे त्रिय नररूप ॥
तब विस्मित भईं नारि महाना। को दूसर हरिसँग भगवाना ॥
अल्प दूरि देखौ मथनीया। मनो विराजत दुख हरनीया ॥
कोमल कुसुम बिछे सुखदाई। तापर जोड़िन दर्पणी पाई ॥
विकलवियोग विवश ह्वै नारी। पूछहिं तामन कुंजविहारी ॥
उत्तर देत जो होत सयाना। मुकुर अजीवन उत्तरबखाना ॥
पूछतसखिहि आलि सुखपागी। रैनि मुकुरकीन्हाकेहिलागी ॥
सुनु जब प्रीतम चोटि सँवारी। तवन बदन प्रियदेखिमुरारी ॥
पाणि सरोज आरसी लाई। लखि प्रतिबिंबमोद उरछाई ॥
दो० सत्य मानि सम्मत करैं नारि परस्पर राज।
अतिभागिनिसतिभक्तिनी जेहिसंगहसुखसाज ॥
महातपस्विनि सोत्रिय आली। जेहियकांत विहरतवनमाली ॥
इत अबला मद विरह दुखारी। विपिनपुण्यखोजहिंभूमहारी ॥
उतराधिका श्याम संग भूपा। विचरतिअति आनंदअनूपा ॥
निज बशजानि कृष्णमदछावा। जेहिंकृतजगनकाहुसुखपावा ॥
सकलत्रियनते अधिकविचारा। श्रीराधिका हृदय अहंकारा ॥
प्रभुसों कहाचला नहिंजाता। विथकिउपगमम अधिकपराता ॥
जोपै कंध धरि लेहु गोसाँई। तौ तुव संग चलौं यदुराई ॥
हरि अंतरयामी नर नाहा। जनमद हरिकृत सहितउछाहा ॥
दो० आइचढ़ौ ममकांध तुम महाप्रियाहौ मोर।
हाथ उठाये चढ़ैलगि उरसुख उदधिहिलोर ॥
प्रभु अंतरित भये ततकाला। परम कौतुकी मदहरिप्याला ॥
जौन भांति कर सरज पसारे। तिहि विधि रही अधंपदहारे ॥
जिमिदामिनिकरिमानअपारा। पयद विहाय दुखित विकरारा ॥
अथवा तजिचंद्रिका खगेशा। विकलहोय तजि रहै न लेशा ॥
ज्ञानरहित यशभक्ति नृपाला। नसराधिका विना जनपाला ॥
गौरवर्ण जनज्योति प्रकासी। अंगारक जननी छविभासी ॥
जान रूप अचलापर रूपा। जगन मातु आजितभवभूपा ॥

विथुर महान प्राणविनुजैसे। चित्र रचित दारज भैतैसे॥
दो० श्रवतनयन अंबुज नृपति वपु सुवासुको पाय।
बदन शिलीमुख ग्रसतहैं सो नहिं सकतउड़ाय॥
अल्प काल बीते सुधि आई। अहहकृष्णकहिचहुँदिगधाई॥
श्याम वियोग रुदतचड़ित्रासा। ध्वनिसुनिजड़जंगमदुखग्रासा॥
विलपत खगपशु गणद्रुमबेली। गहवरवन राधिकाअकेली॥
हाहा परमनेह दधिसेतू। हागुणखानि अगुण खगकेतू॥
हाखरुछंद अखिलखलगंजन। हात्रिपुरारि संत उर रंजन॥
शरणागत पालक सब काला। किमघ परिहस्यो दीनदयाला॥
लीजिय सुधि अनुगामिनि जानी। धरमधुरंधर पूरणज्ञानी॥
इमकृत शोर सनेह विलापा। हेरत विपिन कुंजतन तापा॥
दो० तेहि अवसरही सकलसखि पहुँचीं ताढिग आइ।
लाइकंठ भेंटी सबन जानि दुखित कुंराइ॥
जानिसश्रुकवृषभानदुलारी। अखिल सखिनतनदशाबिसारी॥
संगलाय प्रविशींघन कानन। बसत जहाँ खग मृगपंचानन॥
अवलोकी चंद्रिका जहाँलों। ढूंढाविपिन अलीन तहांलों॥
तिमिर निदान गहनवनमाहीं। मारगकतहुं मिलतजवनाहीं॥
हृदय हारि प्रभुध्यान लगाई। लौटीं सकल विरहतनछाई॥
हरिहरि जपत धीरधुतराजा। आय यमुन तट रास समाजा॥
बैठिरहीं मन महागलानी। कृष्णकृष्णकहिशारँगपानी॥
श्रीगोविन्द दास हितकारी। गावत मदन कतहुं बनवारी॥
दो० ऐसी प्रिय गोपी तजी मान जानि यदुराय।
मंगलतू भजु श्याम पद मान मनोज बहाय॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांगोपीविरहवर्णनोनामै
कत्रिंशतिमोऽध्यायः ३१॥
दो० परमातम अव्यक्त जो चतुरानन ह्वै सोइ।
जड़चैतनमयविश्वयहरचतभनतश्रुतिलोइ॥

चतुर्व्यूहह्वै आपुही पारब्रह्म भगवान ।
पहुँचावत हैं जीविका सबको यथा प्रमान ॥
पंचवदन परिणामह्वै संहारत बनिकाल ।
विधिहरि हर यहिते चतुर है एकै जनपाल ॥
सोस्वतंत्र भगवान जो स्ववसविरचिनरदेह ।
अद्भुतगति लीलाकरी नँद यदुपति के गेह ॥
चारि अर्थदाता समुझि कीरति धर्मसुधारि ।
बन्दिचरण निजइष्टके सो वरणौं निरधारि ॥

ऋषिकहसुनुनरकुमुदिनिचंदा । कौतुक सुनि छूटै भवफंदा ॥
युवती विरह विवश सरितीरा । प्रभुकृत गानकरैं कुरुवीरा ॥
कहैंकिहे प्रीतम गुणपालक । जनमन रंजक खलगण घालक ॥
जादिनते व्रज आइ प्रकासा । तादिनते सुखसिन्धुनिवासा ॥
रमारमण गिरिधरण कृपाला । अकलअनीहविदितनिहुँकाला ॥
दासी हम तुम्हारि गुणराशी । सत्वर सुधिलीजिय उरवाशी ॥
पावस जलद रूप शुभ लोना । जो अवलोकिभूल भवकोना ॥
मदमदहरण निरखि छवि सोई । अब न नाथ धीरज उर होई ॥

दो० बिना मोल मुरलीधरण चेरिभई हम सर्व्व ।
नैन शिलीमुखउरचुभे व्याकुलविरहअखर्व्व ॥

तुम्हरे तट कौतुक घनश्यामा । फँसीं सकल हम विरहादामा ॥
अवनआश कोउ श्यामहमारी । चाहहिंप्राणतजन गिरिधारी ॥
नतरु अवश्य नाथ सुधिलेहू । चितकठोर जनि परिहरि देहू ॥
पायदरश परित्यागि वियोगू । अरुनव्यंगजगकहकोउ लोगू ॥
यहै मनोरथ त्यागहिं देहा । भक्षत शिखिराखा कृन केहा ॥
महामेघ वरषाते राखी । देव अदेव तिहुँपुर साखी ॥
नन्दसूनु तुम नहिं करतारा । शिवस्वयंभु तवपद आधारा ॥
त्रिदशविनयकरितुमहिंकृपाला । प्रकटायोकहिनिजकुलशाला ॥

दो० यहै एक अचरजबड़ा अति अनुचित यदुराय ।
निधनदास निजकर करौफिरि रक्षौ कहँधाय ॥

घटघट व्यापक बिरुज अनामा। हरिअंतरयामी तन श्यामा॥
निज किंकरिनिविचारिअघारी। दुखहर किन सुधिलेहुहमारी॥
पूरण करौ लालसा सांई। तुमसम को दासन सुखदाई॥
ललना जानि शून्ता धरहू। अनुचितउचितशोचिप्रभु करहू॥
सुधि आवत मुसुकानि तुम्हारी। जोचिलोकि लज्जितखेचारी॥
सानुराग चितवन प्रभु तोरी। समुझतहोतसुमतिमतिभोरी॥
नैन कटाक्ष बंकता तन्द्री। बूझत तिहुंपुर प्रभुता निन्द्री॥
कंठ नयनि चटकीली बातैं। लखिसुनिअतनभूजनिजघातैं॥
दो० सो सुधि आई जगतपति उपजत कठिन कलेश।
कुमुदिनि हम तुम ऋक्षपति दर्शत सुख लवलेश॥
जब सुरभी चारन बन जाहू। मग घेरैं हम दरशन लाहू॥
अरुणोदय ते सायंकाला। पलटत है तुम मदनगोपाला॥
पाय दरश उर आनँद आवैं। देव याम युग सिन्धु सिरावैं॥
सन्मुख रूप त्रिभंगी हेरी। दोषहि बुधिनलिनी सुतकेरी॥
अक्ष पलक बिरचे जेहिकोरा। इकटकनतानिरखत मुखओरा॥
जो छबि बिबुधन स्वपने हेरत। चहुफलदानि त्रितापनिबेरत॥
इभि भूपाल युवति गुण गावैं। हरि नियोगउर धीर न लावैं॥
श्रीमाधव चरित्र सुखरासी। श्रवण करत जेकटभवफाँसी॥
दो० गोपी सोइ बियोग में गावहिं भांति अपार।
आरतमय सुनि प्रियवचन कोनबिकलतेहिबार॥
छं० नहिं बिकल को तेहिबार तेहिठा दुधाजावनमें भयो।
अतिकठिन कान्हमुरारि निजउरतदपि दर्शन नहिंदियो॥
तन सिखन आश सुरारि नासी जीव लालन नशिगयो।
अनचेतनागिरि कश्यपी कहिश्याम यहुकुल काभयो॥
दो० प्रथम हढ़ावत दास कहँ सदा श्यामकी रीति।
मंगलदेवतदरश पुनि जानि कमलपद प्रीति॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रिय यांमंगल
दासविरचितायांगोपीबिरहकथनंनामद्वित्रिंशतिमोऽध्यायः३२॥

दो० मरकट जिमि नटवर बिवश नृत्यत नृत्यअनेक।
तिमि मायावश आतमा भूल्यो ईश बिवेक॥
छूटिजाय रज मोह ते जो पलगाविप जीव।
जाइ मिलै निज यूथ महँ तौ पावै सुख सीव॥
सो उपाय नहिं करत हैं महाअधम भवआय।
नहिं सहायता चाहिये आपुहि सकत छड़ाय॥
योग पन्थ अजपा जपे धरे प्रणवके ध्यान।
यहौ कठिन जो नाबनै तौ करि उत्तम ध्यान॥
आराधे रुक्मिणिरमण भ्रम समस्त बहिराय।
मंगल सानँद अंत सो पूरण पद को जाय॥

श्रीमुनि बहुरि कथन कृतलागे। भूधरकुरु अधिपति के आगे॥
अंतरगति अवलोकि मुरारी। देखा सबविधि हृदय बिचारी॥
जोन दरश गोपिन कहँ देहूं। तन परिहरें अयश जगलेहूं॥
यदपि बहुरिहौं सकत जिवाई। तदपि उचित भेंटौं सबजाई॥
प्रगटे तिनमहँजगपालक अस। दृष्टि बंधि दुरिनटप्रगटतजस॥
प्रभु मुखछबि सुरभोग बिलोकी। सकल भई चैतन्य अशोकी॥
बिनु देखे आकुल तन ऐसे। मनुबिषधरडसिगयोतनजैसे॥
गारुड़िरूप श्याम जनु आई। अमृतमंत्र द्युतिसीखिजियाई॥

दो० गौरि में सरवर तनय यथा बिकल तिमिबाल।
लख्यारक कुंडलनिरखि बिकसे अक्ष बिशाल॥

नरपति हरि आनंद बिलासी। परिपूरण निरगुण गुणरासी॥
तिनहि देखि युवतीगण राजा। समुदसकलगतबिरहसमाजा॥
इमिप्रसन्न प्रफुलित भईं नारी। थककोउ यथा तरुतनिबिदारी॥
पाइ थाह आनन्दहि पावत। को कबि उपमा तासुदतावत॥
वेदसुता घेखो घनश्यामैं। सबै उपस्थित भे तेहि ठामैं॥
तब प्रभु सकल संग थलरासा। भ्राजितभे अघतूल बतासा॥
इक गोपिका उतारि सचीरा। डास्यो तहँ बैठे यदुबीरा॥
कोविद द्वै चारिक ब्रजबाला। बोलीं रिसबश सुनौ नृपाल॥

तुम हरि अतिकपटी मनहारी। बौरावत जग सबहि बिहारी॥
दो० देह प्राण कोउ हेत तुव मानो गुण नहिं नेक।
जानत तुमहीं जन्हकर आन को करै विवेक॥
इमि भणि कहनपरस्पर लागीं। हम सब जासुनेह अनुरागीं॥
सो कठोर हिय अधिक सयानी। अबसमस्तमति इनकीजानी॥
गुण परित्यागि अवगुणै गहई। सदा प्रपंच रूपये अहई॥
निजमन आने करै बिचारा। काज्रतासोंचलिहि तुम्हारा॥
आन बालकहँ तू मति भोरी। निज मुखकहै बुद्धिकी थोरी॥
तोर कहा हरि सुखहि कहाऊं। तो सखि मोरचतुर मतिनाऊं॥
अस बतराइ कृष्ण ढिग आई। करि कटाक्ष बोली मुसुकाई॥
कृपा पयोधि प्रश्न इकमोरी। न्यायकरौप्रभु गुणमतिभोरी॥
दो० एक किये बिन गुण गने दूजे गुणफल देहि।
तृतिये गुण औगुणलखे चौथे गुणनगनेहि॥
चारिप्रकृति के नर ये स्वामी। कौउत्तम कहु अन्तरयामी॥
मध्यम अधम निषिद्ध बखानो। प्रभु सर्वज्ञ ज्ञान नयजानो॥
हरिकह सुनो भिन्न करिकहऊं। श्रम तृणतोर अग्निनयदहऊं॥
उत्तम जन गुण बिनगुण मानै। पिता पुत्र प्रेमहिंजिमि ठानै॥
मध्यम परकृत पलटा देहीं। पूरण पुण्यनजग कुत्रलेहीं॥
यथाबिनु भोजन हित लागी। स्वतलहिनिजस्वारथपागी॥
अधम आन गुणऔगुणलेखैं। शत्रु भाव मित्रहि जोदेखैं॥
महानीचगुण मानन आना। अघकिन्हनी कहत सुजाना॥
दो० सुनि हरि मुख ये बचन नृपएकादिनिय मुखहेरि।
हँसीं सकल गोपालजा बचन कहँबच फेरि॥
तवश्रीकृष्ण चन्द अकुलाने। अटपट बचन व्यंग अनुमाने॥
कहा न मैं इनचारों माहीं। जो तुमहँसो अबूझ सदाहीं॥
हौं पुराण पुरुष गुणरासी। जड़चर जीवनके उदासी॥
जो बाँछा राखो कोउ मोसन। देऊँताहि तजि सब संकोचन॥
जोपैकहौ तुम हमहिं गोसाई। गहवर बिपिन अदोष बहाई॥

यहिकर कारण सुनौ सयानी। करयौं परीक्षा प्रीति पुरानी॥
गुणहुनविलगहास्यरस जानो। मोरकहाअतिहित निजमानो॥
अवसब भाँति प्रीतिदृढ़ देखी। होमम प्रिया सप्रेम बिशेखी॥
दो० कीन्ही मोसँग प्रीतिशुचि लीन्हा पूरण ज्ञान।
मनोरंक निधिकर गही मेट्योक्लेश महान॥
बीतराग यश गृहधन त्यागी। दुखसुख परिहरिहैं अनुरागी॥
सेवत कुवलय पाद हमारे। अंत मोरबपु लहत सुखारे॥
तथा तुम्हारि बिलोकि दृढ़ाई। रसना ममक्रि सकन बड़ाई॥
नेहअखंड अलौकिक ठना। श्रुति मारगजस कहा प्रमाना॥
बिधि आयुर्वेल समतन राखौं। प्रीति प्रशंसा तुम्हरी भाखौं॥
अनृण न होउ सत्य ममबानी। सुनौ निकर तुमबुद्धि सयानी॥
सोजन सूदज्ञान बिनुसोई। जाहिन मोर प्रेमदृढ होई॥
नरनागर गुण सागर जोहैं। मोर भजन तत्पर जगसोहैं॥
दो० समाधान सबकर कस्यो इमिश्री मुख असुरारि।
मंगल तूतजिअपर श्रम भजिले श्याम मुरारि॥

इतिश्री मद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णाभि
याथंमंगलदासविरचितायांगोपीश्यामसंवाद वर्णनो
नामत्रैत्रिंशतिमोऽध्यायः ३३॥

दो० कुछ मूरुख संयोग करि चलेपन्थ मुदमानि।
मारगमें सरिता तरतश्रम उपज्योउर आनि॥
बूड़िगयो सरि एकजन यह विचार सतिभाय।
गनै जौनु नहिंनिज गुनै एकहीन पछिताय॥
अल्पकाल दुख प्राप्तभे कोउपंथी गुणखानि।
न्यारे न्यारे सकल ते समुझाये जब आनि॥
तबपायो आनंदतिन तिमिबिनुहरिगुणगान।
बूड़िगयो बिषया बिवश कौन करै सज्ञान॥
तू मंगल सुनि सीखमम त्यागुमोह भ्रमभूल।
भजिले राधा बल्लभै मिटै सबनकी शूल॥

श्रीमुनि पुनर्वाक्य इमि कहेऊ। ओकरिश्रवण भूपसुख लहेऊ॥
जयश्री श्याम सरसवच गायो। शिरपरि हरिगोपिनमुदपायो॥
उछिपुष्ट साथ कुतूहल करहीं। अमित भांतिआनँद उरभरहीं॥
माया योगरूप तब ठानी। अगनित रूपअंश अनुमानी॥
चाहत सबहि दीन सुख सागर। लीला पर्म्म सनेह उजागर॥
प्रति गोपिका वपुष निरमाना। कृपाउदधि प्रभु पर्म सुजाना॥
सकल संगयुत मंडल रासा। पुनरारंभ विलास प्रकासा॥
बिबियुग नारि जोरि युगपानी। नृत्यतमध्य आपु सुखदानी॥
दो० धूके सब निजनिज तरहि लखेन मायरूप।
करहिं प्रविष्टे अंगुली फिरें नारि कुरुभूप॥
इक गोपिका तदन्तरश्यामा। इदमंतर गोपिका ललामा॥
नीरद घटा तड़ित जनु राजे। बा हरि संग नीलमणि भ्राजे॥
यद्विकार अबला प्रभुसंगा। करैंभूर बहुविधि रस रंगा॥
यंत्रनिकर बाजहिं रुचिनीकी। गंधवताल सुनत तेहिफीकी॥
खरज ऋषभ गंधार सोहाई। मध्यम पंचम धैवद गाई॥
और निषाद सप्तसुर जोई। गावतराग देह धरिसोई॥
भैरव मेघ मलार अनूपा। दीपक श्रीहिंडोल स्वरूपा॥
मालकोश युत ये षटरागा। राज रहस्य धाम अनुरागा॥
दो० कोटिऊन पंचास जे तान कहीते सबे।
एक दोय युत मूर्छना सोहें तहाँ अखर्व॥
ह्रस्व दीर्घ अरु लुप्तसह राजें तीनों ग्राम।
नभसरसलोक समेतनृप तालवर्जेसुखधाम॥
नृत्यहिंश्याम सकल बिधिगाई। परिपूरण दरशें को भाई॥
त्रैपुर कर्त्ता त्राता हारी। तेहि रहस्यचकितमितनधारी॥
मंगल आनँद अमित अपारा। निजतनमन सब काहूहारा॥
अंचल रहित होत कोउ गोपी। मग्न रहस्य जाननहिं सोपी॥
कतहुँ मुकुट श्याम खसिजाई। बूफिन परत रासमति छाई॥
नारिनिकीशशिमोतिनमाला। टूटगई नहिं जान भुवाला॥

प्रभु वनमाल गई अरुझाई। महा अनंद कहौं किमिगाई॥
स्वेदबिन्दु शुभ सोहललाटा। मनौं गुलिक कर सोहतठाटा॥
दो० कुमुदबंधु मुख त्रियनपर कच अलकावलि भूप।
सुधालोभ जनु पवन अरि शशि लपिटान अनूप॥
कतहुँ प्रभुमुरली समनारी। गावतासु सुर सम दै तारी॥
कोउकोउनिजसुरतालसमाना। करतअलापविलगसुखजाना॥
बंशी ध्वनि समपूरण जबहीं। कहततान गोपी हरि तबहीं॥
ठगिसे रहत आपु असुरारी। जिमिबालक आरसी निहारी॥
गानतान इमिनृत्य अलोकी। जिन निरख्योतेभये अशोकी॥
अजहूँ जाहि सुनत मुदबाढ़ा। ममसन मनौं भयउ तहं ठाढ़ा॥
करहिं कटाक्षहाउ पुनिभाऊ। अकथअलखहीरगोपिनचाऊ॥
भेटहिं भले लाइउर उरहीं। जोसुनिमुनिमनदृढ़भ्रमपरहीं॥
दो० धाता शिव इन्द्रादिसुर पुनि गंधर्व सनारि।
चढ़े विमान अकाश सब देखहिं राससुखारि॥
छं० देखहिं सुखारी नृत्य गानहिं कुसुम अवली छोरहीं।
सुरबाम हँसि हँसि परस्पर आनँद निकर तृण तोरहीं॥
पुनिकहैं हे करतार हमकहँ करसि कसनहिं गोपिका।
करिरास प्रभुसंग सुयश लहतीं भई सुरत्रिय सोपिका॥
दो० राग रागिनी तालसुर सकल सजे यहि भाँति।
यमुनाजीकी गतियकी पवनौ मंद बहाति॥
उडुगण संयुत द्विजपति थाके। छुटे प्रवाह सोककरभा के॥
नररूपोसुर अहार दिशिचारी। गयो सोइ जगभयउ सुखारी॥
भइ षट मास केरि निशि सोई। तदपि न जान चराचर कोई॥
ब्रह्म रैनि ताकर भा नामा। यहि कारण भूपति सुखधामा॥
प्रभु उर दाधिकृत रास सुचाला। उठी तरंग समोद विशाला॥
सबहि संग लै भानुज तीरा। जाइ करत भे क्रीड़ा नीरा॥
कछुक काल कीन्हीं यह लीला। प्रभु समर्थ सर्वज्ञ सुशीला॥
श्रम मिटाइ बाहर असुरारी। कहा सबन प्रतिवचन पुकारी॥

दो० भयो मनोरथ सकल तब रही न कौनिउ आश ।
कीन्हारास अनेक विधि दुखगा तिनहिं प्रयाश ॥

निज निजभवन जाहुमुदमानी । जाइय किमितजिपदसुतपानी ।
जिमि योगी राखत ममध्याना । कीजो तथा ज्ञान परमाना ॥
तुम जेहि ठाम रहो तहँ रहऊँ । जानो सत्य मृषा नहिं कहऊँ ॥
युत संतोष पाइ अनुशासन । गईं समस्त भूप निजआसन ॥
जननी जनक तनय भरतारा । काहुन जान भेद तेहिवारा ॥
यह विचित्र लीला सुनि राजा । मुनिहिपूछअद्भुत मतिसाजा ॥
सुनिय नाथ करुणाकूपारा । मम सन्देह करिय निरुवारा ॥
प्रभु अवतरेउ हरण महिभारा । बेद धर्म जग करण प्रचारा ॥

दो० तिनपर नारिन संग प्रभु कीन्ह रहस्य बिलास ।
यह नर लम्पटकर करम बदत चतुर अनयास ॥

भेदन यह जाना नरनायक । नर समानजाना यदुनायक ॥
सुमिरत जाहि नशौ अघरासी । पुरुष पुराण सकल उरबासी ॥
दोष निकर बरजित तट जासू । जोकछुकरै सोह सब तासू ॥
जलजयथा भषिलीन्ह अलीना । आपु समानकरत सुकुलीना ॥
नीर सकल शुभ अशुभ महीशा । सुरसरि संगचढ़तशिवशीशा ॥
सामर्थी जो कृत जगमाहीं । दोषिककरततिनहिं सोनाहीं ॥
कारण करत अशुभकृत जोई । पूत सुयश प्रगटत है सोई ॥
अन्धकारि पायो रस मारा । भूषण कण्ठ कीन्ह श्रुतिसारा ॥

दो० शत्रु धनंजय हार उर कीन्ह बिदित शुभसोइ ।
निजहितकरथोउपायनहिं अरुजगकरहितहोइ ॥

हरिगति सबों भांति अपारा । निकरा लिप्त लिप्त निरधारा ॥
जीव चराचर जेतिहुँ लोका । बसत सबनके उरहि अशोका ॥
न्यारा बूझि परत अस भूपा । जल अरबिंदी दल अनुरूपा ॥
गोपिन की उत्पत्ति जोराई । सोप्रथमहि दौं बरणि सुनाई ॥
बेद ऋचा अरु शक्ति सोहाई । नारि शरीर बिरचि ब्रज आई ॥
हरिदर्शन परसन हित लागी । भई सकल तेहरि अनुरागी ॥

यहि विधि श्रीवृषभान किशोरी। मुदते हरि पद प्रीति न थोरी॥
लीन रहै सेवा महँ सोई। कहेउ प्रसिद्ध कथा यहगोई॥
छं० कीन्हा प्रसिद्ध पुराण यह जे चतुर सज्जन गाइ हैं।
कल्याण कीरति विजय तेनर सर्ब निधिमुदपाइ हैं॥
हरिकर्म्म उरनहिं लाइकै सानन्द शुभयश ध्याइहैं।
निरवाणपद सायोज्य मुक्तिहि चतुर नर सोपाइहैं॥
दो० कथा रुचिर अवशशाहरि प्रभु रहस्य शरध्याय।
निज बुधिके अनुसार सो कहा भूप समुझाय॥
दो० तेमूरुखजे भ्रमित जग त्यागि श्याम असुरारि।
तू मंगल ताजि मोह मद भजिलें प्रभु दैत्यारि॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांपंचाध्यायीरहस्यलीला
कथनंनामचतुर्त्रिंशतिमोऽध्यायः ३४॥
दो० अहंकार निज हृदय धरि लौन पूतरी एक।
अवगाहन निधि नीरको गई सो अतिअविवेक॥
आपुनशानी जल मिली थाह बतावै कौन।
इमिरुक्मिणिपतिचरितदधिजगमतिपूतरिलौन॥
करै कृपा जो कृपायतन तौ कछु बरणौ सोइ।
नातरु कोटिहु जन्म लगि पारलहै नहिं कोइ॥
मैं निज उर धरि श्याम पद श्यामा पादपनाय।
बरणौं उज्वल सुखद भल हरि चरित्र मुदपाय॥
श्रोता जिज्ञानी चतुर बक्ता ज्ञान निधान।
श्रुतिदै श्रुति मत श्रुतकरौ लहौ सकल कल्यान॥
मुनिगुणखानि बहुरिइमिकहेऊ। जोसुनिभूपअमितसुखलहेऊ॥
जिमि प्रभु विद्याधरहि उधारा। अरु जस शंख चूड़कहँमारा॥
सो प्रसंग अति रुचिर सोहावा। कल्पारत जो शमन कहावा॥
गोपन नन्द कहा दिन एका। श्रवण करौ सममभक्तटेका॥
जब श्रीकृष्ण जन्मभा माई। तबहौं जगदंबिका मनाई॥

प्रण कीन्हा करिहौं तव पूजा। भानु वर्ष सुत भये अरूजा॥
सोत्साह सम परिजन वासी। मुदमंगल मय आनँद रासी॥
सो दिन जगजननीकी दाया। आवातात अधिक सुखछाया॥
दो० चलौ सकल मिलिचलैं अब करैं तासु अरचाहि।
सुख दाता दुख हारिणी जगत मात सो आहि॥
सो० सुनत नन्द के बैन उठे निकर गोपाल जा।
आयेनिजनिजऐन अशनपाकबहुविधिकिये॥
सामग्री लै सकल पदारथ। नंद द्वार आये अरचारथ॥
श्री नँदराय पाय सुख भारी। दधि माखन बहुअन्नसवारी॥
भार भराय शकट रुचि मानी। गवनेकुटुंब सहित नृपज्ञानी॥
देवि स्थान पहूंचे जाई। सरस्वती सरिसकल नहाई॥
कुलगुरु बोलि वेद विधि जैसी। पूजा कीन्ह महीपति तैसी॥
अखिलपदारथ विविधविधाना। धरे भूप देवी अस्थाना॥
परिक्रमा करि दोउ कर जोरी। कह्यो नंद पुनि बचन बहोरी॥
तुम्हरी कृपा मातु मम सूना। भयो वर्ष द्वादश मुद दूना॥
दो० इमि वदि करि दंडवत नृप शाद्यालय पुनि आय।
सहस विप्र निवते तुरत भोजन दीन कराय॥
पूजत बिनवत कृत ज्योनारा। भई महीपति अधिकअबारा॥
रैनि बास कीन्हो तेहि ठाई। ब्रजबासिन समेत नँदराई॥
नंद तल्प तट यक अहि आई। चरणानन गहि लागचबाई॥
हरि विलोकि व्याकुलभे नंदा। लखिरभानुविकलजिमिचंदा॥
विह्वल कहत कृष्ण हे श्यामा। त्राहित्राहितिहुपुरअभिरामा॥
लहुरव सुधि लीजियजनजाता। नतुयह खलभच्छतममगाता॥
नंद पुकार सुनत सब जागे। करि प्रकाश देखन नृप लागे॥
अति कराल अजगरतन थूला। नरनारी वशभय अनतूला॥
दो० यहि अवसर श्रीकृष्णजू नागविलोक्यो जाय।
हरि ताहि शिर पगदयो सुनौ भूप मुदपाय॥
हरिपद परसत तजि निजकाया। रूप रुचिर काकोदरपाया॥

करत प्रहून जोरि द्वौ पानी। अजय जय श्याम ब्रह्मसवानी ॥
पूज्यो ताहि आपु असुरारी। कोसिकरभतन रहसिदुखारी ॥
किमथ वपुष भूधर करपावा। ममपद परसि दुखौघनशावा ॥
तब शिरनाय जोरि जुगबाहा। करि बिज्ञप्ति कहेउ नरनाहा ॥
क्षमाराशि सुनु अंतरयामी। गुण कालज्ञ नभगवरगामी ॥
प्रभु जानत उत्पति अवसाना। तदपि प्रश्नवत करौंबखाना ॥
सुर बिद्याधर नाम सुदर्शन। अमरलोकनित्रसौंआनँदसन ॥
दो॰ अहंकार निजरूपकर नहिं ममहृदय समाय।
तब मायावश ज्ञानहत सुनुकृपाल सुरराय ॥
यानारूढ़ दिवस यक स्वामी। चल्योंभ्रमनजग अंतरयामी ॥
जहँ अंगिरा ऋषय तपसाधत। सानँदनिज आतम आराधत ॥
तिनके शिरपर ह्वै शतचारा। आयउँ गयउँनकीन्हविचारा ॥
एककाल मुनि लखि परछाई। निरख्यो स्वामिन नैनउठाई ॥
मोहिं बिलोकि क्रोधउर छावा। ऋषिमकोपियहवचनसुनावा ॥
होहुजाय अजगरअभिमानी। पुनिनचलसिइमिमगअनजानी ॥
चक्षुश्रशातन तत्क्षण पाई। परयोंभूमि सुनुजगसुखदाई ॥
ममगतिलखिमुनिज्ञाननिधाना। कह्यो दयायुत मुक्तिप्रमाना ॥
दो॰ कृष्ण चरण रज परसिके तू पैहसि निजरूप।
यहिकारण पद नन्दकर गहेउँ तिहूँपुरभूप ॥
ह्वै दयाल मोच्यो मोहिंआपू। मिट्यो नाथ सँचितप्रथुपापू ॥
असकहि बन्दिचरण करजोरी। परिक्रमा करि बिनयबहोरी ॥
करि दंडवत मांगिअनुशासन। विद्याधर गमनेउ सुरआसन ॥
सुर बिमान बैठेउ मुदपाई। आनकथासुनु नृपतिसोहाई ॥
बृजबासी यहगति अवलोकी। चकितचित्तजिमिरजनीकोकी ॥
प्रातबन्दि जग जननी पादा। गमने बृंदावन अविषादा ॥
प्रभुप्रताप उरकृत अनुमाना। कोउकोउमतिसमकरतबखाना ॥
यदपि रहत नित प्रभुसँगराजा। तदपिनजानतप्रभुकरकाजा ॥
दो॰ निज निज आलय सबगये मंगलआनँदपाय।

अपर चरित मोदकमहा श्रवणकरौ कुरुराय ॥
एक दिवस हलधर हरिसाथा ।निशादेखिविकसितखगनाथा॥
गोपीनिकर संग निजलीने । गावत भये राग सुखभीने ॥
तदाकाल सेवक यक्षेशा । शंखचूड़ अस नाम नरेशा ॥
सुरमणि शीश अमितबलवाना । सो आवत भे तिहिअस्थाना ॥
देखेसि यह कौतूहल तेही । हरि वैभव कछुविदितनजेही ॥
सुताएक गोपिका ललामा । द्वितियो रहि गावतहरिरामा ॥
हृदयमग्न उन्मत्त मुरारी । निज दासन सुखदेतबिचारी ॥
सो मनमूढ़ अबुध भुवराई । अहमित निजबलमोहबड़ाई ॥
दो० अखिलनारि गहिलै चला बिलखानी सबबाम ।
आहित्राहि श्रीश्यामजी कोउकह हेबलराम ॥
दीनबन्धु सुनि दीन पुकारा । सत्वरचले सबन्धु भुवारा ॥
सिंहध्वनि करि तरुन उखारी । पहुँचे तिन ढिग राम मुरारी ॥
अभयहोहु भयकर भयनाहीं । प्रणतारतहर अहौं सदाहीं ॥
काल कलेवर निरखि कृपाला । शंखचूड़ भाग्यो ततकाला ॥
प्राणआश खंडित भै तासू । जानसि यक्षभयउमम नासू ॥
मूशलगहु युवतिन तट रहेऊ । प्रभुनकोपिताढिगचलिगयऊ॥
कचकर जीन तथा गहिलीन्हा । पकरिकेश माहि मर्दनकीन्हा ॥
मंगल मूरति शिर हरि तासू । मणिग्राही मणिधारी पासू ॥
दो० दीन्ही रामहिं आनि सो कृपासिन्धु भगवान ।
किमि वरणौं प्रभुकरचरित सुरदुर्लभजगजान ॥
बहुरि आय निजधामप्रभु करि कौतूहलसाज ।
मंगलमन सुनिसीखमम ध्याउचरण ब्रजराज ॥
इतिश्री रद्धि वेधाकिल्विषां नकारादिनभागे श्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांविद्यावरमुक्तिशंखचूड़वध
कथनंनामपंचत्रिंशतितमोऽध्यायः ३५ ॥
दो० विषइनको चिंतन करत होत संग उत्पन्न ।
संग भजातक कामुहै जानत बुद्धि असिन्न ॥

कामहि के संयोगते उपजत क्रोध महान।
क्रोधहि सम्भव मोहहै गह वरणत बुधिवान॥
मोह स्मृतिनाशक प्रबल ताते बिनशै बुद्धि।
बुद्धि नशे यहिजीवकी नाशिजातहै सुद्धि॥
यहिकारण बुध परिहरै विषय चिंतवनसर्व।
कामक्रोधआदिक अखिल छूटिजायखलगर्व॥
जब मनआवै बुद्धिवश तब तजिआनउपाय।
गावै राधानाथ यश रहै मुक्ति को पाय॥

मेदिनिपति सुनुसुरुचिकहानी। कहौं तूल पातक सुतपानी॥
हरिसुरभी कानन नितचारहिं। जबलगिपुनरपिगेहसिधारहिं॥
ब्रजबनिता तबलगि नँदगेहा। जुरि समस्त बैठें हरि नेहा॥
नँदरानिहिप्रभुसुयशसुनावहिं। प्रभुकृतबिपिनस्वगेहबतावहिं॥
बाजत बंशी सुखद सुजानी। मोदत व्योम बलापा मानी॥
बृंदारक सबाम खग भूले। वेद रंध्र ध्वनि सुनि उर फूले॥
कर भूषण बासन धर धाये। मनगतिथाकि विह्वलतनछाये॥
रागसकाय बेणु सुखासी। तजतध्यानश्रुतिसुनतउदासी॥

दो० गावतजन बल्लभ समुद नारि पुरुष अस जोय।
सो भूले अचरज न कछु जड़हु प्रेमवशाहोय॥

प्राचीजा जाता गति फेरी। वियकी धेनु लई तिन घेरी॥
दाता चीर भ्रमण परिहरेऊ। हरिशिरसुखदछांहतिनकरेऊ॥
पवनपरम त्रै निजनिज औसर। बहे इलापति प्रभु तनऊपर॥
जो कौतुककृतसजनी श्यामा। ते जानत निरखत बहिठामा॥
सघनकुंज चलिगये मुरारी। कृत कौतुक पूरुब बर नारी॥
पुनि बंशीवट आइ बिराजे। लखिविनोदसुरतियगणराजे॥
बिहरे पुनि गाइन के पाछे। घेरियमुनजल प्यावहिं आछे॥
संध्या भवन गवन प्रभुकरेऊ। रम्भत सुरभि बेणु ध्वनि भरेऊ॥

दो० यहिप्रकार गोपाल त्रिय नितप्रति गावहिं गाथ।
सुनौ महीपति ज्ञाननिधि पावन यश ब्रजनाथ॥

अह निशि इमि गोपी नगराई। प्रभु प्रताप बरणहिं मुदपाई।
बीचहि मिलहिं श्याम कहँजाई। प्रति बासरनिशि आननपाई।
आनंद कंद कुमुद भव चंदा। सन्मानहिं सबकहं सानन्दा।
गृह गृह जाय रैनिहरि ध्यावहिं। प्रातभूतजस पुनरपिगावहिं॥
यशुदारज मंडित प्रभु आनन। अंचलपोंछि भेटिखलभानन॥
कंठ लगाय अकथ सुख छावैं। उपमा कवित राज नहिंपावैं॥
यह चरित्र हरि भानु प्रकाशू। किल्विषतिमिरहरतदश आशू॥
मेटत कुमति ज्योति तारागन। कृत भ्रमअंध उलूकसनातन॥

दो० जगत भूत बुधि भूल बश सोवत देत जगाइ।
लागत कारज नेहहरि गुण गावत मुदपाइ॥
मंगलते मतिहीन हैं परे बिषयके जाल।
ते भूले तोसों कहा तू भजु मदन गोपाल॥

सो० समरथ आनन कोय राधानाथ बिहाय जग।
देहहि तो कहँसोय जो इच्छा कीरहौ चतुर॥

इति श्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्ण
प्रियायांमंगलदासविरचितायांगोपीबिनोदकथनंना
मषड्त्रिंशतितमोऽध्यायः ३६॥

दो० जिमि प्रसून महँ गंधिवस घ्राणेन्द्रिय चिनतात।
लखिन परतकौनो यतन यह प्रसंग बिख्यात॥
अथवा जिमि मेहँदी दलन बसत अरुणताठीक।
बिनु संघटन न जानिये प्रगटै नीक न फीक॥
तैसेही यह आतमा जानि परतहै नाहिं।
निबसत काया गेह महँ ज्ञानी यदपि कहाहिं॥
गुरु दयाल सांचो मिलै मारग देइ लखाइ।
परखि परै तो सत्य यह सब भ्रमणा बहिजाय॥
जो न बनै यह बात तौ ध्यावै राधा नाथ।
अंत मुक्ति पावै सही बदत बेद बुध गाथ॥

पुनिमुनि कहेउ सुनोमहिपाला। एक दिवस हरिरामगोपाला॥

सायंकाल धेनु सँग लाये । आयत ओर चले सुखपाये ॥
तस्मिन्नकाल असुरखलखानी । वृषभकलेवर धर अभिमानी ॥
सुरभी व्यूह मध्य मिलि आई । कठिन वज्रवत देह बनाई ॥
दिवि लगिकाय भयानक राजा । शृंग प्रलंब तीव्र द्वौ भ्राजा ॥
क्षतज विलोचन पूंछ उठाये । गर्जत महि मर्दत मुद पाये ॥
खनत मेदिनी खुर अकुलाई । सुमनस अम्बर चलेपराई ॥
दिशापाल कम्प भयमानी । सबकोउविकलनपरतबखानी ॥
दो० थरहरात महि शेष शिर स्रवत गर्भ सुरभीन ।
श्राविट घन गर्जत दनुज बरणत बनन प्रवीन ॥
बिचली धेनु नीरनिधि आसा । सिमिटग्वालआये प्रभुपासा ॥
करि प्रणाम कह सुनौ कृपाला । आगेवृषभ रूप रचिकाला ॥
क्षीरद वृंद सकल बिचलाये । हमभयभीत भागि प्रभुआये ॥
प्रभु सर्वज्ञ जानि सब भेवा । कहेउ असुर है वृषभनएवा ॥
होहु अशंक काल है याको । आशुभनतहौं सब बलताको ॥
अस बदि अग्र गये बनवारी । कुधितबचन कहवृषभप्रचारी ॥
कपट शरीर विरचि कत आयो । ममभनापखलसुनिउनपायो ॥
किमि कृत वृथा प्रजल्प अपारा । देत किमर्थ आन दुख सारा ॥
दो० आवत कसनहिं निकट मम ओकपटी मलखानि ।
काल काल श्रीकृष्ण मैं तो सम खल कृत हानि ॥
असकहि ताल बजाइ प्रचारा । करु सँग्रम मम साथ अपारा ॥
प्रभु बाणी सुनि धावा कैसे । मघवा अस्त्र प्रबल गतिजैसे ॥
जस जस हरि तेहिपाछे टारत । तसतस खलगर्जतललकारत ॥
तब प्रभु गहि मर्देउ महिताहीं । पुण्डरीकअहिजिमिश्रमनाहीं ॥
मरवोन असुर उठेउ बलसाजी । तर्पेउ महा प्रलय गतिगाजी ॥
उभय शृंग बिचदाबि मुरारी । ग्वाल अमर लखिभयेदुखारी ॥
खलाराति कौतुक पद तासू । दाबिनिजान्हिशृंगगहिआसू ॥
दोबर कीन्हो दुष्ट मरोरी । करततरजकज सबसननिचोरी ॥
दो० तजितन सुरपुर सो गयो प्रभु पर बरषि प्रसून ।

जैजै ध्वनि भै गगन महँ करत दिनेश प्रहून ॥
बूभि मेष वृक सँग्रम करई। कुशल न बहुरिभवनपगधरई ॥
लेलिह जानि भिरै मंडूका। तजै प्राण उपजे उर हूका ॥
नाम जासु असुरारि कहावत। भूलि दुष्ट पुनिताढिगआवत ॥
गोप मुदित हरि यशदिवखानैं। तुम बिनुकौनुअसुरअमभानैं ॥
वृषभासुर वध कस्यो कृपाला। सुनि वृषभान सुतातेहिकाला ॥
आइ श्याम प्रति विनयसुनाई। कंस अनीति कृतत्रिभुवनराई ॥
वृषभनिपात यदपि खल सोई। मारग वेद लोप जग होई ॥
यहि कारण तीरथ करि आवो। तब शरीर काहुइ पर सावो ॥
दो० श्रीराधाके बचन सुनि बोले बिहँसि मुरारि।
जग तीरथ ब्रज बोलिहौं न्हाउसप्रेमसुखारि ॥
गोवर्द्धन तट जाइ कृपाला। युगल सरोवर बिरचिविशाला ॥
प्रभु इच्छा बिलोकि अघहारी। संतन सकल तीर्थ मुदकारी ॥
कहिकहिनिजनिजनामसुहावा। नव कुंडल जल भेलनलावा ॥
गये निकर तीरथ करि सेवा। पुनि कुंडल न्हाये जगदेवा ॥
तीरथ बाह्य दीन्ह गोदाना। अखिलवेदविधिसुरुचिप्रमाना ॥
ब्रह्मयज्ञ करि पावन भयऊ। धेनु महत्व अधिक भवछयऊ ॥
राधा कृष्ण कुण्ड वै दोई। पाइ नाम भे पावन सोई ॥
अजहूं जे नर कृत स्नाना। मेटत किल्बिष संचित नाना ॥
दो० अपर प्रसंग प्रमोददा सुनु महिपाल सचेत।
एक दिवस मुनि कौतुकी गेनृपकंसनिकेत ॥
करि सत्कार सुआसन दयऊ। तब मुनीश यहचरणतभयऊ ॥
जौनीविधि माया ब्रज आई। दाऊ गर्भ यथा हरि लाई ॥
हरि अवतार भयउ जेहि रीती। गोकुल गवन कहाकरिप्रीती ॥
नारद बचन सुनत जड़राई। बोल्यो बचन जीव अकुलाई ॥
सत्य ऋषीश कहउ यह गाथा। अति कपटीयादवकुलनाथा ॥
प्रथमपुत्रमोहिंहितकरिदीनेसि। प्रीतिप्रतीतिअधिकखलकीनेसि ॥
मम रिपुजानिन दीनेसि मोहीं। ठगवतठगासिपुष्टमति ओहीं ॥

असकहि वसुदेवहि बुलवावा। दृढ़ बन्धन खल तुरत बँधावा ॥
दो० सरुष कृपाण स्वपाणि गहि कह सुनुकपटी कूर।
साधु जानि तोकहँ तज्यों तू छलकारक पूर॥
नन्द भवन सुन शत्रु पठावा। माया सुता यहां लै आवा ॥
अंतःकरण आन मुखआना। आजुनिधनकरिहौं प्रणठाना ॥
सुनुशठयेनकपट सह सोहत। जानिभेद कीजै निजकरहत ॥
मंत्री भूप मित्र हितकारी। सेवक सनसंगी प्रियनारी ॥
जोकर संगहानि बड़ होई। महा कृतघ्नी नरकी सोई ॥
आनन मधुर बदै मन दूजी। तिनते आशकासु जगपूजी ॥
स्वारथरत परद्रोह सयाने। सजन अधमते प्रीति बखाने ॥
यहि प्रकार बहु जल्पिअभागा। पुनिमुनिप्रतिअमपूछनलागा ॥
दो० कृपासिंधुवसुदेव के मनकर लहा नभेव।
निफलगर्भ बलदेव भा कन्या शत्रु अमेव ॥
असकहिपाणिनिधनचितआना। तबनारदमुनिबचनबखाना ॥
जो वसुदेव बधै नरनाहा। अयशप्रचार होइ भवमाहा ॥
यहि कारण बंधन करि राखौ। ममशिक्षानिज उरअभिलाखौ ॥
जेहि विधि रामकृष्णवध होई। करौ उपाय महीपति सोई ॥
ताहि बुझाइऋषय गुणराशी। अमरलोक गमने बुधि नाशी ॥
यदुपति बन्दी गेह पठाई। केशी बोलकंस अकुलाई ॥
तुमममहितु सत्य संग बासी। मोसम बली एकजग त्रासी ॥
जो अरि रामहनै हितु मानी। तुव गुण मानोंमिटैगलानी ॥
दो० पाइ रजायसुभूप कर बंदन करि सुखपाय।
केशी वृंदावन चल्यो सुनुचोणिप चितलाय ॥
पुनि कंसासुर दुखित महाना। निज मंत्री बोले गुणवाना ॥
भौमारिष्ट असुर चाखूरा। शालादिक जे अवर प्रचूरा ॥
सभा जोरि कह सबन बुझाई। बैरी मोर प्रगट भव आई ॥
मैत्र विनोदक चतुर विचारौ। शत्रु शाल सबौं मिलि टारौ ॥
भयवश सचिव मंत्र अस दयऊ। तुव बैभव समस्त जगछयऊ ॥

रामपुरी समरथ नृप नाहीं। विजय करैं प्रभु जो रणमाहीं॥
राम कृष्ण बध कठिनन राजा। बुद्धि देहिं हम पूजैं काजा॥
मथुरा जब आवैं दोउ भ्राता। निधन उपाय मरण नृप ताता॥
दो० सरिता तट द्रुमनारि जो होइ स्वैरिणी तात।
सभयसचिवमहिपालकर नाशत वेगिहिगात॥
जेहि छल बल मथुरा द्वौ भाई। आवैं मत सो देहि बनाई॥
बिरच्यो प्रथम रंगमहि राजा। उत्तम सुफलसाजि सबमाजा॥
जो सुनि नगर ग्राम नरनारी। प्रमुदितसब आवैं बिबुधारी॥
हर मखता पश्चात कराइय। महिषमेष हितहवन मँगाइय॥
यहसुधि पाइ अखिल ब्रजवासी। आइहिं हित उपहार सदासी॥
राम श्याम आवैं तिन साथा। तब कोउमल्लबधै सुनुनाथा॥
अथवा आन बीर धरि मारे। यहि बिधिबध बांधवन बिचारे॥
यह सुनि कंस मोद मनभयऊ। मंत्रसुनत अति सुखउरछयऊ॥
छं० आयो महासुख मन्त्र सुनि आनन्द सो ऐसे कहा।
धनि मंत्रदा हितकारि मोरे बुद्धि सुबरणौं कहा॥
असभाषिमल्लयो आइ दै तम्बोल अतिआदरकियो।
अपराधनिशिचरप्रबल तिनकहँबोलिअसआयसुदियो॥
दो० मम अनुजाजा राम अरि जब आवैं यहि धाम।
बांधि बांधियो तिनहिं तब तुम सबकरिसंग्राम॥
सो० चिन्ता बिनशैं मोरि खग ऋषि जीवर्णन कियो॥
लहौं न दुःख बहोरि निभय अकंटक होइ तव।
तिनहिंबुझाइ बोलिअहिपाला। बध्योमोदमय बयबश काला॥
तव बश कलभमत्तबलरासी। राखौ द्वार राम हरि ग्रासी॥
बरबस जब प्रविशिहिनृपद्वारा। अर्जुन अरितव करिहिप्रहारा॥
जो पलाय तौ जाइ न पावै। मल्लहनैं जो इत चलिआवै॥
जो मम शत्रु पछारे कोई। प्रतिफल भल पावैगो सोई॥
इमि समुझाइ मीत हितकारी। मखलगि लगन बदी असुरारी॥
कार्तिककृष्ण शंभुतिथि सोहर। यज्ञमहेश करी सुमनोहर॥

सायंकाल बोलि अक्रूरा। करि सत्कार भलीविधि पूरा॥
दो॰ पुण्डरीक आसन तिन्हैं करि आसीन भुवार।
करकरगहि बोलतभयो कालविवशअविचार॥
यदुकुल मध्य महागुण रासी। धरमात्मा धीर सुख बासी॥
मानततुमहिं निकर कुललोगा। लहिदर्शन जानतसुखयोगा॥
जस बासव हित बामन स्वामी। बलिछलिराजदयोअभिरामी॥
तेहिप्रकार तुम मम हितकरहू। आन उपायन चितकछुधरहू॥
वृन्दावनहिं प्रतिक्षा देहू। सुयश हुहूँपुर यह प्रभुलेहू॥
देवकि तनय उभय अरि मोरे। आइहिं कहे इहांलगि तोरे॥
नीति भणत उत्तम भवजोई। परहित सहत क्लेश नर सोई॥
तापर तुम ममभित्र अक्षोभी। नहिंकामी क्रोधी नहिंलोभी॥
दो॰ जेहिविधि दोनों बन्धुअरि आवैं लाइय मीत।
निधनसहज यहिठामकरि भोगोंमही अभीत॥
प्रबल चणूर कुबलिया दोऊ। दैमहँ कोऊ हनैंगे सोऊ॥
अथवा मैं निजकर बध करिहौं। पापपुण्य कछु उरनहिंधरिहौं॥
तापाछे निज पितहि पछारौं। कपटमूल प्रतिकूल विचारौं॥
सुतसम नेह न अरिसम मोहीं। लक्षति अच्च सदा ममद्रोही॥
पुनि देवकहि पंथ धरि जारौं। सब रस मेलि दंड दै मारौं॥
नियन करौं बसुदेव बहोरी। निज भगिनी परिहरौंनभोरी॥
हरिभक्तन कर मूल मिटाऊं। निष्कंटक वैभव तब पाऊं॥
जुरा पयोधि हितू सुचि मेरो। भुवन जासु भयमान घनेरो॥
दो॰ नरकासुर बाणादि भट जासु सुहृद छल हीन।
निजभय कम्पत खंड नव पौरुषराशि अधीन॥
सो॰ तिनसोंमिलिकरिनेह मुदिरनाथपुरलगिनिभय।
करिहौं याही देह यामहँ संशय नाहिं कछु॥
जो मोसम राखत सतिनेहा। लाइय शत्रु करिय कृत येहा॥
जाइ नन्दपुर कहियो ताता। भूपतिहर मघ कृत सुखदाता॥
रंग अवनि इभवी यक सोहै। भंजै नाहिं सकल अंग कोहै॥

अपर कुतूहल होत अपारा। बरणत बनत न मुददातारा॥
यह सुनि नंदपनंद सवाला। मेष महिष उपहार बिशाला॥
लाइहि हमहिं देइ सुनुभाई। आवैं संग शत्रु दौ भाई॥
सुलभ उपाय बतायो ताता। करियसुहृदसोअवशिप्रभाता॥
तुम सज्ञान सकल गुण पूरे। उक्ति युक्ति ज्ञाता सुचि रूरे॥
दो० बनै कह्यो सो जाय तुम जेहि भलि होइ हमारि।
नीति कहत दूतत्वकर धरम प्रत्यक्ष पुकारि॥
सो० दूतहोइ गुण राश परकाजी निज हेतगत।
देइसकल अरिनाश बुधि प्रपंच बल आपने॥
सुनि अक्रूर जीव दुख लागा। दशदिशिसूखसुवासजनुभागा॥
अपनेमनहिंगुणतयहिरीती। केहिविधिहरिहिसकिहियहजीती॥
लखन सकत सचान संहारी। द्विजपतिसकतनहरिअरिमारी॥
खंजन पुंडरीक बधनाहीं। मेष अजारिपु हतिन सकाहीं॥
सिंधुथाह किमि पाव पपीला। जानाचहै मसक नभलीला॥
बाल मराल मेरु शिरधरहीं। किमिहरिभक्तिबिनाभवतरहीं॥
असविचारिपुनिमनअनुमाना। जोकहिखलहिंसिखावौं ज्ञाना॥
तौनकाल बशमानिहिं मोरी। औगुण थूलफूल अघ घोरी॥
दो० मीचुहकारत आपमुख कहौं कहा समुझाय।
सभासोहाती भाषिये भणत सकल कविराय॥
जहांनीति पथ लंघन होई। तहांसुनीति कहै सुचिकोई॥
शोभानाहिं मिलै अपमानू। परमचतुर भाषत यहज्ञानू॥
शीसनाइकर जोरि सप्रीता। कंसहि कहा यदुप यहिरीती॥
कृपासिंधु भलमंत्र विचारा। यहि उपाय जाइहि अरिमारा॥
संभव होत असंभव नाहीं। अमिटजलजभवबरण सदाहीं॥
मनुज मनोरथ करत अपारा। होतकर्मवशजो होनिहारा॥
मनचीती होवत नृपाला। यहआगम शोध्यो ढुककाला॥
कोपरिणाम जाव कसहोई। कर्माधीन दुःखसुख दोई॥
दो० मानि रजायसु शीशनृप जाव अवश्य बिहान।

संकर्षण यदुनाथ कहँ लाउब वचन प्रमान॥
असकहि निज आलय गये बुधि सागर अक्रूर।
मंगल भजिले श्याम पदक्यों भटकत मनकूर॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकंसनारदादिसम्वाद
वर्णनोनामसप्तत्रिंशतिमोऽध्यायः ३७॥

दो० पारसको गुणजान किमि कोलभील वनग्राम।
उपलजानि पाये तजत लहतन पारसत्रास॥
तिमि मूरख लहि चतुरनर गुणनिधि कलअपमान।
जानेविनु नहिंदोषकछु जानत विबुध महान॥
सुनि पछितावत अंतपुनि जानिगुणाकर रूप।
याते अधम अबुद्धजग परे विषयके कूप॥
राधावल्लभ सुयश शुचि जानि परिहरत सोइ।
यमपुर में पछितात फिरि कहा कहौं तबहोइ॥
तू मंगल सानन्द यशगाउ श्याम करमीत।
पावै सकल सुकामना छायरहै शुभगीत॥

जिमि केशी व्योमासुर मारा। नारदजिमिअस्तुतिअनुसारा॥
सो चरित्र सुखदानि महाना। चितदै सुनौ समाद सुजाना॥
तुरंग स्वरूप असुर ब्रजआयो। महाभयंकर जगदुखपायो॥
कोपवलित दृगअरुणविशाला। कृत फुंकारमनौ अहिपाला॥
कर्ण पुच्छ ऊरध गति कीन्हे। निजसुरमहिमर्दतअनचीन्हे॥
इला चरण पटकत पविपाता। बोलत चीरद शब्दअवाता॥
ताहि विलोकि गोपगण भागे। आये सकल श्यामके आगे॥
अश्व एक प्रभु रूप भयानक। आइगयोयहिठाम अचानक॥

दो० लक्षतहीं भयउर छयो भयो ज्ञान को नाश।
सुनतश्याम आये तुरत सलतटनुप अनयाश॥

पाटवास कटि बांधि मुरारी। ठोक्यो ताल सगर्ज गजारी॥
कंस सहद दोरदशभताको। वंप ग्राहन आयो मत हाको॥

आननकढा अघात नीचा। ममअविद्वरि आउतजिवीचा॥
देखौं तव पौरुषसल आजू। कबलागि दीप पतंगा काजू॥
मदरज मृत्यु पासगलेतर। परी अधम आयो ममनेरे॥
सुनि दुर्नद कोध उर बाढा। करतमनोरथ निजमनगाढा॥
आजुविलोकौं हरि बलपूरा। स्वहुं कुल अव भंजिगरूरा॥
मित्रकाज करि जाउं अगारा। चहतगपोल अमृतनिधिपारा॥

दो० मुख पसारि धावत भयो करिजड़कोप अपार।
जनु जग भक्षक तन धरयौ गहनचहत संसार॥

सो० लील यैव तेहि घात प्रथम श्यामटारत भये।
प्रभु सुखपूरणगात दैत्य देखि जलानिधि घटत॥

वार द्वितीय असुर पुनिधावा। गरजत घोरश्याम तटआवा॥
तासु बदन निज भुजअसुरारी। कुलिशकठोरकीन्हपुनिडारी॥
पेल्यौ करिवल सहज कृपाला। दिगद्वारा मूंघौ महि पाला॥
त्रिहवलहवै कृत मन अनुमाना। भयोनिधनजाइहिमभ्राना॥
यह कंसभई काल मुख चापा। बल अपारनाश्यो परितापा॥
गति भइमोरि मीन बनसीसी। निजलयमेलजीवबिनसीसी॥
तस मैं आपु कालकर भक्षा। तटनबंधु हितु करें जो रक्षा॥
शोचि अनेक भांति बलखाना। नृप उपायकीन्हे खलनाना॥

दो० कमन आव उपाय कोउ रुक्यौ स्वासरबकेर।
जठर फूटि छूट्यौ रुधिर सरि धारातेहि बेर॥

सो० ग्वाल सखा सब आय यह अचरज देखनभये।
प्रभु आगे चलि जाय गंधाटिय तव शोभिये॥

यहि अनमिषऋषि कौतुकरूपा। कर बीणा आये तहँ भूपा॥
अभि वन्दन सुनीति कविराजे। तिहुसमाज गुण हरिकेसाजे॥
अनुकम्पा कूपार अपारा। तव प्रतापको जानत हारा॥
करण नेति कह पावन भेवा। चरितअकथकोकहिसकदेवा॥
कवि बुध चतुर आन संसारा। निज मतिसरिसकरतसुविचारा॥
परिपूरण कथि सकत न कोई। जापर कृपा जाननर सोई॥

गुण रत्नाकर तुम्हरी दाया। एक परन्तु भेद हौं पाया॥
रचि स्वतंत्र मानसनपु स्वामी। भक्त सुखद उर अंतरयामी॥
दो० इलाभार तारन निधन खल अपयशी विचारि।
सन्तरंज आपुहि भये ब्रज नरतन असुरारि॥
सदादास रंजन गुण सागर। करतसुयशतिहुलोकउजागर॥
कल्प कल्प धरिहु अवतारा। कर सरोज धरभार उतारा॥
अबजस उचित होइ तसकरहू। दासन के कलेश प्रभुहरहू॥
बिहँसितिनहिं आयसुहरिदीना। नतिसति करिसुरभारमलीना॥
गोपालक जे सखा सुजाना। तिनहिंबोलि बदतभगवाना॥
राज सभा करिखेल सचारा। मंत्री मित्र प्रधान पूचारा॥
चमूपाल गोपाल बनाये। विभुतेभवप्रति आपु कहाये॥
न्याय शास्त्रने अधिक नियावा। गोपी नाथ समोद चुकावा॥
दो० चोरमहीचनि खेलिपुनि विरचिश्यामदेतारि।
आन चरित अब भूपसुनु भृगतिकंससुरारि॥
केशी निधन करयो नँदसूना। व्योमासुरहि कहतरुट दूना॥
तु अजीत भव कलित प्रतापा। ममहित अरिहिदेहकिनतापा॥
जसहरिकाज केशरी जाता। तनतूमोहिं अखिलसुखदाता॥
शत्रु घात करु आजु प्रवीना। मोरेकाज लाज धरु हीना॥
जोरि बाहु आनन मुखवानी। सबिनयनृपहिकहत अभिमानी॥
निज बश सरिस करौंहिततोरा। पर्म धर्म सेवक यह मोरा॥
यह शरीर जड़ अंतहुअंता। मीतभूपलागि तज्ज सुधवंता॥
प्रिय जीवन स्वामी हितजीवा। लाजित दैनसकतअबसींवा॥
दो० सेवक बनिता धर्म यह पतिहित तजै शरीर।
चल्योप्रतिज्ञाकरि तुरत अमरदिखलरणधीर॥
वृन्दावन तट रूप गोपाला। हरिमायाबश रचि महिपाला॥
गयउ जहां प्रभु खेलत राजा। पूरुब खेल बालकै भ्राजा॥
करि प्रणाम हरिसों कह बानी। मम मन तुवसँगखेलहुंआनी॥
निकट बोलिकहखलमदमानन। सम्दयथाम्रग लखिपचानन॥

अन्तरगति विचारि तेहिकेरी। कुछ न कानि मानै तू मेरी॥
निधड़क कौतुकरच्यो सुजाना। जो करतव्य कर्मअनुमाना॥
अकर करत करता अपलोका। प्राप्तिकहोतअमित अपशोका॥
हरषिलवा जिमि जूह सचाना। किधौं कुरंगब्यूह अहिभाना॥
दो॰ किधौं कलभ द्विज राजपै बृकराजी जनुमेष।
जातभयो अंतक बिवश करिउर गर्व विशेष॥
कौतुक करहु मेष बृक केरा। कह्योश्यामप्रतिखलतेहिबेरा॥
हँसिकह हरि बृक बनुतू भाई। मेषरूप मम सखा सहाई॥
बिपुल पुलकयक दुहिताभयऊ। कौतुकनिधिबूमरदिशिलयऊ॥
यक यक गहिलै जाय उठाई। कन्दगाद्रि नृप राखहि जाई॥
उपल द्वार दै बहुरो सोई। लै मूंदे रह सखा न कोई॥
अकसर हरिहि पाइ मदछावा। बचनसमर्षित-प्रभुहिसुनावा॥
आजु कंसकर कारज करहूं। यदुकुल हनौ भूप भयहरहूं॥
परिहरि ग्वाल रूप बिधुधारी। सत्य अजा रिपु काय सम्हारी॥
दो॰ झपट्योकोपितश्यामकहँ कण्ठगह्योतबश्याम।
हनि मूकन भूतन धस्यो मष पशुमम तेहिठाम॥
सो॰ अन्तर गति भवरूप सखा गुफा ते मुक्ति किय।
मंगल तिहुँपुर भूप करतचरित अहि जम नियें॥
इतिश्रीमद्विविध किल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्ण
प्रियायां मंगलदास विरचितायां केशीव्योमासुर
वधवर्णनोनामअष्टत्रिंशतमोऽध्यायः ३८॥
दो॰ सुनत मूढ़जन चित्त दै गुणिजनको उपदेश।
चतुर होत संसर्ग बश रहतन दुर्बुधि लेश॥
जिमि कुधात पारस परसि तजत वरण अनयास।
सुंदर काय हिरण्यलहि करत भूप शिरबास॥
द्विजसुजानसँगपढ़त ज्यों हरियशसहितसनेह।
ताम्रमाण भूरुख स्वजन होतसंगबश तेह॥
जेभरमत भवदधिकमनि तेनलहत मतमन्त्र।

तजिके रुक्मिणि रमण पद पावत अंत अपत्य।
तूमन मेरी सीखसुनि परिहरु आनविचार॥
अभय ध्याउ असुरारिपद नशैसकल अघभार।
नरकुमुदिनिशशिभूतिसुन्हू। बिशदचरितहरिकर यहगुनहू॥
पूषण तिथि केशी नभ मारा। प्रात त्रयोदशि कंस जुहारा॥
आज्ञा पाय चला अक्रूरा। वृन्दावनहिं सुमति गुणपूरा॥
रथारूढ़ सानन्द सिधाये। कृतविचारमग अमितसोहाये॥
को जपतप मख तीरथ दाना। आजुफलितभो मम भगवाना॥
जासु प्रसाद तामरस पादा। लखौंअस समुद अविषादा॥
जन्म सुफल ह्वैहै भ्रम हीना। अद्भुत चरितआजुबिधिकीना॥
कंस संग सब दिवस गँवायों। हरिकरनामसुखहि नहिंलायों॥
दो॰ भजनभेदनिधिजाननहिं यह संचितफलआहिं।
ता प्रसाद प्रेरित हृदय नृप पठयो हरि पाहिं॥
इमिसुखमगन बिसरिसुधिगयऊ। आपु जीव उपदेशत भयऊ॥
निज चख हरि सारसगतिवंता। आजु बिलोकौं आरतहंता॥
जीवनफल बिनुतपमख लेहौं। पूरण सुख जड़ इंद्रिन देहौं॥
जोरि पच्च पाणी पद परसों। चरणरेणु धरिहौं शिर करसों॥
मली दलन पद्मिनि पगजाई। धिषणभर्गु ध्यावत भ्रमखोई॥
कालीभयहर जग दुखनाशन। नभगामी-स्वामी शिरबासन॥
रासधाम नृत्ये भ्रमि बरसे। जो पग ग्वालनहितकरिपरसे॥
सबरस दानिन के अनुगामी। त्रिपुरबंदनिय नवतन यामी॥
दो॰ सुरसरिपितुपदविदितजग रजलहि शिल भै नारि।
लोक लोक मापक सुखद हरिहित हृदय विचारि॥
ते सुर दुर्लभ चरण निहारौं। संचितकलुष सहज निरुवारौं॥
होत सगुण सुंदर सुखदाई। मृगशाजिका सुदच्छिण धाई॥
बहुरि जीवभ्रम मो वश मोहा। कंसदूत समुझत चित छोहा॥
पुनिमुनिकहत पोचमतिशोचै। कसनविथुर तू ममभल मोचै॥
अंतर्यामी त्रिदिन विहारी। अरि हित पहिचाननवनवारी॥

मोहिं प्रणामकरत लखि धावैं। निजजननीनिरखकगउलगावैं॥
जलज हस्त धरि हैं शिर मोरे। सुखमूगांक निरखौं निमिखोरे॥
चष चकोर सुख लहैं अपारा। धन्य जन्म ममभा संसारा॥

दो० इमि कल्पत बहु कल्पना वृन्दावनगो भूप।
बनत मोहन राम उत आये मोहन रूप॥

बाहिर ग्राम भेट शुभ भयऊ। लखि अक्रूर यान तजिदयऊ॥
जासन सत्य प्रेम जो कर्इ। सो तेहि लहैं न संशयपर्इ॥
गद्गद कण्ठ भरत्र पद नेहा। धावत विसरिगर्इ सुधि देहा॥
दंड समान चरणतल गिरेऊ। पूरण प्रीति नैनजल भरेऊ॥
बिह्वल आनन आवन बानी। सत्यभई अक्रूर कहानी॥
प्रभुकर कमलघरयो हँसिशीशा। अतिहितयुतउठायअवनीशा॥
निज निकेत लै गये मुरारी। देखिनन्द अति भये सुखारी॥
कंठ लगाय मिले उग्रिसन। करिसत्कार दीन्हशुभआसन॥

दो० उबटन लै सेवक चतुर उबट्यौ सकल शरीर।
चंदनगंधि प्रकासबहु चरच्यो पुनि कुरुवीर॥

षटरस भोजन बहुरि जिमायो। अचवायो शुचिपान खवायो॥
राजे सभा पूछि कुशलाई। कहत परस्पर सकल सुनाई॥
यदुवंशिन महँ तुम गुणसागर। सतिवादी सनेह मतिआकर॥
कंस संग कस रहत गोसाँई। तासु सभा गनि कहो बुझाई॥
सुनो तात का कहिय प्रसंगा। इत अर्णव बड़त खल संगा॥
कंस दोष दुख प्रजहि अपारा। यदुवंशी कर किमपि उबारा॥
पशु रिपुजसगवास निरदाया। कंसप्रजहितव बिपिनिसमाया॥
तुम जानत समस्त व्यवहारा। वृथा बकत तुम सों यहिवारा॥

दो० बिबिध बारता करत नँद हित पाय अक्रूर।
बिहसत कैरे ग्वाल बहु हरि प्रसाद सुखमूर॥
सो० तूं मंगल सुनि सीख आन ओर हेरे न चख।

करुज पाप करीस मेलिकृष्यसम अर्जुनहिं ॥
इतिश्रीमद्दिविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांमकृन्दावनगमनोनामैकोन
चत्वारिंशोऽध्यायः ३६ ॥
दो० पूरक कुंभक करत सुभ रेचक पवन प्रमान ।
प्राणायाम सनेम नित सावत समुदमहान ॥
प्रणवजपत अजपाजुगतत्वविलोकतनित्य ।
योगपन्थसांख्यहुकरत लहतगूढमतसत्य ॥
स्ववश जीवराखतसदा तजत देहचितचाहि ।
मुक्ति लहत सायोज्यते यामहँ संशयनाहिं ॥
जे यह मगपावत नहीं कठिन कर्म अनुमानि ।
तिनहिँउचितपरिहरिश्रमहिंभजैश्यामसुखमानि ॥
विनुश्रम पावै मोक्षपद सत्य बदत यह कान ।
तासु अंगहु कहतयह कीजिय विवुधप्रमान ॥
करि बारता नन्द सुप साधी । सैनहिं यह हरि बोलिनराधी ॥
सादर मधुर चरित सोहावा । पूछतहीं अक्रूर सुनावा ॥
दंपति तात कहौ कस भाई । जिनहिं कंस दुख देत सदाई ॥
कुस्मल खानि भूपमति हीना । जेहियदुकुलहिश्रमितदुखदीना ॥
कोउ कलंक रुज यदुकुल वेरा । स्ववश विधित कीन्हे बहुफेरा ॥
जीव अदृष्टवश तिहुँकाला । नटवशजिमिद्रुमचरकुल्याला ॥
तदपि सत्य अक्रूर प्रवीना । सह वसुदेव दुःख अति पीना ॥
सोमम हित यामहँ भ्रम नाहीं । कंसहि देत प्रथम गहिबाहीं ॥
दो० इमहिं सुश्रहां करि गये कंस जानि दुख दीन ।
चलत कहा तुमसों कछु पिता कहौ सु प्रवीन ॥
संकट विवश सुरति कृत मोरी । अथवा कछु न कहततयथोरी ॥
त्रिपुर ज्ञान गति जानतआपू । मनुपुर उज्वल प्रगट प्रतापू ॥
नृपति अनीति अभय पुरवंदा । उग्रसेन बसुदेव निकंदा ॥
कस्यो चहत धाता गति हारा । प्रारब्धी कृत सब संसार ॥

जादिनते ऋषि गुण पुर गामी। तुव अवतार भेदवद स्वामी ॥
तबसे दिहिसि बन्दि बसुदेवै। कर पद कारागार करेवै ॥
अति ब्याकुलदम्पतिमनमाहीं। बदत कृष्ण हे कृष्ण सदाहीं ॥
अपर चरित जानत पै सुनहू। उचित होयतसप्रभुचितगुनहू ॥
प्रात बाम मख बाम सम्हारा। शर धर धर्योमध्य विकरारा ॥
अरि बल्लभ सुजान अनज्ञाती। देश देश नृप नाना जाती ॥
कौतुक लागि भूप गृह आये। मधुपुर मुक्ति सुतासब छाये ॥
हमहिं इहाँ पठवा तुव हेता। कहा कि लाइय नन्दसमेता ॥
दो० अपर ग्वाल सब आवहीं देहिं आनि उपहार।
बिहँसि बंधुढौ नन्द सन कहासकल व्योहार ॥
पिता तात अक्रूर सुजाना। कहत कंसबोल्यो मख ठाना ॥
गोरस अजामेष पितु लीजै। भेंट नराधि यज्ञ महँ दीजै ॥
गोप निकर लै चलिये ताता। नृप निदेश मेटत अज्ञाता ॥
अखिल प्रकार बुझाय बखाना। समुझिनन्दकहभलिसज्ञाना ॥
बोलि चतुर चर सम्मत भाखा। मत समग्र बद गुप्तन राखा ॥
आयसु समसेवक गण धाये। गृहप्रतिमनहिसहजससुझाये ॥
रमानाथ मख प्रात करैहैं। नाना देश प्रजानृप ऐहैं ॥
हमहिं लेन आये अक्रूरा। चलौ समस्त लखैं मखरूरा ॥
दो० भेंट हेत प्रति भौनते गोरस मेष अजान।
पाय शासना नन्दकी सब लाये गुणवान ॥
जल माखन अज मेष अपारा। महिषादिक आये नँदद्वारा ॥
शकट भार केतिक नँदराई। चले संगलै ग्वाल अथाई ॥
हरिनीलाम्बर सुहृद समाजा। यानारूढ़ भये सुनु राजा ॥
भये नन्द उपनन्द अगारी। अनुगामी सबके शकटारी ॥
युवतिन सुन्योश्याम बलरामा। मथुरहिजातनृपतिमखधामा ॥
बिकलभईजसमणिबिनुव्याला। किधौंतिमिंगिलबिनुकीलाला ॥
अथवा प्राणहीन तन भयऊ। बिरह शोक सबके उरछयऊ ॥
प्राबिट घन जस हरिबश धावैं। निमिषरहिहरिगृहहरिपहँआवैं ॥

दो० भटित भाषित त्रिय राधिका दिग्दश हरितटआय ।
घेखोरथ हरिचंद्र जनु गण चकोर उठि धाय ॥
करहिं विनय जोरे द्वौ पाणी । कलितकलेशवलित दुखवाणी ॥
त्यागत हमहिंकासुहित स्वामी । प्रीति उदधि प्रभुअंतरयामी ॥
सरवस तज्यो लाज कुलकेरी । केवल प्रीति कमल पद तेरी ॥
साथ सुजान सनेह कृपाला । अच्चयसदाजिमिशशिकीलाला ॥
हस्तरेख जस रहत सदाहीं । तमकुलीन हितुगुणमनमाहीं ॥
मूरुख प्रीति नाशतिन लहई । अंजलि नीर नहीं थिररहई ॥
कोटि यतनकोउ करै सुजाना । मूढ़ सनेह कहा परमाना ॥
स्वारथ मीत जौन भव माहीं । जानत कहा नेह धर माहीं ॥
दो० पावसमें हृदरहत नहिं जेहि प्रकार मरुभीति ।
तथा कृपानिधि विदित जग नीच मूढ़की प्रीति ॥
को अगास हमसौंभा नाथा । पृष्ठि देत जेहिअघयदुनाथा ॥
पुनि अक्रूर ओर लखि नारी । कहत समर्षिवचन दुखभारी ॥
को ज्योतिषी बुद्धि गुण हीनो । जेहिअक्रूर नामतोहिं दीनो ॥
हमरी जानि क्रूर बड़ तूहै । तोते अधम आनको भूहै ॥
जासु दरश बिनुप्राण अनाथा । निजसँगलियेजातब्रजनाथा ॥
व्याज मूलभा हम कहँ आई । किमि अक्रूरकहौ यहि माई ॥
धूमकेतु त्रिय परहित भयऊ । कोरथ सूदअलख दुखदयऊ ॥
इमि कटुवचन वदैंतजि वासा । गहचोकृष्णरथादिग्पतिआसा ॥
दो० अवला मथुराअति सुमुखिसुनसखितिनहिं विलोकि ।
बहुरि श्याम किमि आइहैं असकहि रहीं सशोकि ॥
तब न सुरति करि हैं ब्रजकेरी । परी विपति यहआलिघनेरी ॥
बड़भागिनि मथुराकी नारी । निरखहिं नैनन रासविहारी ॥
जपतप भजन भावकोउ चूका । पस्यो प्रसिद्ध उठतजेहि हूका ॥
विछुरत त्राता भाग्य विधाता । त्रियराजी विलपत कुरुताता ॥
प्रभुप्रति सविनयबहुरि बखाना । गोपीनाथ नाम जगजाना ॥
फिरिकेहि कारण तजतगोसांई । लेतसंगकस हमहिं न लाई ॥

बिनु देखे मुख बिधु सुखराशी। कोकजीव जाइहि मुदनाशी ॥
प्रथम प्रीति जोरयो का लागी। अबकाअघहिप्रीतिपरित्यागी॥
दो० यहिबिधि युवतिनिछोहबश अतिअधीरबतराइ।
दुखसागर महँ बूड़हीं हरिमुख दृष्टि लगाइ ॥
यकटकनिरखैंश्यामदिशि जिमिचकोरशशिओर ॥
दृगजलजनुझरनाझरत उतब्रजभायह शोर ॥
नरनारी समस्त अनसाथी। व्याकुलचलेयथा शरिपाथी ॥
यशुदाकरिसनेह निरब्याजा। कंठलाय भेंटत ब्रजराजा ॥
रोदत कहत पुत्र प्रिय प्राना। आयहु वेगि तात अस्थाना ॥
जेतिक दिवस लगैं बदि दीजे। भोजन सुरस संग धरिलीजे ॥
दोहद हां न कस्यो काहूसन। ममसनेह राख्यो अपनेमन ॥
तबहीं जान त्यागि रसराई। जननीआदि सकलसमुदाई ॥
करि प्रणाम मातहि चढ़ियाना। मथुरहि चले राम भगवाना ॥
तेहि अवसर रोदहिं तिय ठाढ़ी। प्रभु वियोग अनुरागहिबाढ़ी ॥
दो० भुज पसारिराधा हितू कहा सबन समुझाय।
दिवसदीपके अंतरहि हौं ऐहौं यहि ठांय ॥
ऐसे रुदत बदत द्वौ ओरा। गयो दूरिरथ नन्दकिशोरा ॥
जानकेतु भा अलख महीशा। गिरींअचेतयुवतियुनिशीशा ॥
हाहा कृष्ण प्राण धन स्वामी। तेरहसुरपति चरण नमामी ॥
गौरी बिनुपय धाम कहौं हौं। किधौं दीप बिनु गेह लहौंहौं ॥
गुणबिनु द्विज मंडली बताऊं। जल बिनु मीनहिं उपमापाऊं ॥
रहितस्मृति अबला धरपरहीं। चेति उठहिं पुनिपुनिथरहरहीं ॥
अवधि आश चीन्हींगृह आई। रहीं सत्य पद प्रीति दृढ़ाई ॥
बिश्वपाल पशुपाल नृपाला। यमभगिनी तटगे तेहिकाला ॥
दो० कीन्हो राम बिरामरथ बटतट सुनु नरराय।
हरि आयसु अक्रूर तब यमुना गयो नहाय ॥
जनकहि नाथ कहा तुम चलहू। पाछे हौं आवत सँगचलहू ॥
न्हाय लेइ पितु तात सुजाना। सुनत नन्दकियअग्रपयाना ॥

वसन उतारि धोइकरपादा। करिआचमन बेद मरयादा॥
डुबकी मारि ठाढ़ ह्वै पूजा। तरपणजप कीन्हों छलदूजा॥
पुनि जलमध्य खोलिहग हेरा। सरथश्याम देखे तेहि बेरा॥
शिर उठाय द्रुम दिशा बिलोका। लखेतहां हरिबिधु जगकोका॥
अधिकाश्चर्यित मन तेहिकेरा। रथपर दूरि श्याम बल हेरा॥
पथ बिचपुनि लक्षत यह कैसी। केहिहरिकहौंकिबुद्धिअनैसी॥

दो० मनशोचत अक्रूरबहु हरि रचि श्रुति भुजरूप।
दयो दरश तेहि कृपा दधि प्रभुगतिभूपअनूप॥
गदापद्म अरु कंबुयुत चक्र सुआयुध चारि।
सुर किन्नर गंधर्वमुनि सकल संत हितकारि॥
दरशायो अक्रूर कहँ अद्भुत चरित कृपाल।
जोबिलोकि भ्रमवश अविक भयेयदुकुलततकाल॥
मंगल करि दाया अधिक दास जानि सुखदाय।
दयोदरश भजुताहि तू दुस्सह बिपति नशाय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णाभिप्रायां
मंगलदासविरचितायांअक्रूरविष्णुरूपदर्शनो
नामचत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

दो० चेष्टितचुम्बक होतजिमि लोह देखि भिनुप्राण।
अरुबिलोकिअत्रिजनदृत राकादधिअप्रमाण॥
कामीजनलखिकामना लेत मुदित मनमानि।
आनवस्तुनिरखतनहीं तजत जानिदुखदानि॥
पूषण लखि कुबलय यथा बात आतपी देह।
सुख पावत तिमि जीवतू करिले श्यामसनेह॥
स्वारथ बिनकरि दोहदै ध्याउ सूनु बसुदेव।
जीवत सुख संपति लहै अंत समय पुरदेव॥
बातनसों मुनिसम बने दंभगलित भवलोग।
तजि पाखंड बिबाद भजु हरियहतोकों योग॥

शुकाचार्य राजहिपुनिकहयऊ। यदुनायकसबरस अभिरहयऊ॥

मेघा चकित विचच्छन ज्ञाना। हरिमायावश भयो सुजाना॥
सर्वविधि बिचारि हिय हारा। ढुवा लच्छ यदुनाथ कुमारा॥
निपट्यकुल हरिपद तेहि ध्याये। मतिसमगन महँ हरिगुणगाये॥
हरि कर रीति विदित यहवेदा। दासहि देखि सकतनसखेदा॥
मध्य स्मृत सुजान उस्तावा। प्रेरित स्यामकुमतिवहिरावा॥
पहिचान्यो गजारि गामीको। परिपूरण तिहुँपुर स्वामीको॥
पानी पाणी बाँधि बखाना। प्रणतिमहित श्रध्यांगसमाना॥
दो० सुत इंदीवर आपु प्रभु निरमानत भव सर्ब।
कलभ सत्रुध्वज बहुरिहैं पालतजीवसर्बब॥
धूर्जटी शरीर बनि नाशत। सत्वगुणवलितश्रापुप्रकाशत॥
सतरजतम कछु कहत न गाये। नेतिकरकहिं पदशिरनाये॥
सेवक बंधु दास इव जानी। विरचितवपुभवनिजबशआनी॥
खल घालक पालक जनसाथा। ध्यावन तवपद सदाअवाधा॥
देव तीनि कन्या देवारी। लोकपाल सुरपाल खगारी॥
द्विज द्विज राज राज श्ररुंका। बिपनीन कादर भट बंका॥
मुनि ज्ञानी ध्यानी बिज्ञानी। दाताकृपणसुमतिमतिमानी॥
गज पंचानन गजगजराजा। जड़चरचरततीनिपुराजा॥
दो० तत्त्वादिक जो लखिपरत सब बिभुति त्रैधाम।
उपजे तुम्हरे श्रंशते जे समग्र नरवाम॥
सो० श्रंत मिलत सुर रूप सुरकरावलि हंसजिमि।
विषतजि श्रमृतरूप मिलत वलाहकतनवरषि॥
अथवा गगन पत्रसुत जैसे। चीन्हत ज्ञाति आपु जगतैसे॥
महिमा नाथ श्रनूप अपारा। कविकोविदकोउलहतनपारा॥
रूप विराट प्रगट पुरतीनी। लसतनविषयकबुद्धिमलीनी॥
शिरनभपवन स्वाससुखभागी। सुधाबीज पद चमासभागी॥
सरिपति उदर नाभि गंभीरा। बीस लक्ष रोमावलि तीरा॥
करण दिशावपराशि अरुभानू। मुदिरनायसुजअजबुधिज्ञानू॥
अहंकार शंकर सुख कारी। बचनोचार मेघ ध्वनि भारी॥

दिवस रैनि खैचलनि निमेखी । अपर बिभूति अंगबशलेखी ॥
दो० जो बिभूति तिहुँ लोक सो बसत आपु तन माहिं ।
लिंगरूप धारे रहत परिपूरण भ्रम नाहिं ॥
को पहिचानै तुमहिं प्रभु अलख अरूप अनूप ।
व्यापक चौदह लोक तुम जल थल एकै रूप ॥
छं० एकै स्वरूप बिराज तिहुं पुर काज दासनके करौं ।
सर बाग पूरण ज्योति माया करतजोईचितधरौं ॥
निजदासजानिकृपाल मोहनशरणअपनेकीजिये ।
शुभभक्तिअनुपायनदयानिधि जानिकिंकरदीजिये ॥
दो० यहि बिधि अस्तुति करत बहु नृप अक्रूर प्रवीन ।
मंगल तू तजि श्याम किमि होत आनतट दीन ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांअक्रूरस्तुतिवर्णनोनामैक
चत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥
दो० धूमकेतु दाहत नहीं अर्जुन सकत न भोरि ।
शस्त्रा बाधित ब्रह्म लव सबरस सकत न बोरि ॥
द्विज चत्री नहिं बैश्ययह शूद्रनअंत्यजआहि ।
भयो न है अरु है नहीं आगेहु होने नाहि ॥
अर्थबसतजिमिवाक्यमहँसमुझतकरतप्रकास ।
सुरसरि सूर सुता बिषे यथा शारदा बास ॥
अविनाशी पूरण कला ब्रह्म अंश यह जीव ।
मायावशभूल्योनिजहि आप आपु सुखसीव ॥
तुमनमंगल सीख सुनि पहिचानै किनआप ।
ध्याउ सदा रुक्मिणि रमण नाशलहै त्रैताप ॥
महाराज नटवर नट माया । करि जलमें निजरूप दिखाया ॥
अमित बिभूति दिखाय समेटी । कौतुक दीध जेहि मायाचेटी ॥
तब अक्रूर तीर सरि आई । कृत प्रणाम अति नेह बढ़ाई ॥
श्री हरि पूछ तान बढ़ि बारा । कियो न्हान बरनिय मतसारा ॥

शीतल चीर धीर कस धारी । कहौ प्रसंग समस्त बिचारी ॥
पितु गय दूरि संग परिवारा । प्रतिशि नीरको ज्ञान पसारा ॥
काआश्चर्य्य बिलोक्यो ताता । हमहिं बदौ गुण पूरणगाता ॥
यह चिंतमन अमित मन मेरे । निरबारहि बरणे सो तोरे ॥

दो० जोरि पाणि यादव कहत तुम सर्वग सर्वज्ञ ।
नीक दरशपयमधिदयो लखतज्ञाननिधिअज्ञ ॥
बरणि सकत नहिंदीखजो तुव चरित्रजनपाल ।
दृढ़ भरोस छायो उरहि मथुरहिचलियकृपाल ॥

अब न विलम्ब करिय सुरपाला । चलिय शीघ्रकारजमहिपाला ॥
सुनत बिहँसि हांस्योप्रभुयाना । सहज सनेह बिबश भगवाना ॥
नन्दादिक सब गोप सुभासा । बाहर नगर कर्यो सुखबासा ॥
निरखत भीम बन्धु हरिकेरा । चिन्तत नंदादिक तेहि बेरा ॥
कृत स्नान लाग्यो बहु काला । आये अबलग नहिं गोपाला ॥
तस्मिन समय सकल सुखमूला । आवत भये लखे गत शूला ॥
सविनयनीतिमिलितमृदुवाणी । कह अक्रूर जोरियुग पाणी ॥
ममनिकेत पावन प्रभु करहू । चरण कृपाकरिगृह लगुधरहू ॥

दो० निज दासन दीजिय दरश होय मूलआनन्द ।
सुनि सनेह सानेवचन बोले श्री नँद नन्द ॥

प्रथम भूपकह सुद्धि करावौ । तापश्चात स्वगेह दिखावौ ॥
विनय समग्रसबन की कहहू । निजप्रणप्रतिफलनृपसन लहहू ॥
तुरत चले यदु सुनिअनुशासन । सत्वर गये कंस नृप आसन ॥
आवतलखि हरिआसनत्यागी । मिल्योयदुहिगतसुखदुखपागी ॥
सादर कर कर गहि सिंहासन । बैठार्यो पूछ्यो इमि तासन ॥
समुद तात आयउअरु गयऊ । समाचार कहुब्रजजस भयऊ ॥
सुनु रसाधि ब्रजमहिमा भारी । किमि बरणौंलघुबुद्धिहमारी ॥
महासाधु नृपनन्द सुजाना । तुनिदेश मान्यो परमाना ॥

दो० राम कृष्ण संयुत निकरभूप गोप सँग भीर ।
भेट सहित आवत भये उतरे सरिता तीर ॥

यह सुनि कंस मुदित मनकैसे। कीटपतंग दीप द्युति जैसे॥
कीन्ह काज तुम अकथ महाना। यहिप्रतिफलनबुद्धिअनुमाना॥
ममद्रोही लाये भल करेऊ। तवकीरति प्रणगुणजग भरेऊ॥
अब गृह जाइ करिय विश्रामा। सुनत गये यदुपतिनिजधामा॥
कंसासुर मन अमित विचारा। अंतक विवश ज्ञान बलहारा॥
इत हरि राम पितासन भाषा। देखिय नगर हृदयअभिलाषा॥
सुनत प्रथम मिष्टान खवाई। पुनि कहजाहु अग्रुकहौभाई॥
आयहु वेगि बिराम न होई। बनै बात कीजिय सुतसोई॥
दो० पाय रजायसु तातकर ग्वाल सखा सँगलाय।
चले नगर देखन प्रभु उर आनन्द बढ़ाय॥
फलककुभा सबनगर बिलोका। बनउद्यान निरखि हरशोका॥
नाना वरण सुमन फल राजी। सोहत वृक्ष सुकृत परकाजी॥
सर जल अमल मलीहर सोहैं। कंजाबलिससून मन मोहैं॥
चंचरीक रस राग भुलाने। गुँजहिंअधिकन परत बखाने॥
सर तट सारस बिबिधबिराजैं। मंजुरूप किलकहिं कलगाजैं॥
सदाचार डोलत गुण रूपा। शीतल गंध मंद युत भूपा॥
उपबन मध्य सुरंग प्रसूना। नाना जाति लसत पट जूना॥
इमि शोभा बिलोकि बन बागा। उपज्योहृदय अधिकअनुरागा॥
दो० अखिल सखा सँग लाय प्रभुचले नगर कहँ भूप।
ताम्रकोट दिशि चारिहु खाई सरि अनरूप॥
रतन जटित सस्फटिक सोहाये। चारिद्वाररचि गुणिन बनाये॥
अष्ट धातु मय लाग कपाटा। चमू चमूप सोह चहुँ बाटा॥
नील पीत धौरे अरुणारे। धवल धाम रचि सुघर सवाँरे॥
निरखत ग्रीव पृष्ठि कहँ धावै। मेघ घटा सम उपमा पावै॥
गृहप्रति स्वर्ण कलशअससोहैं। विद्युत छबिकहँ निंदनजोहैं॥
श्वेत ध्वजा बग पांति बखानी। बरषत मनौं सुगंधि उड़ानी॥
द्वार द्वार युत फल रम्भातर। धरेकलशशुचिलालितसत्ननतर॥
बंदनवार बांधि प्रति धामा। बाजत कलरव बाजन तामा॥

दो० भूप भवन शोभा अकथ लखिद्युति अंग लजात।
गोप सखन श्री मुख प्रभू सकल बुझावत जात॥
सो० नगर कुलाहलभूरि हरिआगम सुनि चारिदिशि।
शीत धूप दुखचूरि धाये नर नारी निकर॥

छन्द भुजंगप्रयात॥

कहैं वामवामानसोंयोंसुनाई। सखीश्यामऔरामलीनेअथाई॥
पुरीमें चहूंओर शोभाविलोकैं। चलौदेखिये चन्दभूनैनकोकैं॥
तजेभोज्यकोऊचलीधाइनारी। कोऊन्हातऔखातहीतेसिधारी॥
मतीप्रेमकोऊ तजी शीशवेनी। गुहीसोगुही वैसही बाटलीनी॥
निराभूषणै भूषणै जो सम्हारैं। उदैचन्द जैसे चकोरैं निहारैं॥
जहांसोतहांसेचलींभावहींसों दशाक्योंबखानौंसुजानैंनहींसों॥
मनौं प्रावटी निम्नगापूरपूरी। चली चन्द वापै महामोदरूरी॥
रईप्रेम श्याभैं तजे कानिभागी। अटापै कोऊद्वार है रैविहारी॥
कोऊ वीथिकासंगहीसंग डोलैं। लखैंरूपशोभा बिकैंतेअमोलैं॥
बनावैं सुपंथै भुजाको उठाये। इतैबाट है जू नहीं भूलिआये॥
कहैं एक सों एक ऐसे बुझाई। धरेपीतवासांसिसोहैं कन्हाई॥
जोनीलाम्बरंशैंधरेचित्तमोहैं। बलीविक्रमी मूशलीआलिसोहैं॥
यही भूपके भानजे भूवखानैं। इन्हेंभूपलोकेश के ईशमानैं॥
महावीर संसार में और कोहै। करे युद्ध जो शुद्ध चित्तैविमोहै॥
त्रिभौंजासुकोहोसुनोकालबीते। लख्योरूपसोआजुहौंनैनहीते॥
महापुण्य पीछे करी सो सहाई। लखोदर्श गोपापपुंजैनशाई॥
दो० इहिप्रकार नर वामसव कहत बुद्धिसमवान।
मग्नहोतसुखआनिरखि जिमिझखवरिजनिजजात॥
जेहि रथ्या श्रीश्यामसरामा। निकसत सुनहुंभूपगुणधामा॥
चंदन अगर अवनि भविनारी। छोड़त धामन ते पिचकारी॥
कुसुमावलि अनेकतियनजहीं। हरिछविलखिअनंगबहुलजहीं॥
इत हरिकहत सखन समुझाई। रहौ संग भूल्यो जानिभाई॥
जो कोउ अम्बोजाउ विश्रामा। यहिप्रकारपुर निरखनश्यामा॥

बाहर नगर रजक गण देख्यो । कंसबसन ताढिगप्रभुलेख्यो ॥
गावत कंस सुयश मदमाते । जड़ता विवशन अंगसमाते ॥
दाऊ वसन लेहुसब याते । पहिराइय गोपनसुखजाते ॥
दो० आपु देह कछुधारिये । शेष लुटावहु आजु ।
वृथा न घूमिय नगरते यह करिलीजै काजु ॥
रजक अधिपतिहिंमों हरिभाषा । पहिरियभूप वस्त्रअभिलाषा ॥
कंसहि मिलि आवैं पुनिलीजै । पहिरावनिआपनिकहिदीजै ॥
जो कछु भूप देइ उपहारा । लवसम लीजियजगव्योहारा ॥
हँस्यो रजक तबसुनिप्रभुवानी । घरी वनाय लेइ सहानी ॥
पलटिवसन लीजिय त्रिनदीन्हैं । शशाभाग हरिलालचकीन्हैं ॥
कानन सुरभी वत्स चरावो । रोमपाट ओढ़ौ सुख पावो ॥
नटवत रूप धारि ह्यां आये । भूपति वस्त्र चहत तनलाये ॥
आये नृपहि मिलन धरिमोहा । भेंटलेन करहै चित छोहा ॥
दो० जीवन आश गत्रांइहो भूप द्वारको जाय ।
गेह जाउ निजप्राणलै मम शिक्षा उरलाय ॥
हँसि कह श्याम सुध हमभागैं । तेरे वचन कठिन उरखागैं ॥
वस्त्र देत कछु हानि न तोरे । कीरति कलितरजंकहितमोरे ॥
क्रोधित भयो रजक सुतुचाहा । कहथोरिसाय वचननरनाहा ॥
निजमुखलखहुप्रथम गोपाला । पाछे पहिरहु वसन नृपाला ॥
जो तुम चहत आपुकुशलाई । मम सन्मुखते जाहु पराई ॥
बचन कठोर तासु सुनिराजा । मारयोताहि स्वकर ब्रजराजा ॥
हितू तासु अनुगामी भागे । जाइ पुकार कीन्हनृप आगे ॥
नाथ श्याम सब वस्त्र लुटाये । हन्योस्वामिहमप्रभुभगिआये ॥
दो० प्रभुसबवसन मँगाइ करि पहिरे आपु बनाय ।
बन्धु मित्र सबसन कह्यो लेहु वस्त्र सुख पाय ॥
पहिरन लगे ग्वाल मुद मानी । वसन भेद पावतनहिं जानी ॥
अंग वस्त्र पद पहिरत सोई । पागकंसन कटि गोपजकोई ॥
सुथनि करमेलन वनवासी । देखत प्रभु विहँसे सुखरासी ॥

चलत अग्र सूजीयक आयो। त्रिविधप्रकारवसनसो ल्यायो॥
कहिसिसनीति बचन करजोरी। इच्छा एक नाथ बड़ि मोरी॥
दास तुम्हार विदित तिहुंकाला। पायो कृतफल आजुदयाला॥
पहिराऊं बागे गुण राशी। लहौंभक्ति सुखदाइखनाशी॥
जानिदास कह किन पहिरावै। पावन सत्य मनोरथ पावै॥

दो० पहिराये सानन्द तेहिं सब कहँ बसनन्नपाल।
भक्ति देइ सँग लेचले ताकहँ मदनगोपाल॥
बहुरि मिल्यो मारग चतुर माली नामसुदाम।
कुसुमावलि पहिराइयों बजी बधाई धाम।
मंगल यहिविधि कृत चरित दास सुखद भगवान।
क्यों न भजे ताके चरण दायक सुख गुणखान॥

इतिश्रीमद्विविधकविखानकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासकिरचितायांश्रीकृष्णचंद्रमथुराप्रवेशवर्णनो
नामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

दो० कपट कलेवर जे पुरुष बसहीं सम संसार।
मधुर बचन अहिसनतन कृत स्वाभाविक व्योहार॥
बली जानि संगति तजे बली जानि संग्राम।
लोभ जानि दानहिं तजे भोगजानि निःकाम॥
क्षेम जानि क्रोधहि तजे प्रीति जानि छल भाव।
दंभ जानि सत गुण तजे अरु विवेक रस ठाव॥
मदत्यागे यह सकलगुणि पदलहि कुलकीकानि।
त्योंलहि पूरण ज्ञान बुधि करै कलुषकी हानि॥
सूल तिहूँपुर ज्ञानको राधा रमण सनेह।
तीनिउ फल जीवतलहै सुरपुर त्यागे देह॥

देखि प्रीति माली कर राजा। दियोभक्तिताकहँ सुखसाजा॥
आगे जाइ लख्यो मन मोहन। कुब्जासखी बीथिका सोहन॥
घिसिश्रीखँड मेलि सुरप्यारी। धरे मध्य ठाढ़ी वह नारी॥
लखि तेहिश्याम पूछतकोहसि। कहांलिये गवनीचंदनघिसि॥

दीनानाथ कंसकी चेरी । संज्ञा मम कुब्जा प्रभु मेरी ॥
कंस काय लेपौं नित चंदन । रुचिरवृत्तिआपनिजगवंदन ॥
मनसा बाचा कर्म समेता । तव गुणगावतसुरुचिसुचेता ॥
सत्य प्रीति महिमा जग छाई । तावश मिल्यो आपु यदुराई ॥
दो० जन्म जगत स्वार्थिक भयो चष सुखलह्यो अपार ।
पाद परसि कर मुदलहैं रच्यो शोचिकरतार ॥
सो० अनुशासन जो होय तौ बिलेप मर्दौं तनहिं ।
जाइ पन्थ श्रम खोय होहु प्रफुल्लित प्रभुमनाहिं ॥
देखि अब्रीड सनेह मुरारी । कह बिलेपु ममतन श्रमहारी ॥
सुनि कुबिजा प्रसन्न भैकैसे । इष्टदेव पाये नर जैसे ॥
अतिबिनोद सहमनक्रम बानी । कर्‍यो बिलेप बिलेपन आनी ॥
मगश्रम हर्‍यो रामहरिकेरा । भये प्रसन्न अमी दृग हेरा ॥
देखिनेह पूरण प्रभु तासू । पद पदचापिचिबुककरआसू ॥
खैंचि कर्‍यो सुंदर तनवाको । रतिशतकोटिलजैंलखिजाको ॥
हरिकर परसत भई सुपूता । संचित पाप नश्यो तननूता ॥
तब करपल्लव जोरि बखाना । आरतहरणसुनियभगवाना ॥
दो० जेहिबिधि बपुकर्‍यो अमल कियोमोर जगदीश ।
तेहिप्रकार चलिगेहमम करियपूत बिसवीश ॥
करिबिश्राम मोहिं सुखदीजिय । पुनिआपनिदासीप्रभुकीजिय ॥
हँसिकरगहि कह श्रीगोपाला । तैंसुखअमित दयोमोहिंबाला ॥
चन्दन चरच्यो ममतन नीको । रूपसुफललखिरतिबपुफीको ॥
दोहद मोर तोर अनुरागा । मिलितभयोमनकोदुखभागा ॥
कंसहि मारि आइ गृह तोरे । बिरमौं भाव नजौं नहिं भोरे ॥
इमिबुझाइ कुबिजहि असुरारी । चले सप्रेम सबंधु अगारी ॥
कुबरी निज निकेत नृपजाई । रचा मलयज चौक पुराई ॥
प्रभु मिलाप उरहद अनुरागा । करत मंगलाचार सरागा ॥
दो० पुर अबला आईं तहां कहैं अचंभितमोइ ।
धनितुवकुबरीभागिनी जाकरहरिहितुहोइ ॥

कोतप अमित करालविशाला। साध्यो सखीभूत हीं काला॥
दुर्लभदरशहमहिं सखि भयऊ। तोकहँ अंगलाय प्रभुलयऊ॥
यहिविधि सखीकहँकुबिजासन। देखत नगर फिरैं गरुड़ासन॥
इमिहिं बिलोकत नगर निकाई। धनुष धरा तहँगे दोउ भाई॥
सिंधुर शत्रुठवनि चलि आये। लखि धाये रिसाइ रख वाये॥
कहत कहां आवत हौ भूली। पन्थ इहां न धरा धनु शूली॥
कामतिभंग भई वश काला। जानत हौं नहिं द्वार नृपाला॥
करयो न कान वाणितनश्यामा। आतुर प्रविशिगये धुनधामा॥
दो० राम तार लम्बा जहां धरयो कार मुकराय।
निरखिकौतुकहिंजगतपति लीन्होंताहिउठाय॥
आकर्ष्यों भंज्यो सुर साईं। बिनु श्रम अहि मरालकीनाईं॥
रक्षक अखिल देखि धनुभंगा। जिमिखगेशलखिविपुलभुजंगा॥
सहजाहिकौतुकनिधिसुखखानी। मरयो सबहि क्रोध उरआनी॥
पुरवासी यह चरित बिलोकी। ठगिसे रहे यथा निशिकोकी॥
धरि धीरजहिं परस्पर कहहीं। अब न असुरजगजीवतरहहीं॥
दुविधा त्यागि भजौ भयभंजन। दामसुखदप्रभुखलमदगंजन॥
कंस महीपति मृत्यु. बोलाई। हमरी जान न नृप कुशलाई॥
येदोउ बन्धु महाबल सागर। कीरतिविशदविदितगुणआगर॥
दो० देवन हने निशान निज कुसुमावलि बरषाय।
कंस शब्द धनुभंग सुनि पूछत दूत बोलाय॥
तेहि अवसर भग्गुल अगण रक्षहुकहत पुकारि।
राम श्याम इत आइप्रभु अधिकमचाई रारि॥
इष्वासन बिभंजि चर मारे। ठाढ़े शर धर मन्दिर द्वारे॥
सुनिसकोपि बहु खड़्ग बोलाई। बांधौ राम श्याम कहँ जाई॥
पौरुष छल बल कीजियसोई। जेहि विधि मृत्युलहैं वै दोई॥
अस्त्रशस्त्र लै खलगण धाये। जिमिहस्तिनगराजीघिरिआये॥
कटुवच वदत निकर खलराजा। प्रभुसमीपगयसहितसमाजा॥
आयुध बिबुध तजे तिनधाई। लीलयैव मेले यदुराई॥

ब्याकुल सखा बिलोकि मुरारी । निमिषमध्य सब हतेसुरारी ॥
जबन कंसचर रह तेहिठामा । तब रामहिंकह श्रीमुखश्यामा ॥
दो० बार भई दाऊ चलिय ह्वै हैं तात उदास ।
असभणिससालगायसँग चले तुरतअनयास ॥
छं० अनयास गये बिश्राम धामहिं मिले नंदहि जाइकै ।
कह देखि आये नगरशोभा तात हम सुख पाइकै ॥
लखि त्रास नृप तबनंद बोले प्रकृति तुम्हरी नहिंगई ।
कीन्हों उपद्रव कंस पुर ब्रज नाहिं यह कैसी भई ॥
दो० यहाँ उपद्रव मति करौ नन्द ग्राम ब्रज नाहि ।
पूत सीख सनिउर गुनौ उचित करौचित चाहि ॥
क्षुधापिताब्यापी भषदीजिय । रुचिरुपदेशगुरुयौसुनिलीजिय ॥
सुनिदियअशन रमनकहिपरई । जोबिलोकिबिधिहरमनहरई ॥
बन्धु सुहृद भोजन हरिकरेऊ । खरभर उतहि नगर यहपरेऊ ॥
भंज्यो शंकर चाप कन्हाई । अब न नराधिपकीकुशलाई ॥
सुनि बारता कंस उर शंका । उठि बैठत पुनि परत प्रयंका ॥
ब्याकुलतनमन बड़ पछितावा । अतिकलेशकाहुइनसुनावा ॥
अंतर दारुकीट जिमि रेखैं । जानत सोइ आननहिं देखैं ॥
तिमि चिन्ता उपजे तनछीजै । बुधिबलपौरुष नाशलखीजै ॥
दो० अति चिन्तावश तल्प निज सोयोजाइ नृपाल ।
निद्रा भयवश आवनहिं देख्यो स्वप्न कराल ॥
रामयाम यामिनि जब गयऊ । तबस्वपनायहनिरखतभयऊ ॥
शिर बिनुतन निजदीखसुरारी । नृत्यत रेतमध्य धर भारी ॥
खर आरूढ़ कलेवर नांगे । प्रेत सहाय संग तेहिलागे ॥
अरुणकुसुमश्रकसोहतग्रीवा । शिखिभरुजितनिरखिअघणेवा ॥
स्वप्न बिलोकि चौंकिदुखपाई । चल्यो सभाकहँ उरभ्रम छाई ॥
नीति निकेत मंत्रिहितु बोली । कहिसिबुझाइबोलिचरटोली ॥
रंगभूमि करि शुद्ध सँवारौ । नन्दादिक ब्रजलोगहँकारौ ॥
यदुबंशी बलदेव समेता । बैठारौ बोलाय करि चेता ॥

दो० नाना देश नराधि जे आये हैं यहि ठाम।
सादर तिनहिं बोलाइकरि बैठारो मखधाम॥
पाछे में आवत हौं भाई। चले सकल नृप पाइ रजाई॥
रंग कुंभिनी सचिव समाजा। भाइ शुद्ध कीन्ही सुतु राजा॥
अगर सुगंधि छोरि पट्टासी। तोरण ध्वजपताक परकासी॥
भाँति भाँति शुभ बजे निशाना। बहु नृतकी करें कल गाना॥
सकल बोलाय राजहितु लोगा। आसन दिये सबहि पदयोगा॥
मेंचावली विशद गजरदकी। उपमालखलगगनपतिपदकी॥
साभिमान आयउ नृप कंसा। करत जासु बहुभूप प्रशंसा॥
निज आसन राख्यो मदछायो। जिमिसुरपतिसुरमंडलिभायो॥
दो० वृंदारक दिशि तीनि शुभ यानारूढ़ सुनाक।
कौतुक देखहिंतेहिसमय इविधाबश रिपुपाक॥
मंगल देखो मोह की यह महिमा संसार।
कंस यथा बैठयो समद तु भजु नन्दकुमार॥
इतिश्रीमद्विविधकविविषग्वकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकंसरङ्गदर्शनोनाम
त्रैचत्वारिंशोऽध्यायः ४३॥
दो० विशदपक्ष भ्रभ्रिज यथा होत समृद्ध मयूष।
सुजनप्रीतितथाविधिवद्धत नितप्रतिकलितअदूष॥
अपर पच्छ छीजितउडुप क्रमहि कलाविहीन।
नीच नेह तैसे सदा अथिर भणत गुण पीन॥
कुटिलभाव परिहरि चतुरमजिले मोहनश्याम।
सत्य प्रीति निजहृदय धरि जोदायकमनकाम॥
जबलगि दुविधा नहिंनशै तबलगिहोयन ज्ञान।
ज्ञान बिना ध्यानौ नहीं नहे मूल अनुमान॥
यहि कारण दुविधा तजे लहै भक्तिको भाव।
सदाहि सुख सों जगत श्रीहरि भजन प्रभाव॥
जबनन्दादिक भूप सुजाना। गयेरंगमहि सजिसजियाना॥

तबप्रभु नीलाम्बर प्रतिभाषा। देखियरंगअवनि अभिलाषा॥
गोपसखा सबगये गोसाँई। शेष संगलै गवनिय भाई॥
सभा समाज विलोकिय चलहू। जो रोकै ताकहँ कर मलहू॥
सुनि हलपाणि मुदित भैठाढ़े। गजगणसुनिहरियशमुखबाढ़े॥
कहा ग्वाल मीतन समुझाई। चलौ रंग महि लखैं निकाई॥
गाय रजाय गोप गण चाले। जे प्रभु हितू कालत्रै बाले॥
हलधर जस बरकरि नटवरतन। लखननगर मारगनरतियगन॥
दो० रंग भवन के द्वार पर गये सबन्धु सस्रान।
जहांकुबलियानागदश सहसप्रबलजगजान॥
बल मद मत्त नाग अभिमानी। जासु भरोस कंस अज्ञानी॥
देखि ताहिबल कहगजपालहि। टारु द्वारते अहिवशकालहि॥
रघुपति सहोदर हमहिं बोलावत। तू किमर्थ द्वारहि अटकावत॥
जानदेहु सुनि सीख हमारी। नतहरि जाइहि गजहिसँहारी॥
शोरिन मोरि कहत हौं टेरे। हरि स्वामी तीनहुँ पुर केरे॥
दुष्टदलन हित नर तन धारा। हरि हैं निजकर मेदिनभारा॥
सुनि बलराम बचन अहिपाला। रोष सहित बोल्यो तेहिकाला॥
गाइ चरावत जन्म सिरान्यो। त्रिभुवन पतिनीकेहमजान्यो॥
दो० तेहि मद हम सनरारि कृतइपुथी लखौ न तात।
दशसहस्र अहि बलवलित यहमंतगविख्यात॥
नचखगियहिसन समरन ठानो। प्रविशबकठिनभवनअनुमानो॥
अमित सुभट मरद्यो निजपानी। आजु परैगो पौरुष जानी॥
समगजते जो तुम बचिजाहू। तौ जानो त्रिलोक पतिआहू॥
कोपकराल बलित बलरामा। कह्यो ताहि सुनुरे अघधामा॥
बड़ी पड़ी समहि मरोरों। तृणनत मूढ तोर शिर तोरों॥
मारन जानु कुमति बशातू है। हरि प्रताप पूरित नभभू है॥
नेधन यूथपति ह्वै है आजू। सुधरिहिअधम तोरको काजू॥
समशिख मानि सकुंभि पलाहू। लैनिजजीवत्यागिमगजाहू॥
दो० सो भक्षुभित सल तुरत द्विप प्रेरयो प्रभुकी ओर।

चल्यो द्विरदबल रामपै हाथी ज्यों लखि मोर ॥
मुष्टिक एक ताहि बलमारा। आग्यो बारणकरि चिक्कारा॥
अति बलबलत्रिलोकिनृपपायक। भयेबिकलत्रपुलखि खलघायक॥
कहत समर मंडिहि को इनसों। सिंधुर प्रबर पलावत जिनसों॥
कोबपुरे हम बलन हमारे। असबिचारिसबनिजहियहारे॥
करीपाल व्याकुल मन शोचै। लेइ उसास नैन जल मोचै॥
जोन आजु मारौं द्वौ बालक। तौ बध मोर करै नरपालक॥
अरु ये महाबीर बलखानी। दुहूँ ओर दुख मृत्यु तुलानी॥
अंकुश मारि गयंद चलावा। बहुरो राम श्याम तटलावा॥
दो० कुंजर धायो रोष युत दाव्यो द्विज द्विजकेतु।
लखिसुरमुनि परिजनसखा भ्रमबशइतउतचेतु॥
करिकर गहि कृत बृत अपारा। सूक्षम रूप तुरत प्रभु धारा॥
रदन मध्य राजत सुखदाई। काँपत सुर नर नारि अथाई॥
पुनि उठिकेसरि सुरहि प्रचारा। सुनत करी निज पौरुषहारा॥
प्रभुहि बिलोकि बिबुधबहुहरषे। हनि निशानकुसुमावलिबरषे॥
ह्वै सचेत पुनि धाव मतंगा। आयो सरुष होनचह भंगा॥
दबके उदर तरे असुरारी। जानाजग भगिगये बिहारी॥
तब पाछे हरि ताहि प्रचारयो। नीलाम्बर आगे ललकारयो॥
दंतिहि खेल खिलावन लागे। पाछे आपु सोह बल आगे॥
दो० कौतुक द्रष्टा तासमय भये अचंभित सर्ब।
शोचत खल मोदितभये हरिजन ऋषयसुपर्ब॥
कतहुँ रामकरिकर गहि लेहीं। झटकिद्विरदकहँअतिदुखदेहीं॥
कहुँ गहि पूँछ श्याम करकरषैं। चलतनहरिबिशाल खिसुरहरषैं॥
जब रिसाय धावत गण स्वामी। दूरिजात बिबिसुत गुणधामी॥
ताहि खिलावत भे बहुबारा। जिमिबच्छनकहँनन्दअगारा॥
जानि समय अंतक अहि भूपा। खींच पूछगहि पाणिअनूपा॥
बसुधा मर्यो सहज कृपाला। मुष्टिक पुनि हरिहन्योकराला॥
प्राण रहित तब भो शुण्डाला। हरषे सुर भये असुर बिहाला॥

रुचिर दंत लखि लीन्ह उखारी। गजमुख चली रुधिरसरिभारी॥
दो० मृतक देखि गजराज गज पालक धायोराय।
ताहूको श्रीकर सरुज निधन कस्यो तेहिठाय॥
बिहसत विविभ्राता नर नाहा। गजरदयकयकगहिकर माहा॥
रूप त्रिभंगी अतिहि मनोहर। भूषन रसुरादिक तनमनहर॥
रंगालय जब गये बिहारी। लख्योसबनतबरुचिअनुहारी॥
मल्लन महा मल्ल अनुमाना। नृप अधिराज महीपनजाना॥
सिखिरसनाबूझहिं निजत्राता। ज्ञाति बांधवन जानसुभ्राता॥
सुरभी पालन सखा बिलोका। नंदादिकशिशुसमगतशोका॥
पुरबासिन सुंदरता खानी। बालक फिरहिंबालसँगजानी॥
कंसादिक खल शमन कराला। काल बिवश देखत महिपाला॥
दो० साधूजन हेरत भये पूरण पुरुष प्रबीन।
जोसुख लखि बसुदेवलह सोअकत्थसुकबीन॥
हरिहि बिलोकि कंसअकुलाई। कह्योसकलखल मल्लबोलाई॥
निजबल युगल बंधु धरिमारौ। अथवा रंग अवनिते टारौ॥
नृप आयसु सुनि मल्ल अनेका। गुरुसुत शिष्य एकते एका॥
चले सकल जुरि हरिदिशिभूपा। बलनिधान पुनि नानारूपा॥
ठोंकत ताल महाबल रासी। चारिओर लीन्हों हरिगाँसी॥
मल्लग्राम निरख्यो प्रभुकैसे। सबल गज रदनायक जैसे॥
करिप्रणाम मन तब चाणूरा। प्रभुप्रति भणत भयो बचरूरा॥
आजुनराधिप कछुक उदासा। तेहिकारण पठवा तुवपासा॥
दो० मल्लयुद्ध हमसों करो लखिनृप होहिं सुखारि।
बिद्यानिधि बनबासकरि डारेबीर सँहारि॥
तजिदुबिधा हमसों रण मांडौ। देखै सकल समाज अखाड़ौ॥
बड़ि दायाकरि हमहिं बोलावा। नृपहितदाय सो करौ बनावा॥
बाल बहिक्रम युद्ध न जानै। हमबलवान चित्त नहिंआनै॥
बीर पराक्रम समर सुज्ञाता। यह कस बात कहत अज्ञाता॥
जो सम्बन्ध बैरु अरु प्रीती। ऊंच नीच करि करै अनीती॥

सो अपलोक लहै न सँदेहा। हमहिं हेरि हेरौ निजदेहा॥
भूप सुनै नहिं कहिय बुझाई। बाल मल्ल सँग कृत रौताई॥
मिलि खेलहु रासहुजगलाजा। होय प्रसन्न बिलोकत राजा॥
दो० करिदाया शिशु जानिकै लीजिय हमहिंबचाइ।
पटकि न दीजिय आपु बल धरम युद्धके भाइ॥
सो० हरिबाणी सुनि भूप भयबश कह चाणूर अस।
तुवगतिअगमअनूप जानिसकततिहुँलोकको॥
दो० शिशु बपु तुम मानस नहीं महाबली हौ दोउ।
धनुषभंग कीन्हींसुखहि गजबल निधिहनसोउ॥
युद्धकिये नहिंहानि कछु हमरे तुमसों तात।
जेसुजान पंडित जगत ते जानत यहबात॥
मंगलदेखु बिचारि हिय हरि प्रताप चहुँओर।
त्यागिभूलभ्रम सत्यभजु प्रभुपद यह मतमोर॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकुवलियावधवर्णनो
नामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥
दो० चातक जैसे प्रेम दृढ़ करत स्वातिके संग।
पान करत नहिं गंगजल यदपि होय तन भंग॥
बधै बधिक शर सों चहौ राग सुनाइ कुरंग।
तदपि न त्यागै नेह बुध नित नूतन हित अंग॥
चितवत जैसे चंद्र दिशि दुखसहि सदृढ़ चकोर।
ऐसी साँची प्रीति जब करै एकही ओर॥
आदि अंतलों एक रस प्रीति निबाहै कोइ।
चतुर साधु पंडित गुणी है कुलीन जग सोइ॥
भवभव पावै बिभव युत मुक्ति पदारथ अंत।
दृढ़ सनेह सों पुरुष तिय ध्यावै रुक्मिणि कंत॥
यहिबिधिअमितवारताकीनसि। नृपचाणूर ईश सम चीन्हसि॥
जीवन कठिन मुक्तिनन त्यागे। को पौरुष हमार तव आगे॥

भिरयो श्यामसन तब चाणूरा । राम साथ मुष्टिक अघभूरा ॥
मल्लयुद्धकृत अति गति सोई । निरखत सभा बैठ नृप जोई ॥
भुजसों भुज शिरसोंशिर मारैं । पद पद कर कर धरि ललकारैं ॥
चौ० चप एक हाटिभयराजा । चकितसमरलखिसकलसमाजा ॥
कहतपरस्पर होत अनीती । बालककसकैं मल्लकस जीती ॥
कुलिश कठोर मल्लबलवाना । कोमल अंग राम भगवाना ॥
दो० जोबरजैं तौ नृप भुकै चुपकत धर्मकि हानि ।
सभात्यागियेउचितयह कहतचित्तअनुमानि ॥
जहां नरवगुण चलै नय कहई । तहां न चतुर एक क्षण रहई ॥
अति पछितात साधु मनमाहीं । दुष्टहृदयलखि लखि हरषाहीं ॥
उत असुरारि राम रण करहीं । अखिल प्रकार मल्लगतिलरहीं ॥
अमित भांति रण खेल खिलाई । दोऊ मल्ल हने दोउ भाई ॥
मल्ल·राजिका तब नर नाहा । धेरयोहरिजिस नग हरिकाहा ॥
लखिखल अनीप्रबलबलखानी । क्षण महँ हत्यो कोपउरआनी ॥
रण थल मल्ल रहित जबभयऊ । बुधजयकहि निशानगवठयऊ ॥
फल पितुराजी साजि अपारा । वृष्टि करत नभते तेहि बारा ॥
दो० जयजय ध्वनिहरिजन करत अतिप्रसन्नमनभूप ।
सभयअसुर तेहिक्षणअपर निरखतकालस्वरूप ॥
कंस कहत निज चरन रिसाई । हनत निशान मोद उरछाई ॥
भावत तुम्हैं श्याम जय काहे । जानत हितू मोर उर दाहे ॥
चञ्चल अन्याई ये दोऊ । बाँधि सभा बहिरावो कोऊ ॥
अरु बसुदेव देवकिहि लाई । घात करौ मम सन्मुख भाई ॥
तापाछे इनहूँ को हनहू । सुकृतपाप कुछ चित्त न गुनहू ॥
करो अकंटक राज सकेली । सुनिप्रभुबचनचले खलपेली ॥
मर्दत असुर समूह नृपाला । आतुर धाइ चले नँद लाला ॥
पहुँचे भूप मंच तट जाई । बैठ कंस अहमित अधिकाई ॥
छं० अहमित अमित करचर्म असितन कवच शिरटोपीदिये ।
चमकतनभ्रम वश अधम वृषिविन्नु कालकर चोटीलिये ॥

लखि काल काल कराल मोहन कंसतन कंपत भयो।
उठिमंचपर ठाढ़ोभयो अंतक विवश गुण गए गयो॥
दो० अति सभीत ह्वै जीवतव चहत पलावन सोइ।
लज्या वशनहिं भजिसक्यो जीवनआशहि खोइ॥
मंडलाग्र घातत भ्रमसानी। लीलावत रोंकत सुरध्यानी॥
अपरअस्त्र नृपकरत प्रहारा। करतश्याम सहजहिं निरवारा॥
तेहिक्षणविष्णुवतीनि दशजाती। देखिसमर शोचत बहुभाँती॥
धर्मसेतु भवछुए ढहावा। जेहिकरि तुवदासन दुखपावा॥
ह्वै भयमान पुकारत भयऊ। यहिलघुवुभन अकथदुखदयऊ॥
अव न खिलाइय यहि असुरारी। हतौ वेगि सुनि विनयहमारी॥
सुनि सुर गिरा वार अनुमानी। समय मृत्युकर ताकरजानी॥
सवहि दुखित लखि कुन्तलपानी। गहिआकर्षिसुनहनृपज्ञानी॥
दो० सिंहासन से पटक महि ऊपरकूदे आपु।
भयो जीवविनु कंस नृप जाकर अधिकप्रतापु॥
छं० भयो जीव विनु नृप कंस लखि नरनारि यहै पुकारहीं।
हरिहन्योकंसहिकुमति वश मन जानिजयतिउचारहीं॥
अस्तुति करत सुरवृन्दसानँद कुसुम अवली वर्षहीं।
नभ दुन्दभी वाजहिं वनी सुनि सेवकादिक हर्षहीं॥
दो० नगर नारिनर मुदितमन कृत विनती चहुँ ओर।
प्रभु आनन विधुभा निरखि प्रफुलित मनोचकोर॥
कंसमरत वसु सोदर ताके। वीर प्रसिद्ध समर रस छाके॥
ते समस्त आयुधकर धारी। क्रोधित घेरत भे वनवारी॥
रोष वलित प्रभुतिनहिं पछारा। अपर निशाचर कटक संहारा॥
कंस हितू सेवक अघ खानी। जवनरहाकोउखलअभिमानी॥
तवनृप तन मृतक द्वौ भाई। यमुना तट लैगये नृपराई॥
तहाँ लीन द्वौ बन्धु विरामा। भाविश्राम घाट तेहि नामा॥
भूप मरण सुनि ताकर नारी। व्याकुलकृतविलापध्वनिभारी॥
कृष्णा निकट कृष्ण तटआई। लिये मृतक राजत यदुराई॥

दो० लखिमुख निजपति नारिगण रोदतमहा कराल ।
गुण गण बरणत दुख मगन उरशिरमर्दिनृपाल ॥
प्रमदा विकल देखि खलहारी । आवतभये जहां गण नारी ॥
मधुर बचन कह सबहि सुनाई । देहु तिलांजुलि नेह बढ़ाई ॥
शोक परिहरो ज्ञान विचारी । जीवत सदा न कोउ तनधारी ॥
यह संसार असत्य असारा । वेद शास्त्र सब करत पुकारा ॥
मात पिता सोदर सुत नाती । प्रमदा हितू सुबंधु सुज्ञाती ॥
परिहरि तनु पुनि धरें शरीरा । सुनो सकल जैसे घन नीरा ॥
जबलगि जासन रह संबंधू । तवलगि मीत सगाशुभ बंधू ॥
प्रभु उपदेश सुनत सब नारी । धीरज धरि तर्प्यो तिलबारी ॥
दो० दाह कंस निज कर कस्यो श्री गोविंद कृपाल ।
मुक्ति दई उत्तम जगत मुनिन कठिन त्रैकाल ॥
दायकसुख जो शत्रुकह ताहि तजत मतिहीन ॥
मंगल त्यागि अपारभ्रम भजु हरिपदजलचीन ।
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकंसासुरबधवर्णनोनाम
पंचचत्त्वारिंशोध्यायः ४५ ॥
दो० काम कल्पना नारि रत कल्पत द्रव्यहि लोभ ।
मनचाहत मद नित्य प्रति हिंसा क्रोध सक्षोभ ॥
मोह सवन में लिप्तता मन अशुद्ध सत्र घात ।
बुद्धि बोधिनी बुध कहत जीव शुद्ध विख्यात ॥
इन सबही को एक करि बुद्धि संग बुधमेलि ।
चीन्हे पूरण आतमा तृष्णा पापिनि भेलि ॥
जल थलनभ बासीन में मंडि रहा जो कोइ ।
ज्ञान योग ज्ञाता वदत लखै हृदय महँ सोइ ॥
कहत कठिन दुर्लभ करब गेहाश्रम दुखरूप ।
राधा बल्लभ ध्यान सों पावै मुक्ति अनूप ॥
नृप बांधव त्रिय करत पुकारा । जात महीपति भई अगारा ॥

दोनों बंधु राम अरु श्यामा। गये बसुदेव देवकी धामा॥
करिप्रणाम बंधन कटवाई। बारबार बिनवत बिधिभाई॥
रूप मनोहर जन दुख हारी। लखिदम्पतितनदशा बिसारी॥
उपज्यो ज्ञान ब्रह्म पहिचाना। पूरण पुरुष सत्य करिजाना॥
मन सोचे ये तिहुँपुर साईं। निज इच्छा प्रगटे भुवमाईं॥
छमा भास्कर कमल उतारि हैं। असुर रहितकरि धर्म प्रचारिहैं॥
इनकर चरित को जानन हारा। सृष्टा जटी लहत नहिं पारा॥
दो० अंतरयामी जान यह उपज्यो पूरण ज्ञान।
निजमायाप्रेरयोहरयो उत्तम ज्ञानसुजान॥
ब्रह्म बिबेक नशत सुत जाना। तबश्रीहरि इमि बचनबखाना॥
ममहित दंड सह्यो तुमभारी। बिपुल काललगि रहे दुखारी॥
अहिरजननि हिय सुरति हमारी। करत रहे प्रभु बश्य सुरारी॥
दोष हमार तात कछु नाहीं। अमितबरण अजनूप सदाहीं॥
जब ते नंद गेह करि आये। हमकहँ पिता मोद उर आये॥
तब ते परबश रहे कृपाला। शोच यहै मनरह सब काला॥
जिन दशमास गर्भ महँ धारा। कंस डढ दुनि सह्यो अपारा॥
तिनहिन सौख्यरंचहमदीन्हा। बय ब्यतीत परघरहीं कीन्हा॥
दो० हमहुँ न देखा बालसुख पितु निकेत दिन एक।
वृथा जन्म भवभव भयो गावत नीति बिबेक॥
सुत सपूत सोई भव अहई। जेहिकरि तातमात सुखलहई॥
जननी जनकपुत्र जो सेवै। दोनोंदिशि शुभ कीरतिलेवै॥
सो उद्धार लहै भ्रम हीना। ऋणी रहै हम भयशय क्षीना॥
सुनतअन्याज नीतिमयबानी। दम्पति महामोद उर आनी॥
कंठलगाय युगल सुत भेटे। अघदुख भूतकाल के मेटे॥
कह सपूत तुम समको आना। हन्यो कंस नाश्यो दुखनाना॥
पितहि प्रबोधिचले बिबिधाता। उग्रसेन पहँ गय हरषाता॥
जोरि उभयकर कह मृदुबानी। नाना करिय राज सुखमानी॥
दो० भ्राजुलग्न खगऋच भल योग करणसुनतात।

राजकरो मन मोद धरि परिहरिशोक सुगात ॥
उग्रसेन सुनि श्याम रजाई। पस्यो नृपाहि सरज दलआई ॥
करि विज्ञप्ति कह्यो करजोरी। दयाधीश सुनु बिनती मोरी ॥
कंस सबन्धु जौन विधि मारा। अपर तमीचर कटक संहारा ॥
भक्त सुजन सुख दयउ अनंता। प्रभुनमअज अनादिश्रीकंता ॥
जस बसुदेव बंदिते मोच्यो। कृपासिंधुजिमिममनरोच्यो ॥
तिमि सिंहासन राजिय नाथा। करहिंराज्यअभिषेक सुमाथा ॥
मधुपुर बैभव पति बिभु होहू। पालहु प्रजा नाथ करिछोहू ॥
वृद्ध बैस यहि लाभहि पाऊं। सकलकलुष निजहाथबहाऊं ॥
दो० बिदित जगत यदुबंश महँ नाधिकार अभिषेक।
सुनहु तात इतिहास भल भाषौं सहित बिबेक ॥
नृपति ययाति पितामहँ जोई। जेठर बहिक्रम भयजब सोई ॥
यदु अरु तुर्व सुद्रुह्य सुजाना। अरुपुरु तासु तनयशरनाना ॥
प्रथम बोलि यदु कहँ समुझाई। लै मम बैस देहु तरुणाई ॥
सुनि पितुबचनशोचमनमाहीं। देहुँ आयु कछु संशय नाहीं ॥
मैं परंतु पाछे पछिताऊं। पाप समृद्धि घोर गति पाऊं ॥
तरुण होय पितु करिहैं भोगा। अपकीरति यह कर्मअयोगा ॥
ताते तरुणाई नहिं देहौं। जनककोप शिरधरिसहिलेहौं ॥
द्वौ करजोरि भययो सुनु ताता। हमसन बनिनपरिहियहबाता ॥
दो० सुनि ययाति अतिकोपकरि यदुकहँ दीन्होशाप।
नृपन होय तुव बंश मम शापन लंघन पाप ॥
अपर सुवन उठि चले पराई। पुरु करजोरि जनक तटजाई ॥
सविनय सानुराग बदबानी। मम बयलेहु जीव मुदमानी ॥
भावत मोहिं न बय दुखदाई। वृद्धापन सुख लहौं सदाई ॥
यह शरीर जड़ बृथा कहावै। धन्य गुनोंजुकाम तुव आवै ॥
बालापन जिमि तात सिराना। तिमितरुणतासु करिहिपयाना ॥
अति प्रसन्न तब भये ययाती। पलख्योबय निजउर हरषाती ॥
आशिष पुरुहि दीन्हमनमानी। महिपति होइहि तवसन्तानी ॥

यहि कारण नृपता अधिकारी। हमनहिं निजमनदीखविचारी॥
दो० सानँद तुम विभुता करो दुविधा तजिसब काल।
आनकाज हम सबकरैं आयसुवत महिपाल॥
आज्ञा भंग करिहि जोतोरी। सहिहि सो घोर ताड़नामोरी॥
प्रजा पालिये नृप सहनीती। परिहरि सकल शोचयुतप्रीती॥
कंस त्रास जे बहु यदुताता। गये बिदेश शोकमय गाता॥
खोज लागिचर अमित पठायो। कहिहि काज महँबारन लायो॥
मधुपुर सबहिं बसाइ सुसेनू। प्रतिपालो गुरु महिसुर धेनू॥
जन मनरंजन आयसु पाई। उग्रसेन बोलेउ शिरनाई॥
तुव अनुशासन मानि अघारी। करब राज हम सदा सुखारी॥
हरिआसनतेहि क्षणहि बिराजा। कीन्हो राजतिलक ब्रजराजा॥
दो० राम श्यामकर चमर ले ढारत भये महीप।
कीरति यदुराई अवनि प्रतिपल जम्बूद्वीप॥
पुरबासी अतिशय मन हरषे। नभ ते सुरन फूल बहु बरषे॥
यहि बिधि उग्रसेन कहँराजा। दइचले जहँ नन्द समाजा॥
बसनाभूषण विपुल मँगाई। प्रभुलित हृदयभूप दोउभाई॥
नन्दराय तट जाइ बिहारी। करि प्रणामकहल गिराउचारी॥
तात तुम्हारि प्रशंसा भारी। किमिकहिसकलबुधिहमारी॥
शेष सहस रसना करि गावैं। तदपिन तवगुण पारहिपावैं॥
हमसों कहत बनत नहिं कैसे। निर्गुण गुणगणअर्थहि जैसे॥
कीन्ह तात निव्योज सनेहा। सुत समान पाल्यो मम देहा॥
दो० आठ यामकरि प्रीति बड़ि प्रतिपाल्यो सुदुलार।
यशुदा मात सनेह युत सब दीन्हे सुख सार॥
अधिक तनय ते नित प्रतिपाला। अखिलप्रकारमेटिदुखजाला॥
जानन आन सुनु मनमाहीं। निजबालकसम पालसदाहीं॥
उदासीन सुनिके मम बानी। पितान हाहु सुनहुसुदमानी॥
जननि जनकतुम दम्पतिअहऊ। जनि वियोगमहँउरदुखलहऊ॥
मथुरा रहौं कछुक दिन ताता। भेटौंअखिलमुदितयदुजाता॥

यदुकुल उत्पति शुभ इतिहासा । सुनोवसोनिज पिताअवासा ॥
पितु बसुदेव देवकी माता । लहैं मोद सुनिसुनिममबाता ॥
हमरे हित कलेश अति पावा । कंस त्रास तव सदनपठावा ॥
दो० नृपति जानि करिबंदि पुनिदीन्हो दण्डमहान ।
अवकछुदिन आचरण मम देखिलहैं कल्यान ॥
अस कहि बसनाभरण नृराई । नन्द अग्र धरि कहयदुराई ॥
उदासीन बोले घनश्यामा । मातासों पितु कह्यो प्रणामा ॥
तुम निष्कपट राखियो प्रीती । नीति बिचारिगुराको रीती ॥
सुनत नन्द ब्याकुल अतिभयऊ । रंक ग्रंथि पारस जनुगयऊ ॥
गज सम स्वासभरें सुखिनासी । नीरज सुख तुसार बनभासी ॥
ग्वाल सखाभ्रम बश तेहिकाला । सुनतश्रवणभितवचन बिहाला ॥
कहत श्यामगति कसभइधाता । कुलिश कठोरवदतकटुबाता ॥
भूमिपरत मधुपुर अब रेहैं । बहुरि न नन्दग्रामकहँ जैहैं ॥
दो० सखा सुदामा जोरिकर कहत सुनो नँदलाल ।
ग्रामवास्य केहिलगिवदत तुमप्रवीनहितूँकाल ॥
बध्यो कंसयह अतिभलकीन्हा । गोदिजादिसाधुनसुखदीन्हा
अवचलि नंद संग गुणराशी । तुवकीरतिजगसकलप्रकाशी
बृन्दावन बैभव पति होहू । प्राण प्रिया परिहरोन छोहू
राज लोभ कीजै न गोसाई । अनुगामी तुम्हारि प्रभुताई
जस आनन्द निकर बहिग्रामा । मथुरा तस न लहो हरिरामा
यह प्रभुत्व नीरद करि छाया । सथिरनतातसुनिनभ्रमगाया
सूरुख भूखत राजहि पाई । बुधन मनहिलावतभ्रमभाई
गज तुरंग पुनि वाहन नाना । अतसंग नहिंचलहिंसुजाना
दो० वृन्दावन तजिहेत बिनु इहां रहो जनिवीर ।

निशिदिन चिंतावसिहि शरीरा। सेवा कर्म निषिद्ध अधीरा॥
जाहि राज दीन्हो तेहि बन्दो। पराधीन किमितात अनन्दो॥
तुव मरयाद अधिक अपमाना। सहौ किमर्थ कहौ दृढ़ज्ञाना॥
ममशिख उत्तम निजउर धरहू। नृपता लोभ दूरिकिन करहू॥
नन्दलहैं दुख होत बियोगा। चलियसंगसबविधियहयोगा॥
दो० ब्रज सरितासर विपिनमग कीजियश्यामविहार।
धेनु नेह नहिं त्यागिये सुनिप्रभुबचन हमार॥
नातरु ब्रज परिहरि हमस्वामी। होउबसब तुम्हार अनुगामी॥
इमिवतरायविविध विधिग्वाला। हरिसँगमें कछुसखानृपाला॥
नन्दहि कहत सखा समुझाई। सबहि संगलै गवनहु राई॥
रामश्याम कहँ साथ लवाई। पाछे हम आवत सुखपाई॥
व्याकुल अपर गोप सुनिबानी। विथक्योज्ञान सुबुद्धिनशानी॥
प्रभु बियोग अहि काहुइकाटा। जीरण पट सनेह जनुफाटा॥
चित्र लिखित जसिपूतरिकोऊ। जानत हरिगति बिधुरितसाऊ॥
क्लेश ग्रसितनन्दहिअनुमानी। कृतप्रबोध हरिमूशल पानी॥
दो० तात वृथाउर दुखसहत समयशोक करनाहिं।
कछुक दिवसरहि मधुपुरी हमआउबतवपाहिं॥
निरखत मरकट ध्वज दुखपूरी। यशुदा मातु होइ भ्रमभूरी॥
चित धीरजधरिहैं सुधिपाई। यहि कारण गमनोसुदलाई॥
हम अनुचरपितु विविधप्रकारा। वैभव विपुल प्रतापतिहारा॥
अबकी बारसंग सुत चलहू। अलखनरितबूझतजानिछलहू॥
भेटि सबहिं आवहु असुरारी। सुनिसनीतियहबिनयहमारी॥
सरित बियोग अपार अगाधा। नेहावर्त्त भ्रमित चहुकाँधा॥
नन्द जीव पन्थी परदेशी। परलोकुघाटबिकल अलवेशी॥
आनन भाभा रहित नरेशा। बुद्धिथकितरह ज्ञाननलेशा॥
दो० प्रभुपद सरितट परतभो सजलित अक्ष अधीर।
कहत कृष्ण हे कृष्ण नृप हरो विषमतन पीर॥
[illegible]

मम विछोह सरि बूड़हिं आजू। अपयश अमित होइ मन काजू॥
मोहन माया घाट लगाऊं। कीरति विशद सुगम भव पाऊं॥
प्रीति हरणि माया प्रभु प्रेरी। कीन्ह कठोर सुमति सबकेरी॥
माया विवश विचारि नृपाला। सन्ताभृत वचबद गोपाला॥
शोक किमर्थ पिता कृत भूरी। मधुपुर ते पुर केतिक दूरी॥
जब चाहो तब मिलो अत्रासा। समुझि कालगति ताजिये आसा॥
ह्वै हैं दुखी तात पुर बासी। तुमहिं देखि सुख लहैं सुपासी॥
दो० मर्म वचन निरमोह सुनि नन्द जोरि कर दोउ।
कह्यो करौ निज रुचि सरिस ब्रजक दूसर कोउ॥
तुव अनुशासन शिर सबहीके। कृपासिंधु धन जीवन जीके॥
राख्यो प्रीति कृपाल हमारी। अकथ चरित तुमहो बनवारी॥
गोपन सहित चले नँदराई। फिरे बन्धु द्वौ तिनहिं पठाई॥
नन्द महर मन शोच अपारा। मनो रंक धन पाइ बिसारा॥
ग्वालसखा इमि दुखित भुवाला। सर्व सुहार ज्वारि जस ख्याला॥
चेत अचेत चलत मग माहीं। लटपट चरण धरत सुधि नाहीं॥
फिरि पाछे देखैं दुख दाहा। अवद दशा को कथन रनाहा॥
पाय सुद्धि धाये पुर लोगा। युवती पुरुष सुयोग अयोगा॥
दो० सुनि यशुदा आतुर चली भेटन मोहन लाल।
जब न दीख घनश्याम कहँ भई अमित बेहाल॥
अहह कंत सुत प्राण हमारे। सत्य कहौ तुम कहां बिसारे॥
पट भूषण लै घर कहँ आयो। जग जीवन तजि अमृत पायो॥
अक्षहीन पारस जिमि पावै। उपल विचारि तुरंत बहावै॥
जब गुण सुनै धुनै शिर सोई। तिमि बालक पति आयउ खोई॥
बसनाभरण पलटि सुत लाये। मगादिय मुदित काँच कर पाये॥
सुत बिनु तन धन करिहौं काहा। बिहरत उर हरि बिनु सुनु नाहा॥
बुद्धि रहित मूरख तुम भयऊ। बिछुरत कस न फाटि हिय गयऊ॥
तूवावरि त्रिय बकत अकाजा। ग्वाल न श्याम बनेय दुराजा॥
दो० कंस विभव करि पाय गए आइ कह्यो सब बात।

निठुर वचन माया रहित जो सुनि दुख ममगात ॥

कह्यो कि हम बसुदेव कुमारा। पोषण कर्म बताव हमारा ॥
यह अचरज की बात सयानी। सुनिविस्मितभोमनक्रमबानी॥
अब न सूनु करि जानु अघारी। ईश्वर जानि प्रीति करुनारी ॥
नारायण हम प्रथमहिं जान्यो। मोहविवशबालक करिमान्यो ॥
पति मुखवचनसुनत भ्रमभयऊ। हरि माया सनेह हरिलयऊ ॥
पुत्र शोच आवत मन कबहूं। यशुदा नृप रोवत चाणलबहूं ॥
काहू काल लाय उर ज्ञाना। जानत आदि पुरुष भगवाना ॥
गावत यश सानन्द सुजाना। मेटत दुख धरि उत्तम ध्याना ॥

दो॰ ब्रज बासी सब नारि नर घूमत हरिरसलीन।
बरणिसकतनहिंबुद्धि मम सुनु महिपालप्रवीन ॥

मथुरा चरित सुनो अब राजा। जुरयो जहां सुखसदनसमाजा॥
बल हरि सखहि पितहि पहुंचाई। गये बसु देव भवन मुदपाई ॥
दम्पति युगल तनय मुखदेखी। निरस्वत नृप परि हरे निमेखी ॥
जो बसुदेव पाव आनंदा। कहिनसकतसोब्रजशिरचंदा॥
उपमाबिनु प्रबोधनाहिं होई। तपफल जिमि तपसीलहकोई ॥
पुनिबसुदेव कहा निजबामैं। नन्दगेह निवसत हरिरामैं ॥
बीतेदिन बहु देखु बिचारी। खायो ग्वालन संग बिहारी ॥
यदुकुल धर्मजान नहिं दोऊ। कीजिय सो जेहिहसैं न कोऊ ॥

दो॰ बोलि गर्ग सम्मत करिय उचित कर्म जगमांहिं।
ज्ञानवान उनते अधिक दूसर सुनु पति नाहिं ॥

तब कुलपूज्य गर्गऋषिबोली। कलित मनोहर इच्छाखोली ॥
नाथ हृदय मम यह सन्देहा। राखिय कृष्ण कहौ कृतकेहा ॥
का उपाय जप तप मख पूजा। कह प्रभुतुव तजिहितूनदूजा ॥
प्रथम निमंत्रहु निकरसज्ञाती। विप्रादिक कृतज्ञ शुभजाती ॥
करि कुल धर्म उचित सुखदाई। मखउपवीत करौ द्वौ भाई ॥
दोष रहित बालक बिबितोरे। सदाशुद्ध जगमय मत मोरे ॥

ऋषिशासनसुनि चरन हँकारी । मृदुल सनयशुभ गिराउचारी ॥
दो० क्षमा विदौता ज्ञाति जन देहु निमंत्र सम्हारि ।
दूतन तुरतहि नगरमहँ न्योत्या गृह प्रतिभारि ॥
बसुधा देववृन्द चलिआये । ज्ञाति बन्धु सब मोदहियाये ॥
जाति कर्म प्रथमहिं अनुसारा । बेदविदितकरि कुलव्यवहारा ॥
बाण द्विगुण सहस क्षीरोदा । दानकीन्हयहिविधियुतमोदा ॥
मङ्गवाये अष्टानन्द शृंगा । ताम्र पृष्ठि पदरजत सुरंगा ॥
रेशम पाट पाटित महिपाला । संकल्पी हरि प्रसवत काला ॥
भयउ मंगलाचार निकेता । श्रुतिवतमखकीन्हा कुरुकेता ॥
राम श्याम कहँ दीन्ह जनेऊ । हरषे ज्ञातिबन्धु द्विज लेऊ ॥
पठइ सबन पुनिसुतन बोलावा । सोपहार गुरु गेह पठावा ॥
दो० ऋषि संदीपन ज्ञान निधि नृप अवंतिका बासि ।
तिनकीशाला विदितभव बिशदठाम पुरकाशि ॥
तिनहिं युगल सोदर सानंदा । जोरिहाथ कीन्हों अभिवंदा ॥
आरत गिरा बद्यौ यदुराई । विद्यादान देहु द्विज राई ॥
देखि मिथुनसुत रूप निधाना । संदीपन अतिशयसुखमाना ॥
सानुराग राख्यो निज गेहा । शिक्षा करहिं सप्रेम सनेहा ॥
अल्पकाल महँ वेद सुमंदा । तर्क शास्त्र पढ़ि गये मुकुंदा ॥
विद्या निधि विद्यामनु सीखी । सुनो नाम जेवदत मनीखी ॥
ब्रह्मज्ञान ज्योतिषं व्याकरना । जूर्यं कोकं धनुधर जलतरना ॥
स्वासा वैद्यं चौरं नटकर्मा । अश्वारूढ़ प्रबोधनं धर्मा ॥
दो० अपर रसायनं सहित नृप सिखत भये यदुराय ।
तंत्र मंत्र पौराणहू काव्य करण मुद पाय ॥
तब करजोरि गुरूसन भाषा । सुनोनाथमम हृद अभिलाषा ॥
नीति कहत विद्यागुरु जोई । सबते अधिक जगतमहँसोई ॥
सकल बस्तु विद्या करिजानिय । मूरुख बिनु विद्यापहिचानिय ॥
कोटि प्रकार देइ धन कोई । विद्या गुरुतें अऋणनहोई ॥
[illegible] । गुरुदक्षिणा भणौं अघहारी ॥

सोदै सदन जाउँ द्विजराई। तव प्रसाद विद्या सब पाई॥
यह सुनिविप्रभवन निजगयऊ। प्रभुगुणप्रियहिसुनावतभयऊ॥
राम कृष्ण बालक जो दोई। आदि पुरुष मानुषनहिं सोई॥
दो० धरा भार टारन करन भक्तन को प्रतिपार।
अकल अनीहस्वतंत्रहरि लीन्हमनुजअवतार॥
विद्यानिधि अपार जग जाना। कोअस जानि सकैपरमाना॥
जन्म अनेक परिश्रम करई। विद्या सिंधु तदपिनहिं तरई॥
येबिवि तात गये तरि पारा। ताते आदि पुरुष अवतारा॥
जो चाहैं सो करैं अक्षोभा। मांगिय सो देहैं विनु लोभा॥
जो कछु सोगुरुदक्षिणा मांगौं। भव अरणवहिपारजेहिलागौं॥
अल्प काल जो सुत मृतुपाई। गयो शमन पुर मांगो जाई॥
प्रमदा सहित श्याम तट आये। दीन वचन द्विजराज सुनाये॥
कृपा उदधि मोरे यक सूना। निरखत सुख पावौंप्रति जूना॥
दो० सा कुटुम्ब यकवारगा पर्व योग निधि न्हान।
न्हातसमयनिधिवीचिका सुत वहिगोभगवान॥
ताकर शोक अमित यदुनाथा। अहनिशिदाहशोकसतपाथा॥
गुरु दक्षिणा देहु सुत सोई। जो पै नाथ कृपा बड़ि होई॥
करिप्रणाम गुरु कहँ द्वौ भाई। पुत्र काज गवने कुरु राई॥
सिंधु श्यामकहँ जानि सरोषा। बिरच्यो नर शरीर नृप चोषा॥
सभय अधीर लिये उपहारा। प्रभुसन्मुख आयउ तेहिबारा॥
साष्टांग करिदण्ड प्रणामा। भेट राखि भाख्यो निजनामा॥
सविनय कहत भाग बड़ मोरा। त्रिपुरनाथ दरशन लहतोरा॥
केहि कारण आयउ सुरपाला। सुनि बोलतभेदीनदयाला॥
दो० एकसमय परिवार युत आये मम गुरु देव।
तिनके सुतकहँतुम हर्यो सुनु आगमकरभेव॥
जो निज कुशलचहौ जनपाला। लाय देउ तौ श्रीगुरु बाला॥
शीशनाइ कह सुनुजनपालक। जानतमैंनहिं तुवगुरुबालक॥
भुवन वेद दिशिगुरु तुमस्वामी। कृपा उदधि तवचरणनमामी॥

रामचन्द्र बपु बाँध्यो मोहीं। अतिशयत्रसितनाथमैंतोहीं॥
निज मरयाद सहित नितरहऊँ। तवशरसुतपद सुमिरतअहऊँ॥
जो पै तू न हरसिको हरसी। देह बताय दुराय न करसी॥
शंखासुर कृत कम्बु स्वरूपा। रहत मध्य मम सुनुसुरभूपा॥
जलचर जीवन सो दुख देता। मनुजादिक न्हाते हरिलेता॥
दो० जो कदाचि लै गयउ वह तौ खोजिय यदुराय।
प्रविशे दधि मधि सुनतहरि नृप आनंदबढ़ाय॥
लखत निपात्यो शंखासुर को। उदर फारि हेरयो सुत गुरुको॥
मिल्योन तब कह बलहिसुनाई। बध्यो निरर्थ याहि हमभाई॥
तात दोष नहिंकर यहि धारो। शंख महत्त्व जगत बिस्तारो॥
बधि गरुड़ासन आयुध कीन्हा। बहुरिमोक्षपदअसुरहिदीन्हा॥
सम्मत करि बिबिबांधव धाये। सानँदसमन निकेतहिआये॥
जहँा धर्म बैभव पति राजैं। जाहिबिलोकिअघीगणलाजैं॥
आवत प्रभुहि देखि यमराजा। उठिधायो नृप सहितसमाजा॥
करि प्रणाम लायो निज धामा। हरि आसन राजे हरिरामा॥
दो० पादोदक लै समनयह कर्यो धन्य मम गेह।
जहँा दरश तुव पाव प्रभु पूरण प्रगट सनेह॥
भयउं कृतारथ कृपा निकेता। भाषिय नाथ निआगमहेता॥
धन्य जानि सो करौं गोसांई। सुनो हेतु आगम यह भाई॥
संदीपन मम गुरू सुजाना। दीन्हो हम कहँ बिद्या दाना॥
गुरु दच्छिणा मांग्यो मृतु सूना। बार न करो देहु यहि ऊना॥
आतुर महिषध्वज सुत दयऊ। करि प्रद्धन पुनिबोलत भयऊ॥
तुव दायप्रथमहिं यह जाना। आइहि सुतआनै भगवाना॥
करि बहु यतन राखसुरपालक। उपजायोन धरा यह बालक॥
लै गुरु तात यान बैठाई। प्रमुदित चलत भये यदुराई॥
दो० क्षणमहँ हरि पुर आइ हरि गुरुपद कर्यो प्रणाम।
दयो पुत्र पूरण पुरुष बजी बधाई धाम॥
पनि करिप्रणाति बसौ गरुपाहीं। कोआयसु कहिये मनमाहीं॥

सुतबिलोकिचढ़िदयो अशीशा । द्विजवर नरवर नायउशीशा ॥
अवन मनोरथ कोउ मन रहेऊ । बालकपाइ अकथ सुखलहेऊ ॥
जस प्रताप प्रगट्यो पुरलोका । अवनिकेतसुतजाहुअशोका ॥
आयसु पाय बंदि गुरु पादा । चले सबंधु कुशल मरयादा ॥
मथुरा निकट पहूंचे जाई । सुनि धाये पुर लोग लोगाई ॥
उग्रसेन अगमन चलि आये । सबसुदेव बहु करत बधाये ॥
भेटि सदन लाये घनश्यामें । बजी बधाई पुर प्रतिधामें ॥
दो० होत मंगलाचार पुर आनँद कहा न जाय ।
मंगल तू भजु श्याम पद दुविधा मोह वहाय ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांशंखासुरबधवर्णनोनाम षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

दो० चषनिरखत जिमि रूप कहँ सूरप्रकाशहि पाइ ।
तिमि पूषण भासित चतुर ब्रह्म प्रकाशप्रभाइ ॥
नवेदशैहैरनखैद्विगुणतिथिहैं चारिसहितचौरासि ।
जलचरनभचरकृमिविपिनपशुनरयोनिप्रकासि ॥
भासित सबमें एकरस परमात्मा सुखमूल ।
द्वैतभाव बिनु कृपा निधि कारण सूक्षम थूल ॥
निरगुण सगुण स्वतंत्रही होत आपुही आय ।
यह दुविधा मन छोड़िके तू भजु यादव राय ॥
पूरण सुख पावै जगत अर्थ धर्म अरु काम ।
मोक्ष अंत प्रयास बिनु बदत सकल गुणग्राम ॥
वृन्दाबन कीजिय सुधिभूपा । करयोदयानिधिअकलअनूपा ॥
अरुजस ऊधो गयउ सिखावन । सुनु प्रसंगनृपसोअतिपावन ॥
एक दिवस हरिबल प्रतिकहेऊ । तात एक चिंता उर दहेऊ ॥
वृन्दाबन वासी दुख कोरी । लहतहोहिंगे करिसुधि मोरी ॥
कारण अवधि बीतिगइ ताता । सखाप्रियाक्लेशित पितुमाता ॥
चतुर विचारि हत गाग भीग । [illegible] ॥

ऊधो ते गुण बलित न कोऊ। योग कर्म जानत हैं दोऊ॥
बोलि कहा वृन्दावन जाइय। सन्नहिसुश्रायताताफिरिआइय॥
दो० एक सखा तुम सत्य मम दूसर ज्ञान निधान।
धीरमान धरमज्ञ पुनि भाषत सकल सुजान॥
यशुदा नन्दहि ज्ञान बतावो। गोपिन पूरण योग सिखावो॥
मातु रोहिणी आदिक लाइय। वारन करिय बेगिश्रतिजाइय॥
ज्ञान योग हरि नीति बताई। दई पत्रिका लिखि भुवराई॥
शुभ सन्देश कहेउ असुरारी। सबसन ऊधो कह्यो विचारी॥
वस्त्राभरण मुकुट निज दीन्हेउ। निजरथबहुरिश्ररूदितकीन्हेउ॥
करि प्रणाम हांक्यो रथ राजा। ऊधो चल्योमुदितनिरव्याजा॥
अति आतुर बाजी रथ धाये। ऊधो नन्दग्राम तट आये॥
गहन गहन फल दानव शाखा। द्विजवाणीलाजतद्विजभाखा॥
दो० अमृत दानि राजी विपुल पीत श्वेत अरु नील।
चारत गोप समोद गुण हरि गावत युत शील॥
प्रभु विहार थल अनुपम शोभा। मन ऊधोकर निरखत लोभा॥
करत प्रणाम सप्रेम अपारा। ग्राम निकट पहुँचे जेहिबारा॥
हरि रथ देखि गोप यक आई। ऊधो नाम पूछि नरराई॥
नन्द समाज तुरत चलि गयऊ। कहिजयजीवबदतअसभयऊ॥
महाराज प्रभु यान अरूढ़ा। संज्ञा ऊधव पुरुष अमूढ़ा॥
मथुरा ते आयउ पुर पासा। पूछत नाथ तुम्हार अवासा॥
सुनत नन्द धाये मुद छाई। जिमिचक्रीगतमणिसुधिपाई॥
श्याम सखा भेट्यो उर लाई। कुशल पूछि लै चले लवाई॥
दो० अति आदर सन्मान करि लाये नंद निकेत।
पग धुवाय आसन दयो राजे पूरण हेत॥
भोजन कस्यो मोद उर छाई। पुनि शय्या राज्यो सुखपाई॥
पंथ परिश्रम वश गये सोई। जागे जबहिं नींद नृप खोई॥
ऊधो तट आये तब नंदा। कीन्ही प्रश्नललित सानंदा॥
कहौ तात वसुदेव प्रसंगा। इष्ट मित्र हमरे कुल भंगा॥

सा कुटुम्ब हैं कुशल क्षेमा। राखत हृदय सत्य मम प्रेमा॥
पुनि अबकुशलकहौ यदुबरकी। सुधि आये बुधिहोतश्रतरकी॥
सुहृद् तात उनके तुम सांचे। हरि अरि याम श्यामरसरांचे॥
कवनौ काल करत सुधि मोरी। अकथ अगोचर गुणगणधोरी॥
दो० अपनी दशा कहा कहँ बिकल सकल नर नारि।
आवन अवधि व्यतीत भइ आयेनहिंअसुरारि॥
हरि जननी माखन नित धरई। अकलभूमि रुदिबदिनितपरई॥
अपर योषिता हरि रस माती। दिवसरैनि व्याकुलसबभांती॥
काहुकि सुरति करत गिरिधारी। अथवा सब कहँदीन बिसारी॥
पूछि कुशल भये मग्न सुनंदा। प्रभु रस सर अथाह कुरुचंदा॥
धरि हरि ध्यानअवाकितभयऊ। पुनचेति इमि भाषन लयऊ॥
बैभव अमित कंसहति पावा। यहि कारणहरिमोहिंबिसरावा॥
यशुदा सुधि बुधि देहँ गवाँई। मन मारे ऊधव तट आई॥
समाचार पूछ्यो हरि हरिके। रोदतिप्रभु कर्तबसुधिकरिके॥
दो० ऊधो हम बिनु श्याम हरि मथुरा दिवस अनेक।
रहे कवन विधिसो कहौ शुभ प्रसंग सबिबेक॥
को संदेश कहा बनवारी। आइहियहिपुर कबहुं बिहारी॥
समय बिचारि पत्र हरि केरा। नंदहि दयउ समुद तेहि बेरा॥
नंद रंक धन पाती पाई। चूमि शीश दृग हृदय लगाई॥
गद गद कंठ कह्यो ऊधो सन। पढ़ो तात यह कह प्रसन्नमन॥
बांचि सुनायो दंडप्रणामा। यथायोग सबके पढ़ि नामा॥
पूरुब तप बर सम हम कीन्हा। मथुरा बास हेत यहि लीन्हा॥
करो नेह मम ब्रह्म बिचारी। तज्यो न सुरति कोउनरनारी॥
वृंदावन निवास बसुयामा। जानो मोर सत्य गुण ग्रामा॥
दो० ऊधो कह्यो सप्रेम पुनि सुनो नन्द ममबैन।
धन्य तीनि पुर जाननि मम दूसरकोउ अहैन॥
जिनके आयत जनमन रंजन। बाल चरितकीन्होखलगंजन॥
अकथ सौख्य दीन्हो असुरारी। महिमाबिदितअखिलसंसारी॥

पद्मिनि जापद्मिनिरिपु जापति। कौनोविधिनहिंबूझतजागति॥
आदि पुरुष पूरण अविनाशी। जननीजनकरहितगुणराशी॥
ताहि पुत्र तुम जानत ताता। नित्यराग नितराखत गाता॥
रागा राग अशुचि शुचि कोई। राधा रमणहिं ध्यावै जोई॥
लहै मुक्ति बिनु युक्ति कराला। प्रभुप्रसाद उत्तम त्रैकाला॥
आगम निगम पुराण बखाना। सत्यभाव यशश्री भगवाना॥
दो० दासन हित विरच्यो बपुष निजबश दीनदयाल।
मित्र शत्रु जाके नहीं सुनुपुर कृत प्रतिपाल॥
ऊंचनीच अबला नर कोई। ध्यानमोक्ष अनुराग लहसोई॥
जिमि भृंगी कीटहि लैजाई। आपु समान करत मुदपाई॥
अरु जिमि चंचरीक तियराई। पुंडरीक बश निशि ह्वै जाई॥
गुंजत अलिरजनी शिखाके। तजतनेहनहिंनिज सुखताके॥
यहि प्रकार प्रभु आठो यामा। दाससंग डोलत गुणग्रामा॥
अन्त चतुरभुज रूपहि देहीं। आपुहि माँझलीन करिलेहीं॥
अबतुमहरिहिसूनु जनिजानो। ममसिख मानिब्रह्म पहिचानो॥
अंतरयामी जन सुखकारी। देहैं दर्शन तुमहिं बिहारी॥
दो० परिहरि चिंताजीवकी ध्यावौ लक्ष्मीकन्त।
सकल मनोरथ जीत तेहि पूरण मुक्तिसुअंत॥
इमि बतरात निशा गतभयऊ। खदधिमथनचारिदिशिछयऊ॥
ऊधो कह्यो नन्द प्रति बानी। ऊषाकाल भयउ सज्ञानी॥
आयसु होइन्हाउं रविजाता। मेटों अघ संचितनिजगाता॥
नन्द बद्योबिलम्ब जनि करहू। संध्याजाप न्हाय अनु सरहू॥
चढ़िरथ ऊधौ तुरत सिधाये। पूषण सुतातीर चलि आये॥
शौच कर्म करि रजशिर धारी। जोरि हाथ बिनती बिस्तारी॥
करिआचमन बहुरि प्रविशेजल। तर्पणकरिध्यायउहरिनिरछल॥
न्हाय पुनः आये बहिराया। कह्यो शुद्ध मन पूरण जाया॥
दो० तेहिअवसर तियप्रतिभवन लगींमथन दधिभूप।
खद्धीरद छायोअपर नूपुर ध्वनि ध्वनि रूप॥

दधिमथिपुनिगृहकारजकीन्हा। भईं सुचित्त महीप प्रवीना॥
जुरि बहुनारि चलीं जल हेता। गावत जाहिं सुनो कुरु केता॥
अंग अंग प्रति हरि रसमाती। प्रभुगुणबदतन हृदय समाती॥
बिसरी प्रभुबियोग सुधितनकी। करत बारता जीवन जनकी॥
कोउ कहहमहिं मिले असुरारी। भयेगुप्त कोउ कहैं निहारी॥
करमम गह्यो प्रेमबश श्यामा। को असहितू अपर त्रैधामा॥
ठाढ़े तूल नीप के मूला। रूप त्रिभंगी लखिगत शूला॥
दुहत धेनु हम लखे मुरारी। देखे गोगण साथ बिहारी॥

दो० चारत सुरभी हम लखे कोउ कहै मुरली हाथ।
हँसखेत जलमें धसो चीर हरैं यदुनाथ॥
चित्त चोर मोहन अबहिं आवैं धाइ मुरारि।
नेक चितै तनमन हरैं सबही बिधि सुखकारि॥
जोपै रोकैं बाट हरि तौन पाइहैं जाय।
श्याम बिरह गोपाल जा कहैं बचन बहुभाय॥
सत्य प्रेम जस गोपिका राखहिं मोहन साथ।
मंगल तू मनबचकरम तिमिहिं ध्याउ यदुनाथ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांऊधौवृन्दाबनआगमनोनाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

दो० पंडित कुगामी चतुर हठी गुणी दुरराग।
बिधवा निरत कुकर्म पुनि हंस गहैं गुणकाग॥
सधन कृपिण कुलवान नर तजे होय कुलरीति।
बन्धु नेह बिनु मीत जो करै कपट युत प्रीति॥
संन्यासी लोभी नृपति कादर मूरख दास।
त्रियाबिरोधिनि नीचशुचि तपसीकृतधनआस॥
जैसे ये सब वृथा जग गावत नीति प्रवीन।
तैसेही बिनु हरिभजन नर शरीर अघ लीन॥
बारबार बपु मनुज कर लहत न कोउ संसार।

तातै तू मन श्यामभजु सुनि शुभमंत्र बिचार ॥
नृप सुत ऊधौ न्हाय सुखारी । बसनाभरण सजे तट बारी ॥
नन्दालय दिशि रथ चढ़िचाले । प्रफुलित तनएणावलिघाले ॥
गोपिन जान दूरिते देखा । भयउ सबन के चित्त परेखा ॥
शीघ्रागमन लालसा उर में । झटितचलीं सुखदुख दौपुरमें ॥
यानाकार बड़े सखि देखिय । होय न क्रूर अक्रूरहि लेखिय ॥
दैव न आव होय खल सोई । हरि लैगयो जगजीवन जोई ॥
मथुरा निवसाइसि मम प्राना । हतवाइसि कंसहि जगजाना ॥
यह बिश्वासघाति फिरिआवा । अबधौं का ब्रजकरिहिबनावा ॥
दो० प्रथम प्राण प्रियलैगयउ छलकरि यहखलआलि ।
अब धौं प्राणहु लेइगो कपटी खोटी चालि ॥
बकत झकत बहुभांतिहीं शिर घट धरे उतारि ।
तबलगिरथ आयोनिकट त्रियगण रहींनिहारि ॥
लखि ऊधवहि परस्पर कहईं । यहतौ अपर सखी कोउअहईं ॥
श्यामबरणचषजलजशुभासन । मोरमुकुट पीताम्बर वासन ॥
विष्णु वेष हरिरथ असवारा । लखतओरयहिकरत बिचारा ॥
एक कहत पाछिल दिनआवा । ऊधौनाम नन्दगृह छावा ॥
प्रभु पत्रिका नन्द कहँ लायो । अरु हरिकर सन्देश सुनायो ॥
गोपिनहूं का लाव सँदेशा । चतुर सुजान किये नर वेशा ॥
सम्मत करि तजि सकुचअपारा । ऊधौ निकटगईं तेहिबारा ॥
शुत पाटीर पटल सुख देखी । कीन्हदंडवत त्रियन विशेखी ॥
दो० प्रभु अनुरागी जानि त्रिय पूछ्यो कुशलक्षेम ।
चहुँदिशि करजोरे खड़ीं उर उमड़ान्यो प्रेम ॥
बामावली सनेह निचारी । ऊधौ रथ परिहर्‍यो सुखारी ॥
नारिन सहित दलीतल राजीं । चहुँदिशिबनितासोहविराजीं ॥
कहौ तात केहिकारण आये । प्रभु अवदात सँदेशा लाये ॥
सुनि प्रसन्नभईं सकलसयानी । बात प्रशंसा सहित बखानी ॥
बड़ि करुणाकरि आयउ ताता । इंद्वानन अनुसारो बाता ॥

निजमाता पितु हेत पठावा। आन सनेहनिकर बिसरावा॥
लज्जादिक त्यागी हरिहेता। अरप्योतननिजप्राण समेता॥
स्वारथ हितू भये बनवारी। बिनुदूषण त्यागी ब्रजनारी॥
दो० समरथ कहँ नहिं कहत कोउ तज्यो प्रीति बिनुदोष।
कल्पतुल्य अहि निशिकटत जीव लहत नहिंतोष॥
प्रीति धर्मजस नीति बखाना। प्रभुसँगतसहमकीन्हसुजाना॥
काहू बिधि न करयो दुर्भावा। निजकृतकर्मसत्य फलपावा॥
सारसजिमि जलहित सरतजई। बहुरिन कबरह्वार कहँभजई॥
यथाफलीद्विजबिनुफलत्यागे। अलियशअरण्यकुसुमलखिभागे॥
मृगपरिहरजिमिप्रफुलितकानन। तैसेहमहिंतज्यो खलभानन॥
हमन निरस रस कबहूं कीन्हा। आपनदोषस्वल्पनहिंचीन्हा॥
पूरण राग भाग बश जाना। मुख्य पुरुषध्यायउ भगवाना॥
पारस पाथर गुण दातारा। कर्म बिबश भाजग करतारा॥
दो० जीवन भरिहम प्रीति को यकरस करब निबाह।
चातृक जिमि घनरसचहत यदपि तृषाउरदाह॥
गोपिन केरि प्रीति लखिभूपा। भाअवाक दारज अनुरूपा॥
प्रेम मगन चाहत पग परसन। अकरकरत कसऊधौ करसन॥
तेहिछण एकभ्रमरतहँ आवा। पियतकुसुमरस फिरतसोहावा॥
ताहि बिलोकिकहत यकनारी। सुनुमधुकर मृदुगिरा हमारी॥
माधव चरण कमल रसचाषा। मधुकर नामतोर बुधभाषा॥
तू कपटी कर मित्र कहावै। मूढ़ प्रपंच तोहिं भलआवै॥
सो बिचारि माधव छलकारी। पठवा दूत तोहिं गुणिभारी॥
कुटिल कलेवररचि ब्रजआवा। जानि अबुधअबला भ्रमछावा॥
दो० चंचरीक यक गंधलहि राधातन शुभगीत।
पद परसतटरत करहि भाषतवचनबिनीत॥
सो० तू कपटी कर मीत पद परसन के योगनहिं।
ऐसे बदत अभीत अतिप्रपंच नहिं चलिसकैं॥
स्याम बरण की नहिं परतीती। रंचक नहिंजानत मगु प्रीती॥

असित रंग पीतांबर धारी। तुव सदृश चीन्हे असुरारी॥
व्याल यथापालै कोउ नीको। पान करावै पय सुरभीको॥
तदपि श्यामता वश गुणजाती। विषविवर्द्धकतहुँकडासिखाती॥
वायस पालत शावक पीका। करिसनेहनिर्व्याजक जीका॥
प्रौढ़ होत तजि काग निकेता। निजकुल बंधुनकहँ सुखदेता॥
कज्जल कलित पात्र पट धरई। नेम सहित रक्षातेहिं करई॥
तदपि कलंकरहित नहिं त्यागै। जानिचतुरकोनिजमतिखागै॥

दो॰ प्रति प्रसूनकर जौन विधि तू लेवतरस धाइ।
प्रीतम साँचा होत नहिं काहू कर सतिभाइ॥
नन्दलाल तैसे मिलत हित सों तजत अदोष।
अथिर प्रीति चंचलन की मननलहत संतोष॥

पुनरपिअपर भ्रमरयकआवा। तेहिलखिललिताबचनसुनावा॥
अवन हमहिंमधुकरपतियारा। प्रगट्योछलअबसकल तुम्हारा॥
मधुपुर लेहु जाइ रसआली। जहँ कुविजागृहहैं बनमाली॥
जन्म जन्म छली असुरारी। जानांतहमसबदशा तुम्हारी॥
कुटिलशिलीमुखसुनुहरिकरणी। कविन भलीविधिसोंतेहिवरणी॥
देशकोश बलि सबसु दयऊ। वपुदातव्य बहुरि प्रण लयऊ॥
तदपि पताल निवास्यौ वाको। रंचक अघ न रहै भव जाको॥
सीतासती सकल गुण खानी। जेहिमनाहिंमघोनिसुडानी॥

दो॰ विपिन वासताकहँ दयो गुर्विणि बिनु अपराध।
ऐसे के तुम मीतहौ विरचे भूषण साध॥

ऊधौ प्रति कर जोरि बखाना। हमव्याकुलविनुदयानिधाना॥
दशदिशि दीखन सूझत कोई। सँगलै चलिये तुवयशहोई॥
तव ऊधौ कह सुनो सँदेशा। जेहिहितमोहिंपठवाहृषिकेशा॥
करिएकाग्रचित्तश्रुति कीजिय। शिक्षावत मारगगहिलीजिय॥
भोग आशतजि योग विचारौ। नवली त्राटक कर्म पसारौ॥
वस्ती धोती नेती साधौ। शुद्ध शरीर करौ मन बाँधौ॥
यमौनियम आसनशुचि करहू। प्राणायाम चित्त निज धरहू॥

प्रत्याहार धारना ध्याना। युत समाधि अष्टांग प्रमाना ॥
दो० इड़ा पिंगला सुखमना आदिक जौन विहार।
तत्त्वादिक निरख्यो बहुरि भेदौ चक्राकार ॥
त्रिकुटी सदन त्रिवेणी धारा। कहां निरंजन ज्योति पसारा ॥
लखौताहिपुनि गगनहिं धावौ। अजपा प्रणवमंत्र चितलावौ ॥
जो यह करतहोइ कठिनाई। तौमम भजन करौ मनलाई ॥
जेहिफल कतहुं न होइ बिछोहू। जानिब्रह्म ध्यावौ तजिमोहू ॥
यहौश्याममोहिंचलत सुनावा। गोपिन समन कोउतिहुँठावा ॥
आठौयाम ध्यान मम करहीं। मोरे उरते दूरिन परहीं ॥
पुनिकह्यआदिपुरुषअविनाशी। अजअद्वैत अकल गुणराशी ॥
करयौ निरंतर तासन प्रीती। सत्य सनेह पन्थ जसनीती ॥
दो० अलख अगोचर जानिश्रुति गावत सुयश सदाहिं।
कहौकान्त निज तिनहिं तुम पूरणहित उरमाहिं ॥
महिशिखिजलअरुपवनअकाशा। जेहिविधितनमहँकरतविलाशा
निरमाया निरगुण अविकारी। सहजहिंतुवमधिवसत मुरारी ॥
जो स्वछंद अद्वैत कहायो। तासुराग निज उरहद लायो ॥
सदाभक्ति वश दीन दयाला। रक्षत सुजनसदा तिहुँकाला ॥
नितप्रति संग बसत हित हानी। दूरिनिवास कीन्ह यहजानी ॥
रास चरित मोहिंश्याम बतावा। कह्यौसमय यक बेणुबजावा ॥
सकल गोपिका विपिन बुलाई। रासरच्यौ बढ़ि प्रीति हढ़ाई ॥
मदन अन्धभई जब सब नारी। भयउंगुप्ततब कुरुचि विचारी ॥
दो० पुनिजब पूरण ज्ञानसों कीन्हा ध्यान हमार।
प्रगट्यौ तिनके मध्यहौं तब तुरंत तेहिवार ॥
ऊधौ वचन सुनत रिसबाढ़ी। कहैं गिरा विरहानल दाढ़ी ॥
योग ज्ञान विज्ञान बतायो। रसं छुड़ाइ आकाश लखायो ॥
क्रीड़ाविविध करयो हम संगा। तिनकर अलखवदत परसंगा ॥
सुखआवालहिते जिन दयऊ। सोअजअविनाशीकसभयऊ ॥
रूपराशि गुणसदन कृपाला। कसअरूप निरगुणनँदलाला ॥

प्राणहुते प्रिय मोहन श्यामा । तुव उपदेश सुने को बामा ॥
अपरकहै सखिकरु मनुहारी । अस सन्देश न कहत बिहारी ॥
कुबिजा छलकरि याहि पठावा । यह विपरीत सँदेशा लावा ॥
दो० सुनैकौन विषसम वचन सुनत नशत बुधिगात ।
दहत हृदय ममकाकरौं पुनि पुनिमन पछितात ॥
करौ योगसव भोग बिसारी । जीवतपतिहिभूतिकिनधारी ॥
धर्म विरोध वचन यह कहई । यहुआचरणकन्त बिनुअहई ॥
जप तप संयम तीरथ सेवा । व्रता चार अरु अर्चन देवा ॥
यह न सोहागिलकर व्यौहारा । युगयुग जीवहिनन्दहुलारा ॥
मलयज शिखिसम दाहत देहीं । गरल लेप भावतकृत केहीं ॥
नेम धर्म हमरे हरिपादा । को अब करै बाद अनुवादा ॥
दोष न ऊधौकर कछु जानिय । कुबिजासीखप्रपंचक मानिय ॥
मीन कमठ सिख नीरन त्यागै । मृगमृग कहे तजतनहिं रागै ॥
दो० ऐसे दून सहस्र नित आवहिं शिक्षा काज ।
को मानै हरिचरण तजि सखिध्याइय निर्व्याज ॥
भाव भक्ति नारिनकी बानी । सुनि ऊधौ करधी बौरानी ॥
अतिगलानिअधशिरकरिलीना । बहुरि न कछु उत्तर नृपदीन्हा ॥
लज्जितजानि कहै यक गोपी । दाऊ कुशल कहौ किनसोपी ॥
उनके मन कछु सुद्धि हमारी । सत्य वदौ ऊधौ हितकारी ॥
बीचहि अपर बाल इमि भाषा । तुम्हरे सखिवृथा मन माषा ॥
बुद्धिरूप बिनु ग्वाल किशोरी । मधुपुर नारि रूप गुणधोरी ॥
करत बिहार तहाँ असुरारी । अब कैसे सुधि करैं तुम्हारी ॥
जबते मथुरा कीन्ह निवासा । तबते हम त्यागी पति आसा ॥
दो० जो प्रथमैं यह जानतीं तजि हैं नेह मुरारि ।
तौ नहिं देतीं जान हम निजकृत भईं दुखारि ॥
अवधि आश त्यागौसव आसा । विधिकृतमिटिहिनहोउउदासा ॥
को पछितात्र समय तजिआली । वृथा जीव दंडहि वाचाली ॥
महि वननग बसु मास भरोसा । शस्वत मेघ करत पुनिपोसा ॥

हरिपद प्रीति नित्य चित करहू। तौ परिणाम दरशिसुलभरहू॥
सुयशविशदहरिकिय कहकोपी। मास्यो कंसासुर प्रणरोपी॥
अब किमर्थ वृन्दावन आवैं। परिहरिविभवविपिनमगुधावैं॥
चिन्ता विनशै होत निरासा। अवधिआशत्यागौअनयासा॥
कोऊ सुनत कहत बिकलाई। हरिआशा तजिये किमिमाई॥
दो० जहँजहँ प्रभुलीला करी तहँतहँ लखिदुख होत।
बिसरत नाहिं यशुदातनय दुखसागरकर पोत॥
वृन्दावन भा उदधि कलेशा। शोहित शुभगनाम हृषिकेशा॥
कस गोपी पति गोपी भूले। नामलाज पेलन नहिंफूले॥
मनमन ऊधव कहत विचारी। तिहुँपुरअधिकधन्यव्रजनारी॥
लोक लाज तजिदृढ़ भी श्यामैं। ध्यावैं सदा सकल गुणग्रामैं॥
करत प्रशंसा मन बहु भाँती। अन्तर राग प्रगट बहिराती॥
उठीं नारि सब विकल बिचारी। ऊधौको विनती अनुसारी॥
सादर कर गहि चलीं लिवाई। सपदि मुदित निकेत लै आई॥
देखि प्रीति ऊधौ हरषाने। भोजन कस्यो मोदमनआने॥
दो० निशावास करिश्याम यश सबहि सुनाव सप्रेम।
युवती सुनि प्रफुलितभईं जिमि नेमी सुनिनेम॥
ऊधव कहँ पूज्यो सह नेहा। भेट दीन्ह पुनिसहित सनेहा॥
सविनय बोलीं बचन विनीता। कहयोतात सन्देश अभीता॥
करगहि विपिनफिरौतबस्वामी। लखिव्याकुजहोवतमतिकामी॥
अब ठकुरत्व पाय बिसरावा। दासीसंग सनेह बढ़ावा॥
सम्पततासु लिख्यो प्रभु योगा। अगुरनारिकिमित्यागैभोगा॥
दृढ़ आवाल प्रीति तुव साथा। को विरागकी मानै गाथा॥
आपु आइ इत योग सिखाइय। किमिसन्देशनयोगहिपाइय॥
हरिसों कहियो तात बुझाई। जातजीवकिन लेहु बचाई॥
दो० असकहि गोपी ध्यानहरि धारि भईं सब मौन।
ऊधव उठि दंडवतकरि भूपति कीन्हों गौन॥
नन्दालय दिशि चले सुखारे। गोपी प्रीति विवशमनमारे॥

जात सराहत नारि निकाई । पहुँच्यो गोवर्द्धन तटजाई ॥
कृष्णस्थल बिहार जहँ जाहीं । करयोबासदिनप्रतितहँताहीं ॥
नन्दभवन पुनि आयउ राई । कह्यो सनीति बचनशिरनाई ॥
तबसत्कार बिलोकि अपारा । केतिकदिनब्रजकीन्हबिहारा ॥
गौनौं मधुपुर होइ रजाई । मगु निरखत ह्वैहैं यदुराई ॥
पुण्यासन यशुदा तब दीन्हा । याहिबिधिपुनिबचनभाषनकीन्हा ॥
यह दीजौ हरि रामहिं जाई । अरुदेवकिहि कह्यो समुझाई ॥
दो० पठइ देहुँ ममसूनु दोउ क्यों राखे बिरमाय ।
अस कहि दिबिलपतकैरायुत किमिदुखबरणोजाय ॥
बहुरिनन्दकह बचन बिचारी । देखत ऊधौ दशा हमारी ॥
तुमहिं बुझाय कहिय का ताता । ज्ञान बिबेक निपुणसज्ञाता ॥
सपदि श्यामब्रजआय बिलोकैं । गोपिन सहितहरैं ममशोकै ॥
बिधुर बिकल रोदे नँद लागे । रोवत अपरहु ग्वालसभागे ॥
तब सब कहँ ऊधौ समुझावा । रथ रोहिणयादिकहि चढ़ावा ॥
भेंटि सबहि ऊधौ गुणखानी । मथुरहिचले मोद मनआनी ॥
सातुर आवत भे प्रभु पासा । महामुदित सुखभा परकासा ॥
लखि हरिराम आशु उठिआये । पूंछिकुशल निज कंठलगाये ॥
दो० नन्दादिक ब्रजजननकी पूंछिकुशल सुखपाय ।
गोपिनकेर बृतान्तपुनि पूंछ सुथल बैठाय ॥
ब्रजमहस्त्र नारिन कर नेहा । बरणि न सकतनाथयहिदेहा ॥
तुब पदकंज ध्यान बसु यामा । तीनिआयु पूरणगुण ग्रामा ॥
भजत यथा निस्प्रेही ज्ञानी । तसगोपिका प्रेमकी खानी ॥
प्रभु उपदेशक योग सुनावा । भजनभाव गोपिनसन पावा ॥
अंतरयामी तुम भगवाना । अधिककहा करिकहौंसयाना ॥
थिर चर दुखित नाथ ब्रजवासी । अवधि कपाट जीवगृहग्रासी ॥
सुनि निज सेवक सदुखकृपाला । शोचतबन्धुसहिततेहिकाला ॥
ऊधौ करि दंडवत महीपा । जातभये वसुदेव समीपा ॥
दो० कह्यो तिनहिं समुझायतब यशुदानंदसँदेश ।

ऊधोनिज मंदिर गये उर ध्यावत हृषिकेश ॥
राम श्याम मिलि रोहिणी रही आपनेधाम ।
मंगल सुनिकेलिखसुभ भजुनिरमोहनश्याम ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांगोपीसंबोधनऊधोआगमन
वर्णनोनामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥
दो० विनाभाग्य सतसंग नहिं भाग्य सुकर्माधीन ।
धर्माधीन सुकर्म है धर्म दया पद लीन ॥
शांतिविवश दाया सदा तोषाधीन सुशांति ।
ज्ञानाधीन सुशांति पुनि सो दुलके बहिर्गति ॥
नर शरीर दुलंभ जगत ता महँ उत्तम वर्ण ।
तामहँ विद्या निपुणई अव अमोल दुल हर्ण ॥
ताहू में चतुरत्व बुध ज्ञान चतुरई मोह ।
कठिन होव ज्ञानी भुवन यह वरणत कविगोह ॥
ज्ञान पाय संन्यास मत ध्यावे आतम आप ।
अथवा राधारमण पद ध्याय मिटावै पाप ॥
मुनि कह सुनु नर कुवलयशूरा । जो प्रसंग सुनि विनशैंक्रूरा ॥
हरि विचारि कुब्जिका अनुरागा । निजप्रण पालन पूरण भागा ॥
ऊधो संग लाय यदुराई । कुब्जिका सदन गये सुखपाई ॥
कुवरी हरि आगम अनुमानी । पाटाम्बर डासे मगु आनी ॥
कह्यो दरश सत्वर चलि आगे । बढ्यो सुकृत अघपुरुष भागे ॥
नवलासन नवलांग सोहाये । पंथासन ऊधो बैठाये ॥
धवलधाम अंतर प्रभु गयऊ । अद्भुत कौतुक देखत भयऊ ॥
रच्यो विचित्रित उज्ज्वलशाला । तहँप्रसूनमय तल्प विशाला ॥
दो० तापर राजे जाय हरि सानँद सागर शील ।
कुवरी तन उबट्यो इते मर्द्यो गन्धि अदील ॥
नख शिख रचि षोड़श शृंगारा । चलीरंग्यामतट असतेहिबारा ॥
यथा अनंग बाम पति पासा । प्रथम भेट उर लाज विलासा ॥

सुग्धा मष्ट यकान्त बिराजी । पटअंतर कटाक्ष गति साजी ॥
वचन प्रमाण श्याम करपरश्यौ । कंठ लगाय इंदुलयदरश्यौ ॥
तासु मनोरथ सम प्रभु कीन्हा । पूरण सुख कुब्री कहँदीन्हा ॥
उठि ऊधौ पहँ आवत भयऊ । अधन्वष किये लाजउरछयऊ ॥
ताहि प्रतोषि श्याम गृह आये । कुब्जिा बहुबिधि करतबधाये ॥
नीलाम्बर प्रति यक दिन भाषा । तात सत्यसुकुभन अभिलाषा ॥
दो० यह निबंध अक्रूर सन कस्यौ प्रथमही तात ।
तुव आलय हम आइहैं पूरण कीजिय बात ॥
नर शरीर धरि बचन प्रमाना । करहिं न सो जीवत सबमाना ॥
प्रथम भेटि पुनि कहिय बुझाई । जाहिं हस्तिनापुर यदुराई ॥
समाचार पाण्डव कर लावैं । जोसुनि निबिड़कलेशनशावैं ॥
युगल बंधु हरि ठवनि सोहाये । चलि अक्रूर निकेतहि आये ॥
दूरिते तासु दृष्टि हरि परेऊ । धाइचरणरज निजशिरधरेऊ ॥
सविनय बदत जोरि द्वौ हाथा । दयाधीशजन कस्यौसनाथा ॥
सानुकोश आयो मम धामा । पावनकरयौ सदनगुणग्रामा ॥
तुम न प्रशंसा करौ हमारी । सुतसेवक निजहृदयबिचारी ॥
दो० बालक दोष न चितधरहिं तात गुरू पितु मात ।
अरु न प्रशंसाहू करत यह प्रसंग विख्यात ॥
पुनि कह तुव पद कंज प्रसादा । निहते खल दुखदामनुजादा ॥
एक चिंतमन रह उर मोरे । निपटिहि नाथ निवारे तोरे ॥
कहिय प्रसंग तात जो करहू । छोहक मम चिंताप्रभु हरहू ॥
कह अक्रूर होइ अनुशासन । कलुमिषकरबकरतनहिंतासन ॥
सुन्यौपांडु निजतन परित्यागी । सुंदिर नाथ पुर गये सभागी ॥
तिनके तनय अकथ दुखपावत । जड़ दुर्योधनउनहिं सतावत ॥
कुन्तीमातु दुखित है भारी । समुझावौसुनि बिनयहमारी ॥
यह चिन्तमन तजौ तुम ताता । जाउपांडुगृह शिरधरिबाता ॥
दो० सबहि बुझाय समोद पुनि समाचार सब लाय ।
तुमहिं सुनाऊं कृपानिधि दुबिधा देहु बहाय ॥

सदा दास रच्छा करत यदुनायक सुख देय।
मंगल मन आनंद युत कसन ताहि भजिलेय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषांधकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकुब्जिाकेलिवर्णनोनाम
ऊनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

दो० अलख अगोचर ब्रह्म है माया रहित मुकुंद।
अज अविनाशी शत्रुहा हरत सकल दुखद्वंद॥
वृन्दारक क्लेशित निरखि विरच्यो मनुजशरीर।
जाहिभजत नहिं अधमनर जगमग फिरतअधीर॥
इतकदेन बहुविधि लहत उतहि अधोगति बास।
माया बशपरपंच करि द्वौ दिशिरहत उदास॥
धृक जीवन विनु हरिभजन भ्रमत वृथाभवआय।
बार बार दुखही लहत रहतन थिरता पाय॥
चतुर सुजान प्रवीन जे तेपरिहरि सब भूल।
ध्यावत रुक्मिणि नाथपद कंजसकल सुखमूल॥

सुनौ रसाधिप चरित सोहावा। जब अक्रूर रजायसु पावा॥
चल्यो यान चढ़ि गज पुरसोई। मिथुन तातगृहगे सुखभोई॥
कछुक दिवस मारग महँवीते। नागनगर गये श्याम परीते॥
कौरव सभागये यदुराई। द्वार यान राख्यौ सुनुराई॥
हरि आनन दुर्योधन वैसा। सहितकायअभिमानसुजैसा॥
जाय सभा भूपतिहि जुहारा। देखि उठ्योधृतराष्ट्र कुमारा॥
मिल्यौ सभासद करि सन्माना। जस सत्कारकरत बुधिवाना॥
बैठास्यो नृप आपु समीपा। पूछ कुशल कौरवकुलदीपा॥

दो० शूरसेन बसुदेव हरि उग्रसेन बलराम।
सानँद सब नारिन सहित कहौ तात गुणग्राम॥

उग्रसेन जड़ता बश भारी। करतराज निज तनय सँहारी॥
साभिमान मानत नहिं काहू। बैभव बिपुल कृष्ण बललाहू॥
मीत बन्धु सुधि दीन्ह बिसारी। को गुरुता उन पासहमारी॥

भे अक्रूर मौन सुनिबानी । यहिप्रकार निजमनअनुमानी ॥
दुष्ट प्रकृति यह अखिलसमाजा । इहाँ निवास मोर नहिं काजा ॥
खल मंडली अनीति कहानी । कहिहैं मोहिं सुनाय कुबानी ॥
अनुचितसुनिदुखउरमोहिंलागिहि । बृथाक्रोधउरअंतरजागिहि ॥
लै रजाय सँगबिदुर लगाई । पांडु निकेत गये यदुराई ॥
दो० तहाँ जाय देख्यो विकल कुंती पति के शोग ।
कृत बिलाप संतापमय कृशतन बाल अयोग ॥
निकट जाय कह ज्ञान बुझाई । गहनबिपुलकृतकेहिहितमाई ॥
इन्दीबरज लेख बश लोका । संगासंग मोद अरु शोका ॥
अमर मरत मृतु धारि शरीरा । जड़ जंगम कोउभो न सुथीरा ॥
स्वप्न बिभव जागत सबुनासै । तेहिबिधिजग असारयहभासै ॥
को पितु मात तात सुत नाती । बाम दहिन पंथी सम जाती ॥
पंचतत्त्व मिटि तत्त्व समाहीं । देहीं अबिनाशी नश नाहीं ॥
यह बिचारि धीमान अशोचा । तीनि काल कृत चिन्तामोचा ॥
संशय करत मोद कर हानी । सुखी न होत सचिंतक प्रानी ॥
दो० सुनि शिक्षा अक्रूरकी कुन्ती शोकहि मोचि ।
कुशल छेम पूछत भई मथुरा की मनरोचि ॥
जननी जनक बन्धु बसुदेवा । रहत प्रसन्न कुटुम्ब सतेवा ॥
मुरली मूशल धर आनन्दा । हैं कहुँ यदुकुल कैरव चन्दा ॥
कतहु सुधि अजात रिपु आदी । ममतनुजनकर कृतअबिषादी ॥
दुख सागर बूड़त बश भूपा । उडुप रूप बिषदानि स्वरूपा ॥
अति धृतराष्ट्र जात दुख देता । पार करहिं प्रभु छमासमेता ॥
असह क्लेश दुर्योधन सम्माति । लहतजातममसुनुयदुबरमति ॥
बधन हेत नित करत उपाई । लेत महेश भवानि बचाई ॥
भीमहिं बिष दीन्हा कित बारा । पचयो कृष्ण कृपा बिकरारा ॥
दो० शत बांधव मन शत्रुता राखत भूधर याम ।
यहिपुर निवसत तातसुनु दंडअमित परिणाम ॥
हरि तजि दूसर हितू न मोरे । कहियो तात बिनय करजोरे ॥

मोचौ दुख निज बंधुन केरा। चहुंदिग सूझत कालबसेरा॥
पीड़ित भो सुनि कुन्ती बानी। मृदुल गिरा करजोरि बखानी॥
नेकहु शोक करिय जनिमाई। यदुबर आठौ याम सहाई॥
बली बिक्रमी यशी प्रवीना। पुत्र तुम्हार सगुणलछीना॥
करिहैं निजकर शत्रु निकंदा। पक्षी काल तीनि यदुचंदा॥
यह सँदेश दे मोहिं पठावा। सुनितवदशाअमितदुखछावा॥
धीरज धरैं तजैं सब पीड़ा। गहन हरौंहौं आइ अब्रीड़ा॥
दो॰ बहुबिधि ताहि बुझाय नृप चले रजायसु पाय।
विदुर संग धृतराष्ट्र पैं गे अक्रूर सुभाय॥
करि जोहार कह तिनहिंबुझाई। कस अनीति कृत धर्मबिहाई॥
निजसुत बश सुत बंधु सतावौ। कोसुलोक यहिलोकदिपावौ॥
धर्मशास्त्र कोउ रच्यो नवीना। करतअनीति जासुआधीना॥
ऊरधांध अंतर चष देखौ। कुल बिनाश बशपातकलेखौ॥
पांडु राज बिनु अघ तुमलयऊ। धर्मादिकन अमितदुखदयऊ॥
कह धृतराष्ट्र करिय का भाई। दुर्योधन सन कछु न बसाई॥
निजमति सरिस करत प्रभुताई। मूरुख हमहिं कहत मदछाई॥
यहितें हरिहि यकान्त मनाऊं। तात सभाहीं भूलि न जाऊं॥
दो॰ सुनत बचन दंडवत करि रथचढ़िचले नृपाल।
मथुरा नृप बसुदेव सन कह्यो जाय उत्ताल॥
उग्रसेन बसुदेव दुखारी। गजपुर दशा सुनत भयभारी॥
पुनि अक्रूर गयउ प्रभुठामा। मोदमिलितकियदंडप्रणामा॥
कह करजोरि नागपुर नाथा। तव पितुभगिनीपरमअनाथा॥
देखि व्यवस्था बुद्धि सिरानी। बरणत बनत न दुखकरखानी॥
अंतरयामी आपु कृपाला। कारक हारक तुम प्रतिपाला॥
पुनि कुंती कर कह्यो संदेशा। सुनिहरिमनकछुउपजकलेशा॥
आयसु लै अक्रूर सिधाये। निज निकेत भूपति तबआये॥
बल अब इलाभार सब हरहू। उत्तम बुद्धि चित्त यह धरहू॥
दो॰ जो चाहत सोई करत ऐसे दीनदयाल।

ब्रजबनमथुराचरितयहहोंबरण्योमहिपाल ॥
निजमति सरिस गुरु परसादा। ब्रजरहस्य बरण्यो अविषादा॥
काव्य भाव विद्या बुधि थोरी। चम्योसकलकविलाविकै खोरी॥
बालक बचन अबूझ अपारा। गुरुजनवुधमसुभतसविचारा॥
मैं कायस्थ चरण मतिहीनो। निजरुचिसमहरियशकहिदीनो॥
शाहजहाँपुर नगर सोहावा। सरही ग्राम बसत तेहिठावा॥
राजाराम सुबुद्धि विशाला। तिनकेसुतगणेश गुणपाला॥
उनके तनुज बिहारी लाला। ते गुणखानिहित प्रतिपाला॥
बकसी राम तनय तिनकेरे। चतुर सुजान जनक ते मेरे॥
छं० तेजनक ममयश विदितभव पितुनात ऐसे सुचिगुनी।
निजकुलजरउजन सुभनहों उज्ज्वलसुकीरतिशुभगुनी॥
रुचिभई बरणों श्याम यश यह दशम मतसुंदर महा।
यदुनाथ चरण प्रतापसों दुख सूलहों मानों दहा॥
दो० जेजन साधु प्रवीणजग पढ़ैं विचारि सप्रेम।
कृष्ण कृपा उतरार्द्ध हू कहिहौं है यह नेम॥
जय राधावर कृष्णकी जयजनपालक एक।
दुखनाशौं सुखदेहु प्रभुमांगतसहित विवेक॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांअक्रूरहस्तिनापुरगमनो नामपंचाशत्तमोऽध्यायः ५०॥

इतिश्रीदशमस्कंधेपूर्वार्द्धसमाप्तंशुभम्॥



अथ कृष्णप्रिया उत्तरार्द्ध ॥

सोरठा ॥

विघ्न हरण गुणखानि लम्बोदर आनन कलभ ।
करौदया जनजानि तत्र प्रताप शिखिअघशलभ ॥
गुण गण करण प्रकाश विद्या दा गुरु ईश सम ।
पूरण कीजियआश सकल विघ्न हरिनाथ मम ॥
श्रीस्वामी कपिराज खल जवास जलधार जस ।
राख्यो जनकी लाज छंद भंग पुनिरुक्ति रस ॥
कवि कोबिद सुर साध चतुर्भाग चतरासपुर ।
आशिष देहु अबाध उत्तरार्द्ध अब बदौं फुर ॥
सत्यमीत जे मोर तीनिकाल उर रूप धर ।
तिनसों करतनिहोर आशिषदीजिय सिद्धिकर ॥

भुजंगप्रयात ॥

नमो पूतना भंगकारी मुरारी । नमस्त्वंअघावच्छात्रिध्वंसकारी ॥
नमोगोपिकासौख्यदाश्यामरूपं । नमोकालिमद्भंगकारीअनूपं ॥
नमोकेशिव्योमादिहंताकृपालं । नमोकंसचाणूरनाशं दयालं ॥
नमोविश्वपालंनमोविश्वकारी । नमस्त्वंरमानाथदुःखौघहारी ॥
दो० जानिदास राधारमण बुधि दीजिय दुखहारि ।

तवयशगावों मोदमय भवअघदेउ निवारि ॥
श्रीशुकदेव नृपति प्रति गावा। विशदचरित पापघ्न सुनावा ॥
सुनु नरेन्द्र पांडुर शुचि गाथा। दुखहारक सुखदायशपाथा ॥
जेहि प्रकार यदुनाथ कृपाला। जरासन्ध भूपति मदघाला ॥
अरुजिमिकालयमनकहँनाशा। पूरण लोकलोक परकाशा ॥
नृपमुचकुन्दमोच्छजिमिकीन्हा। व्यूहशिखंडी शीतल चीन्हा ॥
तिमि मथुरा द्वारिका बसाई। कीन्हे तहँ बहुकुल यदुराई ॥
चितदैसकल श्रवण नृपकीजै। मुक्ति पदारथ करतल लीजै ॥
उग्रसेन नृपता अधिकारी। हरि हलधर नृप आज्ञाकारी ॥
दो० करत नीतिमयराज सो प्रजा सुखी दिशिचारि।
दोष शोक बिनु नारि नर रह्यो मोद विस्तारि ॥
सानँद नृप चहुंवर्ण अथाई। केवल कंस बधून विहाई ॥
निशिनिद्रादिनक्षुधा न व्यापै। कंत शोक अर्जुन उर तापै ॥
उदासीन त्रिय रहँ नृपाला। अतिशयविकलग्रसितदुखजाला ॥
कहँ परस्पर इमि द्वौ नारी। भूप बिना जिमि प्रजादुखारी ॥
शशिबिनुनिशिअदीपनिशिधामा। शोभालहतनसोपरिणामा ॥
तिमिकामिनिबिनुकन्तअभाती। पतिवियोगविहरतअतिछाती ॥
उचित रहवनहिं इहां अनाथा। नैहरपितुहि कहियदुखगाथा ॥
काटिय काल जनकपुर माहीं। मथुरामहिं सौख्यकोउनाहीं ॥
दो० अस विचारि चढ़ि यानते चलींजनक अस्थान।
मगध देश गृह राजमहँ पहुचीं भूप सुजान ॥
भेटि पिता मातहि नरपाला। निजदुखकरसनकह्यो हवाला ॥
जिमि हरिराम असुर सहकंसा। सहजहि मथुराकीन्हविध्वंसा ॥
पूरववत दुख मग्न बखाना। सुनतजुरानिधिअतिदुखमाना ॥
सभाजाय क्रोधित नृप सोई। कहत भयो मंत्री मुख जोई ॥
महाराज कारण को आही। आननकांतिमलिनदरशाही ॥
कहाकहिय यह अकथकहानी। सत्यझूठ नहिंजात बखानी ॥
को बलवान भयो यदुबंसी। असुरसैन सिगरी जेहिध्वंसी ॥

हन्यो कंस चाणूर प्रतापी। निज मरयाद कंसपुर थापी॥
दो० विधवा दुहिता केरसिमम यहकलेश बड़मोहि।
दल बटोरि मथुरहिचलों बधौं समरमहँ ओहि॥
बधि यदुकुल पुरसकल उजारों। रामकृष्ण निजकर संहारों॥
मंत्रिनहूके मन मत भावा। करिय नाथ यह वेगिबनावा॥
तुरत पत्र दिशिचारि पठाई। भूपन कहँ यह सुद्धि जनाई॥
दलयुत सब आवो ममपासा। कीन्हचहतहौं यदुकुल नासा॥
कंस बैर लेहौं सुखमानी। भ्रष्टकरौं सिगरी रजधानी॥
जरासन्ध कर पाइ सँदेशा। देशदेश के अखिल नरेशा॥
कटक समेत राज गृह आये। चारों ओर नगर के छाये॥
जरासन्ध निज चमू बनाई। अस्त्र शस्त्र तन त्राण सजाई॥
दो० बाजे बाजे समर के रव छाये चहुँ आश।
चल्योजुरानिधिनृपनयुत रजमंड्योआकाश॥
तीनिविंश अक्षोहिणि साथा। असुरमनु जदलदुविधिसनाथा॥
का प्रमाण अक्षोहिणि स्वामी। कहौ नाथ तवचरण नमामी॥
नंभ मुनि गजबिधु नैनसुजाना। जुरैं रथी जहँ बीर महाना॥
रथी प्रमाण गजपती सोहैं। शत्रु समरमहँ लखिमनछोहैं॥
खेषुगुणखनिधि शशिपदवारा। प्रबल धनुर्द्धर समर जुझारा॥
खंनभ गगन रसैतर्क सवारा। भूप पदाति जुरैं यकबारा॥
यह अक्षोहिणि केरि प्रमाना। बदतचतुरकविसुनिबुधिवाना॥
ऐसी चमू तीनि अरु बीसा। मथुरा लैगो नृप मग धीसा॥
दो० तिनमहँ असुर महाबली बरणत बनत न सोइ।
सुरपतिकम्पतकटकलखि विकलधरणिपरजोइ॥
वरुण कुबेर आदि दिगपाला। भयवशकम्पितसबतेहिकाला॥
विकल सुपर्व दशौ दिशि धाये। मेदिनि दवतिभार अतिपाये॥
पशु पक्षी मारग खग भागे। ध्वनिनिशानसुनिमुनिवरजागे॥
जुरा पयोधिकैक दिन माहीं। मथुरा गयो मूढ़मद साहीं॥
नगर निरोध कस्यो चहुंद्वारा। गर्जत तर्जत असुर अपारा॥

लखि यहदशा विकल पुरवासी। अतित्रासितसुरश्रुतिधीनामी॥
आरत बदत श्याम शरणाई। आये नृप नर नारिअथाई॥
कृपा उदधि यम धारि कराला। निजसँगलाइमगधमहिपाला॥
दो० आतमभूसुख सुता पुर करयो निरोध कृशाल।
इषुधी पति सूझतनहीं कित जाइययहिकाल॥
सुनत पुकार सबहि समुझावा। धीरज गहौ शोच उरछावा॥
करत विचार कंस आराती। भृकुटिभंगलखिकालसकाती॥
तेहिक्षण तहँ नीलांबर आये। बचन विनीत सनीतिसुनाये॥
महाराज प्रगट्यो भवमाहीं। भक्तन हित हित दूसरनाहीं॥
वसुधाभार हरण यदुगई। असुर चमू नानाविधि आई॥
नीलकंठ वपुधरिय गोसाईं। खल तृण भसम करौ यहिठाईं॥
चुपकिरहे कर औसर नाहीं। सुनतचले प्रभु भूपति पाहीं॥
उग्रसेन प्रतिकह सुनुराजा। मगधराज लै सकल समाजा॥
दो० मथुरापुर घेर्यो अबहिं आज्ञा देहु नृपाल।
संगर ठानैं लषण सँग तुम कीजिय पुरपाल॥
नृप आयसुलहि पितुगृह गयऊ। पुरवासी तहँ आवत भयऊ॥
कहतत्राहि प्रभुखल बनपावक। रघुनाथजानिनिजशावक॥
दम्पति कहन कालकी धारी। नगर चारिदिशि घेरअघारी॥
असउपाय कीजिय खलभानन। मशौअसुरजन बचैंशुभानन॥
भयवश नगर जानिजनपाला। सकलप्रबोधे पूरुष बाला॥
कृत चिंतमन किमर्थं अकाजा। मृत्यु विवशयह दुष्टसमाजा॥
तुम देखौ यह घन कस छाया। थिर न रहैक्षणदुष्ट निकाया॥
अथवा जल बतास जिमि होई। आशु होत पयरूपी सोई॥
दो० अखिल बुझाये नारिनर पितुप्रतिशासन पाय।
युगलबंधु रण होत नृप चलतभये सुखदाय॥
सकल वराक व्यमानारूढ़ा। इंद्रादिक जे अखिल अमूढ़ा॥
अवसर जानि उभय रथसोहर। सायुध विविधविचित्रमनोहर॥
प्रभुहित समर भूमि पठवाये। सन्मुखमिथुनजानिचलिआये॥

सब उर पुरवासी कृत ज्ञाता। नरवपु तीनिलोक पितुमाता॥
भये व्यमानारूढ़ महीपा। विविभ्राता यादव कुलदीपा॥
हलधरश्याम आशु नरनाहां। असुर कटक जहँ गवनेताहां॥
जुरापयोधि निकट चलिगयऊ। लखत दुष्ट भणत इमि भयऊ॥
हेकंसारि तोरि मतिनासी। लाई मृत्यु डालि गलफाँसी॥
दो० जोजीवन निज चहसितू वेगिहि जाहु पलाय।
ममसमान तू अहसिनहिं साभिमान कहराय॥
नीलाम्बर यद्यपि बलघोरा। तदपिसमरममसहिहिअघोरा॥
प्रभुकह श्रो सूरस अभिमानी। कहतअबूझितयहकसबानी॥
समरथबीर समरजित जोई। जल्पत वृथा मूढ़नहिं सोई॥
कादर क्रूर भीर अविचारी। बदतसुयशनिजशत्रुप्रचारी॥
बीरव्रती रण पंडित ज्ञानी। कहत न करतयुद्धमुदमानी॥
करणी विदित जल्पना नाशा। नीतिशास्त्रअसन्यायप्रकाशा॥
निजमुख आपनि करणीकहई। गतसुलोकअपलोकहिलहई॥
जोघन अति गाजत घहराई। बरषत अल्प सोहयह भाई॥
दो० केहिकारण सुनु मगधपति बकतअहित जिमिभेक।
उद्यम संगर शीघ्रकरु कुमति त्यागि सविवेक॥
अस कहि चले नाग रिपुगामी। जरासन्ध क्रोधेउमतिवामी॥
हरि पश्चात धाव मतिहीना। इमि भाषत कटुबचन प्रबीना॥
कहँ अवजात सुतापति घाती। प्रबलशत्रुलखि विहरतछाती॥
निज जीवन आशापरिहरहू। कसन दुष्टममसन्मुख लरहू॥
कंसगयो जहँ सैन समेता। तुमहिं पठैहौं तौन निकेता॥
बहुदिन कंस राज तुमभोगा। भयो तासुफल मृत्युसँयोगा॥
का शोचेउ अपने मनमाहीं। जग जितभये कंसबध ताहीं॥
वैनतेय ते अहि बचि-जाई। मम तट शत्रु बचब कठिनाई॥
दो० करौं भूमि यदुवंश बिनु यह प्रण मैं मन कीन।
उग्रसेन इत्यादि खल बधौं आजु मतिहीन॥
कटु बच सुनत दुष्ट कर भूपा। फिरे श्याम क्रोधित हरिरूपा॥

खल सन्मुख आये बनवारी। आयुधअखिलजलजकरधारी॥
हल मूशल समर्षि निज पानी। चले राम गहि रोषित ज्ञानी॥
निकटमूढ़दल जेहिक्षण आवा। घोरशब्दकरि सबहिसुनावा॥
आसी बिष सह्ल लखि जैसे। हरि धावत धाये हरि तैसे॥
चले बाण दुहुँदिशि नरनाहा। असिवरअग्निज्वलितरणमाहा॥
त्रिपुल निशान बजत रणमारू। मेघाघात होत हहकारू॥
नीलवरण खलदल दिशिचारी। नीरद समनृप परत निहारी॥
दो० शर बरषा जल वृष्टिवत चहुं ओर कुरुकेतु।
युगल बंधु मुखक्रांति जो सोइ तड़ितछबिदेतु॥
समर होत जनु प्राविट काला। देखत युद्ध देव सुरपाला॥
अपर दिवौकसगुण महिजाती। बधुन समेत लखत रिपुघाती॥
हरि प्रताप बल यशहि बखानैं। अमितप्रकार सुमनझरिठानैं॥
जयजय बदि हरि जयमनचाहैं। प्रभु बोधहि सुरारि दल दाहैं॥
उग्रसेन यदुवंश अथाईं। उतमहिपाल मनहिं पछिताईं॥
चिंतत बिबिध भांति यहकहईं। बिनुसुधिहम समस्तह्यांअहईं॥
राम कृष्ण कहँ समर पठावा। कछु न शोच हमरे उर आवा॥
दुष्टअनी बिकराल अपारा। परमात्मा बिनु को रखवारा॥
दो० कह बसुदेव न शोचहु कृष्ण आपु करतार।
क्षणमहँ दलबधि आइहैं को जग जीतनहार॥
समर होत बीता कछु काला। मिटिगइसकलसैन्यमहिपाला॥
मूशल पाणि सरोष सिधाये। बांधि जरासन्धहि लैआये॥
नागपाश बंधित लखि वाहीं। भन्योकृष्ण दाऊप्रति ताहीं॥
जीवत तात तजौ तुम याही। बधै योग यह नरपतिनाही॥
जीवत भवन जाइ जो पैहै। तौ पुनि अमित असुरलैऐहै॥
तेबधि हरिहौं वसुधा भारा। जेहिहिततात लीनअवतारा॥
असुर पलाय समरगे जोई। याहि बधे बचिजैहैं सोई॥
दाउहि इमि समुझाइ मुरारी। दीन छुड़ाय प्रबलबिबुधारी॥
दो० छूटि जुरानिधि जातभो निज सैना मधि तात।

अनीभंग दिशि चारि लखि कहत सचिव प्रतिबात ॥
तात चमूमम सकल सिरानी। मोहिंभईअतिशयगिल्यानी ॥
यहि लज्जा त्यागिय नृपताई। तपकीजिय गह्वर बनजाई ॥
सचिव महीपहि ब्यो बुझाई। तात अयोग तजिय कदराई ॥
समर जाय जयविदित बखानी। कालाधीन बदत विज्ञानी ॥
ज्ञानवान नृप तजै न देशू। सुनौ कृपाल उचित उपदेशू ॥
आजु अजय आगे जय होई। सैन जोरिये चिन्ता खोई ॥
चलि निकेत करि समरबनावा। अंततंत त्यागिय पछितावा ॥
बहुरि राम श्यामहिं बधकीजै। स्वर्गबास यदुकुल कहँ दीजै ॥
दो० इमि मंत्री समुझायकरि लैआवा निज धाम।
कटक बटोरयो भूप पुनि सजि उद्यम संग्राम ॥
रामश्याम इत रणमहँ हेरी। रुधिर तरंगिनि बहचहुँफेरी ॥
मृतक गयंद सोह हुहुँकूला। शूरबीर तरु परे समूला ॥
उडुप तुल्यरथ काग सवारा। खत्रक पवन करत सरिपारा ॥
कोउ कोउ गजबिच धारसोहाई। नगरूपी उपमा छबिछाई ॥
झरत रुधिर तिनते जनुझरना। सोहावर्त चक्रकर तरना ॥
इषुधी सर्प रूप उतराहीं। मत्स्यतुल्यअसिखड्गदिखाहीं ॥
चर्म मनौ कच्छप दरशाहीं। भूत प्रेत योगिनी नहाहीं ॥
तहाँ शम्भुयुत गण महिपाला। करत अनंद समोद विशाला ॥
दो० मालामुंड बनायतन पहिरत भूत पिशाच।
शंकरसहगण भूषिये लखतमुदित सुरपाँच ॥
प्रेतबधू योगिनी समेता। रक्त पियत भरिखप्पर लेता ॥
वायस गृद्धादिक जो शृगाला। भषत मान्स सानन्दनृपाला ॥
यह कौतुक बिलोकि असुरारी। हूंकहि चले पूज्य त्रिपुरारी ॥
हरिइच्छा आयो पवमाना। अहिबाहननर मृतक महाना ॥
सकल बटोरि करे यकठांई। जलजतेज निजदीन जराई ॥
पञ्चतत्त्व निज अङ्ग समाने। जीवकर्मबश त्रिविधभुलाने ॥
आवत जात लखे नहिं काहू। जननीजनकादिक सुहिताहू ॥

यहि प्रकार वधिसैन सुरारी । कृपासिन्धु हरिजन हितकारी ॥
दो० उग्रसेनपहँ जायकरि युगल बन्धु सुखपाय ।
करि प्रहून बोले वचन सुनो धन्य नरराय ॥
तुम्हरे पुण्य प्रताप गोसाईं । वधे असुर भै जय यहिठाईं ॥
विभव अकंटक भूपति कीजै । अमितप्रकारप्रजहि सुखदीजै ॥
सुनि प्रभुवचन नृपति आनंदे । समुद श्याम पदमनमहँबंदे ॥
सब विधि निजपुर कस्यो बधावा । गृहप्रतिपुरहरिजययशछावा ॥
धर्मराज युत नीति सदाहीं । उग्रसेन कृतमन भ्रमनाहीं ॥
यहि प्रकार बीते कछुकाला । कोपितव्दयोपुनिमगधनृपाला ॥
काल पन्न च्छोहिणि दल लायो । समाचार यह यदुवर पायो ॥
क्षणमहँ सकल सँहारे धाई । मगध भूप भाग्यो पछिताई ॥
दो० स्वर्ग भूमिधा मगधनृप गुणचय च्छोहिणिसैन ।
लायभिस्यो यदुनाथप्रति जय न लही दुखऐन ॥
जाय जुरानिधि निजरजधानी । बहुरि सैन जोस्यो अज्ञानी ॥
अंतर कथा सुनौ कुरुराई । जो मुनि गोद लहौ समुदाई ॥
सुनि कौतुकी सकौतुक धाये । आकस्मात यमनपुर आये ॥
कालयमन जहँ पालत छोनी । महाबलिष्ट बुद्धि अतिछोनी ॥
लखि देवर्षिहि उठ्यो महीपा । कस्यो दंडवत जाय समीपा ॥
पांडुर आसन मुनि बैठाई । जोरिपाणि कह बचन नृराई ॥
कौरथ गृह पवित्र मम करेऊ । संचित कलुर नाथ सबहरेऊ ॥
मुनिकह सुनु नरपाल मनीषी । तुव आसिसदा समरमहँतीषी ॥
दो० मथुरा महँ बलराम हरि भये प्रबल जगजान ।
सुहृद जुरानिधि तात तव हास्यो सत्रह आन ॥
उनहिं बधै नहिं तुमहिं बिहाई । विदित तीनिपुर तुव प्रभुताई ॥
अमर बलिष्ट समर विज्ञानी । तवमहिमाकोनहिंजगजानी ॥
बालक राम कृष्ण रण पंडित । जानौनृपतुम समरअखंडित ॥
कह नृप कहा कहौं मुनि तोहीं । मित्रअजयसुनि दुखभामोहीं ॥
अवशिराम श्यामहिं रणहनहूं । समर अजितहै भीरुन बनहूं ॥

चीन्हरंग अरु रूप बतावौं। जोबधि युद्ध मोदहौं पावौं॥
मेघबरण कुवलय चषसोहर। बिधुमुख आनहु अंगमनोहर॥
पीत बसन बासित तनमाहीं। सोइकृष्ण तुवहितु रिपुआहीं॥
दो॰ तोहिंबधे बिनुतज्यो जनि यद्यपि समर पलाय।
शिक्षादै यमनाधिपति गये स्वर्ग ऋषिराय॥
कालयमन बाहिनी बनाई। महामलेच्छ कोटि गुणराई॥
रूप भयानक परत न जोई। भुजप्रलंब बड द्विज खलसोई॥
वेषमलीन केश शिरभूरे। नैन कृष्णता रूपक पूरे॥
अतिपापिष्ट गवास अपारा। जगदुखदानि बुद्धि बिकरारा॥
बजत निकर संग्राम निशाना। मथुरानगर भूप नियराना॥
सिन्धुसुतापुर करसि निरोधा। सदल असुर युद्धहित क्रोधा॥
समाचार पाये असुरारी। तबनिजमनयह बुद्धिबिचारी॥
दुष्टअनी आई चहुंओरा। महाप्रबल जगबिदित प्रघोरा॥
दो॰ पत्यशुद्धि निज मीतकी आइहि मगध नृपाल।
प्रजापाइहै बिबिध दुख तजिय नगर यहिकाल॥
सो॰ अस बिचारि यदुतात बोलि बिश्वकर्मीहि कह्यो।
सुनौतात ममबात करौ अवश्यहि काजयह॥
निज माया जलनिधि के तीरा। रचौ नगर हरिगृह जटिहीरा॥
जहँ यदुवन्श रहैं सुखसेती। सकल सुपर्व सपर्व समेती॥
निज गृह जानैं लहैं न भेदा। बसहिंजहाँतिहुंकाल अखेदा॥
पुनि पलमांझ सबहि पहुँचावौ। वेगि करौ जनिबार लगावौ॥
आयसु पाय सिन्धु तटजाई। पुरपुनीत बिरच्यो सुचराई॥
चक्र सुदर्शन ऊपर सोहै। योजन भानु देव मनु मोहै॥
जस प्रभुचह्यो रच्यो तेहि तैसा। नाम द्वारिका हरिपुर जैसा॥
प्रभुपहँ बहुरि आय जगकारी। भनो समस्त वृतांत बिचारी॥
दो॰ सुनि मोदे प्रभुकह्यो पुनि आशु सबहि लैजाय।
जानि न पावहिंनारिनर तेहिपुर देह बसाय॥
आज्ञा पाय झटित सुनु राजा। उग्रसेन बसुदेव समाजा॥

अखिल विवश माया मतिभोई । लैगो नगर द्वारिका सोई ॥
हरिबल साथ गये सब केरे । अखिलायत निजनैनन हेरे ॥
यहि अवसर दधि शब्दसुनावा । जगे सकल मनसंभ्रमछावा ॥
कहत दैव मथुरानिधि काहा । जागतस्वप्नलखतमनमाहा ॥
अत्याश्चर्य्य विवश पुरवासी । लहत न भेदबुद्धिभ्रमपासी ॥
यहि प्रकार प्रभु सबहि बसाई । कह्योबन्धुप्रतिबचन सुनाई ॥
अब चालि मथुरा रक्षाकीजिय । कालयमनकहँसुरपुरदीजिय ॥

दो० युगल तात सानंद नृप आये मथुरा धाम ।
मंगल भजिले श्यामपद तजिके द्विविधा काम ॥

सो० सदा कृष्णकीरीति पालतदास अनेक विधि ।
करौं कमलपद प्रीति मम पालन कीजै प्रभू ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगल
दासविरचितायांजरासंधपराजयद्वारिकावासकालयमन
आगमनवर्णनोनामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

दो० ज्यों अकाशके अंतहित द्विजगण उड़तअनेक ।
पौरुषीय पौरुष रहित करिनहिं सकत विवेक ॥
तिमि निरन्नके भेदहित कल्पत बहु भव भूत ॥
असुर अमर इत्यादि बुध नर पशुपूत अपूत ।
जासु नाम भवअकर अज प्रभु स्वतंत्र गुणराशि ॥
निजअशनरतन भवधरयोजगयश रह्योप्रकाशि ।
ताहि भजे बिनु सर्वथा हानि चारिहू ओर ॥
ध्यावत पूरण पद मिलत नाशत पाप कठोर ।
मंगल के मत कृष्ण तजि मुक्तिदानि नहिंआन ॥
जन सुखकरजीवत सकल अंतमोच्छ कल्यान ।

मथुरा आय श्याम सुनु भूपा । करत भये यह चरित अनूपा ॥
बलहि नगर रक्षाहित त्यागा । कालयमन बधमुदउर जागा ॥
रैनिवरण धारे बपुबासा । शृंगारित तनभादिग आसा ॥
द्विज नायक गति चले कृपाला । गये दुष्टदल मधि नरपाला ॥

कालयमन सन्मुख चलिगयऊ। पुनि परोक्ष मारग प्रभुलयऊ ॥
हरि स्वरूप लखि यमन भुवाला। निजमनकृतबिचारतेहिकाला॥
मेरि जान कृष्ण यह आहीं। नारद बदे चिह्न तन माहीं ॥
सम्यक् चिह्न लखतहौं नैना। अहै कृष्ण यह कछुभ्रमहैना ॥
दो० कन्स बध्यो यहि सुहृद दल यौमन करि अनुमान।
कहत भयो पुनिश्यामप्रति कत पलात बलवान ॥
बीरव्रती रण पंडित जोई। संगर पृष्ठिदेत नहिं सोई ॥
जीवघात निज मन अनुमानौ। मोसों तात समर अबठानौ ॥
कन्स जुरानिधि हौं न महीपा। करौ समर निरछल यदुदीपा ॥
मैं प्रण कस्यो हनौं यदुवंशी। रणकीरति मम जगत प्रशंशी ॥
असकहि साभिमान तजिसैना। हरिपश्चात धाव कटु बैना ॥
अति पौरुष चांडाल अबूझा। त्रिपुरनाथ चपहृदय न सूझा ॥
अग्राममत श्याम खल पाछे। हस्तान्तर खलमगमत-आछे ॥
भागत भागत भूप निदाना। विपुल दूरिगय कृपानिधाना ॥
दो० प्रविशे प्रभुगिरि खोह महँ तिमिर पूरतेहि माहि।
एक पुरुष सोवत पस्यो हरि निरख्यो जब ताहि ॥
वाहि उढ़ायो पीतपट आपुन रहे लुकाय।
दुष्टगयो पश्चात तहँ हरिगति विदित नराय ॥
पीतवास वासित लखि ताही। इमिशोच्योखलनिजमनमाही ॥
हरि प्रपंच सोयो यह श्यामा। बधौं आजु याकहँ यहिठामा ॥
सरुढ़ चरण मथौं तन तासू। कटुवाणी खल कस्यो प्रकासू ॥
कपटी धूर्त्त कहामिष साधा। बन्यो साधु आई जिय बाधा ॥
उठिकरु समर अमरपति तूहै। विदित प्रबलता तुव सबभूहै ॥
असकहि पीताम्बरहि उतारा। जग्योमहीप चौंकि तेहिवारा ॥
युतामर्ष निरख्यो खल ओरा। कह्यो न नृपमृदु बचन कठोरा ॥
भस्मीभूत असुरपति भयऊ। मन महीप सुनिचिन्ता छयऊ ॥
दो० कह्यौ जोरिकर सुनौ मुनि कृपासिंधु गुणग्राम।
को पूरुष जेहि देखतहि जस्यो असुर बलधाम ॥

सरवर प्रापक तापस कोई । तासु प्रसंग कहौं प्रभुसोई ॥
मान्धाता सुत नृप मुचकुन्दा । महाबली अरुदासमुकुन्दा ॥
अरिदलदलन विदितयशजासू । नंद खंड पूरित दश आसू ॥
एक समय सुपर्व दुख लीन्हा । असुरनतिनहिंदसडबहुदीन्हा ॥
सकल उदासित निपट निरासा । रहित अमरपुरविगतविलासा ॥
नृप मुचकुन्द पास सब आये । दीन वचनकरिविनयसुनाये ॥
महाराज बहु खल जग बाढ़े । निज क्रोधानल सबसुरडाढ़े ॥
तुम बिनको अब करै सहाई । प्रबल न कोउतुमतेअधिकाई ॥
दो० पुराकाल ते रीति यह आवत चली सुदेश ।
सुर मुनि ऋषि लखि दुखित तब रक्षाकरहिंनरेश ॥
सुनि नृप चल्यो संग सुरवृन्दा । जुध्दाजइनसँगजायअनन्दा ॥
कृत संगर बहु युगचालि गयऊ । जयदुन्दिद समर नृप लयऊ ॥
तब वृन्दारक नृप तट आई । मृदुल मनोहर गिरा सुनाई ॥
हमरे हेत अमित श्रम कीन्हा । निकरअमरगणकहँसुखदीन्हा ॥
अब बिश्राम काहु थल कीजै । निज जीवहि महीप सुखदीजै ॥
अमित काल बीते नरनाहा । रहा न बंश धाम तुव ताहा ॥
तातें अवध पुरहि जनि जाहू । आनकहूं लीजिय सुख लाहू ॥
नृपकह सुनौ अमर गण बानी । तुमसब भांति सकलसज्ञानी ॥
दो० ठाम यकान्त बिचारिकै दीजिय मोहिं बताय ।
सोऊं जहां अचिन्तहीं कोउ न जगावै जाय ॥
भूप बसहु धवलागिरि खोहा । सुथल सुधाम हेत तुव जोहा ॥
सोइय तहां अचिन्त महीपा । कोउनजगाइहिहरिकुलदीपा ॥
चारि खानि महँ जीव जोकोई । तुमहिंजगाइहि बलबुधिखोई ॥
सो तुव दृष्टि होइ जरि छारा । सत्य बचन यह भूपहमारा ॥
नृप सुचकुन्द नाम हो सोई । कालयमन नाश्योतेहि जोई ॥
अग्र कथा अब कहिय कृपाला । मिटिगा सकल मोहभ्रमजाला ॥
श्रीहरि मेघवरण शशिआनन । अम्बुजचषप्रभुल्लवलभानन ॥
रूप चतुर्भुज आयुधधारी । अहिर किरीट पीत पट धारी ॥

दो० मकराकृत कुंडललसत उरबनमाल बिराज।
दरश दयो मुचकुन्दको जोदुर्लभ ऋषिराज॥
हरि स्वरूप लखि उठ्योनरेशा। विह्वल मन आनँद अलवेशा॥
जोरि हाथ किय दंड प्रणामा। बोल्यो सुबच भूप गुण ग्रामा॥
कृपासिन्धुमुखकांति बिलाशा। जेहिनिधिकरयोगुफापरकाशा॥
तेहिप्रकार जनजानि गोसांई। कहिय नाम निज मोहिंबुझाई॥
जानि भेद नाशौं भ्रम मूरा। करौं भजन तुवमन चित पूरा॥
जन्म कर्ममम अमित प्रकारा। को पुर तीनि करै निरधारा॥
यहितन भेद कहौं नृप तोहीं। सुनु चितलाय जानुपुनिमोहीं॥
यदुकुल महँ बसुदेव सुजाना। जनम्यों तिन गृहहौं भगवाना॥
दो० बासुदेव मम नामहै मथुरा खल बधकीन।
कंसादिक कर भूप सुनु जानत सकल प्रवीन॥
मुनिशशिवार समर करिभारी। हार्यो जरासंध बलधारी॥
प्रतिधा गुणचष अक्षोहिणिलायो। हमसन सो नृपयुद्धपलायो॥
अरु यह कालयमन बलराशी। मथुरा खलदल लैकरि ग्रासी॥
काल कोटि मलखानि कुरूपा। तुम्हरी दृष्टि जरयो सो भूपा॥
मधुर मनोहर सुनि प्रभु बानी। नृपमुचकुन्द भूप बड़ज्ञानी॥
जान्यो नारायण जनपालक। अद्भुत बपुष धरे तुम बालक॥
अनुकम्पा पयोधि करतारा। तुव मायाभव बिदितअपारा॥
जावश लोक लोक सब प्रानी। निजबलरहितबिदितविज्ञानी॥
दो० बुद्धि स्मृति चर अचर की दृढ़ता गहत न नाथ।
क्रिया करत सुख हेत हित तद्यपि होत अनाथ॥
जिमिसुष्कास्थि श्वान मुखचावै। निजलपच्चतजस्वादबहुपावै॥
आनँदगत दुखहै परिणामा। सुखक्षत पीर पाय शृणु श्यामा॥
तिमि नर बिषय भोग रत होई। बन्धमुक्त माया बश जोई॥
यहि जग अंध कूप गृह धर्मा। वहिरागम तन नरबहुकर्मा॥
क्षमा राशि अनुकम्पा हीना। बिषय भोग सोदक नर मीना॥
अहोरात्रि बिस्मितहौं रहऊं। किमि नरधार भवँर भवलहऊं॥

आजुसुलभ मोहिंपरतजनाई। दृढ़ उपाय मोहिं देहु बताई॥
सुनु नृपभवभय जालअपारा। जस तू बदत कठिन निरधारा॥
दो० हौं परन्तु तुव मोच्छहित बदौं उपाय महीप।
सानँदकरिलहु मुक्तिभव कह असयदुकुलदीप॥
भूमिधरणि तियसुत हितराजा। अधिकाधार्मिक कीन्होकाजा॥
तप बिनु तेन नशत सुनुभूपा। ताते सुनु उपदेश अनूपा॥
राजराजकन्या दिशि जाहू। करि तपतन तजिलै सुखलाहू॥
ऋषिगृह बहुरि जन्म तू पैहै। भक्ति पदारथ लहि तरि जैहै॥
हरि निदेश सुनि भूप बलिष्ठा। प्रभु मूरति हिय धरि करि इष्टा॥
आगम कलि बिचारिमनमाहीं। करि दंडवत चल्यो दुखनाहीं॥
बद्री बिपिन तपस लागि गयऊ। मथुरा प्रभु तब आवत भयऊ॥
नीलाम्बर प्रति यों बचगावा। कालयमन सुर भवन पठावा॥
दो० बद्री दिशि मुचकुन्दगे भवन रहाश्रम नेक।
अखिलम्लेच्छवाहन बधौ करिमनसमरविवेक॥
शीघ्र चलिय खलदलबधकीजे। छमा भार भारित हरिलीजे॥
युगल बन्धु पुरबाहर आये। संहारक बपु उभय सोहाये॥
असुर अनीजहँ रणमहँ सोहै। जोबिलोकि सुरपतिमदछोहै॥
संगर करनलगे दोउ भ्राता। अतिबल नारायण सुरत्राता॥
रण बिस्तार कथा बढ़िजाई। दुष्टसेन यमसदन पठाई॥
मधुपुरतात द्रव्यसब लीजे। द्वारावतिहि पठइ अबदीजे॥
सम्मतकरि बिबि बांधव राई। पुरसम्पति बहुभार भराई॥
द्वारावती पठइहरि दीन्ही। इतनृपमगधसैनसजिलीन्ही॥
दो० पूर्वोक्तदल सायलै मथुरा कर्यो निरोध।
उभयबन्धु पुर बाहिरे आयेलहि यह शोध॥
जातभये जब तट मगधीशा। बलप्रतितनइमिकहजगदीशा॥
सत्रहवार अजय नृपपाई। यहपावै सुख चलिय पलाई॥
असमत आनिचले भगिभूपा। जगत सुखद त्रैकाल अनूपा॥
हरिहिपलात सचित्र लखिचोला। देखुकृपानिधिसमर भडोला॥

तुवप्रतापदिशिवलित बिलोकी। कोबलवान सकै रणरोकी॥
रामश्याम दोउबन्धु पलाने। तजिधनधामप्राणप्रियजाने॥
त्रासितत्राण बिनापग भागे। स्वल्पहुनहिं रण उद्यमलागे॥
मंत्रदवाक्य सुनत सुखपावा। लैनिजचमू भूप पुनिधावा॥
दो० क्यों पलात परिहरि समर अमरनाथ जगजान।
बिह्वलतन सुधि बिनुभये अवनहोइ कल्यान॥
प्रफुलित मगध राजमनभयऊ। प्रभुहिपलातसमरलखिलयऊ॥
जोमुद भो ताके उरमाहीं। अनुपमकथिनसकतकविताहीं॥
हरिआगे पाछे नृपजाई। बिपुल दूरि चलिगये नृराई॥
गिरिगौतम ऊंचा योजनहर। चढ़जाय हरिबल नृप तापर॥
शिखा शिखर सोहतद्वौ भाई। लखतसुपर्व शोक अधिकाई॥
तव नृप मगध बदत असटेरी। शृंगशिखा देखौ हरि हेरी॥
अग जग सिंधुसुताहि निरोधो। दारु पुंज काननमहँ शोधो॥
नगयुत भस्मकरौ यहि काला। भागिजायअबकहँ गोपाला॥
चरचर नृप निदेश सुनिराई। घेरिअद्रि बहुकाष्ठ मँगाई॥
घृत तैलादि लाय गिरि रोपा। जरासन्ध के उर बड़ कोपा॥
जलज प्रचार कस्यो तत्काला। प्रगटीशिखीव्योमलागिज्वाला॥
बिकलभयेलखि सुरमुनिज्ञाता। प्रबल धनंजय कथी न जाता॥
दो० गुप्तभये बिबि बन्धुनृप मर्म न जाना काउ।
अलखअकथ इंद्रियअगुभ्र श्रीयदुनाथ प्रभाउ॥
गिरिवर छार भयो ताही क्षन। मगधभूप आनन्दित भोमन॥
भस्मीभूत बूझि द्वौ भाई। मथुरहि चल्यो घूमि नरराई॥
आइनगर सब निजबशकीन्हा। राज कोष आपनकरिलीन्हा॥
उग्रसेन बसुदेव निकेता। सकल नशाये तब कुरुकेता॥
निजजन राजपाद परथापी। गयो राजगृह जग सन्तापी॥
इमि नृप जुरानिधिहि भरमाई। गये द्वारका यादव राई॥
जेसलहरिहि मनुजकरिजानत। पूरणपुरुष सत्यनहिं मानत॥
ते मतिमन्द दुष्ट चाण्डाला। उनकरसंगतजिय तिहंकाला॥

दो० तीनिलोक आनन्द दा दास दुखन कृत दूरि।
मंगलतजि संशयसकल भजु हरिजीवनमूरि ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकालयमनवधमुचकुंदउद्धारमथुरा
परित्यागवर्णनोनामाद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

दो० कोटि विघ्न तुरतै नशै जब ध्यावै ब्रजराज।
परमहंस यह गति लखत आनँदमय सबसाज ॥
निजरिपुकोसबकोउडरत विदितबात यहआहि।
अपरनशत अहिडसतही अहिरनशतपै नाहि ॥
ज्ञान जानियो कुमतिसब आपुहिजात पलाय।
ज्योंपारदलखि अनलको जानतबुधचितचाय ॥
मननिजबशकरि सुजनजन ध्यावत राधानाथ।
आन ओर हेरत नहीं होवत अन्त सनाथ ॥
तूमंगल परिहरिकपट भजिले मोहन श्याम।
बर्णन कुरु सुन्दर यशहि सुख पावै द्वौ धाम ॥

सुखद चरित द्वारावति केरे। नाना भांति विचित्र घनेरे ॥
ते अब श्रवण करौ कुरुराई। जे सुनि मोह चमू विनशाई ॥
पूरब कौतुक करि यदुराई। गये द्वारका अति सुदपाई ॥
हरि बिलोकि यदुबंशी हरषे। नभते सुर प्रसून बहु बरषे ॥
प्रत्यायत भा मंगल चारा। मंगल नाद गीत झनकारा ॥
उग्रसेन आदिक सुख छाये। हरिमिलिबहुतककालबिताये ॥
एक दिवस जुरि बहुयदुजाता। उग्रसेन आगे सुनु ताता ॥
करि प्रश्न कह सुनौ कृपाला। सब लायकभे रामगोपाला ॥

दो० अब उत्तम गृह जोइ करि करिये रामबिवाह।
भूपति सुनिकह कह्योभल सम्पतदा उत्साह ॥

बोलि एकद्विज ज्योतिषज्ञाता। कह्यो तात तुमजाहु प्रभाता ॥
उत्तमकुल समता निजपाई। करिय बिप्रबल राम सगाई ॥
असकहिनिशिअक्षतधनदीना। नारिकेर फलसहित प्रवीना ॥

द्विजशिरकरि अभिषेक पठावा। चल्योविप्र कछु बार न लावा॥
करि विचार अर्णता प्रदेशा। रेवत नृपपुर कख्यो प्रवेशा॥
जाय सभानृप कह समुझाई। निज आगम वृत्तान्त बताई॥
कन्या तासु रेवती नामा। सकलसुलच्छणलच्छित बामा॥
तासँग बल विवाह ठहराई। लग्नपत्रिका शुद्ध लिखाई॥
दो० तिलक बस्तुनृप बिप्रसन द्विजवर चल्यो लवाय।
उग्रसेन पहँ आइ नृप कह्यो बृतांत बुझाय॥
सुनि हरषे सब यदुकुल लोगा। जानिबिवाहसकलविधियोगा॥
उग्रसेन शुभ घरी सुधाई। लयो तिलक उरआनँद छाई॥
मंगल गान करैं कल बैनी। गृहप्रति त्रियमृगशावकनैनी॥
करि सत्कार विप्र वर केरा। बहुधन दै रेवत पुर फेरा॥
पुनि सजि सुन्दर भूप बराता। संग सकलहितुयदुकुल जाता॥
नृप अर्णता देश महँ जाई। करिबिवाहबिधिजसश्रुतिगाई॥
दाउहि ब्याहि चले सुखपाई। आयेपुर द्वारका नृराई॥
यहि प्रकार करि हलधर ब्याहा। महामोद मय भे नरनाहा॥
दो० पुनि हरि दाउहि साथलै कुंडिनपुर में जाय।
हरिलाये नृप रुक्मिणी रण शिशुपाल हराय॥
निज आयत कीन्हो उद्बाहा। सुनियहचकृतकहयोनरनाहा॥
कुंडिन पुर नृप भीष्मक भारी। तासुतनयसुनि समर बिहारी॥
अरुशिशुपालबलीजगजाना। तिनहिंअजयकरिजिमिभगवाना।
लैआये रुक्मिणि ऋषिराई। निकर प्रसंग बदौ सुखपाई॥
देश विदर्भ विदित महिपाला। कुंडिनपुर तहँ नगर बिशाला॥
निवसततहँनृपभीष्मकज्ञानी। जेहियशवलितदिशादशजानी॥
ताके भवन शक्ति श्री सीया। जन्मीजाय दानि कमनीया॥
प्रसवतहीं द्विज ज्योतिष ज्ञाता। बोलि पूछि भूपति यहबाता॥
दो० लग्न मुहूरत ऋच्छ दिन शोधि कहौ द्विजराय।
अखिल दोष गुण सुताकर रहौं मोदको पाय॥
विप्रन लग्नादिक लिखिराजा। ज्योतिषमतशोध्योशुभसाजा॥

कह्योनाम रुक्मिणिनृप कहऊ। बड़भागी महीप जग अहऊ ॥
शील स्वभाव रूपकी रासी। सुता सुलच्छणि भैकमलासी ॥
आदिपुरुष उद्धाहित होई। नृपगृह भूप कहत हमजोई ॥
क्षमाविदौत बाणि सुखसानी। श्रवणितभूपसुभाग्य बखानी ॥
मंगलचार सहित उत्साहा। करवाये निजगृह नरनाहा ॥
दै बहुदान समोद सुजाना। द्विजबर बिदाकिये गुणत्राना ॥
वृद्धति सुता कला शशि तूला। नितनव लहतभूप सुखमूला ॥
जा दिनते निवसी जगमाता। बसुधादिक सबगृह सरसाता ॥
कृषीवणिज फलदायक सबही। त्रियनरसकलशीलयुतनवही ॥
कुंडिन पुर श्री पुर निधिछाई। परिपूरण नहिं बरणि सिराई ॥
सिन्धुजात जहँ बसत नरेशा। वरणिसकतजगक.न कवेशा ॥
दो० तनया नित प्रति नृपति सुनु विरचत बाल चरित्र।
लखिहरषत जननी जनक लीला परम पवित्र ॥
संग सखी सम बैसनि सोहैं। लीला निरखि देव कुलमोहैं ॥
मौदत मौद कर्म चतुराई। निज सहेलि सँग कृतनरराई ॥
यकदिनचोरमहीचिनिख्याला। रच्यौसुतान समोदविशाला ॥
रुक्मिणि सँग जहँजाथँलुकाई। मुखभा द्वितिय चंद्रिकाराई ॥
देखि प्रकाश सखी अनखाई। रुक्मिणि हमन तोरसंगजाई ॥
आनन कांति करावलि सोमा। खेल नशात उठत भय रोमा ॥
तिमिरनाशमुखछबिलखि तेरी। विस्मितआलिहोत मतिमेरी ॥
छुकिनसकत हम काहुनिकेता। तुवलप कांति बताये देता ॥
दो० यहि प्रकार खेलत नृपति प्रभा अमित लपतासु।
देखि सुलच्छण बुधिनिपुण सबदुखलहत विनासु ॥
मुनिकौतुक कारक गुणखानी। स्वारथ गत परमारथ ज्ञानी ॥
एक दिवस भीष्मक पुर आये। रुक्मिणिदेखि महामुदछाये ॥
आतुर पूरण पूरुष पासा। मुनिगयभूप गूप अनयासा ॥
ऋषिहि विलोकि उठे यदुराई। करि आदर शुभथल बैठाई ॥
पूछ्यो आगम चरित बिशाला। तबनारद इमि कह्योहिवाला ॥

सबके उरवासी असुरारी। सुनो ध्यानयुत गिराहमारी॥
भीष्मक सुता रुक्मिणी नामा। कमलासम सोनारिललामा॥
सब लक्षण परिपूरण ताके। हस्तरेख पति हौ तुम जाके॥
दो० असकहि सुरपुर ऋषि गये प्रभुयहि सुद्धिहिपाय।
प्रीति परोक्ष अपार कृत सुनु कुरुपति चितलाय॥
यहिविधि नृप सीता अवतारा। जान्यो यदुपतिजगकरतारा॥
रुक्मिणिजिमिघनश्यामैजाना। सो चरित्र शुचिकरौंबखाना॥
देश देशके मागध सूता। कुंडिन पुर गयनृपकविनूता॥
हरियश पूरब कृत बहुगायो। नृपतिसभामहँसबहिसुनायो॥
बसुधा भार हरण अवतारा। यदुबंशी बसुदेव अगारा॥
जन रक्षक बहु असुर सँहारे। कंसादिक रणभूमि पछारे॥
मथुरा त्यागि द्वारिका आये। मुनि महिधामगधीशपलाये॥
प्रभु चरित्र सुनि पुर नर नारी। बदत परस्पर बचन बिचारी॥
दो० जासुबिशद यश मुदितमन आजु सुन्यो दुखहार।
निज नैनन मूरति वहै कब देखब करतार॥
समाचार सुनि सब रनिवासा। चढ्योधवलगृहहरियशआसा॥
पूत चरित सुनि रहीं लुभाई। तन मन बचन सुनै मुदपाई॥
रुक्मिणि सुन्यो श्यामकरतूती। जागिउरप्रीति नारिगृहसूती॥
अंकुर प्रेम उरस्थल जामा। मनमन रटै लागि हरिनामा॥
क्षणक भये बिह्वल भव माता। हरिगुण बुद्धिहरी तेहिगाता॥
वादिनते जग कुछ न सोहाई। अलख प्रीति हरिपदउरछाई॥
जामभेक अह गौरी वाको। श्याम ध्यानमग इसरथाको॥
कान अवस्था कान्ह सनेहा। कोद्वितीय भावत नहिंदेहा॥
दो० प्रभुयश गावत मगन मन लगन दरशउरमाहिं।
याँचत हरिसों काल तिहुं बेगमिलत कस नाहिं॥
प्रात गौरि मूरति रचि सोई। षोड़श बिधि-पूजतभ्रमखोई॥
करि बंदना जोरि दोउ पाणी। यह मांगत महीप मृदुबाणी॥
दगा शशि प्रिय भार्ग भवानी। देहमोहिं बरदासी जानी॥

देवकि तनय होइ पति मोरा। तुव महिमा प्रसिद्धचहुंओरा॥
यहि प्रकार नित राज कुमारी। ध्यावत प्रभुहि प्रपंच बिसारी॥
एकदिवस निज सखिन समेता। करत बिनोद समोदनिकेता॥
नृप भीष्मक तेहिअवसरआयो। तनया लखिउर शोचबढ़ायो॥
भै उद्वाह योग तन जाया। करिय बिवाहमनहिंअसआया॥
दो० सुवधा कन्या जासु गृह पुण्य तासु को छीन।
नरक पिता पावत अवशि भोमन नृपति मलीन॥
सतरज तम देवै त्रै दाना। अफलसकलऋणसुतामहाना॥
कन्या ते पावै उद्धारा। सो जग साधु सुयशविस्तारा॥
अस बिचारिगा सभानृपाला। ज्ञातिज सचिव बोलितत्काला॥
सबन सुभाय बद्यो नरनायक। अब दुहिता भइव्याहबलायक॥
कुलबलगुण स्वरूप निधि होई। रुक्मिणि योग तात बरुसोई॥
हृदय बिचारि कहौ सब भाई। जहँ तनुजाकर करौं सगाई॥
निजमतिसरिसअनेकअनेका। वरणे महिप एकते एका॥
भूपति मनहिं न कोउबरआवा। तबहिं रुक्म अस बचनसुनावा॥
दो० चन्देरी नृप अति बली जासु नाम शिशुपाल।
सकलभांति समतालहत आपनि तात कृपाल॥
जग भल कहै मोर मन माना। करिय बिवाह तात सज्ञाना॥
लोक सुलोक बिशद तुवछावै। कीरति विपुल देवपुर पावै॥
पैन भूप मन भाई बाता। रुक्म केश बोल्यो लघुजाता॥
कृष्णचरित उज्ज्वलजगजाना। पाटी जटी धरत दृढ़ ध्याना॥
रुक्मिणि व्याहकृष्णसँग कीजै। त्रिपुर मनोहर कीरतिलीजै॥
लघुसुत बचन सुनत नृप हर्षे। जिमि चातक बारिद हितुबर्षे॥
साधु सुजान सुसम्मत भाषा। श्यामदरश ममउरअभिलाषा॥
बुधबद आयु बड़न बुधि भाई। तुव सम्मति सबबिधिसुखदाई॥
दो० कहत चतुर लघु बड़न नर पूछि करै जो बात।
सबको सम्मत सारले सो न जगत पछितात॥
भीष्मकपुनि इमिबचन बखाना। रुक्मकेश बालक बुधिवाना॥

शूरसेन यदुबंशिन माहीं। यशी प्रतापी बिदित सदाहीं ॥
भये तदात्मज शुचि बसुदेवा। ऋषियोगीश चहत जेहिसेवा ॥
आदिपुरुष पूरण अबिनासी। भवनिशिकीर्त्तिचंद्रिकाभासी ॥
सुरमुनि महादेव करि जाहीं। ध्यावत सकल समाधियमाहीं ॥
कबिशापति तीनों गुण जासू। तेहि सुतह्वै तिन गृहकियबासू ॥
समराजित बलखानि प्रसिद्धा। कंसादिक मलराशिनिषिद्धा ॥
निज बल बधे हस्यो महिभारा। यदुकुलयश जग सकलपसारा ॥
दो० प्रजा हित् गोत्रजन कहँ दयो मोद बहु भाय।
ऐसे श्रीपति कृष्ण हैं करिय बिवाह सचाय ॥
यहि पुर अति आनँद को पाऊं। अंत देव पुर मोद बढ़ाऊं ॥
सभा बिराजक सुनि नृप बानी। कह्यो धन्य महिपालसुज्ञानी ॥
यहि बिवाह भल प्रभु सबहीका। हमरे नाथ भाव तो जीका ॥
असघरबर न मिलिहि पुरतीनी। यह मति सकल साररसभीनी ॥
सुनि सबकी सम्मति नरपाला। क्रोधित रुक्म भयोतेहिकाला ॥
कामति मंद बकत अन्यायी। कहत अबूझित बात अभायी ॥
कृष्ण चरित्र जानि बौराने। पशुवत बचनकहतअनजाने ॥
षोड़श वर्ष बस्यो नँद धामा। ग्वाल कृष्णताकर तहँ नामा ॥
दो० रोमबस्त्र तनपरधरे बन बनचारीगाय।
ग्वालनसँग भोजन कस्यो चत्रीधर्म बिहाय ॥
गोपजात जानत सब कोई। सो सम्बन्ध योग कस होई ॥
जाकर मात पितानहिं जानिय। औरकहा कुलज्ञातबखानिय ॥
नन्दग्वाल सुत कोऊ बतावै। कोउबसुदेवतनय कहिगावै ॥
पैसतिभेद जाननहिं जाता। काकर तनुज श्यामकोमाता ॥
यदुकुल निंदनीय नृपताई। जग बिभुता कासों अबपाई ॥
उग्रसेन कर सेवक श्यामा। यदुबंशी बसुदेव सरामा ॥
कछुक दिवसते भै बलदाई। कहाभयो लघुता प्रभुताई ॥
कोयश लहबतासु सम्बन्धा। जुरेसकल तुमबुधि चषअन्धा ॥
दो० रिपुताहित सम्बंधजग करिय समानहिं पाय।

करत कुलाकुल बुधवदत अयशरहै जगछाय ॥
जोपैपिता सुता तेहि देहीं। अपकीरति समस्त भवलेहीं॥
देश देशके क्षोणिप ताता। सुनिहँसिहैंयहअनुचितनाता॥
कुलकलंकलागिहियहिव्याहा। जगशिशुपालविदितनरनाहा॥
सबविधि समरथ चतुर महाना। नृपनातिलक सदाजगजाना॥
लोकप रसपत्रमत जेहित्रासा। आन ओर पितु होइ निरासा॥
सुनासुलक्षणि तेहि उबाहौ। जो आपनिशुभकीरतिचाहौ॥
उत्तगयहै अयोग विचारा। कृष्णहि कहत जगत कर्तारा॥
तासुनाम त्यागै भ्रम खोई। ग्वालन त्रिपुरनाथ भवहोई॥
दो० सबके सम्मत खंडिके मम कहनी नृपमानि।
देतनया शिशुपालकहँ सबविधि समता जानि॥
सुनहि विरोधित जानि नृराई। कछु न कह्यो शिररह्यो नवाई॥
रुक्म ज्योतिषी बोलि सुजाना। भूपसमाजमनहिं पछिताना॥
लग्नपत्र तुरतै लिखवाई। बोलि पुरोहित द्रव्य बँधाई॥
सामग्री अभिषेक अपारा। दईसंग द्विजके तेहिवारा॥
गमन्यो शीघ्र विप्रवर राई। चन्देरिहि मनमोद बढ़ाई॥
नगर पहुँचिगा राज-समाजा। उठ्योसभामदद्विजलखिराजा॥
करिवंदन पांडुर दिय आसन। पूछ्यो तबहिइलपब्राह्मणासन॥
अनुकम्पा रत्नाकर देवा। निज आगम कर भाषियभेवा॥
दो० कहिय मनोरथ हुत द्विजप करौंशक्ति अनुमान।
आशिषदै महिसुरकह्यो सुनु क्षितिपालसुजान॥
भीष्मक नृपदै तिलक पठाये। नृप अभिषेक साजहमलाये॥
सोलैकरिय बरात बनावा। सुनतरसाधिअकथसुखपावा॥
निजकुल पूज्य बोलाइ भुदेवा। करिदंडवत कह्यो सब भेवा॥
शुभघटिकाविचारिज्योतिपमत। लईलग्न सानंदित दुखगत॥
दानदेइ महिसुरहि घुमावा। पुनिबहु भूपन नेवति पठावा॥
जरासंध इत्यादि नृपाला। सहसहाय गमने तनकाला॥
चमूपाल शिशुपाल हँकारी। सजौसैन यह कह्यो प्रचारि॥

जबअनेक छोणिप चलिआये। तबशिशुपालअमितमुदपाये ॥
दो० सकल बनाई निज अनी ब्याहचार करवाय।
कुंडिनपुर कहँ चलतभो सुनु कौरव कुलराय ॥
भीष्मकसों इत द्विज कहआई। करिआये अभिषेक नृराई ॥
अब उद्वाहिक करिय बनावा। सुनिमहीप मनभा पछितावा ॥
निपट उदासित शोच अपारा। बहुरि धरापति गयउ अगारा ॥
समाचार रानिहिं समुझावा। नृपवच सुनि सुंदरिसुखपावा ॥
कुल वृद्धा बैश्यका बोलाई। तुरतहिं मंगलचार कराई ॥
ब्याहसाज साजन त्रियलागी। दुविधा अखिल जीवतेभागी ॥
सभा महीश आइ पुनि बैसा। सोहत धर्म धर्मपुर जैसा ॥
कहि बुझाय मंत्रदा प्रधानहिं। जो विवाहकारजकरिजानहिं ॥
दो० सकल बस्तु उत्साह की यकठौरी करि देहु।
किंचिन्मात्र न घटिपरै कारज कीजै एहु ॥
पाय रजायसु तत्तत् काजा। जनु करि राख समग्रसमाजा ॥
यह चरचा सम्यक पुर छाई। रुक्मिणिअरुशिशुपालसगाई ॥
राजा चहेउ कृष्ण कहँदीन्हो। रुक्मदुष्ट बिपरीतिहि कीन्हो ॥
सुनि पांडुजपुर नर त्रियशोचै। बिनु स्वारथ नैनन जल मोचै ॥
राजभवन बहु बजति बधाई। प्रफुलित नृप नर नारिअथाई ॥
छोणी देव कान सम भाखैं। कोऊ कर्म्म गुप्त नहिं राखैं ॥
दुंदुभि बजत महीप दुवारा। मागध सूत सुयश बिस्तारा ॥
मंडफ रच्यो बरणि नहिंजाई। जो बिलोकि कबि बुद्धिभ्रमाई ॥
दो० राजसदन शोभायथा तथा नगर प्रतिधाम।
द्वार द्वार हरि कलश युत तरु रंभादि ललाम ॥
बंदनवारि बँधी प्रतिधामा। पुरस्थ्या स्वाच्छित सब ठामा ॥
पाटम्बर डासत पुरबासी। प्रफुलितयुवतिपुरुषगुणरासी ॥
मिलि द्वै चारि सखी कलबैनी। रूप मृगांक मनोहर नैनी ॥
रुक्मिणि निकटजाययहभाषा। सुनुसखिविधिपुरई अभिलाषा ॥
सँग शिशुपाल तोर उद्वाहा। करत रुक्मपुर बड़ उत्साहा ॥

सुबुधि सुलज्ज होहु अवरानी। सुनिरुक्मिणिबोलीमृदुबानी ॥
मन बच क्रम हरि मोरअधारा। दूसर पतिको कृत करतारा ॥
महा शोच विकलित नृपजाता। बोलिएक द्विज सबगुणज्ञाता ॥
दो० करि प्रद्यून सविनय सुबच विप्रहि कहा बुझाय।
मम सँदेश लै कृपा दधि अवशि द्वारकाजाय ॥
श्रीगोविन्दहि सुबुधि सुनाई। पद्मिपद्मा निधि लाउलवाई ॥
जन्मप्रयन्त तोर गुण मानौं। हरिबरदानि तात अनुमानौं ॥
देवि बेगि किन कहिय सँदेशा। नगर द्वारका दूरि प्रदेशा ॥
बोधि बोधदा त्रिपुर सयानी। तब संदेश सप्रेम बखानी ॥
बरुणा जनक वारुणी श्यामा। अंतरयामी सब गुण ग्रामा ॥
मानि प्रीति जो मम सँगऐहैं। तौ तुव दुख भ्रम दूरि बहैहैं ॥
सुनि प्रिय बचन दशनचरकेरे। लिख्यो पत्रिका प्रेम घनेरे ॥
विहँगराज कर दीन्ही पाती। बचनबच्यो सुप्रीतिअधिकाती ॥
दो० श्री हरिसों करजोरि द्विज कहियो बैन विचारि।
घट घट बासी आपु हैं अंतरयामि मुरारि ॥
जन लज्जा तुम राखन हारे। जन्म जन्म के कंत हमारे ॥
दरशदेइ अघओघ नशाइय। निमिषमात्रनहिंवारलगाइय ॥
चल्यो क्षमामरकरिहरि ध्याना। दिशिद्वारकाकरयो प्रस्थाना ॥
दूरि देश महिदेवन जाना। क्षणमहँगा द्वारका सुजाना ॥
नहिं आश्चर्य्य कृष्ण प्रभुताई। राम समय जनपति यदुराई ॥
रतनाकर मधि नगर सुहावा। देखि सुपर्ब इला सुख पावा ॥
बन उपबन चहुँओर बिराजैं। दंतविपुलकलध्वनितहँ भ्राजैं ॥
सरवर नलिन मिलित जलपूरे। डोलत चंचरीक मन रूरे ॥
दो० सरतट जलचर बहुबसहिं भाखरणै कवि कौन।
शेष शारदा मतिभ्रमै गायक हरिगुण जौन ॥
द्विजवर अग्र जाय पुर देखा। हरि पुर ते पूरण मन लेखा ॥
चारिओर दृढ़ कोट सोहावै। करण द्वार बहु शोभा पावै ॥
जटित मणिन कपाट तहँलागे। भूसुर प्रतिशिलरव्योपुर आगे ॥

रजत शूर मंदिर सुखदाई। जोबिलोकिविधिबुधिचकिजाई॥
धवल धामभा अकथ नृपाला। जोलखिमोहलहत सुरजाला॥
सध्वजपताक कलश सबधामा। सिंचीसुगंध नृपति सबठामा॥
आयत प्रति बहु मंगलचारा। बरणि न जायँ सहितबिस्तारा॥
पुर रक्षक वसुयाम सुदर्शन। करिनसकत खलनगरस्पर्शन॥
दो० देखत शोभापुर द्विजप राजसभा महँ जाय।
दै आशिष पूछत भयउ कहँ राजत यदुराय॥
कोउ नृप सेवक ब्राह्मण जानी। हरि निकेत दरशायो आनी॥
द्वारपाल लखि द्विज पदबन्दे। पूछ्यो बचन सप्रीति अनन्दे॥
स्वारथ देश बड़ो सुखदाई। जोहौं प्रभुहिं सुनावौं जाई॥
हौं द्विज कुंडिनपुर ते आयों। भीष्मकसुता पत्रिका लायों॥
अंतःपुर चलि जाइय ताता। हरि आसन राजत सुरत्राता॥
तब नृप सदन गयो चलिसोई। उठे कृष्ण मुख महिसुर जोई॥
करि प्रणाम सादर बैसाई। पादोदक निजभवन सिंचाई॥
कुशलप्रश्नकरिसुरुचिकृपाला। सुनौ महीप बहुरि सुरपाला॥
दो० इष्टदेव सम सेवकरि पुनि अस्नान कराय।
रसरसभोजन नेह युत नृप द्विज बरहिजिमाय॥
दैतम्बोल सुथल शुचि धामा। बहु सुगंध सींचिहि लैयामा॥
छपरखट पर बिप्र सोवाई। आपुन पास बैठ यदुराई॥
मन शोचत कब भूसुर जागै। कहै बचन रुक्मिणि रसपागै॥
जबनजग्यो तब तेहि पगदाबा। चौंकिउठ्योमहिसुरअभआवा॥
कहौ तात निज आगमभाऊ। जिमिअजानपूछततिमिराऊ॥
कोस्वारथ दरशन मोहिंदीन्हो। पदजलसदनपूत प्रभुकीन्हो॥
कुंडिनपुर भीष्मक नृपताई। बसत जहां चहुँबरण अथाई॥
दुहिता तासु रुक्मिणी आहीं। तवयशसुनिप्रफुलितमनमाहीं॥
दो० निशिदिन तव पगध्यानकृत यह लालस उरतास।
निज सेवामहँ राखिप्रभु मेटिय सब अघ त्रास॥
भीष्मकह यह कह्यो बिचारा। सबके सम्मत करलैं सारा॥

रुक्मिणि तुमहिं देइ अनुमाना । पैजड़ रुक्म आन मतठाना ॥
नृप शिशुपाल तिलककरवावा । ब्याह हेत शुभ साज पठावा ॥
सो ब्याहन आवत यदुराई । रुक्मिणि महाहृदय पछिताई ॥
यह पत्रिका मोहिं प्रभु दीन्ही । अस्तुतिविनयजोरिकरकीन्ही ॥
लैपत्रिका समोद कृपाला । समाचार बांच्यो तेहिकाला ॥
बिप्रहि कह्यो प्रसन्नित बानी । होहु अचिन्त धीर विज्ञानी ॥
अवशि चलतहौं तुम्हरे संगा । सकल दुष्टदल करिरणभंगा ॥

दो० पूरण इच्छा तासुकी हौं करिहौं बिनु खेद ।
असकहिमनचिंततकछुक प्रभुअचिंतनिभेद ॥
प्रीतिविवशहरि कालतिहुं विदित जानिमनमाहिं ।
मंगल तन मन वचनतू हरिध्यावत कसनाहिं ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायां श्रीकृष्णप्रतिरुक्मिणिसंदेश
वर्णनोनामत्रैपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

दो० पारवती शशि छवि लहत तारागण सुप्रकाश ।
पै प्रगटतही रश्मि के निर्छवि लसत अकाश ॥
योंहीं प्राणी पाप रत शोभित पाप समाज ।
धर्म्म सभा महँ दुष्ट नर अमित उठावत लाज ॥
याभव भूप अपार मग चलत प्रकृतिवश आहिं ।
सुखहरिजननिजकर्म्म मय जड़ सूहृसनेहिनाहिं ॥
श्वानादिक जे जीव हैं ते उत्तम ममजानि ।
वा नरते जो हरिभजन करतनहिन चितआनि ॥
सुखदायक दुख हरसदा राधा नाथ सनेह ।
सो परिहरि तू क्यों अभै छूटिजाय यह देह ॥

किल्विष तिमिरसहसकरवानी । पुनि बोले मुनिवर विज्ञानी ॥
इमि ब्राह्मणहि भूप परबोधी । कहइमिपुनिहरिवाक्यविरोधी ॥
जिमि काढ़त शिखि संकटदारा । खलदलमलिहमताहिप्रकारा ॥
सुन्दरि कहँ लाउब द्विजराई । असभणि सभागये सुखपाई ॥

करि प्रणाम कह सुनौ महीपा। कुण्डिनपुर भीष्मक नृपदीपा॥
निज दुहिता मोहिं देवे काजा। पठवा पत्र हस्त द्विजराजा॥
अकसर हमहिंबोलाव गोसाँई। का आयसु कहिये समुझाई॥
उग्रसेन कह दूरि बहूता। जानकहौं किमि तात अदूता॥
दो० राज समग्र समाज तहँ व्याघ्रितरारि अपार।
समाचार को हमहिं पुनि कहिहि आइतद्वार॥
चिन्तनवृथा न भूपति कीजै। अवशिजाउँ आज्ञामोहिं दीजै॥
जोपै जाव अवश्यक जानिय। तौ तजि हठ सैना सँगआनिय॥
मूशल पाणि चमूप समेता। जाहु तात अनुशासन देता॥
करि बिवाह आतुर गृह आयो। काहू प्रति न बिरोध बढ़ायो॥
अग्र जात मैं तात सुजाना। पाछे सदल बंधु प्रस्थाना॥
पितु प्रति पुनि प्रभु पायरजाई। दारुक निज सारथी बोलाई॥
वेगि यान सजि लाइय ताता। किमपि न बार होइविख्याता॥
आयसु पाय लाव सो याना। भूसुर सहित चढ़े भगवाना॥
दो० स्वयं सिद्धि मिति वदि चले कुंडिन पुर दिशिभूप।
पुर बाहिर भे सगुणशुभ सब विधि सुखद अनूप॥
दक्षिण दृश्य मान मृगचक्रा। कृतक्रीड़ा बिहाय गति बक्रा॥
सन्मुख हरिपतनी युतजाई। निजभय आनन लीन्हेराई॥
देखि सगुण ब्राह्मण इमिकहई। सिद्धि मनोरथममभत अहई॥
हम महिसुर सेवक गुणबेला। सगुण अगुणबृभ्रत सबखेला॥
सगुण रूप अवतार हमारा। अनुगामी गुण तीनि प्रकारा॥
पवन वेग हय सूत चलाये। नाना नगरदेश चलि आये॥
कुंडिनपुर पहुंचे असुरारी। यह चरित्र देख्यो बनवारी॥
ठाम ठाम प्रति श्याम निहारा। सामग्री बिवाह चहुंद्वारा॥
दो० चन्द्र प्रतोली बिबिध बिधि चर्चित शुचिपाटीर।
नारिकेर पुंगी कनक हरित पात युत नीर॥
प्रति निकेत बन्दनवारी अस। गीतानंद होत सुरपुरजस॥
नृप उपवन उतरे यदुनायक। राजे तरु छाया सुखदायक॥

विप्रराज कन्यहि सुधिदेहू। निज करतबकर प्रतिफललेहू॥
बहुरि मोहिं वृत्तान्त बताइय। बेगिजाहु द्विज बारन लाइय॥
नाथ विवाह प्रथमदिन आजू। जुखो राजगृह अखिलसमाजू॥
पायएकान्तरुक्मिणिहिस्वामी। कहिहौंतुव आगमद्विजगामी॥
असबदि चल्यो द्विजप कुरुराई। आन वृतांतसुनौ चितलाई॥
यहिप्रकार प्रभुतहाँ विराजे। उत शिशुपाल बरातहिं साजे॥

दो० जरासंध इत्यादि नृप संगसमाद विशाल।
असुर कटक अगणितचल्यो प्रबलदुष्ट विकराल॥

बोझिन बोझ अनन्त महाना। कच्छपकोलहृदय अकुलाना॥
पुरअविदूरि बराती आये। समाचार भीष्मक नृपपाये॥
सचिव गोत्रज हित अगमानी। नरपतिगयोसबहिंसँगआनी॥
सादरभेंटि सबहि पहिराई। रत्न जटित भूषण नरराई॥
दै बहु पारसीक द्विपदाना। पुरलाये करिबहु सन्माना॥
उत्तमथान दयो जनवासा। जहँ सर्बोविधि भूप सुपासा॥
सामग्री अहार मँगवाई। उचित महीपन पास पठाई॥
अंतर चरित तात अवगाऊं। मोदकसबविधितुमहिसुनाऊं॥

दो० हरिजब इत मारगलियो तबजुरि बहु यदुजात।
करिप्रणाम तब भूपसन कह्यो सुनौ बरबात॥

सुधिस्पृष्ट यह सुनी नृराई। मगधराज शिशुपाल सहाई॥
अपर अमित खल युत सेवकाई। सब प्रकार निज साजबनाई॥
सोरसाह कुंडिनपुर आये। नृप दुहिता ब्याहन मुदछाये॥
अकसरश्याम गये बड़िशंका। बहुशिशुपाल जगत आतंका॥
उरशत्रुता राख मगधीशा। हैहै समर सत्य अवनीशा॥
यहिकारण अनुशासन दीजै। जानितात कसअपयशलीजै॥
सुनि भूपति शंकित उरभयऊ। बोलिराम अस आयसु दयऊ॥
संग विरुत्थी सैन पलाई। कुंडिन पुरहि बेगि किनजाई॥

दो० बोधिश्याम कहँ तात तुम लै आवो सुखपाय।
नृप आयसु सुनि रामतब सैनालई बोलाय॥

यदुवंशी जुरि रस इषु कोरी। कुंडिन पुरहि चले गुण धोरी॥
प्राबिट किधौं बाहनी राई। कलभव्यूह बरणिय मेघवाई॥
नकुल पंक्तिद्विजमदकल सोहैं। शब्ददमाम रसध्वनि रोहैं॥
विद्युल्लताशस्त्र छबि देहीं। नृपनृत्यकजनु जलद सनेहीं॥
बिबिध प्रकार बीर बर बोलैं। षटपद मंडुक सुबुधि किलोलैं॥
बासव बाण धारि धनुवीरा। आक जवास शत्रु उरपीरा॥
मुदित मीनजनदेखिसुकाला। क्रोशितश्रुतिकरखलश्रुतिबाला॥
दलशोभा बिलोकि सुर वृंदा। यानारूढ़ गगन सानंदा॥
दो० बरषत सुमन अपारते नभमारग सुदपाय।
पुलकित गावत श्यामयश कहिजैजै यदुराय॥
हरिपश्चात सदल बलरामा। कुंडिन पुर पहुंचे सुख धामा॥
रुक्मिणि यहन नेक सुधिपाई। महा बिकल अतिउरपछिताई॥
मुखछबि महा मलिन कुरुकेता। बिधुकर प्रात तथा छबिदेता॥
उच्च सदन चढ़ि चहुं दिशिहेरैं। काहि कहै चिन्ता निरवेरैं॥
जल प्रवाह बाढ़्यौ चषतासू। महा बिकलमन निपटउदासू॥
निजमन बदत कहतइमिराजा। तीनि समय रच्छकजनलाजा॥
को कारण बिलंब बिधि भयऊ। मम दोहद बिसारिहरिदयऊ॥
अंतरयामी अघहर श्यामा। स्वर्पाताल व्याप्त सुखधामा॥
दो० अथवाद्विज ह्वाँनहिं गयो वाकुरूप मोहिं जानि।
प्रीति प्रतीतिन हरिकरी को दृढ़ कहै बखानि॥
प्रह्लादिक हित बारन लाई। कहि अनदेव कृष्ण बिसराई॥
खल बाधक साधक प्रणदासा। सुनि मगधेशकरी उरत्रासा॥
काल्हि करिहिशिशुपालबिवाहा। जात मोर प्रण उरदुखदाहा॥
बिनु हरिप्राणरहिहि किमिधाता। जाउँ कहांअतिबिथुरितगाता॥
बहु जप नेम धर्म ब्रत साधे। निष्प्रपंच हरिपद आराधे॥
कोउ न सहायकभो यहिकाला। जो बिलम्ब कीन्होगोपाला॥
देखि दुखित इमि सखी बखाना। नगर द्वारका दूरि महाना॥
बिनु पितु बन्धु रजायसु आली। केहि प्रकार आवत बनमाली॥

दो० आनसखी कह धीर धरु अंतरयामी श्याम।
आवहिंगेहरिअवशिसखि करुकछुकालबिराम॥

मेरे मन प्रतीति दृढ़ होई। कहत चहत आये हरि कोई॥
तदनंतर द्विज दर्शन दयऊ। रुक्मिणिशोकउरगभाजिगयऊ॥
दै आशिष भल अवसरपाई। प्रभुआगमकहसुबुधि बुझाई॥
नृप वाड़ी महँ राजतश्यामा। आवत सदल पिछारी रामा॥
विप्रवचन सुनि अमी समाना। आँनदरुक्मिणिलहाअजाना॥
करि बन्दन पद रुक्मिणिभाखा। कृपासिंधु ममजीवन राखा॥
जो न होत तुव आगम आजू। प्रातहोत सब भाँति अकाजू॥
सुधि प्रतिफल न तीनि पुरकोई। भूसुर तुमहि देउं मैं जोई॥

दो० इंदु भवन सम्पतिहु दैहोउं अऋण नहितात।
असकहि मौनित सुख गलित होत भईनृपजात॥

सुनि प्रिय बचन तोष द्विजपाई। प्रफुलितगयउ महीपअथाई॥
हरि आगम यकान्त कहराजै। आद्योपान्तत्यागिजगलाजै॥
हरष्यो भूप सुनत द्विज बानी। भीष्मकचल्योआशुनृपज्ञानी॥
राम श्याम शोभित तहँ आयो। करिप्रणामबड़िबिनयसुनायो॥
पुनि कह मैं मन बचअरुकाया। कन्या तुमहिं देत यदुराया॥
दुष्टन मत बिपरीत बिचारा। अभिमतलहहलाहिदरशतुम्हारा॥
शुचिस्थान प्रभु बास कराई। निज आयत महीप गाराई॥
चिंतत अकथ कर्म हरि केरे। को जाने कस होय सबेरे॥

दो० युगल बंधु राजत जहाँ पुरबासी तहँ आय।
करत प्रशंसा त्रिबिध बिधिकरि प्रणाम शुचिभाय॥

आपस में इमि सब बतराहीं। रुक्मिणि योगकृष्णबरआहीं॥
हमरे पुण्य प्रताप बिधाता। श्याम ब्याह नृप करैंप्रभाता॥
चिरुजीवन जीवहिमतिदायक। जोयहि अमला र यदुनायक॥
हरिकह चलौ नगर बलदेखिय। पुरशोभानिजनैननबिलोकिय॥
चले कुमार रूप गुण राशी। प्रविशे पुरवीथिनद्युतिकाशी॥
जेहिमग जात बन्धु द्वौ राजा। जरत बिपुलनरनारिसमाजा॥

गंधसार अबीज जल मेली। चरचहिं प्रभुहिंनारिसतकेली॥
पुष्पावलि अपार उर डारैं। आपस में इमि मंत्र बिचारैं॥
दो॰ नील बास बासित सुहरि पीताम्बर घरश्याम।
कुंडलश्रुतिशिरमुकुटलस अंबुजचपगुणग्राम॥
भूपति प्रथम इनहिं बर शोभा। दुष्टरुक्म सुनिवचन बिरोधा॥
खल शिशुपाल सगाईकीनसि। देवशिरोमणिहृदयनचीनसि॥
पुर शोभा देखी कटकाई। जरासन्ध शिशुपाल अथाई॥
निज आसन राजे पुनि आई। उत नृपरुक्म सुबुधि यहपाई॥
आमर्षित पितु पास सिधावा। बैठिसभा इमिबचन सुनावा॥
अन्यायी हरिबल द्वौभाई। केहि सम्मत आये यहिठांई॥
इहां निमंत्रन काहू दयऊ। अनुचितपिताब्याहसुखगयऊ॥
ब्याह काज उत्सव गृह माहीं। भयउ उपद्रव संशय नाहीं॥
दो॰ महाप्रपंची कुटिल मति उतपाती द्वौ तात।
निजभल जो भूपतिचहौ बदौभेद विख्यात॥
प्रति उत्तर न राउ कछु दयऊ। तब उठिरुक्म तहांचलिगयऊ॥
जहँ शिशुपाल जुरानिधि सोहैं। जिनहिंबिलोकिलोकपतिछोहैं॥
बैठिकह्योमहीपसुनिलीजिय। गुणिनिजमनउपायदृढ़कीजिय॥
चक्रपाणि नीलाम्बर दोऊ। आये इहां बोलावन कोऊ॥
सावधान पुर की रखवारी। कह्योभूमिपतिसमयबिचारी॥
मनबिकलितसुनिभोशिशुपाला। बचनबद्योइमिमगधभुवाला॥
कठिन उपद्रक बिदित सुजाना। नहिंपरिणाम रुक्मकल्याना॥
बल सागर प्रपंच जल राशी। बध्योकंसबहुअसुर न त्राशी॥
दो॰ बाल बहिक्रम प्रबल अति कृत अपार संसार।
समर अजय पूरण पुरुष है दूसर करतार॥
तू न जान मैं जान प्रभाऊ। इन कर भेद जान नहिंकाऊ॥
खर्ग चंद्रधा समर पलाना। गयउ पुराण बार अकुलाना॥
क्रोधित मोहिं निरखि द्वौ भागे। हनहूं रुक्म गये सँग लागे॥
आदि अरूढ़ भये द्वौ भाई। धूमध्वजानग दयो जराई॥

व्याजक उभय अंतरित होई। गये द्वारका जान न कोई ॥
को त्रिलोक इनते बलखानी। कर्तनअलख विदित विज्ञानी ॥
कारणगत आगम ह्यां नाहीं। कौतुकीय रस भंग कराहीं ॥
यहिते रुक्म सो करो उपाई। जेहिकृत हमरी पति रहिजाई ॥

दो० क्यों शोचत मनभूप तुम रण अबूझ वै दोउ।
नृत्ये वनवन त्रियन सँग वनवासी कह कोउ ॥

रावत कृत प्रभाव अज्ञाता। कहा भयउ नृप कंसहिघाता ॥
चणभरि संगर संगम ठानों। मिथुनजिह्मकर नृपधरिआनों ॥
इमि धीरज धराय महिपालै। गयो महीप रुक्म प्रभुतालै ॥
चिंततगत रजनी भा प्राता। इतउतव्याहसाज कुरुजाता ॥
रुक्मिणि द्विज हरिपासपठावा। शुभसँदेश यहप्रभुहिसुनावा ॥
दिवस विवाह केर प्रभुआजू। सजे अखिल उत्साह समाजू ॥
जब दिन शेष दंड युग रहई। दिव्यार्चन मुहूर्त तब अहई ॥
पुरप्राची जग मात निकेता। आउब तहां सखीन समेता ॥

दो० मम प्रण लाज तुम्हारकर राख्यो दीनदयाल।
आन प्रसंग सुरंग शुचि सुनु चितदै नरपाल ॥

त्रियनरुक्मिणिहि उबटिन्हलावा। सुथलचौकमधिपुनिबैठावा ॥
स्वर्ग मधून सुलेत चढ़ायउ। बहुरिउबटिन्हवाय सुखपायउ ॥
भूषण रचि षोड़श शृंगारा। करि बैठाय यकान्त अगारा ॥
पूजन समय ससिन सँग लाई। चली रुक्मिणी प्रेम बढ़ाई ॥
बाजत विविध तूर्य्य सहनाई। खग्ग अनेक सुभट चहुँघाई ॥
यहसुधि पाय भूप शिशुपाला। विपुल सुभटबोले तेहिकाला ॥
हरिभय त्रसित रक्षिबे काजा। पठये सकल बजावत बाजा ॥
निकरायुध योधा कृधारे। भयेभूप रुक्मिणि रखवारे ॥

दो० त्रियसमाज उडसल घटा मधिरुक्मिणि विधिरूप।
जगतमात लचित सगुण कथि न सकत कविभूप ॥

पहुंचीजब जगजननिनिकेता। तब धोयेकर चरण समेता ॥
करिआचमन द्विजसुविधि पूजा। हरिपद आशतजे मतदूजा ॥

विप्रबधुन पुनि दै ज्योनारा। पटभूषण पहिराय अपारा॥
दै दक्षिणा बन्द पग राई। अभिमतदानि आशिषा पाई॥
परिक्रमा पुनि करियुत नेहा। हरिपद रति यांच्यो बरएहा॥
बाह्यालय आई नृप जाया। चहुँदिशिदरशनहरिकरपाया॥
विकलितगमनभवनचहकीन्हा। तेहिअवसर हरिदर्शन दीन्हा॥
रथारूढ़ प्रभु निपट अकेले। खलदल मध्य आशुही पेले॥
दो० प्रियबादिनिकह रुक्मिणिहि आये लखु जनपाल।
देखिध्वजा रथ मुदितमन भई दशा आबाल॥
अंग अंग प्रति तेहिमुद बाढ़ा। हरिपद कमल नेहभा गाढ़ा॥
बिहँसत चली सखिन सँगसोई। छवि त्रिलोकिअवितउरभ्रमहोई॥
प्रभुप्रेरयो भवमोहनि माया। सबकरबुधिबलहरयोनिकाया॥
इत रुक्मिणि निजवदन उघारा। गयचकचौंधिअखिलरखवारा॥
रहित स्मृतिगत सुधितन सोई। जीवत सब शव चेतककोई॥
दारज चित्र पुत्रिरक्षक गन। हरिरुक्मिणिगही आनँदमन॥
यानारूढ़ित जब हरिकरेऊ। रोमांगित रुक्मिणि थरहरेऊ॥
तजि जगलाज चली हरिसाथा। प्रगट प्रीति बैषानसगाथा॥
दो० नेम यज्ञ व्रतफल लह्यो नृपजा हरिपद पाय।
देखत खल नहिंकहतकछु अकथकथा कुरुराय॥
पुंडरीक हरिसदल ते जिमि अहार लैजाय।
त्यों रुक्मिणि हरि हरिचले दुंदुभिदीन्ह बजाय॥
सैन सहित रेवतिरमण आइ मिले कुरु भूप।
मंगल भजु यदुनाथ पद कर्तब अकथ अनूप॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांरुक्मिणीहरणवर्णनोनाम
चतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४॥
दो० बनसुत सुतकर बरणलिपि कारक लसत अनीक।
तद्विपरीतन होत भव ज्यों पाहन की लीक॥
मनुज उपाय अनेक कृत पौरुष तुल्य सुजान।

सुख न लहत संसार में बुधि विपरीत अमान ॥
सुनि जन भाषत रोपि प्रण यह कर्तव मतिधीर।
हरिपद ध्यावै प्रेमयुत नशै अखिल भवभीर ॥
परिहरि राधारमण रति पूजत देव अपार।
सिद्धान्त मत मुक्ति तेहि होत अंत संसार ॥
अकरकरयो जग सर्व जेहि पूरणपुरुष अनादि।
कृष्णरूपजन्म्यो सुब्रज तेहिभजुतजिभ्रमवादि ॥

सुनिवर कह्यो सुनौ कुरुराई। कछुक दूरि पुरते हरिजाई ॥
संकोचित लखिरुक्मिणिभाषा। कतशोचतलहिफलअभिलाषा॥
कम्बुध्वनि हौं करत सुजानी। निजबलकरैंसुनतअभिमानी॥
तिनहिंजीतिश्रुतिव्रततोहिंव्याहौं।अखिलशोकद्विजजनकरदाहौं
असबदितेहि निजअङ्कपहिराई। बामभाग रोचित बैठाई ॥
पंचजन्य फूंक्यो जनपालक।जासुशब्दअघखलगणघालक॥
मगधराज शिशुपाल समाजा। सुनतशब्द चौंके कुरुराजा ॥
नगर कोलाहलचहुंदिगभयऊ। नृप दुहिताहरि हरि लैगयऊ ॥

दो० कह्यो रक्षकन चरित यह निज भूपहि समुझाय।
सुनिआमर्ष्यो मगधनृप सहशिशुपाल सहाय ॥

कवचधर्म करि वपुष नरेशा। आयुध लिये सक्रोध कुवेशा ॥
कटक समेत रोष मन आनी। प्रभुपश्चातचल्यो अभिमानी॥
जिमि यूथप हरि बालहि धावै। नहिंपरिणाम कुशलतापावै ॥
निकटजाय कह हरिहि प्रचारी। सुनुत्रियचोरमनुजअविचारी॥
कत पलात तजिरणमहिआजू। क्षत्री ह्वै न गहत उर लाजू ॥
वीर समर्थ समर जित जोई। संगर पृष्ठि न देवत सोई ॥
कठिन वचनसुनि प्रभुकहताही। महा अबूझ मूढ़ तू आही ॥
जानि अमृत पावत कस मूढ़ा। मम कर्त्तव त्रैकाल अगूढ़ा ॥

दो० असकहि प्रभुआज्ञादई फिरे अखिल यदुजात।
क्रोधभरे दोउ ओर ते करै लगे निज घात ॥

छं०तो०लागे चलै बहुबान। फुंकरत व्यालसमान ॥

उरशोच रुक्मिणिनारि । करतारका होनिहारि ॥
प्रभुताहिव्याकुलजानि । योंकह्यो बचनबखानि ॥
क्योंवृथा कीजियशोचु । दुखदानि उरते मोचु ॥
धरभारहरमोहिंजानि । यहबचन जी अनुमानि ॥
क्षणमें हनौं सब बीर । जिमिचक्रिहरत अहीर ॥
इमिताहि प्रभुसमुझाय । रण में रहे रुपिठाइ ॥
सुरसाजि व्योमविमान । आये सुरण बलवान ॥
निरखैं महा संहार । जड़ लरतकरि हहकार ॥
यदुजात प्रबल महान । मर्दन करत बिनप्रान ॥
छं० मर्दतखलन यदुजात बहुबिधि पूरिशर अवलीमहा ।
धर मुंडकर पद महिपरत कटि जात नहिं कौतुककहा ॥
बाजत दमामे सूत बोलत सुयश दुहुं दिशि मुदभरे ।
गजपाल गजपति सों भिरे पायक सु पायक सों अरे ॥
कृतसमर रथपति रथपतिन सँग अश्वपतिसँगतुरिपती ।
रणभूमि बीर अपार गर्जत तर्जि कृत संगर अती ॥
कादर पलावत जीव निज लै चतन युत घूमत बली ।
धावत कबंध अनेक रणमहिं मारु धरु पूरित थली ॥
मेदिनिमढ़ी बहु रुंडशिरमय रुधिरसरित सोहावनी ।
गज मृतक किधौं करारसोहत खड्गकवि सफरी भनी ॥
बहुचर्म कच्छप मानराजहिं जान मृतक बिराजहीं ।
खग पंथितिन चढ़ि पारधावहिं देखिसुर सुखसाजहीं ॥
बैताल भूत पिशाच योगिनि सरित तट पुरजन बसे ।
जल पान क्षतज ते करतबहुबिधि देखिरण शंकरहँसे ॥
शकमुण्ड पहिरतमुदितमन निजसैनयुतकल्याणमय ।
वायस शृगाल अपार श्वानसुमान्स भक्षत मग्नवय ॥
दो० निरखि समर बिकराल अति कोपे मूशलपानि ।
क्षणमहँखलमर्दैसकल धरिउर अधिकग्लानि ॥
राम शिशिरखग तरुखल पाना । देश बिदेश भये चहुँथाना ॥

कछुकच्चतनयुतनृपशिशुपाला । सहमगधीश गये तेहिकाला ॥
अलपक दूरिजाय भय ठाढ़े । अतिमनत्रसितशोकउरबाढ़े ॥
कह शिशुपालसुनौमगधीशा । अपयशतिलकचढ्योममशीशा ॥
यहिकारण जीवन धृग मोरा । भयो क्लेशयह कुलिशकठोरा ॥
करिरण मरौं रजायसु देहू । नततप हित काननमग लेहू ॥
धन परिवार राज तन धामा । गत बहोरिपावत परिणामा ॥
पतिगत मिलत न कौनौं काला । जीवनवृथावदत शिशुपाला ॥
दो० तुम प्रवीण सबभाँति नृप कहा कहौं गुणज्ञान ।
अज्ञानी शोचत विपुल नहिं बिखलतधीमान ॥
लोक अलोक कार करतारा । अवशिमनुजकृतकृत्यअपारा ॥
ईश स्वतंत्र सुवश सुन भाई । पराधीन यह जीव सदाई ॥
नटनागर जिमि पूतरि दारा । स्ववशनचावतविविधप्रकारा ॥
तिमि अदृष्ट वश जीव विचारौ । निजवशगत त्रैकाल निहारौ ॥
दुख सुख पाय बिबुधयाहिकारण । शोकनकृतकरिदोउ निवारण ॥
यथा स्वप्न सम्पति जग राई । तथा समस्त त्रिपुर प्रभुताई ॥
त्रैविंशति चोहिणिदल साजा । गा मथुराहरिअजयककाजा ॥
हन्यमानभा मुनि महिभारा । यहिहरि मथ्यौ कटक हमारा ॥
दो० हाथी धरणी धा समर संग्रह कस्यो बहोरि ।
जयति युद्धमहँ पाय भल द्वौ भागे रणछोरि ॥
तवकदेन पुनि सौख्यन पावा । सहज स्वभाव संगहौं धावा ॥
नगारूढ़ लखिघृत तृण दारा । रोपि जलज प्रेर्यो चहुँवारा ॥
भस्मित जानि भूमिहौं आवा । दैव जानको इनहिं बचावा ॥
अद्भुत गति माया धर दोऊ । इनते प्रबल त्रिपुरनहिं कोऊ ॥
काटे वय नहिं काल कटावै । चतुर सुजाननीति अमगावै ॥
उचित अहै राखिय नृप प्राणा । जग परिणामहोइ कल्याणा ॥
पालक देत मनोरथ सबहीं । तीनिकालमहँ कबहिंनकबहीं ॥
ज्योंहौं अजय जयति द्वौ पाई । परिहरि हठ गृह चलियनृराई ॥
दो० सुनि शिक्षा धीरजधर्यो चल्यो भवनयुत शोक ।

यदुवंशी प्रफुलितसबै शशि बिलोकि जिमिकोक॥
उत शिशुपाल जननि भुवराई। पुत्रागम बिचारि सुख छाई॥
लागी करन मंगलाचारा। असगुन ताहि भये बिकरारा॥
यहि अन्तर यह सुधिदे काहू। दुलहिनि लैगय यदुकुलनाहू॥
समर सैन युत सब बिधि ठयऊ। पुनिपलाय गृह मारगलयऊ॥
चित्र लिखित अवाक सुधिपाई। अब प्रसंग सुनौ कुरुराई॥
रुक्म अजय सुनि दो नृप केरी। कहो सभा इमि नैन तरेरी॥
मम सन्मुखकिमि हरिबचिजाई। अवशि ताहि मर्दौं रनताई॥
लै रुक्मिणी बरौं शिशुपाले। पूरब प्रण पूरण प्रतिपाले॥
दो० जो न करौं यह कर्म तौ बसौं न पुनि यहिधाम।
एक चोहिणी सैनसँग चल्यो बिजय रणकाम॥
बेगि धाइ प्रभु दलखल रोका। प्रबल धनुर्द्धर कृष्णबिलोका॥
कहोरुक्म निज अनिहिप्रचारी। बधौं सकल तस्कर करधारी॥
जीवत चोर बांधिहौं लाऊं। तुव देखत यमपुर पहुँचाऊं॥
खलमुख सुनियदुजाकदुबानी। फिरे समस्त समर बिज्ञानी॥
पूरब पावस बरषेउ बाना। बहे असुरतृण चहुंदिगनाना॥
रथचढ़ाय प्रभुतट खल आना। ळंगवाक्य इमिप्रभुहिसुनावा॥
ओकपटी दुवंश जग जाना। का जानै महीप सन्माना॥
रम्भापाल बाल वय रहेऊ। करिचोरी घृत माखन लहेऊ॥
दो० सो बुधिउरधरि मूढ़मति हरी बाल ह्यॉं आय।
गोपन हमतुम कालकर यों बादिपुनि कुरुराय॥
इष्वासन चढ़ाय गुणनाना। प्रभुचिन्हित त्यागे अज्ञाना॥
ते शर खंडे मध्य कृपाला। सरुढ़ रुक्म अलिहनउत्ताला॥
खग दिशिचारि पूरि नृप रहेऊ। तब हरितोमर शरधर गहेऊ॥
अमित शिलीमुखरणमहँत्यागे। जड़सैनप त्रैदिशि नृपभागे॥
आन असुग मारे कम्बोजा। रथसारथी कस्यो बिन खोजा॥
बहुरिशरासन भंज्यो तासू। पुनि बहुअस्त्रदरे प्रभु आसू॥
[illegible] गहि तब धावतभयऊ। गदा घात रथ ऊपर ठयऊ॥

आशुश्यामतोहिबंधनकीन्हा । रुक्मिणिसविनयइमिकहिदीन्हा ॥
दो० तुव सेवक मम बंधुयह जानि मारयो असुरारि ।
परमात्मा प्रभुअजय तुम किमिखलसकतविचारि ॥
तुमअनादि योगेश्वर ज्ञानी । वाणीपति भोगी धरध्यानी ॥
सेवक सुखद स्ववशतन धारा । तुवकृत तीनौं काल अपारा ॥
मूरुख बन्धु कि जानै योगा । प्रभु आधीन बुद्धि उद्योगा ॥
सुबुधिसन्त मूरख अपराधा । छमत सदाप्रभुबुद्धिअगाधा ॥
मरदेयाहिअलोकविलोकिया । किमिकीजियममभ्रातसशोकिय ॥
अजय निरंजनप्रभुकरतारा । सम्बन्धी बध हृदय विचारा ॥
यह अयोगकृत करिय न स्वामी । छमा राशितुव चरणनमामी ॥
जनक मोर सुत बध दुख पैहै । प्रभुकेहि काज प्रीति तुव ऐहै ॥
दो० परसि चरणरज पतित जग पावतमुद सबभाँति ।
भीष्मकहांवैशोकमय यह अनुचित न सोहाति ॥
भल हित सम्बन्धी संग कीन्हा । बाँधिखड्गवधहितकरलीन्हा ॥
अस कहिपुनि तनकंपज नावा । बंधु बंध लखि चखजलछावा ॥
दौकर जोरि चरण गहि मांगा । बधियनप्रभुकरिमम अनुरागा ॥
आरत गिरा सुनत आरत हर । कोपशांत कीन्हो तेहिअवसर ॥
सैन देइ प्रभु सूत बुझावा । चौर कर्म तेहि तेहि करवावा ॥
दाढ़ी मूछ मुंडि नृप ताकी । कसिरथरुक्मचल्यो सोहाकी ॥
रेवति रमण मारि खल सैना । चले श्याम पहँ भूप सुखैना ॥
मर्दिभद्धि सरसुत हरि जैसे । मिलै युत्थ निज हरिगयतैसे ॥
दो० निकट जाय बंधन रुकुम देख्यो मूशल पानि ।
कह्यो कुचालि न जाततव राखत नाहिं गलानि ॥
खंड्यो तात स्वकर व्यवहारा । बाँध्यो रुक्मनकर्यो विचारा ॥
उज्वल यदुकुल तीनौं काला । अनुचितकसकीन्होगोपाला ॥
जेहि बिरिया रणहित तुवपासा । आवायहअहमितवुधिनासा ॥
कसनबुझाय तबहिं गृह फेर्यो । तद्य तात मोहिं नहिंटेर्यो ॥
अस बदि बंधन ताकर मोचा । करिसत्कार सुमनकहँ रोचा ॥

पुनिरुक्मिमणिप्रतिकहसनुबाला। लेखकचरणअमिटातिहुँकाला॥
बन्धन सोदरलखि न गलानिय। कर्माधीन त्रिपुरअनुमानिय॥
संचित परारब्ध क्रिय कारा। त्रिबिध अदृष्ट भोग संसारा॥
दो० पुनि क्षत्रियकर धर्म रण लहै जयाजय दोउ।
दुखरूपी यहि जगतमें सुख देखिय दुखसोउ॥
माया बिवश जीव निज भूला। भव रथ्याविचरत मनफूला॥
सम्पति विपति दुखादुख जानत। योग बियोगजयाजयमानत॥
अनुजविरूपबिलोकिनशोचिय। अनभवबूझिअखिलदुखमोचिय
नित्य अमर अज आतम देही। कौनौविधिन नाशजगतेही॥
तनपतिगत न जीवपति जाई। दृशादृष्ट द्विबिधिभव गाई॥
नीलाम्बर बाणी सुख सानी। सुनिरुक्मिणिनृपतजीगलानी॥
कहत सव्रीडसैन मधि श्यामहिं। हाँकिय कन्त बेगिरथधामहिं॥
प्राण प्रियाकी सुनि प्रभुबाता। चले द्वारकहि जनसुखदाता॥
दो० इतै रुक्मनिजसैन मधिजाय मिल्यो महिपाल।
कहत भयो क्लेशित बचन महाबिकल बेहाल॥
प्रण अमोघगा अपयश भारी। निजपतिगतअवयहैंबिचारी॥
परिहरि गेहाश्रम धनधामा। बैखानस ह्वैहौं परिणामा॥
तबकोउ मचिवकहत असभयऊ। यह अबूझप्रण कसनृपठयऊ॥
बिभुयश्वी तुम प्रभू प्रतापी। महावीर रण रिपु गणतापी॥
समय निषिद्ध न शोचिय राई। भाग्य बिबश सखिंग द्वौभाई॥
द्विजपथप्रमे आगी बिषखचाई। तव सन्मुख रिपुगणनहिंरचाई॥
बिजय अजय द्वौ ममर प्रधाना। बयनल नहिं चिन्ततसज्ञाना॥
अति व्रीड़ापनि प्रण गत भयऊ। तुव उपदेश शीशधरिलयऊ।
दो० पितु पुर जाउँ न जन्म भरि रहै बिचारी बात।
ग्राम बसायो भोजकट तहाँ रह्यो नृप तात॥
प्रभुसराम द्वागवतनि आये। समाचार भूपति तब पाये॥
सिक्तामय अम्बर चहुँ द्वारा। पुरबासी धाये अविचारा॥
पुर शोभा बिरचैं शुचि चारा। जाबिलोकिबुधिपतिमतिहारा॥

युवती पुरुष चहूँ दिग आये। अत्यानंद उमग तनछाये॥
उग्रसेन लै निकर समाजा। आगे आय मिले कुरुराजा॥
बैदिक लौकिक विधि व्योहारा। करिमहीप लै चल्यो अगारा॥
जेहि अनमिष पुर कस्यो प्रवेशा। सगुण अखिल पायेबहुवेशा॥
नरनारी चहुँ ओर विराजें। लौकिक सब मंगलतनसाजे॥
दो० कोउ आरती उतारहीं कुसुमावलि पहिराय।
होत कुलाहल चारिदिशि उपमा कही न जाय॥
कृत परितोष सबनकर श्यामा। निज निकेत पहुँचे सुतरामा॥
आनँद मगन सकल रनिवासा। निरखिरुक्मिणीकांतिप्रकासा॥
यहिप्रकार कछु काल व्यतीते। यक दिन सभागये जनप्रीते॥
नृप पितु बन्दि वद्यो भगवाना। सुनोतात श्रुतिवाक्यप्रमाना॥
समर जीति त्रिय लावत जोई। राक्षस व्याह कहावत सोई॥
तब कुल गुरु नृप तुरत बोलावा। हरिविवाहहित दिवससुधावा॥
सचिव सुसेवक पुरजन जेते। सामग्री बिवाह कृत तेते॥
लिखि पत्रिका निमंत्र पठावा। कुरुपांडव आदिक न बुलावा॥
दो० सुद्धि पाय भवभूपतहँ आये सहित समाज।
कवि कोविद चारण लिये बान्धवादि सुनुराज॥
भीष्मक नृप विवाह सुधिपाई। यौतुक विविध दयो पहुंचाई॥
आयुध भूषण पाटित वासा। स्यंदन करभ तुरग बहु दासा॥
कन्यादान भवन मन कीन्हा। द्विज द्वारा पठाय नृप दीन्हा॥
इतबहु अवनिप निवते आये। द्वारावती चारि दिशि छाये॥
उतयौतुक लै महिसुर आवा। महा मोद यदुजातन पावा॥
पुरशोभा जस रची नृपाला। कहिनहिंसकतकोटिपतिव्याला॥
आदि शक्ति त्रैपुर कर तारिनि। जेहि पुरभई महीप विहारिनि॥
अरु जहँ ईश ब्रह्म करतारा। पुरुष पुराण धाम सुख सारा॥
दो० तहिपुर की शोभा वदत शारद बुद्धि भ्रमाय।
किमिप्राकृतिकोउ कहैतेहिअरु विवाहदिनराय॥
अष्टसिद्धि नवनिद्धिनृप विरचि मनुज तनआय।

सकल सौख्यसन कहँदये क्योंवय वरणी जाय ॥

दिवस विवाह आव जब राजा। सजे सबन बहु मंगल साजा ॥
जग श्रुति रीति प्रथम करवाई। धर्म प्रबंधरहै जेहि छाई ॥
प्रभुरुक्मिणिहि सँवारि सप्रीती। मंडफ तल बैठार सप्रीती ॥
सुमनस त्रिदश जातिनर देही। कौतुक हित आये वय तेही ॥
लखिहरि रुक्मिणिरूप अनूपा। नमत अजादि देव कुरुभूपा ॥
यदुवंशी नृप नाना जाती। यथा उचित बैठे बहु पाँती ॥
गर्गाचार्य आदि मुनि आये। श्रुतिवतअखिलकर्म करवाये ॥
वेद ऋचा बहु विप्र उचारैं। शुद्धशब्दसुनि विधिहियहारैं ॥

दो० भांवरि फेरैं वेद विधि बजैं तूर्य डफ ढोल।
देववधू नृत्तहिंगगन डोलहिं बिबुध खगोल ॥

छं० डोलहिं बिबुध शुचि कुसुम बर्षहिं दुंदुभी बहुवाजहीं।
सिद्ध साधक यक्ष चारण गंधर्बादिक भ्राजहीं ॥
देवांगना कल गान मंगल सुनत मुनि ध्यानै तजैं।
इत चंद्रवदनी मकरनैनी अकर गुण गानै सजैं ॥
वामांग हरिके डारि भामरि रुक्मिणिहि बैठाइयो।
कुलदेव पित्रादिकन के पद बंदना करवाइयो ॥
लखिरुक्मिणीतनरुक्मउज्ज्वलकोटिरतिछबिलाजहीं।
श्रीकृष्णछबिअतसीकुसुमवत्कथअकथसककोकहीं॥
कुल वृद्ध ब्राह्मण देव मुनि जोरी अनूप निहारि कै।
बहु देहिं आशिर्बाद सुखमय शुद्धचित्त बिचारि कै ॥
वसुदेव तोषे याचकन जनु मीन घरहीं भेकहीं।
गज बाजि रथ पट द्रव्य जल बर्षाय प्रावृट टेकहीं ॥

दो० बहुरि सबहि ज्योनार दै षट्रस चारि प्रकार।
ज्ञाति बन्धु तोषे सकल करि आदर सत्कार ॥

सो० देश देशके भूप बिदा होय निज गृहगये।
यह नृप चरित अनूप पढ़ै सुनै जो चित्तदै ॥

दो० अश्वमेध मख जौनफल और त्रिवेणी न्हान।

सोफल ताको देय हरि भक्ति मुक्ति कल्यान ॥
मंगल हरियश ध्यानसम नाशत कलिमलभेक।
क्योंनहिं गावत दुचित तजि करिनिजचित्तविवेक ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांरुक्मिणीविवाहचरित्रवर्णनो नामपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥
दो० योगीजन शुचि ध्यानयुत ध्यावत प्रेम बढ़ाय।
करिकरणी हठयोगकी लहत पर्म पदभाय ।
सुमिरण पूजन बंदना प्रीति श्रवण दासत्व ।
पदपरश कीरतनहु आत्म निवेदन तत्त्व ।
जेहि ध्यावत नव भजनकरि बहुज्ञाता सुखरूप ।
सोइ निरंजन दासप्रिय भयोमनुज यदु भूप ।
ताहि भजिय तजि दुमतिहि यहैज्ञान को मूल।
मुक्तिलहै संशयनहीं बदत साधु अनुकूल ॥
मंगल के मत तीनिपुर अपरवस्तु कोउनाहिं।
परिहरि हरियश मुक्तिदा वृथिशोचियमनमाहिं ॥
सुनु कौरवमणि रुचिर प्रसंगा। एकसमय निजगिरिधरगंगा॥
कंजासन आरूढ़ीशाना । तजिकुभेदकृत आतम ध्याना ॥
आकसमात वारिवरकेतू । गयउ समाधि जगावन हेतू ॥
हन्यो कुसुम शर सवलित मारा। मनक्षोभ्यो तब रुद्र भुवारा॥
कामकेलि मन आवत भयऊ। पुनिचहुंदिगविलोकिअसठयऊ॥
अंतरयामी प्रभु त्रिपुरारी। दाह्योकाम क्रोध करिभारी॥
पावक विजयहुँ जिमिदारा। तथा मारखल करयो विचारा॥
कंतनाश लखि रति अकुलानी। विकलप्रणिपातिउरहनिपानी॥
दो० अहि मणिविनु निशि चंदविनु ज्यों पाठीनकहीन।
तथानारि पति विनु जगत रतिइमि बदत मलीन ॥
दयाराशि हर सहज सनेही। विकल विचारि दीन्ह वरदेही॥
द्वापर विष्णु कृष्ण तन धरिहैं। बहुप्रकार कौतुक भवकरिहैं॥

तिनकेगृह जन्मिहि पति तोरा। सत्य जानु ममबाक्य प्रघोरा॥
नाम प्रद्युम्न होइहै तासू। संबर हरि लै जैहै आसू॥
डारिहि जाय राशिकी लाला। मकर भक्षिहै तेहितहँ बाला॥
पुनि संबर गृह आइहि सोई। बात भविष्य नारिहौं जोई॥
मम आयसु बसुतू तेहि गेहा। मिलिहि तोरपति कर्तब एहा॥
प्रतिपाल्यो तेहि सहित सनेहा। बधिसंबर तोहि लैनिजगेहा॥
दो० द्वारावति महँ आयपुनि क्रीड़ा करिहि अपार।
तोषीरति यह बचन कहि तुरत सो चली भुआर॥
बिरचि युवति तन संबरधामा। आयबसी सुंदरी ललामा॥
नृप उत रति नित मारगहेरैं। मिलैकंत प्रियदुःख निवेरैं॥
इतरुक्मिणि तन गर्भ सोहावा। पूरणकाल जन्म सुतपावा॥
तब महीप ज्योतिषी बोलाई। पुत्रजन्म बेला समुझाई॥
बिप्र बिचारि कहैं सुनुराई। भयउसूनु गुणनिधि सुखदाई॥
बल बिक्रम श्रीमान सुजाना। एकबात बिपरीत महाना॥
बारिनिवासिहि सुत आबाला। शत्रुमारि आइहि सहबाला॥
नाम प्रद्युम्नकाम अवतारा। यहनृपज्योतिषशास्त्रबिचारा॥
दो० असबदि द्विजबर गृहगये लै दक्षिणा अपार।
भूप सदन ततक्षण भये अमित मंगलाचार॥
ऋषि नारद संतत शुचि भाऊ। संबर भवन गये सुनु राऊ॥
का सोवत सुख नींद अचेता। तवअरिजग जन्म्योझषकेता॥
प्रद्युम्न नाम कृष्णके धामा। करुउपाय नत दुखपरिणामा॥
अस उपदेशि देवऋषि गयऊ। ताकेहृदय शोच अतिभयऊ॥
अलख रूप द्वारावति आयउ। श्यामधामनिर्बुद्धिसिधायउ॥
रुक्मिणि सुत पय पान करावै। मन आनंद सुबुद्धि बढ़ावै॥
करिमाया आसुरी कराला। शिशुहरिसंबरचल्यो नृपाला॥
नारि वृंद कोउ जान न भेदा। भयउसबहि बालकबिनुखेदा॥
दो० प्रभुजाना जड़ कर्म नृप पैन कह्यो कछु बैन।
बिधि कर्तब पुनि काल खल जान्यो पंकजनैन॥

रुक्मिणि इत्यादिक त्रिया रोय उठीं तेहिबार ।
रुदन शब्द सुनि नारिनर बहुरो नृप आगार ॥
करत विचार विपुल यदुजाता । लहत न भेद सूनु हरताता ॥
मुनि नारद आये तेहि काला । समुझायेसब जानि बिहाला ॥
पुत्रशोच जनि तुम कोउ करहू । सुनिममवाक्यशोकपरिहरहू ॥
मैं विधि बरण विचारेहीमें । तासु काल नहिं तीनिपुरीमें ॥
सानँद रहिहि देश पर देशा । कहत न पैजानत हृषिकेशा ॥
प्रौढ़भये निज प्रिय सँगलाई । प्रद्युम्नसबहिमिलिहिपुनिआई ॥
हौं जानत हैं जेहि थल सोई । पैन कहत विधि कर्तब जोई ॥
यहि प्रकार नर नारि बुझाई । स्वपुर गये नारद ऋषिराई ॥
दो० उत संबर लै अतन कहँ पय निधि बोरयो जाय ।
मत्स्य प्रथुल भक्ष्यो तुरत विधिकर्तब अतिताय ॥
केवट सोइ मत्स्य गहिराई । दयो भेंट सम्बर कहँजाई ॥
पाकालय सुशरि पठवावा । पाककार झषउदर चिरावा ॥
ताते एक श्यान प्रथुगेमा । निकरी नृपउज्वलप्रतिसोमा ॥
तासु जठरते एक कुमारा । प्रगट्यो जासुवदन पतितारा ॥
श्यामबरणजनुद्वितियगोपाला । बनजचक्षुउर बाहुबिशाला ॥
विस्मित भयउ देखि भषकारा । दीन्होरतिहिसोझटितकुमारा ॥
यह सुधिपायअसुर चलिआवा । सुत विलोकिभइआनँदपावा ॥
सानँदरतिहिकह्योप्रतिपालौ । अहरजनीशिशुकखलखिचालौ ॥
दो० लैबालक आलय गई रति अतिमोद बढ़ाय ।
कौतुक दृष्टा मुनि कह्यो रतिहि भेदु सबु आय ॥
मानि प्रतीति करै प्रति पाला । प्रफुलित नारितीनिहूं काला ॥
कलावृद्धिजिमि सित मृगअंका । वृद्धति सूनुतथा निरशंका ॥
रूप प्रकाश प्रभासुख देखी । हृदय लगावत प्रीतिविशेखी ॥
अक्षानन कहुँ चूम कपोला । कंवर लावत कहि मृदुबोला ॥
धन्य विश्वकर्म्मा सुखदाई । मीनउदर पति दीन्ह मिलाई ॥
विशद क्षीरनित लाय पियावै । कहै कंतबहु विधि दुलरावै ॥

जवभा पुत्र बयसशर वर्षा। अलंकार पहिराव सहर्षा॥
मनहिं प्रबोधत लखिशुचि रूपा। लहत अलौकिकमुदकुरुभूपा॥
दो॰ कहत सुनौ पति चित्त दै पूरुब कथा सहेतु।
जारि तुमहिं अतिक्रोधकरि मोहिं बरदिय वृषकेतु॥
रति निवसौ सम्बर गृह जाई। मिलिहितोरपतितेहिथलआई॥
चितवत पंथ रहिउँ तेहि आही। तुमहिं पाय दीन्हो दुखदाही॥
धनुर्वेद पुनि ताहि पढ़ावा। थोरेइ काल निपुणता पावा॥
यक दिन रतिकहसुनौगोसांई। रहत धाम यहि अनसोहाई॥
तव पितु त्रिपुरनाथजग जाना। चलौ बसिय द्वारावति थाना॥
जननी रुक्मिणि दुखितमहाना। प्रभुतुव विननतासुकल्याना॥
दुखित पयश्विनिबिनु सुतजैसे। अंब रहत धोस निशितैसे॥
बधिजड़संबरमोहिंसँगलीजिय। दरशनजननिजनककेकीजिय॥
दो॰ यहिबिधि नित प्रतिनारिसो उपदेशत नरनाह।
सुनत चित्तदै कृष्णजा कृत विचार मनमाह॥
प्रौढ़ भये यकदिन रतिनायक। हितअनहितसबकेसुखदायक॥
संबर सभा गये मुद पाई। लीनअननिपतिहृदयलगाई॥
सुतसम जानि उछंग बिठावा। यह प्रसंग मधिसभाचलावा॥
पुत्र तुल्य पोष्यो सुत एहा। प्रतिपालिहिपरिणामस्वदेहा॥
सुनि सरोष कह यदुपति मानी। हौं तुव शत्रु करौं तनहानी॥
करि रण दुष्ट देखु बल मोरा। सुवन न जानु कालहौं तोरा॥
रज अनुराग बध्यो मुसुकाना। द्वितिय प्रद्युम्न भयउ सज्ञाना॥
पय पियाय का पाल्यो नागा। हमसों समरकरनसुत लागा॥
दो॰ अस्त्र हाथलै उठ्यो शिशु कहा सुनौ महिपाल।
करौ युद्ध मम संगतुम जानि आपनो काल॥
हँसि कामारि कहा सुनु सूना। ग्रस्यो कालतोकहँ यहिजूना॥
प्रद्युम्न नाम मोरही नीचा। बोरयोउदधि हनौ क्षणबीचा॥
शमन रूप लखु तू मोहिं आजू। तजु पितु तनय नातबेकाजू॥
क्रोध्यो सुनत कामरिपु राई। आयुधअमित लिये तेहिधाई॥

सहज बैर जाग्यो उर तासू। काली यथा देखि अहिनासू॥
सजि सहाय बहुखग्ग बोलाये। बिस्ततठाम तहां चलिआये॥
लैकर गदा सरोष सिधावा। शब्द बलाहककृत रणआवा॥
श्यामहिं कहत तोहिं को राखै। अपर कुबचन कालबश भाखै॥
दो० गदाघात कीन्ही असुर सो भंज्यो यदुराय।
जलज बाणप्रेर्यो बहुरि सकलजगतदुखदाय॥
बरुण विशिखहति ताहिनशावा। सदाचार तोमरहि चलावा॥
भंज्यो तेहि गजारि नाराचा। युद्ध सुरासुर भंज्यो सांचा॥
सम्यक् अस्त्र शस्त्र खल घाते। मघवा हितुते अखिलनिपाते॥
भयउ निरस्त्र भिर्‍यो बरियाई। मल्ल समर गति बरणिनजाई॥
वृन्दारक समेत रिपु पाका। कौतुक हित आये सब नाका॥
गहिसंबरहि उड़्यो शिव द्रोही। गयउ अनंततज्योनहिंओही॥
असिबर घाति तासु शिरकाटा। पर्‍यो भूमितल रुण्डलिलाटा॥
पुनरपि आय असुरदल नासा। कंतविजयलखिरतिहिहुलासा॥
दो० मघवायस सुरधाम ते आयो रुचिर बिमान।
तदारूढ़ रति काम द्वौ पितु पुर कर्‍यो पयान॥
विद्युल्लता सहित जीमूता। सोहत तस तिय संग हरिपूता॥
क्षणमहँकनकनगरचलिआये। यानत्यागि पितुसदनसिधाये॥
अकस्मात सब नारि निहारी। कहहिं श्याम लाये कोउनारी॥
प्रद्युम्न कहँ न काहु पहिचाना। बादि बदैं आवत भगवाना॥
आय प्रद्युम्न कहा कहँ माता। सुखसागर कहँ यदुपति ताता॥
रुक्मिणि सखिसों कहतप्रचारी। अलिकोआहिश्यामअनुहारी॥
मोरीजान तोर सुत आली। सुनतवचनसखिमणिप्रतिपाली॥
छुटीउरजते अमृत धारा। शकुन अंग फरक्योबहुबारा॥
दो० सुत भेटन हित चित चहै डरै पतिब्रत धर्म।
तौने काल सुरर्षि तहँ कहा आय सब मर्म॥
तबरुक्मिणिनिजहृदयलगावा। चूमिशीशअतिशयसुखपावा॥
पाय सुद्धि आये बनवारी। पर्‍यो सूनु पितुपद सुनवारी॥

वेद विहित करि कर्म बिवाहा। रति प्रद्युम्नकरकियउदबाहा॥
पुर नर नारि मुदित सबभयऊ। गृह प्रतिसुतमंगलनृपठयऊ॥
जेहिबिधिनृप प्रद्युम्न अवतारा। अरु जिमिरिपुसंबरकहँमारा॥
प्रियसमेत जिमि पितुपुर आये। सो चरित्र परिपूरण गाये॥
प्रभुअजअमरत्रिपुरयश छायो। लोक लोक मर्याद बँधायो॥
मूरख तेहि ध्यावत जग नाहीं। भ्रमतफिरत बहुबीथिनमाहीं॥
दो० मंगल साँचे मग चलिय तजिबीथी भयकार।
भजिय सदा रुक्मिणिरमण भक्ति मुक्तिदातार॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांप्रद्युम्नस्यउत्पत्तिसंबरबधवर्णनो
नामषटपंचाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

दो० काम क्रोधत्याग्यो नहीं भूति लपेटे अंग।
सिद्धि लह्यो नहिं कोटिकृत बरणे बिबिध प्रसंग॥
काया बन खोज्यो नहीं तरुबन फिरे अपार।
परमातम मृगहै नहीं यों बुध करत बिचार॥
इन्द्रीजित श्रद्धा सहित करि मन निज आधीन।
शोधत आतम आपनो साधू चतुर प्रवीन॥
करणी कठिन न बनिपरत कलि कुयोग चहुँओर।
कपटत्यागि हरियशगुणे सबविधि भल मन तोर॥
कीरति बिमल यशोदजग गिरिधरकी दिशिचारि।
ताहि गाय दुर्भाव तजि दुहुँ पुर लेह सम्हारि॥

मुनि कह सत्राजित यक रहई। सो मणिचोर श्यामकहँकहई॥
पुनिप्रभुविभवसमुझिमनमाहीं। हरिहिंदीन्हनिजसुताबिवाही॥
को सत्राजित मणि कहँ पाई। तस्करता क्यों प्रभुहि लगाई॥
पुनिकाजानि सुता निजदीन्ही। कहौ मुनीश्वर कथा नवीनी॥
यक यादव सत्राजित नामा। बसत महीप द्वारिका धामा॥
तपस मित्र कृचित ब्रत साधा। जानिईश तन मन आराधा॥
तप कराल लखि हरष निहारा। दैमणि पुनि इमिवचनउचारा॥

सुत सीमन्तक यहिमणि नामा । सुख सम्पति यामहँ विश्रामा ॥
दो० मम सम तेज प्रताप चित जानि ध्याइये याहि ।
अभिमतफल सुत पाइहौ यामहँ संशय नाहि ॥
यह मणि रहहि जौनआगारा । तहांन दुखगण करिहिप्रचारा ॥
करि प्रहून मणि लै गृह आना । नितप्रतितेहिपूजनचितलाना ॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै । हंस समान जानि मुद पावै ॥
प्रतिदिन रुक्म लहै वसु भारा । रहै प्रसन्नित विविध प्रकारा ॥
अर्चनकाल एक दिन भूपा । मणिभासुखदविलोकिअनूपा ॥
शोच्योयहमणिप्रभुहिदिखावों । मान अखिलयदुकुलमहँपावों ॥
कंठ बाँधि मणि सभा सिधावा । यदुवंशिन लखिअचरजपावा ॥
श्यामहिंकहहिंसुनियदुनायक । जीव चराचरके सुखदायक ॥
दो० तुव दर्शनकी लालसा आवत पूषण देव ।
सत्य बात यह श्याम जी अति प्रकाशहै एव ॥
तुम अनादिअजबिनु पितुमाता । ध्यावत तुमहिं देवसुरधाता ॥
कमलादासी तुव गति जाना । अलखचरित पूरणभगवाना ॥
गुण अनंत विधि हरिहर कारी । गुप्त रूप प्रगटे असुरारी ॥
हरिकह यह न प्रभाकर होई । सत्राजीत भ्रम्यो जनिकोई ॥
तपफल मणियहिदीन दिवाकर । सो प्रकाशकर कहाकृपाकर ॥
सभा मध्य आवा मद छावा । सबकेउर मणि मोह जनावा ॥
निमिष रहित अनमिष तेहिहेरैं । कौनो ओर न मुख कोउफेरैं ॥
प्रभुकुलमणि दिशिदेखनृपाला । विस्मितभयोनिरखिमणिपाला ॥
दो० बिदा मांगि नरनाहते गयउ गेह निज सोय ।
नितप्रति आवै बांधि मणि सभहिन अंतरहोय ॥
प्रभु प्रति यदुजातन इमि कहेऊ । एक मनोरथ उर महँ छयऊ ॥
मणिलैनाथभूपकहँ दीजिय । बिशदसुलोकजगतमहँलीजिय ॥
सत्राजीत योग मणि नाहीं । नाथ विचारि देखु मनमाहीं ॥
हँसि हरि ताहि कहा यहिभांती । यहमणितातनतुमहिंसोहाती ॥
देहु महीपहि जग यश लेहू । गवनो गेह बचन सुनि एहू ॥

निज सोदर प्रति कहसिबुझाई। मणि मांग्यो यादवकुलराई॥
दयो न तात अनीति बिचारी। सुनि प्रसेनजितभयउदुखारी॥
सायुध मणि निज कंठ लगाई। चल्यो अहेर अश्वचढ़िराई॥
दो० घोर बिपिन महँ जाइकरि मृगया कस्यो अपार।
मृग भाग्यो यक भूप लखि कस्यो प्रसेन पछार॥
गयो गहन बन बनचरराई। अनुगामी प्रसेन जितजाई॥
अति बिकराल गुफाअंधियारी। प्रबिश्योतेहिमृगजीवदुखारी॥
क्रोधित प्रबिश्यो ताहि प्रसेना। निपट निहारन सूझतनैना॥
पंचानन लखि मणि उजियारा। धायसतुरँग प्रसेनहिं मारा॥
लै मणि बस्यो कंदरा ताही। अतिप्रकाशभातेहियसमाही॥
जामवन्त संयुत परिवारा। रहत गुफातेहि सुनो भुवारा॥
लखिप्रकाशहरितटचलिआवा।तेहिबधिमणिगहिभवनसिधावा॥
दुहिता पालन बांध्यो जाई। भयो प्रकाश गुफा सबठाई॥
दो० मणिइमि लैगयो भालुपति बधिप्रसेन छितिपाल।
संलग्नी भट तासुके आये भवन बिहाल॥
सत्राजीतहि बधो बुझाई। तुव बांधव बन गयउ हिराई॥
कानन सम्यक् खोजत थाके। कौनो चिह्न न पाये ताके॥
बन्धुतासुसुनिसुमतिभुलानी। दुखितभयउजिमिझषबिनुपानी॥
निंदनीय मन कस्यो बिचारा। बन्धु प्रसेन कृष्ण बन मारा॥
याँच्यों तब न दयो हौं वाही। घाति सहोदर मणिहरिग्राही॥
कोद्वितीय समरथ भव आना। जो प्रसेनकर करत निदाना॥
अब निश्चित पाप मणिभयऊ। जगत प्रसंश निंदकृतठयऊ॥
गौरी अखिल शोचबश बीती। दुःख अधिकृतगुणतअनीती॥
दो० अरुणोदय उहि नारि प्रति भयो भेद समुझाय।
बध्यो प्रसेनहि कृष्ण बन मणि हित रोष बढ़ाय॥
यह चर्चा सत्राजित नारी। कह्यो परोसिनि सखी हँकारी॥
अरुकह कह्यो नकाहुहि आली। ममपति बध्यो भेद यहकाली॥
उठि सखिवृन्द स्वभाव सिधाई। चर्चा यहै करत गृह आई॥

कोउत्रियप्रभुरनिवास सुजाना। यहै प्रसंग अयोग्य बखाना॥
सब युवतिन मनभा बिस्वासा। बध्योप्रसेनश्याममणिआसा॥
कहहिंसबहरिभलनहिंकीन्हा। मणिहितहन्योस्वकुलनहिंचीन्हा॥
यहसुधि पाय कोउअनुगामी। बन्दिप्रभुहिकहसुनुजगस्वामी॥
बधप्रसेन मणि ग्रहण कलंका। लाग आपु कहँ पुर आतंका॥
दो० कछु उपाय करि नाशिये सुनि चिन्ते भगवान।
जाय सभानृप तातहितु सब सन कियो बखान॥
सबकोउकहतश्याममणिग्राही। निधन प्रसेन कियोभ्रमनाही॥
खोजिय ताहि जो होय रजाई। अकृत कलंक कृपालनशाई॥
बंदि पतिहि बहुभट संगलाई। सत्राजीत द्वार नृप आई॥
लीन्हे संग प्रसेन के संगी। दिशि उद्यान चले तिरभंगी॥
सघन बिपिनगिरिवर तटजाई। चिह्न तुरँग पदलखे निराई॥
गुफा द्वारतन मृतक बिलोका। युत पारसिक प्रसेन बिशोका॥
पुंडरीक मर्यो हरि जाना। अग्रागमन कस्यो भगवाना॥
कौतुकनिधि प्रभु अंतरयामी। नरलीला कृत द्विजबरगामी॥
दो० अहि रिपु मृतक बिलोकि मन चिंते यदुकुल चंद।
खोज न मणिकर मिलत बिधि होत न मनआनंद॥
कोअस प्रबल जीवभा कानन। यहिथल हतो आइ पंचानन॥
अचरज बिबशभये यदुजाता। हरिप्रति बचो सपुटकर ताता॥
महाभयानक कंदर एहा। त्यागि लोभमणिबहुरियगेहा॥
बन्दनीय शिवअज तुम एका। बदे कलंक सोबड़ अबिबेका॥
पुंडरीक शिर अपयश भयऊ। जानईश मणि कोले गयऊ॥
अग्र चलो यह गुफा ढूँढोरें। घातक सिंह गहैं मणिचोरें॥
देखत सकल होत भय भीता। नहिं समर्थप्रविशबलजीता॥
मानिबिनय हठतजियगोसांई। चलियनिकेतत्यागिदुचिताई॥
दो० पुर महँ सबसन कहहिं हम बध्यो प्रसेन गजारि।
गुफा दुरयोकोउ आहि मणि बलीमृगेन्द्रहिमारि॥
खोजत श्रमित भये गिरि माहीं। तासु खोज पायउ कछुनाहीं॥

प्रभु अंतरयामी अवनीशा। सम्यक् गति जानी जगदीशा॥
दिनदश तुमसब यहि थलरहऊ। मम मग हेरिपंथ गृह गहऊ॥
मणि महँ लाग मोर मनआही। प्रविशि गुफा खोजौंहौं ताही॥
विकट दरीभृत चले अकेले। रुचिर रूप तिहुँपुर पर हेले॥
नेक दूरिचलि लख्यो प्रकाशा। पहुंचे जामवंत के पासा॥
सोवत भालुनाथ भय हीना। कृधि सागर वय बहु कालीना॥
त्रेता रहेउ राम सँग जोई। बिदित प्रसंग जान सबकोई॥
दो० तासु नारि निज कन्य कहि पेलन रही झुलाय।
मणि बांधी ता पालने अच्यो दृग यदुराय॥
हरिहि देखि त्रिय करयो पुकारा। जामवंत जाग्यो तेहि बारा॥
धाय श्याम तट गयउ सरोषा। जानस्त्रिनाहिंत्रिपुर प्रतिपोषा॥
मल्लयुद्ध कर करयो पसारा। बरणि न जायसमरव्यवहारा॥
रण कर्तव करि हारि रहोई। चल्यो उपाय न ताकर कोई॥
शोच्यो मन ये मनुज न देवा। पूरण पुरुष करौं पदसेवा॥
रावणादि दुर्नोद अनेका। हौंजीते रिपु समर किलेका॥
ममबल तुल्य जगत को दूजा। युद्ध मनोरथ इन संग पूजा॥
उपज्यो ज्ञान प्रभुहिं पहिचाना। कहकरसपुट त्राहि भगवाना॥
दो० सविनय आरत बाणिकह अब मति नाहिं भुलाय।
इलाभारहर अवधपति भये आपु यदुराय॥
त्रेता सुर ऋषि यहि थलआये। कह्यो मोहिं अधिकारी पाये॥
मणिकारण आइहि भगवाना। दरश होइ मम स्वन प्रमाना॥
मुनि बरबाक्य मृषानहिं होई। इष्टरूप मम धारिय सोई॥
प्रीति सत्य लखि यदुपति राजा। रामरूप भय सेवक काजा॥
इष्वासन करशर शुभरूपा। सुर दुर्लभ दिय दरश अनूपा॥
देखिरूप पूजी मनकामा। साष्टांग किय दंड प्रणामा॥
आरत गिरा विनीत सनीती। बद्यो क्षितीश भालसह प्रीती॥
जो आयसु पाऊं असुरारी। निजअभिलाषकहौंखलहारी॥
दो० त्रिहसि.श्यामकह कहसि किन निजअभिलाष सनेह।

सुनौ पतित पावन अकल अज अविनाश अदेह ॥
तनुजा जामवंति यहमेरी। कीजिय पद्म चरण की चेरी ॥
मोर सुलोक लोक गति याकी। सेवततुमहिं अजादिपिनाकी ॥
कृमापिन बारकरिय हरिदासा। पूरणकरियआशु अभिलासा ॥
अनुशासन पावत मुदबाढ़ा। भयउ अवाक प्रेमवपु गाढ़ा ॥
संज्ञाग्राह्य पूज विधि जैसी। पुनिकियव्याहरीति भवकैसी ॥
कन्यादान समपिं तहि दीन्हा। जन्मसुफलतबआपन चीन्हा ॥
सास ससुर ते पाय रजाई। सतिय गमन किय यादवराई ॥
जे यदुनाथ कंदरा द्वारे। प्रथमहिं सेवक नृप बैठारे ॥
दो० अष्ट विंश दिन तिनहिंभे नहिं आये भगवान।
चलेद्वारकहि दुखितसब करत विविधअनुमान ॥
रोदत बदत बिधुरता भारी। कहतकृष्ण हा कृष्ण पुकारी ॥
यह सुधि पाय नगर नर नारी। भये चराचर जीव दुखारी ॥
जीवन वृथा बदत सब लोगा। धृकयहवपुभाश्यामबियोगा ॥
जननी आदि सकल पटरानी। अकथदशाभूपतिअकुलानी ॥
फणि बिन विषधरमीन निरापा। तथा सकल बहुकरैं बिलापा ॥
सकृश बपुष मन महा मलीना। तजिमंदिर त्रियचलीप्रबीना ॥
प्रभु प्रभुत्व कहि राम बुझावा। तदपि न बोध काहुउरआवा ॥
गौरि निकेत नगर ते दूरी। महिमाजासुअखिलजगभूरी ॥
दो० क्लेश मग्न हर वाम प्रति कहहिं वाम महिपाल।
पूजनीय सुर मात तुव विदित तीनहूं काल ॥
श्यामकुशल कहुआदिभवानी। जगदम्बिका अमरपतिरानी ॥
उत युवती सेवहिं मृड वामा। उग्रसेन वसुदेव स्वधामा ॥
महा शोचमय धीय हेरानी। सबहि प्रबोधहिं मूशलपानी ॥
अमर अनादि अरूप कहावै। काल काल श्र्यंबक नशावै ॥
तीन काल तिहुँ पुर को ताता। सुर नर नाग करै हरिघाता ॥
तदनन्तर सँग ऋक्षकुमारी। आये सभा हँसत अघहारी ॥
जीव मृतक लहि तथा सुखारी। भेसब द्विज मुखचंद्र निहारी ॥

जननी आदि पाय सुधि धाईं। पूजि गौरि आतुर गृहआईं॥
दो० भये मंगलाचार पुर अकथ अलौकिक राय।
सत्राजीतहि तुरत हरि लीन्हो सभा बुलाय॥
बैठ सभाकरि सबहि जोहारा। हरिमणि ताहि दई तेहिबारा॥
हमहिं कलंक वृथा तुम दयऊ। यह मणिजामवंत बनलयऊ॥
सुता समेत समर्प्यो मोहीं। मिटै कलंक दयउहौं तोहीं॥
लै मणिलज्जितचल्यो निकेता। मुख मलीन चिंतत कुरुकेता॥
हरि सर्वदा काल निरबाधा। कहा तिनहिंहौं युतअपराधा॥
भइ शत्रुता तुच्छ मणि काजा। नाशै बैर करौं सोइ साजा॥
सतिभामा हरि संग बिवाहौं। अघ समस्त पूरबकृत दाहौं॥
इमि चिंतमित धाम चलिआवा। सबप्रसंगनिजत्रियाहिसुनावा॥
दो० मुदित नारि कह प्राणपति यह भलकरचो बिचार।
देहु सुता श्रीश्याम कहँ लेहु सुयश बुडु द्वार॥
सबकर सम्मत पाय सप्रेमा। द्विजबर बोलि समोदसनेमा॥
लग्न सुदिन सानन्द सुधाई। तिलकसाज तेहिदयउपठाई॥
ब्याह दिवसजबआत्र छितीशा। जुरी बरात सुजाति छजीशा॥
ज्ञाति बन्धु धर अधिप मुनीशा। हरि उद्वाहन गे कुरु ईशा॥
प्रथम वेद कुल रीति कराई। पाय गर्ग ऋषि केरि रजाई॥
पुनि भामरि फेरचो सुख पाई। अतिप्रमोदनहिंबरणिसिराई॥
यौतुक मध्य धरी मणि सोई। बाहर करचो नैन हरिजोई॥
यह निरर्थ नहिं काज हमारे। राखिय आइहि काज तुम्हारे॥
दो० कठिन तपस्या सूर की करि पाई मणि तात।
हमरे कुल भगवान तजि आनन देव सुहात॥
तेहिते अपर अभर कर दाना। लेतन चित बूझिये सुजाना॥
लाज्यो सुनत श्याम मुखबानी। गये सधाम भवन धनुपानी॥
अखिल शकुन हरि आज्ञाकारी। लखियप्रगटचहुँओर निहारी॥
सतिभामा संयुत गृह गयऊ। महामोद गृहपति पुर छयऊ॥
मनिवर मम जिय शंकाएका। कहतकुमतिवशनिजअविवेका॥

पाग्वक्ष हरि तिनहिं कलंका। लग्योकृपालहृदय ममशंका॥
चौथिचंद्रनृप नभ शशिनाता। लग्योलग्योनेहिअपयशताता॥
लोक वेद मर्यादन नाशै। प्रभुयुगयुग शुचिधर्मप्रकाशै॥

दो० चौथि सुधाधर जो लखै सुनै चरित यह सोइ।
मिटै दोष जग यश लहै मम वच मृषा न होइ॥
शत्रु मित्र जानत नहीं मानत दास सनेह।
भजु मंगल पूरण पुरुष पाय सुभग नर देह॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांजामवंतीसतिभामाविवाह
वर्णनोनामसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७॥

दो० पर तियगामी जीव हा गणिका रत मतिहीन।
नृपाधिप अरु अनृत वद छलकारी अप्रवीन॥
मिथ्यासाखी वादि नर परधन हर निर धर्म।
स्वर्ण चोर विश्वासि छल हितु द्रोही विनुकर्म॥
श्रुति वंचक गुरु संत श्रुति निंदक अघकी खानि।
अनृतीमनवशलोलुपी कुटिल पिशुनखनदानि॥
गुरु भीनमत्रियगामि नर त्रिय पति वंचक जोइ।
वेद वदत ये अखिल नर नरक निवासी होइ॥
मंगल मन दृढ़करि भजै ऐसेउ पतित गोपाल।
मुक्ति लहै संशय नहीं वदत विपुल गतिकाल॥

शतधन्वा सत्राजित मारा। लैमणि चोणिप गेहसिधारा॥
यह प्रसंग बड़ मोद बढ़ावन। हरिजनहृदयसुमतिहुलसावन॥
एक बार बलराम सुखेना। गजपुर गये बन्धु सुधि लेना॥
समाचार श्यामहि कह आई। जो अनीति किय कौरवराई॥
विरचि लक्ष गृह अंधकुमारा। अलखअग्निमयताहिसम्हारा॥
ता महँ बसे पाण्डु सुत जाई। अर्द्ध रैनि सुतिजात दिवाई॥
रथ चढ़ि चले सुनत सुधि हेता। श्री रुक्मिणिवरबंधु समेता॥
सूत स्यंदनहि वेग चलावा। अल्पकाल हरि पुर पहुँचावा॥

दो० उतरि यानते बन्धु दोउ गये कुरुप दरबार।
मन मलीन बैठे सकल गत नृपता व्यवहार॥
दुर्योधन कछु निज मन शोचै। भीषम चीरधार चष मोचै॥
बुद्धिचक्षु गुरु बांधव रोवैं। तिनसँग विदुरवृथा दुखजोवैं॥
गंधारी आदिक त्रिय जोई। महा शोकमय देखी सोई॥
शोच ग्रसित आनहु सब देखे। जरे पांडु सुत उनके लेखे॥
आवत हरि हलधर नृप जानी। उठ्योसभासदमानिगलानी॥
सादर हरि रामहिं कुरुनायक। दीन्हसिंहासनसबबिधिलायक॥
पांडव समाचार अनुसारा। पै न भूप कछु बचन उचारा॥
गंगजादि कोउ भेद न दयऊ। जानि भेद हरिमौनितभयऊ॥
दो० मन बिहँसत यदुपति कुरुप जीवन मरण बिचारि।
आन चरित सुनु अंतरित कुरुवर भवभय हारि॥
यादव यक शतधन्वा नामा। हरिपुरबसत सुनौ शुचिधामा॥
सतिभामाकी प्रथम सगाई। वासँग कीन्ह रहै मणिस्त्राई॥
तासु सदन कौतुक उर धारे। कृत ब्रह्मा अक्रूर सिधारे॥
भेटि कह्यो हरि रेवति नाथा। अहिपुर गये धरे धनु भाथा॥
सत्राजीत तोर अपमाना। कियोविदितजगसकलसुजाना॥
प्रथमहि कीन्हसि तोरि सगाई। दुहिता हरिहिबिवाहिसिजाई॥
बधनिजशत्रुत्यागिभ्रमभूला। हरिबिनुभाबिधितोहिंअनुकूला॥
कोनभ्रमै सम्मत करखाई। मूरख को शिशुबुधिभ्रमिजाई॥
दो० आमर्ष्यो सम्मत सुनत कह्यो मताभलकीन।
रजनीगहि आयुध क्रुधित तेहिगृहगयो प्रवीन॥
द्वार जाइ कटु बचन उचारा। करि छल समरताहि संहारा॥
मणि लै शतधन्वा गाधामा। हरिभय मनचिंत्योपरिणामा॥
कृष्ण बैर मनभा पछितावा। कत अक्रूर मोहिं भरमावा॥
सज्जन कहै कपटयुत बाता। तासों बलका चलै विधाता॥
चिंता मग्न मनहिं समुझावै। अजआसरकिमिकोउमिटावै॥
सत्राजित त्रियपति मृत देखी। बिलखी उरदुख भयउविशेखी॥

हाहाकंत प्राण प्रिय स्वामी। मोहिं त्यागि भे सुरपुरगामी॥
तासु रुदन सुनि जन परिवारा। आये बिपुलबिकलतेहिवारा॥
दो० पिता मरण सुनि दुखित अति सतिभामातहँजाय।
प्रथम बिकल पुनि धीरधरि बोधे लोग लुगाय॥
जानि मृतक पितु तेल धराई। रुचिर मनोहर यान मँगाई॥
तदारूढ़ हरि नगरहि आई। जहँ राजत थिरचर सुखदाई॥
देखि यान अनुमानि स्वनारी। मृदुल सुखद हरिगिराउचारी॥
कुशल क्षेम त्रिय प्रिय संकेता। तुम यहिथलआई केहिहेता॥
पुटित बाहु लय आरत बानी। सतिभामा नरनाह बखानी॥
कौशल चरण पंकरुह साथा। शतधन्वा पितुहन्यो अनाथा॥
लैमणि आलय करत बिलासा। मैं पितुमृतक तैलदियबासा॥
भइउँ अधैरज दया सुमंदा। आइउँ तुवढिग देव मुकुंदा॥
दो० यों बदि बैकल प्रेम पितु बिलपी कठिन नरेश।
तासु रुदन सुनि बंधुदोउ भये उदासी वेश॥
लौकिकरीति दुखितजगस्वामी। बिधि कर्त्तव बूझतद्विजगामी॥
प्रिय समुझाय ज्ञान बहुभाषी। गये निकेत शोक दुखनाषी॥
बाम दुखित लखिदीनदयाला। कियोतासुबध प्रणतेहिकाला॥
श्रवणितशतधन्वाहरि आगम। जीवतासुभा अमितपरिश्रम॥
चिंतनीय कृत किय हौं मूढ़ा। आन भुलाये मृत्यु अगूढ़ा॥
प्रभुप्रणसुनिअतिशयअकुलाना। आयो कृतब्रह्माशुभयाना॥
करिप्रणाम बिज्ञप्ति अपारा। राखु शरणइमि बचनउचारा॥
सत्राजीत बध्यों तुव आयसु। उचितनीतियुतकरियरजायसु॥
दो० श्याम कोप रक्षक त्रिपुर दृश्यमान नहिंजान।
हरिहर अज इन्द्रादि सुनु राखत जिनकोमान॥
कृष्ण शत्रुता जेहि उरवासी। परी सहद्द तेहि लगभृतुवासी॥
भजत चराचर पद जलजाता। जानि तात तुम्ह अज्ञाता॥
आन कहे कृत करै जो कोई। निन्दक होय जगतमहँसोई॥
प्रथम शुभाशुभ काज बिचारै। तेहि पाछे कृत अकृत पसारै॥

तू अविवेक अजित रिपुमारा। श्यामकोपनहिंहृदयविचारा॥
जानि समानित कृत स्वनाई। जे प्रवीण मानस भवभाई॥
मोरेल न रहौ तुम ताता। लोकबधूर्दशनहिं कुशलाता॥
प्रभु सँग रिपुता जगमहँकरऊं। शरणसखितोहिं नर्कहिपरऊं॥
दो० मित्रशत्रु यम जनक हितु व्याल तूल तेहिहोत।
हरि प्रतिकूलित भूपजग अपयशकरत उदोत॥
महामलिन तजि जीवनआसा। गानहेरि अक्रूर अवासा॥
सनति जोरिकर ताहि श्रवाना। मोर बचनप्रण यदुपतिठाना॥
तव आज्ञा सत्राजित घाता। राखुशरणआपनिमोहिताता॥
यदुनायक तुम पूरण साधा। हरो दीन जनकी बहुबाधा॥
धर्म धुरंधर आरत पाला। सर्वविभिमानतुमहिंगोपाला॥
जीवदान दीजिय जन जानी। पाहिपाहि यदुवर सुखिज्ञानी॥
बड़ मूरुख तू निपट अयाना। रक्षिसकतकोउ रिपुभगवाना॥
भूर्भुवः स्वः तोहिं न ठाऊं। शरण राखिकहुँ तोहिंलुकाऊं॥
दो० सुमन समानस तपससव स्वारथ मीत विचार।
तवहितुता अव शत्रुता यहे जीव निरधार॥
कुसमय सखा शत्रु की करणी। करत यथालसिरिपुसुतहरणी॥
रिपु उपदेश मृदुल कटुपाके। मधु मृदुपान कालकूट आके॥
पितु पालत सुत सेवक जोई। कुसमय भक्षिजात द्विजसोई॥
अब जीवन आशा परिहरऊ। तजिदुविधा हरिपद उरधरऊ॥
प्रभुप्रण मृषा न ह्वै है ताता। जैहो अवशि भवनहरिजाता॥
स्वारथ रहित गहो परमारथ। वृथा चिंतमन काल अकारथ॥
अग्रशोच परचातहु शोचा। तुव पंडित मूरुख मनपोचा॥
प्राणतजहुं करिपद तुम्हारा। जाहुसदन वचनहिं हमारा॥
दो० परुष वचन इकूर सुनत जानि काल तिहँवाल।
मणिदै श्री अक्रूरकहँ स्पंदन चढ़ि तेहिकाल।
चल्यो पलाय नगर तजिराई। समाचार सुनि रोष बढ़ाई॥
वाहन आरूढ़ित प्रभुधाये। तत्पश्चात हलग्रह आये॥

शत योजन भाग्यो महिपाला। पाय निरोध करो गोपाला॥
तिरहुति प्रविश्यो यान विहाई। दयो सुदर्शन कृष्ण पठाई॥
भंज्योतासु तासु शिर राजा। मृतक समीपगये मणि काजा॥
खोज्यो अंगवस्त्र अरुयाना। मिलीन मणिपै सुनौसुजाना॥
भ्रातहिकहतमिली मणिनाहीं। नध्योयाहि करि रुद्र मनमाहीं॥
आनपुरुष प्रतिहै मणि सोई। ताते तात परी नहिं जोई॥
दो० छपिहि न कोटि उपायसो प्रगटैगी परिणाम।
यहि कारण गृह जाहुतुम हम खोजें सबठाम॥
वंश्वायसु सुनि तिहुं पुरकर्ता। देव देव थिरचरके भर्ता॥
पोषण भरण करण कृतस्वामी। जानतमणिहिंसुअंतरयामी॥
तदपि न कारण कारण खानी। नीलाम्बरसनकहयोवखानी॥
हरिपुर हरि गमने सुखराशी। पूरण पुरुष तमारि प्रकाशी॥
रेवति रमण शोध मणिकाजा। गये देश देशन सुनुराजा॥
धरा भ्रमटन करत मुदपाये। अवधपुरी सादर चलिआये॥
दुर्योधन नृपता अधिकारी। हरिसुधि पाय मोद उरभारी॥
अग्रभेटि पाँवड़े विछाई। विशदासनशोभितकियजाई॥
दो० बहुविधि विनती करासि नृप विनती युत शिरनाय।
भोजन चारि प्रकारपट हरिहि करायो आय॥
कंठिर बासन पुनि बैठावा। जोरियुगलकर बचन सुनावा॥
निजआगम कारणयदुनायक। कहियकृपाकरममकुलनायक॥
देखि सनेह सत्यबल ताको। बयोवृतांत अखिल रमनाको॥
कृपा उदधि मणि भाजन आनै। त्रिभुहिविभातिविभवपरमानै॥
पुनिकहअमितक्षमाप्रभुकीन्हा। पतितदासकहँ दर्शनदीन्हा॥
लोप्यो कलुष जन्म बहुकेरा। पायउँ चारिलाभ यहिबेरा॥
जसयहथलपवित्र कियनाथा। रहिकछुदिननसकरियसनाथा॥
सेवकजानिशिष्यप्रभुकीजिय। गदायुद्ध उपदेशहि दीजिय॥
दो० ताहि शिष्यकरि समर विधि उपदेशी बहुभांति।
करि प्रवीण तेहि संगरहि चले निलय मुदशांति॥

प्रथमहि कृष्ण नगर कहँआये। पाछे हलधर दरश दिखाये॥
मृतकअजितअरिनिजकरिदाहा। कर्योकर्मसबयदुकुल नाहा॥
सम्मत कृतब्रह्मा अक्रूरा। निजमनशोचकियोयहपूरा॥
हरिहि वन्दितजि नगरपलाइय। अवशि प्रशंसा ताकहुपाइय॥
प्रभुपहँ आय सो मणि दरशाई। सविनय सोहरि गिरा सुनाई॥
यदुवन्शी धनमद बौराने। इंद्रीभोगहि विषय भुलाने॥
रावरभजन तज्यो विधिचारी। दुखित नाथलखि बुद्धिहमारी॥
धृगधनतियजग भोग अनेका। जो नपद्मपदनाथ विवेका॥
दो० मणि मिष त्यागि निवास हमसहपरिवार पलाव।
बसत मूढ़ पुर साधुकर होवत दुष्ट स्वभाव॥
तुमसनीति शुचि भक्त मम सबके भलकी चाह।
जो भावै चितसो करो कह्यो जोरिकर बांह॥
जबसब दुखितहोयँ तुव ध्याना। मन बच कर्म करैंयुतज्ञाना॥
तब बहोरि तुव पाय रजाई। नित्रसब आय नाथयहि ठांई॥
महा भक्त सूरति विज्ञाना। यशअक्रूर बिदितजग जाना॥
सुठि सम्मत मोरे मन माना। करियताातयहअवशिविहाना॥
प्रभु अनुशासन पाय सिधाये। बरणतविमलकीर्त्ति गृहआये॥
कृत ब्रह्मा समेत परिवारा। अर्द्ध निशापुर तज्यो भुवारा॥
मर्म न जान काहु पुरवासी। यहचर्चा प्रभात पुर भासी॥
कृतब्रह्मा अक्रूर समेता। गयेभागितजिशुभगनिकेता॥
दो० जानि परत मणि लै भगे कारण दूसर नाहिं।
इत चर्चा यह भूप सुनु प्रचरित सबपुर माहिं॥
प्रथम प्रयाग गये अक्रूरा। तहां करायो कर्म प्रक्रूरा॥
न्हाय त्रिवेणी पमरि बँधाई। गये बहोरि गया मुद पाई॥
पितृश्राद्धतहँ विधिवत कीन्हा। उत्तमदान द्विजनकहँ दीन्हा॥
पुनि सहप्रेम लौटि भुवराई। बाराणसी रहे द्वौ छाई॥
तपजप करैं सदृढ़ विज्ञानी। भेटहिं ऋषय भूपतहँ आनी॥
बहुदिन भये तजे पुर जाना। प्रभुअक्रूर मिलन अनुमाना॥

रामहिं कह्यो तात सुनु बानी । अब अक्रूर बोलाइय ज्ञानी ॥
कहिभल हलधरमौनित भयऊ । सुनौनगर विपदाजस छयऊ ॥
दो० त्रिज्वर विषम त्रयताप नृप पांडुक्षयी शिरपीर ।
कुष्ठ जलंधर शूल दुख मृगी भगंदर भीर ॥
कंठमाल खांसी अतिसारा । सन्निपात शीतांग विकारा ॥
अपर अनेक रोगगद आदी । थिरचर जीवनके जु विषादी ॥
हरिमाया वश नगर प्रचारे । भये अखिल नर नारि दुखारे ॥
अरु जबते अक्रूर सिधारा । बरष्यो जलद न एकौ बारा ॥
तृण अन्नादि भयउ कछुनाहीं । त्रिधाजीव दुखलहहिं तहांहीं ॥
बड़ दुर्भिक्ष रोग प्रभु छावा । त्राहि त्राहि चहुंओर कहावा ॥
कर सम्मत बहु नर सुत बाला । हरि शरणागत गये नृपाला ॥
अति आरतमय विनय सुनाई । महाविपतिवश बरणि नजाई ॥
दो० जोरिहाथ बिनती करत सुनु अवनीपति सोय ।
जेहि रीझे रुक्मिणिरमण अमित दीनताजोय ॥
छं० नमो स्वदास वल्लभं । नमामि देव दुर्लभं ॥
नमस्त्वमेक सद्गुरुं । नमामि भंजनं मुरुं ॥
नमो शिवाज कारकं । नमो अघौघ हारकं ॥
निरूप रूप धारकं । अपार भक्त तारकं ॥
अनाम नाम यद्विभुं । अकाम कामदस्प्रभुं ॥
निरीह सेह इष्टितं । सुरारि व्यूह भ्रष्टितं ॥
त्वयं हृतं दुखार्णवं । त्वत्तुल्यअन्यकिम्भवं ॥
सकष्ट शर्णत्वं विभूं । त्रिलोक मेकत्वं प्रभूं ॥
दो० जानि दासरुक्मिणिरमण हरियदुकाल कुरोग ।
विस्मयमय सुनि सुरअसुर यहननाथ पुरयोग ॥
रावर स्वामि सुचर हम ज्ञाता । कोअघविपतिवदियविख्याता ॥
सदा रीति यह हरिकर भाई । निज सेवक कहँ देत बड़ाई ॥
सुनौ जौन पुर हरिजन त्यागैं । मोदक निकर तहांते भागैं ॥
क्षोभक दाहक पीड़क बासा । तौन नगर होवत अनयासा ॥

ज्ञानवंत निवसैं जहँ साधा। नाशत आपु तहाँ ते बाधा॥
बासव सुदिर नाथ जन नेहा। मानि समय बर्षावत मेहा॥
जबसे पुर अक्रूर बिहावा। तबते नगर दुःख गण छावा॥
बिनजाने अपयश कोउ दीन्हा। पूरणभक्त हिये नहिं चीन्हा॥
दो० कृपासिंधु कह सत्य तुम भयो हृदय विश्वास।
सुफलक पितु अक्रूर कर बिदितजगतहरिदास॥
जेहिथल बसत पिता सुत दोऊ। आवत तेहिथलबिपतिनकोऊ॥
सुकृत सीव शुचिगुणदधिसेता। धर्म अवधि परिवार समेता॥
यक इतिहास सुनिय चितलाई। बदन जरठ यह कथा सोहाई॥
समय एक काशी पुर ताता। दारुण दुर्भष भागति धाता॥
काशिपद्विजगणरथलबोलाई। पूछ दुकाल व्यवस्था राई॥
क्षोणिप साध जितेन्द्रिय जोई। षट बिकार बिनु हेरिय सोई॥
यहि पुर चरण रेणु निज धारै। सब दुर्भिक्ष भूमिपति टारै॥
सुफलक नाम चंद्र कुल माहीं। बड़साधू भव दूसर नाहीं॥
दो० सुनत भूप बड़ि बिनययुत सुफलक लियेबोलाइ।
तिनके आवतहीं चतुर मिट्यो काल दुखदाइ॥
दुहिता निजनृपसुफलकसाथा। उद्धाही करि श्रुतिवत् गाथा॥
ताकर तनय सुजन शिरमौरा। भाअक्रूर भक्त पद रौरा॥
यह वृतांत प्रथमैं हम जाना। भयवशनाथनतुमहिंबखाना॥
अब जस होय तुम्हार निदेशू। तस कीजिय यह मिटै कलेशू॥
शोधहु सकल साधु द्वौ जाई। यहि पुर बहुरि बसावहु आई॥
चले अनेक पाय अनुशासन। चतुरशा खोजत शुचिशासन॥
बाराणसी मिले हरिदासा। करतकठिनतप परिहरिआसा॥
चरण सरज बन्दे सुख पाई। बहुरि जोरि कर गिरासुनाई॥
दो० राम कृष्ण तुम बिन बिकल पुरवासी तिहुंकाल।
चलिय कृपानिधि धाम अब मिटै निकरदुखजाल॥
सुख समूह हरिजन अनुगामी। बिनु हरिदासकालगति बामी॥
यदपि बसत पुर पोषण हारा। तदपि दुकाल परयो बिकरारा॥

सेवक वश्य सदा असुरारी । निगमागमअसनीतिबिचारी ॥
हरि संदेश पाय मुद छावा । पुलक शरीर नैन जलआवा ॥
चले सजन कृत ब्रह्मा संगा । प्रभुदर्शन लालसा अभंगा ॥
नगर निकट आये सुधि पाई । रामश्यामअगमन चलिजाई ॥
कंठ लगाय भेटि सन्माना । बड़ सत्कार करयो भगवाना ॥
लाय नगर शुभधाम बसावा । उग्रसेन सुनि अतिसुखपावा ॥
दो० तिनके आवतहीं नृपति गये अखिल दुखनाशि ।
जलवरष्यो शुभकालभा मंगल मोद प्रकाशि ॥
जिनकी महिमा अस बड़भाई । धन्य साधुजन जगसुखदाई ॥
समय पाय अक्रूर बोलाई । मणिचर्चा कीन्ही यदुराई ॥
नीति बदत परधन जो पावै । आशु तासुके पास पठावै ॥
सो न होय तेहि सुत कहँ देई । परधन अघ गृह भूलिन लेई ॥
अथवा बन्धु गुरू सुत होई । देइताहि श्रुतिधर्महिं जोई ॥
यहिकारण मणिलाय गोसांई । मम तियतनय देहु मुदपाई ॥
झटितलायमणि हरिकरदीनी । पुनिमहिपालविनयबड़िकीनी ॥
क्षमिय मोर अपराध कृपाला । मणिलै यह प्रभुदीनदयाला ॥
दो० स्वर्ग प्रगट सो नाथलै व्ययतीरथ मगकीन ।
सोपिक्षमा प्रभु तुमकरो प्रभुकह सुनौ प्रवीन ॥
नीक करयो तीरथ गये मन में भयो सुखारि ।
तोषयो इमि अक्रूर कहँ निज मुख आपमुरारि ॥
मंगल को हरि सम जगत दास बड़ाई दानि ।
ध्याउश्यामपद भूलतजि यहशिक्षामन आनि ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांशतधन्वावधवर्णनोनामाष्ट
पंचाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥
दो० विद्या धरत न क्षीणमल मूरुखनहिं तनपीन ।
शुक सादर पक्षी जगत गिद्ध सुआदर हीन ॥
विद्या विन लखि परत नहिं धर्म कर्म मर्याद ।

सो पाइय श्रीगुरु कृपा भूषण तन मनुजाद ॥
बाल अवस्थहि सीखिये गुण चतुरई अनेक।
प्रौढ़भये बिषयी रमण होत न चित्त बिवेक॥
सर्व सिद्धि मय जानिये बिद्या हरि गुण लीन।
बिद्या बिनु यहि भवभँवर द्वितिय न आनतरीन॥
बिद्यालहि सुंदर सुभग त्यागि रिझाउब लोक।
तन मन सेवै श्यामपद जाते होव विशोक॥

तिमिरापत्ति मित्र शुचि गाथा। श्रवणकरियतनमनकुरुनाथा॥
एक काल जगपाल कृपाला। जनमन मानसरुचिरमराला॥
चले करभपुर अति रुचिमानी। भक्त बन्धु आरतहरज्ञानी॥
बहु यदुजात संग भट भारी। पहुंचे पाण्डु सदन बनवारी॥
पाय सुद्धि पांडव चलि आये। भेंटि समोद हरिहि गृहलाये॥
बिधुगोती रचि बेदी रेखा। कुंती द्रौपदि त्यागि परेखा॥
रत्नजटित तहँ इभरिपु आसन। तेहिथलधर्योचर्चिशुचिबासन॥
प्रभुहित दोपर सुरुचि बिठाई। आरति कर्यो प्रेम उर छाई॥
दो० बिबिध बधाई बाजि गृह बरणत बनत न सोय।
नृपता लहि नररंक तिमि तिनमन आनँदहोय॥
भोज्यभक्ष्यलिह्यचोऽष्यकहावा। चारि प्रकार सुभोग करावा॥
निकट बैठि भोजन कृत जानी। कुंती पूछ्यो सुधि मृदुबानी॥
मम पितु बंधु आदि कुशलाई। कहिय सप्रेम मिटै दुचिताई॥
तुम्हरी कृपा कुशल तिहुंकाला। दशदिशिरक्षकजनजनपाला॥
पुनिकह जबजब बिपति हमारे। दारुण सहज परी अबिचारे॥
अनुकम्पा अर्णवत बधाई। रक्षौ है प्रभु आपु सहाई॥
श्येनब्यूह जिमि ग्रासितलावा। किधौंसिंहदल बिचइभआवा॥
बातप पर्योकि सहल चीता। बरहीगण महँजिमि इभभीता॥
तिमि मम तनय अंधसुतसाथा। परिहरि तात न दूसर नाथा॥
धर्मराज आरत सुत बानी। मंजु शांतरस मिलितबखानी॥

मायामय सब जग उपजायो। जटीकरण मुख भेद न पायो॥
दो० दुर्लभ दर्शन देव कहँ मोक्षदानि तुवतात।
जानि दास सुप्रनासहीं दरशदयो विख्यात॥
पावसऋतु आगम है स्वामी। शुचिशुचिमासब्यतीतअकामी॥
यहिथल निवसि हरियमनपीरा। सेइ चरण कज होउँ सधीरा॥
विहँसे प्रभु सुनि भूप प्रशंसा। यदुकुल सर्वरसोहर हंसा॥
धर्म रूप तुम साधु महाना। धर्माधीन अहौं विनुमाना॥
रहब लालसा देखि तुम्हारी। नृपहि शोधअसबदिअसुरारी॥
हरिनृप धाम वास किय राजा। मोदेउसुनिपुरदुविधिसमाजा॥
एक काल शरबंधु समेता। मृगयहिचले विपुलजड़जेता॥
गहन बिपिन गयसँगधनुसाई। बधे व्याघ्रमृग कोल नृराई॥
दो० अपर आन बनचर अमित हने कृष्ण धनुधर्ण।
सब कहँ बांटे धर्मसुत जो जाको भष कर्ण॥
भोजन योग भूप जे पाये। पाक सदन ते बेगिपठाये॥
करत अहेर इंद्र सुत श्यामा। गये दूरि बन बपु बहु कामा॥
सरिता कूल पान पय कीन्हा। कछु बिराम कम्बोजनदीन्हा॥
प्रभु चितये नृप दूसरि ओरा। दीख तरंगिनि तटचितचोरा॥
सुंदरि नव यौवन विधुआनन। मृगचषतनचम्पकद्युतिभानन॥
पिकबचकेसरिरिपुगतिगामिनि। हरिकटिनखशिखमनहरभामिनि
शृंगारित छवि सदन सुनारी। अकसर बहुमद मद मतवारी॥
फिरत कूलसरि संग न कोई। अर्जुन कौन नारि यह होई॥
दो० सुनि देख्यो तब ओरतेहि भयोविकलमनतासु।
प्रभुरुख लहि सानंदमग गये तासुतट आसु॥
कोहसि केहि कारण यहिठामा। अकसर फिरतमोहिंकहुबामा॥
अवशिनाम गृह देह बताई। जोसुनि ममचितचिंताजाई॥
पूषणसुता अहौं नरनायक। कालिंदी ममनाम सुभायक॥
पिताआपमहदेइ निवासा। पुनियहिविधि कियवचनप्रकासा॥
सरितट फिरत मिलिहिबरतोरा। सत्यवाक्य यह दुहितामोरा॥

नामकृष्ण श्रीहरि अवतारा। पूरण धरिहि हरण महिभारा॥
आदिमध्य अवसान विहीना। कृपाउदधि सतचित्तअक्षीना॥
मन पितुवचनसांचु अनुमानी। ध्याऊं हरिहि सत्यपतिजानी॥
दो० जिनके पदकर ध्यानतोहिं तेप्रभु पूरण रूप।
आयेयहिथल नैन लख सुंदर पुरुष अनूप॥
यहिअवसरहिश्यामचलिआये। समाचारकहि तिनहिंसुनाये॥
बिहँसिश्यामकहसुनुप्रियबानी। बेगिहिचलौ चढ़ौ रथ आनी॥
स्यंदनताहि चढ़ाइ सिधाये। अर्जुन सहित परम मुदछाये॥
जबलगि हरि आये नृपबासा। तबलगियकपावनसुभ्रवासा॥
हरिइच्छालखि पर्म स्वधर्मा। निर्मायो सोहर विश्वकर्मा॥
तेहिगृह हरि हरि सुता बसाई। सत्य चिदानंद प्रभु यदुराई॥
सुखद प्रसंग समय यक भयऊ। सुनौताताजिमिहरि सुददयऊ॥
हरि हरिजात बैठ यकठांई। करत ज्ञानचर्चा बहुभाई॥
दो० कंजजोरिकर आयतहँ बोल्यो शीश नवाय।
क्षुधित फिरतहौं कृष्णजू भोजन देहु कराय॥
उदरनभरयो यज्ञभष मोरा। कहाकहौं निजक्षुधा अघोरा॥
जो तुवनाथ रजायसु पाऊं। तौ नन्दनबन अवशि जराऊं॥
निडर भस्म करु कानन जाई। पूरण क्षुधा करिय मुदपाई॥
त्रिपुल बार मैं बनहि लगावा। पावस पव बरषाय बुझावा॥
बिनु सहाय शरणागत पाला। उदरन मोरभरिहितिहुंकाला॥
हँसि हरिकहा बली मुख केतै। जाइय अवशिकरणसुतहेतै॥
आज्ञा पाय अमिष धनुधारा। कटि तूणीर करयो तेहिबारा॥
बनसुत संग चल्यो रणधीरा। बासव बिपिनजायसुतक्षीरा॥
दो० लग्यो जरावन काननहि चारि ओर तेहिकाल।
भजरत बहुपद पिकप्रिया तरुतालीस तमाल॥
मंजुल बकुल ताल तरु श्यामा। हेम प्रसून पलाश सुनामा॥
प्रियकर्कर्ष फल बानरआनन। कोलवल्लिका तिक्ताकानन॥
कोला अभया विद्रुम पीडा। गुंजा मृदुका सुमना ब्रीडा॥

केतकि एला सहित लवंगा। अपर अपार वृक्षभय भंगा ॥
अरणी चटकत वनचरभटके। अर्जुन बाणसुअर्जुन अटके ॥
हाहाभूत ज्वलित बन आगी। कौनो जीवन पावत भागी ॥
अमर नाथ सुनि क्रोधितभयऊ। बोलिजलदपतिआयसुदयऊ॥
महा वृष्टि करि आगिन नशावो। कानन तरु बहु जीवबचावो॥
दो० आज्ञा पाय सुराधिकी चले मेघ मुद पाय।
अंधकारभा ओर चहुं विद्युन्मग दरशाय ॥
इषुधी कंत तजेउ नाराचा। शरपंजर नभविरच्यो सांचा॥
कामक सिक्ता समहूवै गयऊ। ध्वंतनश्योकाशितरविभयऊ॥
झंझा बायुउड़त जिमि तूला। उड़े वलाहक नृपतेहि तूला ॥
आवत जात परे नहिं जानी। द्विगुण अनलप्रजरीसुनुज्ञानी ॥
मयथल पावक पहुंच्यो जाई। उठ्योअसुरतनमनअकुलाई ॥
करि प्रणामकह भारत बानी। रक्षा मोरि करो सुखदानी ॥
दीन गिरा सुनि पंथ दयाला। राख्योशरणअसुरतेहिकाला॥
तृणविपिन भषि पावक भयऊ। पंथ असुरयुतहरिपहँगयऊ ॥
दो० कहा जोरिकर सुनो प्रभुयह मय बड़गुण खानि।
शरण राखिये देव प्रति निज सेवक अनुमानि ॥
शरणराख मय पावक तोषी। प्रभुद्वौरीति सदा संतोषी ॥
मणिमय सदन मयासुर कीन्हे। अद्भुतचक्रतजातनहिंचीन्हे ॥
जल थल कथल द्वार विनु द्वारा। वरणिनजायविचित्रअपारा ॥
विधि सुरेश लखि जीव सकाई। मानसजानिसकै किमिभाई ॥
विहरत तहँ तीनों पुर नामी। जेहि माया कृत अंतरयामी ॥
चारि मासतहँ बसे कृपाला। सुखीकिये बड़लघुनरबाला ॥
राजसभाजहँ धर्म विराजा। आयेसुरुचि तहां बृजराजा ॥
कहेउ रजायसु दीजिय भाई। जाउँद्वारकहि मोचित आई ॥
दो० सुनतउदासित भयो नृपसभा सहित तेहिवार।
अज्ञ तज्ञ सर्वज्ञ हरि किये प्रज्ञ अनुसार ॥
सबहि बोधि पथ हरिजासंगा। चले द्वारकहित्रिवयअभंगा ॥

कुंती द्रौपदि भेटि सयानी। गईं गेह दुविधा अनुमानी॥
राखन पठउन द्वौ कठिनाई। आज्ञा प्रेम भंग लखि राई॥
कछुन कह्यो सुत धर्म स्वानी। भेट्यो बार बार उरआनी॥
वेगवंत रथ जिमि उरगारी। इंग तज्ञ बाहन सुखकारी॥
वासर महँ पुर पहुंचे जाई। नहिं आश्चर्य्य दूरि बहुताई॥
हरि आगम सुनि पुरके बासी। चले त्रिविध रुचिपर्मप्रकासी॥
बीचहि भेटि वन्दि पद कंजा। कलुष नाग दर्शन हरिगंजा॥
दो० हरि आवत पुरमोद नव छाय रहो चहुं आश।
कहतबनैनहिं सहसमुख सोकिमिकरियप्रकाश॥
हंस सुता लखि त्रियन सराहा। लहो भूपपितुहितसुनि लाहा॥
उग्रसेनसन प्रभु कह जाई। कालिन्द्री की कथा सोहाई॥
बिहँस्यो राउ सुनत मृदुबानी। सचिवहि कह्योसुनो सज्ञानी॥
ब्याहसाज सजि हमहिंजनावो। पुनिकुलगुरुमुनिगर्गबोलावो॥
आज्ञालहि सब वस्तु मंगाई। ऋषिहि बोलिपुनिलग्नधराई॥
कर्यो वेदबद हरि उद्वाहा। मन प्रसन्न है यादव नाहा॥
जिमि ब्याही कालिंद्री श्यामा। बद्यौ अपूर्व चरित गुणग्रामा॥
जेहि प्रकार हितु वृंदहि लाई। ब्याही कृष्ण सो सुनु नरराई॥
दो० सुनौ अवनिपति चित्तदै कथा रुचिर सुखदानि।
जो श्रुत प्रफुलित होयमन और पापकी हानि॥

भुजंग प्रयात छन्द॥

अहै शूरसेनात्मजा बिष्णु सेवी। महाज्ञानमैनामराजाधिदेवी॥
सुतातासुकी मित्रबिंदासुनामा। युवावैसभाचंद देवी ललामा॥
पितात्रन ताकोस्वयंकंतजागा। महामोदस्योशोचिकैसानुरागा॥
रसानाथलै सुद्धि आये तहांहीं। बिलोकेनिभौदेवराजासकाहीं॥
गुणी संयमी वेदवक्ता सुसेना। जुरे यज्ञशालाधराधीशसेना॥
बली बिक्रमी संगरी रूप रूरे। कहांलौं बखानौं सबैभांतिपूरे॥
सुनेसुद्धि श्रीकृष्णलै पंथसंगा। गये यज्ञशालामहामोदअंगा॥
बिलोके सुखाभारहीभूलिनारी। शकंजैतिसानन्द सोकंठडारी॥

दो० देखिलजे बहु भूप तहँ मन माखे कुरुराय ।
मित्रसेनि ताबंधुसों कह्यो भूपयों जाय ॥

तव मातुल सुत कृष्ण कहावा । कौतुकलगि मल्लशालाआवा ॥
रूप देखि तुव भगिनि भुलानी । लोक विरुद्ध शोचुमनजानी ॥
जोउद्वाह कृष्णसँग भयऊ । अपयशअकथजगततवछयऊ ॥
यहिकारण अनुजा समुझावो । तजै श्यामवरभवयश पावो ॥
सुनत व्यंग दुर्योधन बानी । निजभगिनिहिसमुझाइसिआनी ॥
बन्धुवचन सुनिमनसकुचानी । परिहरि हरिपुरचलिसँगलानी ॥
हरिश्रुति लागि पंथइमिभाषा । बिगरतकाज करियमनमाषा ॥
कानिकरत यहिसमय कृपाला । हँसिहैं प्रभुसमुदाय नृपाला ॥

दो० कोपि कृष्ण त्रियहाथ गहि रथलीनी बैठाइ ।
अखिलभूप देखतखड़े सबकीकानि बिहाइ ॥

जब स्यंदन चढ़ि चले मुरारी । तब रोषे महीप भटभारी ॥
निज निजआयुधसाजिसिधाये । समर हेत बहुअनी बनाये ॥
पुरजनकह हरिकर्‍यो अनीती । उचित बिवाहलोकश्रुतिरीती ॥
प्रभु देखा क्षोणिप दल आयो । सैनहि प्रभुकपिकेतु बुझायो ॥
गुणाकेश तोमर धनुधारा । आपनहूं शारंग सम्हारा ॥
मंड्यो असुग पंजराकारा । जोनिलोकि भूपति दलहारा ॥
बिपुल जीव तजि हरिपुर धाये । शेषसमर तजि नृपतिपलाये ॥
प्रभु निरद्वंद गये निज बासा । मुदित भये नरनारिअवासा ॥

दो० कियो व्याह जग वेदविधि कहे ग्रंथ बढ़िजाय ।
जिमि सत्यालाये बहुरि सो चरित्र सुनुराय ॥

कौशलदेश विदितजग जाना । तहांनगनजित नृपवलवाना ॥
सत्या नाम तासु सुकुमारी । रूपशील लक्षण अधिकारी ॥
व्याहन योगजानि महिपाला । यह प्रण कीन्हो राउकराला ॥
अगजगवृषभप्रबल अनुमानी । छोड़वाये रसाधि अभिमानी ॥
जो नाथै निज बल नर कोई । मम जामात होइ भव सोई ॥
[illegible]

पारथ सहित श्याम सुधिपाई । कौशल देश गये सुनुराई ॥
सभाकश्यपी पति जब गयऊ । हरिहि बिलोकिमग्ननृपभयऊ॥
दो० सत्वर आसन त्यागि उठिकीनेसि दंड प्रणाम ।
करिआसीनसुआसनहिं पुनिपूज्यो परिणाम ॥
करि अर्चा कह सुनो कृपाला । उदितभाग्यममभयउविशाला॥
भूती सपितु तनय जेहि ध्यावैं । समय पाय तुव दर्शन पावैं ॥
तुवआणी बिरच्यो दशचारी । आदिपुरुष प्रभुकलिमलहारी॥
सहज स्वभाव धाममम आये । पूरब सुकृत चारि फल पाये ॥
निज मूदृता कहौं छल छोरी । जाबश रहत सदा मतिभोरी ॥
दुहिता ब्याह हेत प्रण कीना । नाथै वृष जो सुभटप्रवीना ॥
सप्तवृषभ बर मत्त छोड़ाये । फिरतनाथ कोउ बेधि न पाये॥
ताहि बरैं निज प्राण पियारी । एक बार नाथै भट भारी ॥
दो० अहै कठिन प्रण सुलभभा पाय दरश असुरारि ।
उठे सुनत हँसि तुरतही हरिसुख दुःख बिसारि ॥
मुनितनधरिकटिकसिनिजचीरा । ममन जान काहु यहबीरा ॥
एकहिबार वृषभ प्रभुनाथे । कुसुममालमालीजिमिगाथे ॥
वृषभ बिलोकि श्याम मय कैसे । प्राण बिहून काठतन जैसे ॥
यक रज ग्रासि सभालै आये । देखि सभायुत नृपसुखछाये ॥
नगरलोगसुनि बिस्मितभयऊ । कौतुकलागिनिकरचलिगयऊ॥
धन्य धन्य इन कर बलभाई । भणै परस्पर लोग लोगाई ॥
कुलगुरु बोलि नगनजितराजा । लग्नपूछि सजिमंगलसाजा ॥
कन्या दान बेद बिधि कीन्हा । यौतुकअमितइलापतिदीन्हा ॥
दो० धेनु सहस दश कर भनव सहस लाख दशअश्व ।
लक्षतीनि मुनिरथ दिये प्रगट्यो यशशुचि विश्व ॥
बहुसेवक सेवकिनि अपारा । दैबिनयोअति अवधभुवारा ॥
चले स्वसुरकर पाय रजाई । कीरति सब देशन महँ छाई ॥
सम्भत करि अनेक नृप आये । मारग मांझ युद्ध अरुझाये ॥
[illegible]

पावन चरित कयो दिशिचारी । गये द्वारकहिं नृप असुरारी ॥
आय प्रणाम करैं पुर लोगा । कहहिंसराहि ब्याहसमयोगा ॥
कौशल राज सुयश बड़लयऊ । अगणितदायजशुचिमनदयऊ ॥
प्रभुकह पंथहि तुम बड़ज्ञाती । विज्ञानी रणधीर अघाती ॥
दो० जो दायज अवधीश दिय सोतुम लेउ सप्रेम ।
सुनत अचम्भे सब रहे दुर्लभ प्रभुकरनेम ॥
गुड़ाकेश करि अंगीकारा । लियोविपुल धनदायजबारा ॥
कमला जासु चरण सेवकाई । तनमन बचन करत मुदपाई ॥
तृष्णा लोभ मोह नहिं जाके । कोधन एतिक गोचरताके ॥
अब भद्राकर सुनौ विवाहा । मन दृढ़नामधि गोपिउछाहा ॥
केकय देश प्रसिद्ध महाना । भूमिपाल तहँ चतुर सुजाना ॥
भद्रानाम सुतातेहि ज्ञानी । नृप तद्गत न रमा ब्रह्मानी ॥
तासुस्वयंवर हित नरनाहा । लिखेपत्र बहु सहित उछाहा ॥
बोले अपर अपर क्षितिपाला । बलबुधिमयजेविदितविशाला ॥
दो० गये सकल केकय पुरहि त्रिया लोभ उरधारि ।
तेहिसमाज महँ जातभे अर्जुन सहित मुरारि ॥
मखशाला भल जुरयौ समाजा । शोभितविपुलविविधकुलराजा ॥
मध्यसभा राजे यदुराई । तेहिअनमिषहिसुतानृपआई ॥
देखिरूप मोहे बहु कामी । कविनाव बैठे मति बामी ॥
देवपितृ गुरुइष्ट मनावैं । अध ऊरधनिज मनहिंचलावैं ॥
शुचिजयमाल हाथसखिसंगा । निरखत भूपन नैन कुरंगा ॥
कोउ बरभूर न तियमन आवा । दैवयोग यहभयो बनावा ॥
रूपराशि मोहन तिहुँ धामा । विलजाहिदेखिभांतिबहुकामा ॥
जहं शोभित आई तहँ बाला । प्रभुहिदेखि मेली जयमाला ॥
दो० मुदितभयो पितुतासु लखि श्रुतिरत करयो विवाह ।
दैदायज बहु को गनै विदा कीन्ह नरनाह ॥
मग मंगल युत बजत निशाना । द्वारावति आये भगवाना ॥
पुर प्रमोद को बरणै भाई । वृद्धिग्रंथ लखिमन भ्रमखाई ॥

अचलदमणा ब्याहनूप सुनहू। हरिप्रताप निज उरदृढ़ गुनहू ॥
भद्रदेशकर श्रमुक नरेशा। बल सागर नागर सुठि वेशा ॥
तनयातासु लक्ष्मणा सोहर। गुणनिधानप्रति अंगमनोहर ॥
उत्सव योग विचारि महीशा। रच्यौ स्वयंबर बोलिरूपनीशा ॥
द्विजवरनिगमधारि गुणखानी। प्रथम निमंत्र्यो जोतिषज्ञानी ॥
देश देश के पृथ्वीपालक। प्रबलविजयरणरिपुगणघालक ॥
दो० निवति बोलाये यज्ञसव आये साजि सहाय।
पंक्ति पंक्ति पदयोग मख राजितभे नरराय ॥
रुक्मिणिरमण गये संगवाटा। साधारण शुचि पूरणठाटा ॥
भूपसुता कस्मात उठाये। देखतअखिल फिरत मुदछाये ॥
परिहरि सबहि प्रभुहि पहिराई। विजय प्रसूनावलि सुखदाई ॥
जस मर्य्याद ब्याह श्रुतिगाई। तसकरि ब्याहिचले यदुराई ॥
बहु महीप तिन मारगरोका। लज्जितहैतजि नीतिविवेका ॥
कोउकह जीवत बांधों याको। संगरघात बेगिही ताको ॥
निधन करिय मूरख कहकोऊ। जानअजान बदतजड़सोऊ ॥
रोकत पंथ पंथ अरुझाना। महा समरमा सब जगजाना ॥
दो० चलेबाण दुहुँओरते प्राबिट बुन्द समान।
मार मारु धनगर्जे भट मेघ तड़ित दुकृपान ॥
प्रभु रेपै को रचण हारा। मारग समर प्रगट विकरारा ॥
निशितविशिखसलखिभूपपलाने। जनुहरिलखिहरिरियूदलुकाने ॥
चत्रीधर्म धारि जिय कोई। जीवन आशत्यागिरण सोई ॥
क्षत्रत्यागि तनगे सुरधामा। पहुँचेपुर प्रभु पूरण कामा ॥
बहु आनंद द्वारका छावा। पावन चरित भूप हौं गावा ॥
पंचब्याहइमि करि जनपाला। कस्यौ बिहार पवित्र विशाला ॥
आठो पटरानी सुखदानी। रहैं सदा सेवा महँ सानी ॥
रुक्मिणि भालुसुता सतिभामा। कालिंदी हितुविन्दा नामा ॥
दो० सत्या भद्रा लक्ष्मणा नाम मनोहर आठ।
इखदादि भंजन नृपति करैं जो नितप्रतिपाठ ॥

मंगल को सामर्थजग हरि तजिभव जयकाज।
परिहरि आशभरोसतू भजु दुखहर ब्रजराज॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णपंचविवाहवर्णनोनाम
ऊनषष्टितमोऽध्यायः ५६॥

दो॰ यह शरीर जड़है सही वदत बेद बुधिवान।
देखि लेहनिज अछहू तजिमन भ्रमअभिमान॥
जैसे याकी पालना करत सरुचि नितमीत।
तैसे छणहूं मूढ़मन गाउ श्याम यश गीत॥
सिद्धि लहै तिहुं कालमें दुहूं ओर की सत्य।
भ्रमत वृथा भव बीथिका लहत अनेक बिपत्य॥
काम क्रोध लोभादि को भोगचहत मनमूढ़।
अंत समय पुर दंड कह डरत न लहत अगूढ़॥
बिनु ध्याये हरिपद कमल गाये बिनु यशतासु।
जीवत क्लेश अपार भव मृतेनरक महँ बासु॥

एक समय मानस तन धारी। छोणी कस्यो भूपतप भारी॥
तपसअकथलखिविधिहरिबामा। तासु कूल आये गुणग्रामा॥
कहिय कश्यपी को बर चाहा। सो पांचौ भेटौउर दाहा॥
कोउ कृत करत अकारण नाहीं। वदत नीति यहनीतिसदाहीं॥
कृपापयोधि पुत्र अभिलाषा। मोरे हृदय सत्य मतभाषा॥
सबल होइ अति तेज प्रकासी। बहु प्रताप मयभूमिविखासी॥
महा अजित रण जुरै न कोई। काहु कर न मरैसुत सोई॥
जो दयाल मोपर तुम देवा। तौबर याच्यमान है एवा॥

दो॰ ऐसा बचन सुनि हँसि बद्यो त्रैदेवन यों राय।
नरकासुर असनाम सुत ह्वै है तजु दुचिताय॥

बल प्रताप युत महा प्रबीना। युद्ध अषीण तोर आधीना॥
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि सुनु छोनी। बधिहिनताहिकोउचहुंयोनी॥
भूपति तोर पृष्ठितल जेते। होहिं तदज्ञा बश सब तेते॥

अमर लोकखहुसोगति पाइहि। वार अपार दिवेश सताइहि॥
संगर जीति अमरगण नाना। माथवसनविरचिहिनिजथाना॥
कुंडल अदिति केर लै आइहि। भूषण करणसुआपुवनाइहि॥
वासव छत्र धरिहि शिर आपू। त्रिपुरातंकित तासु प्रतापू॥
षोडश सहस महीपति जाता। लाइहिसमर जीतिविख्याता॥
दो० अनउद्धाहित बंदि गृह राखिहि ते बहुनारि।
शुद्धि पाय परिणाम हरि आइहि कटक सम्हारि॥
तव तू हरिहि तासु बधकाजा। कहिहि सरोषवरातजिलाजा॥
मर्दि ताहि तुव आज्ञा पाई। नृपजालै जाइहि यदुराई॥
विहँसि महीरुह अस जड़ताई। मैं किमर्थ करिहौं सुरसाई॥
कोटि दुष्टता वश महतारी। सुतवधवहतनदीख बिचारी॥
दैवर तोषि रसा भुवशाई। गयेलोकनिजनिजत्रिविधाई॥
समय पाय प्रगट्यो यकजाता। भौमासुर खलजग दुखदाता॥
कोऊ कहत नरकासुर नामा। बसतप्रागज्योतिषपुर धामा॥
वल प्रताप वरवश बहु ताके। बायु अग्नि रच्छक भे जाके॥
दो० जसवर दीन्हो प्रथम विधि हरिहर संभव जानि।
करै लाग तस असुरसोइ बिनुप्रयास मुदमानि॥
देश देशके अधिप अनेका। बन्दी गृह राखे अविवेका॥
सोरह सहस नृपन की जाया। बन्दि करसिकरितमचरमाया॥
यतन समेत राख आगारा। संध्या प्रात रहै रखवारा॥
सेवहि तिनहिंविपुलविभिराजा। यथासाधु कोउअतिथिसमाजा॥
जीति लंकपति पुरुष याना। लैआयो खल प्रबलमहाना॥
तदारूढ़ वृंदारक बासा। गयउभूमिपतिबिनाहिप्रयासा॥
अखिल दिवौकस दुष्ट सताये। अमरलोकसबकहँबिकलाये॥
जीव लोभ अमरेश पलाना। दारुणविपतिविवशबलवाना॥
दो० कुंडल लीने अदिति के छत्र मुकुट सुरराय।
यम कुबेर इत्यादि सब तजि थल गये पराय॥
हरिजन ऋषय बिप्र गो राजा। दंड देत सबकहँ बेकाजा॥

व्रततीरथ निंदा रत रहई । श्रुति विरोधखलधर्महिगहई ॥
सुनि आचरण तासु यदुनायक । दीनबंधु आरतसुखदायक ॥
शोचे यह जड़भा अन्याई । अवशिदेउ यमलोक पठाई ॥
त्रियगण मोचि बंदिते लाऊं । शुचिनिकेत द्वारकावसाऊं ॥
छत्र लाय रिपु पाकहि देऊं । अभय प्रसाद सुयशवड़लेऊं ॥
कुंडल अदिति देइ सुख पाऊं । असुर भंजिमहिभारमिटाऊं ॥
पुनिवर तासु विचारिविशाला । सतिभामहिकहदीनदयाला ॥
दो० जोमम संग चलुतो वधौं भौमासुर त्रिपुरारि ।
बिनु आज्ञा तुव मरि हि नहिं धराअंश तू नारि ॥
जब त्रिदेव वरमहि कह दीन्हा । सुनहित तब यहवाचाकीन्हा ॥
निज सुख मृत्यु याचिहै जबहीं । जूझहि समर तनय तबतबहीं ॥
धरा अंशतू जननी ताकी । तुव आज्ञाकारी मृतु वाकी ॥
मन मलीन दुख तरु मुकुलानी । आरत मय फलगिराबखानी ॥
ममजा तुव सुत बधब अनीनी । करियकंतवासंग अतिप्रीती ॥
जननी नेह हृदय तरु-जामा । प्रभु देखा फख दुखपरिणामा ॥
खंड्यो तेहि निर्मोह कुठारी । प्रेरि योगमाया असुरारी ॥
पूरब चर्या टारि विहारी । कह्यो प्रिया सुनु बात हमारी ॥
दो० नहिं इच्छा बध तासुकी एक धारना आन ।
एक समय हौं भूतही दियो ताहिं वरदान ॥
ताहि चहौं पूरण प्रिय कीना । को वरदीन सोकहियप्रवीना ॥
एक काल सुर ऋषि हरि फूला । दयो आय मोहिं मंगल मूला ॥
सो रुक्मिणिहि प्रेम युत दयऊ । तोरे उर अपार दुखभयऊ ॥
कह्यों नहो प्रिय जीव उदासा । करु प्रबोध पुजवौंतुवआसा ॥
तरु मंदार लाइ तोहि देहौं । मन प्रसन्न करि जगयशलेहौं ॥
यहि कारण चलु तू मम संगा । पुर वैकुंठ देखु अघ भंगा ॥
पारिजातगण जहां सोहाये । देत मनोरथ उर मुदछाये ॥
मन प्रसन्न वहसुनि प्रभु बानी । तरस उपस्थित भई सयानी ॥
दो० वैनतेय आये तबहिं हरि इच्छा अनुमानि ।

सतिभामा युत चढ़ि चले दुहूं भांति सुखदानि ॥
का विचारि प्रथमहिदुखमाना। निरयवास्यप्रियकरिदिवखाना ॥
कलुन शोच भौमासुर मारे। दुष्ट निधन कवि बेद पुकारे॥
मर्दि असुर बहुभूप दुलारी। करिहौं लाय दयाल अघारी॥
तेहि समाजमहँ गणना मोरी। करिहौं नाथ धर्म सुख धोरी॥
यहै बिथुर मोरे मन आवा। अजहूं नाथ जीव पछितावा॥
तरु संतान लाय तुव धामा। धरिहौं सत्यमानु प्रिय बामा॥
तेहिसंग पुण्यकरयो तुममोहीं। भवसुलोक बहुहोइहि तोहीं॥
पुनिद्विजतेमोहिंलिहेउविसाहीं। मेटयो चितचिन्ता बहुताहीं॥
दो० तवाधीन रहिहौं सदा यहि कर्तब सुनु बाम।
कर्म अयोगन नारिसुनु महापुण्यदा काम॥
इंद्रानी निजपति दिय दाना। एकसमय यहि भांति सज्ञाना॥
अरुकश्यपहिअदितियककाला। दानदयोतजिभ्रम अघजाला॥
तुवसम प्रिया न मम कोउहोई। यह सुदान शुचि बेदकहोई॥
अस बतरात भौमपुर गयऊ। नगरनिरोध बिलोकतभयऊ॥
कोट ओट गिरिपथ हरिबारी। लखिअतिदृढ़अच्छोभवनवारि॥
पठयो चक्र अनिल अरिभाना। कहा बेगि नाशहु बलवाना॥
क्षणमहँ दाहि बुझाय बहावा। रोकि सकमशुभ पंथ बनावा॥
प्रबिशे नगर देवजन त्राता। बिस्मय मोद रहित बिख्याता॥
दो० हरिहि देखि धाये अमित पुररक्षक करि क्रोध।
गदाघात मर्दे अखिल सुनि पुर बढ़यो बिरोध॥
रक्षक बध सुनि पुर आतंका। भयो महीश यथा कपिलंका॥
समाचार सुनि रोष बढ़ाई। चल्यो पंचशिरहित रव ताई॥
मुरनामेति सुगढ़ रखवारा। महाबली जेहिकर जगहारा॥
कर त्रिशूल जनु दंड कराला। गरजतमुदिर शब्दततकाला॥
प्रभुतट आय अरुण करि नैना। दशन घाति बोल्यो कटुबैना॥
ममसमद्वितियनबिधिउपजावा। कालबिवशकसपुरचलिआवा॥
असबादिद्पटिझपटिखल धायो। मनौ मत्त अहिहरिपरआयो॥

तज्यो त्रिशूल देव आराती। जोत्रिलोकिमतिमृत्युसकाती॥
दो० हरिस्वभावही चक्र करि खण्ड्यो शूल कराल।
देखिअसुरविस्मितभयो पुनिगहिधनुनरपाल॥
क्रोधित जेखल विशिख अपारा। तेप्रभु सहजकस्यो निरुवारा॥
निकरायुध मर्दे मुरुकूरा। सकल हरे यदुनाथ समूरा॥
अस्त्र रहित भा अमरअराती। धायो दुष्ट वज्रकरि छाती॥
जुरयो मल्लगति अवल महाना। कौतुक लखत देवगणनाना॥
बहु उपाय छलबल युत करई। जाइत्रृथा नहिं पूरण परई॥
सरुष भिरत जड़ सहजकृपाला। सतिभामा लखिभई बिहाला॥
प्रिया बिकल जानी असुरारी। क्रोधितभे खल ध्वंत तमारी॥
प्रेरिसुदर्शन खंडे शीशा। जयध्वनि गगनभई भूमीशा॥
दो० तजतप्राणकिय शब्दअति सुनिचौंकेउ भूजात।
कहतभयउ रवधन कहा मर्म जान कोउतात॥
तस्मिन्काल बधो चर आई। सुनियदयानिधि चित्तलगाई॥
बासुदेव अस नाम कहावा। बिहंगारूढ़ द्वारगढ़ आवा॥
रक्षक मर्दि कस्यो मुरुघाता। महाप्रबल अकसर नरताता॥
सुनिसखेदभा निशिचर नाथा। सैनपबोलिभरयोसबगाथा॥
बधो कृष्ण यदुवंशी होई। विदित उपद्रवी यह है सोई॥
आयसु मानि चमूप सक्रोधा। साजिअनीखलसबलितयोधा॥
नगर त्यागि चलिबाहिरआवा। हँसे श्यामलखि समरबनावा॥
सुरसुत सुनिपितु मरणदुखारी। चले अस्त्रबहु निज तनधारी॥
दो० ससबन्धु अति प्रबल नृप सुरजा विदित जहान।
जीति सकत जग एक यक पण्डितरणविज्ञान॥
आयकृष्ण सन्मुख भये अगणित भट विकराल।
समर भूमि बाजे बजे सुनु सच्छेम महिपाल॥
तो०छं० तबआइकहीत्ररयुद्धकरौं। अरिकोगिनबौ जनिजीवडरौं॥
नृप आयसु पाय जुरे रणमें। हरिआसितभे खलके गणमें॥
सुरभान अपार चहूं दिशिमें। तियसाथतमारिकिधौंनिशिमें॥

चहुं ओरहि बाण अलेख चले। लखि युद्ध सुरेश महेशहले॥
खगनायक सों कह यों हरिजू। त्रियरक्षक होन त्रसेडरिजू॥
खर व्यूह यथा जलजात जरैं। खल आख तथा हरिकोपिहरैं॥
द्विजराज कहा सुनुदेव पती। सतिभाम भयातुर नाथअती॥
सुनि क्रोधित ह्वैकर चक्र धर्खो। क्षणमेंदलज्योंदलवायुहरयो॥

भुजंगप्रयात छन्द॥

चमूपालभंज्योविनात्रासस्वामी। मृगाधीशसपैंतथाचक्रश्रामी॥
सुरूजात सातो बधे खेतहीमें। मिलायेघने युद्ध मंडीमहीमें॥
सुने सुद्धिभौमासुरै मोहछावा। कहादेवकरतारकोकालखावा॥
महाशोच में बुद्धि वे बुद्धिसोई। बलीनिर्बलीजीवज्योंज्ञानहोई॥
सुर जोबधे औ हने सैनपाला। नहीं पुन्स संसारपुरूपकाला॥
लिखाजोविधातामभानीकहोई। जयाजे सदायुद्धमें कर्मदोई॥
वृथाशोच की भूलमेंआयजावै। बिनाकर्म क्योंकर्ममेंदेजीवपावै॥
कुचिंतासु चिंतानकीहानिकारी। तजेयाहि तू जीवह्नैसुखारी॥

दो० असमन शोचिवनाय दल चल्यो समर महिसुत।
आच्छादित आयुध वपुष महाबली महिपूत॥
सो० समरभूमि महं जाय हरिहि देखि गर्जत भयो।
महारोष उरछाय शिशिंखासन शरकर धरयो॥
छं० करधारि धनुशर समर मंड्यो बाण बहु छंड्यो तहां।
अमरेश देखत देव मुनि गणसहित चित चिन्तामहा॥
जो तजै तोमर तीव्र निशिचर तुरत प्रभु खंडन करैं।
चहुं ओर घोर अपार आयुध छुटहिं ते सहजहिंहरैं॥
हरि कोपि त्यागे प्राण हर शर चलेत हहकार मय।
वेधेश्रनीतन सहज सिगरेविपुलखल विनप्राणकय॥
कोउ तात तातपुकार पितु पितु भ्रातभ्रात पुकारहीं।
लैजीव भागे युद्ध महि नहिं मित्र मित्र सम्हारहीं॥
पवमान रिपुसम बाण धावहिं असुर बाहनिकोडसैं।
बिललाय त्राहि पुकारि भागैं देखिकौतुक सुरहसैं॥

कर्य्यादिसत्रहिबँधाव धीरज तदपि कोउरणनहिंजुरैं।
अवलोकि तीक्ष्ण शर हरैं अघिमहाभट भटता मुरैं॥
दो० रसासून लखि सैनवध गहिकर तीव्र कृपान।
झपट्योप्रभुदिशिकटु बदत भागि न पावेजान॥

मेघ शब्द करि करैं प्रहारा। क्षमा राशि तेहिकरैं निवारा॥
गदाघात कोनसि बहु बीरा। कुसुम तुल्यप्रभु बज्रशरीरा॥
अखिल अस्त्र निर्फल भय ताके। टूट्यो गदा गर्व बलजाके॥
तबतजिसमर चल्यौ सुरद्रोही। बिह्वलदर्प रहित अतिकोही॥
ताहिपलात बिलोकि सुजाना। जयजय शब्द देवतनठाना॥
जयजनपाल असुर आराती। जयजयमान जैतिअनुभांती॥
सदनजाय पुनि अनी बनाई। चल्यौक्षमा जायक कुरुराई॥
इंद्रबज्र यमदंड समाना। करत्रिशूललै रण नियराना॥
दो० समर उपस्थित होयजड़ प्रभुहि सुनायोटेरि।
सजगहोय संगरकरो रह्यो कालहै घेरि॥

देखिकराल रूप खलकेरा। आशुबधो सतिभामा टेरा॥
बिहँसिश्यामसुनिप्रियमुखबानी। सहजचक्रलीन्होनिजपानी॥
बधौ असुर असकहिपरित्यागा। दुष्टकंठ हरि आयुधलागा॥
गिरयो धराधर शीश समेता। कुंडल मुकुट महाद्युति देता॥
जयजय ध्वनिछाई नृपनाका। तजतकुसुमभृकबिपुलवराका॥
नर नारिन मन आनँद भयऊ। तमचरनरयौकिभवतमगयऊ॥
त्रिपुरमोद पूरयो दश आशा। दुखतमनशि सुखहंसप्रकाशा॥
मरतकाल कहिजय यदुनायक। संतबंधु थिरचर गतिदायक॥
दो० तासुज्योति प्रभुबदन नृप गई समाइ सुहेरि।
धन्यशब्द सुर मुनि बद्यो देखिमुक्ति तेहिकेरि॥

अखिलदिवौकस व्योम अरूढ़ा। कहैंजयति हरिज्ञान अगूढ़ा॥
तुमबिनको अतिउग्र निशाचर। मर्दत देव हेत करुणाकर॥
तासुमरण सुनि जननी ताकी। युतनाती हरि शरण सुताकी॥
जोरिहाथ आई रण छोनी। कहि जयजयनिकृपालुअयोनी॥

आदि ज्योति प्रभुब्रह्म अनादी। बदतबेद परमारथ बादी॥
जनहित बिरचिमनुजवपुसोहर। करत चरित्र अनूप मनोहर॥
मायानंत अबूझ मुनिंदा। जयजनपाल सदारत बिन्दा॥
लीलातुव अपार बिधिपूरी। कोजानै काकी मति भूरी॥
दो० नाथदया बिनु त्रिपुरको तुवगति जाननहार।
देवदेव सुरपूज्य प्रभु लय पालन करतार॥
यहि प्रकार बड़ि बिनय बखानी। कुंडलछत्रआदिति हरिआनी॥
प्रभुसन्मुखधरि कहकर जोरी। कृपाउदधि यक बिनती मोरी॥
सुभग दंत भौमासुर सूना। शरणराखिये मानि प्रद्युम्ना॥
कोमल अरुण बनजकर शीशा। धारिकरिय अबयाहिमहीशा॥
अभय बसाइय दीनदयाला। सुनि बिहँसे हरिमेदिनिपाला॥
राख्यो शरण दयो शिरपानी। अभय होहु कहअसमृदुबानी॥
भौम नारि भौमावति नामा। बिबिधभांतितेहिकस्यो प्रणामा॥
कहि जयजयजन आरतहारी। करियसुदया अनाथबिचारी॥
दो० मणिगण रत्न अपार नृप धरिसिआइ उपहार।
करिअनेकधाबिनयशुचि कीन्हिसुवाक्यउचार॥
जिमिजन बंधु दरश दियआई। निरय पंथ ते लयो बचाई॥
तिमिचलिपूतनिकेतहिकीजिय। यहबरनरबरनशमोहिंदीजिय॥
गूढ़ प्रेम लखि सहजसुभाऊ। भौमसद्म गय चिंतन काऊ॥
रोमपाटमग तेहि बिछवाये। सुभग दंतलै नगरहि आये॥
पुंडरीक थल करिआसीना। पदपखारि पादोदक लीना॥
सुभगदंत सबिनय नरनाहा। दीनबचन बदसुनु अघदाहा॥
पिता पापमय बेद बिरोधी। नीति रहित दायाबिनुक्रोधी॥
तुवसँग बैर किये फल पायो। तासुमरनमोहिंसबबिधिभायो॥
दो० बेद बिरोधी कुपथ रत हरिजन दुखद अधर्म।
हरिहर निंदक भक्ति बिनु मूढ़रहित शुभकर्म॥
अपर अनेक दुष्ट पथ गामी। जीवतभले न मरे भलस्वामी॥
तुव बैरी जो खलजग भयऊ। निजमूढ़ताबिवशनशिगयऊ॥

जात रूप चष बन्धु समेता । रानणघट श्रुति आदि अचेता ॥
कंसादिक अपार जे नीचा । मदबश बसे ते मृत्यु नगीचा ॥
मम पितु अन्यायी जगजाना । वध्यौं ताहि नाहिंउरदुखमाना ॥
भौमावती जोरिकर भाषा । कृपापयोधि एक अभिलाषा ॥
षोड़श सहस इलाधि कुमारी । बंदिपरीं मोचिय बनवारी ॥
अंगीकृत करिपुरलै जाइय । पूरण सुयश कालथल पाइय ॥
दो० असकहि रुख लहि बोलिसब हरिसन्मुख करिदीन ।
देखि रूप जग रूपकर भई अपनपौ हीन ॥
संज्ञा लब्धि सबन अस कहेऊ । करुणामयकलेश सबदहेऊ ॥
जस मोच्यो खल थलते नाथा । तस सेवा महँ राखिय साथा ॥
त्रिपुर कंत तजिकंत अनंता । को अबकरै सुनिय भगवंता ॥
सुभग दंत नृप प्रभुरुख पाई । मँगवाये बहु यान नृराई ॥
बहु सुखपाल पालकी वाहन । महारुचिरसुरपतिमदगाहन ॥
सकल चढ़ाईं सुतहित राई । दैबहु सम्पति अरु रतनाई ॥
सुभ गदंत शिर तब नृप टीका । कस्योमहीपतिजगयशलीका ॥
सबहि संगलै चले कृपाला । अतिअनूपशोभातेहिकाला ॥
दो० बिनुप्रयास निजपुर गये जन रचक विधि चारि ।
निकर उतारीं सदन महँ सुनिपुर लोग सुखारि ॥
उग्रसेन प्रति कह प्रभुजाई । बधभौमासुर सुनु भुवराई ॥
भूप सुतन कर कह्यो प्रसंगा । सुनिप्रमुदितभेनृपप्रतिअंगा ॥
पुनि प्रभु पच्छिराज चढ़िधाये । सतिभामायुत अतिसुखपाये ॥
पुरबैकुंठ गये छण माहीं । प्रतिथल दिखरायो चहुघाहीं ॥
तोषि प्रिया सुर पुरगेराजा । जहां इंद्रकर सुभग समाजा ॥
कुंडल दये अदिति करजाई । बासव छत्र दियो सचुपाई ॥
हरि आगम सुनि नारद आये । दरश पाय उर आनँदछाये ॥
बद्यो सुरर्षिहि श्रीअसुरारी । माधव पासजाहु सुखकारी ॥
दो० कह्योजाय मांगत अहै कल्पवृच्छ सतिभाम ।
उत्तरलै सुनि वेगिकहु यतन करौ परिणाम ॥

कौतुक ऋषिगे जहँरिपुपाका । हरिसंदेश कहसुरुचिसुवांका ॥
सुनिदिवीशविस्मितअतिमयऊ । मौनित इंद्रन उत्तर दयऊ ॥
चुपकिउद्योगानिजत्रियपासा । हरिआज्ञातहँ करयोप्रकासा ॥
इंद्राणी कह बुधिबिनु स्वामी । को यदुनाथ देव अधिनामी ॥
सुरतरु दै कत दारिद लेई । निज शत्रुहिकसपतिसुखदेई ॥
तुव अर्चाव्रजते जेहि मेटी । गिरिपुजाव सब विभवसमेटी ॥
मदभंज्योकर नगवर धारी । घन हारे अपयशभा भारी ॥
अहहकंत तव हृदय न लाजा । श्यामहिंमित्र कहत बेकाजा ॥
दो० मानि मापतिय वचन सुनि कहो अपयप्रतिआय ।
नन्दन बन तजि देवतरु अनत न जाय सकाय ॥
बलकरि जो लै जाइहि कोई । दुखपरिणामग्हिहिनहिं सोई ॥
कृष्णहि कहोन व्रजव्रजवासी । पूजा मोरिदेउ जो नासी ॥
इहांविरोध करत रणहोई । मानमहत्तु सबु जाइहि सोई ॥
सम्मत नारिहृदय जोधरई । नीति विरोध पुरुष सोकरई ॥
उत्तर तासु आसु मुनिराई । श्री माधव सन कहाबुझाई ॥
सुनासीर त्रिय सम्मत लीन्हा । मोर प्रतापहृदय नाहिं चीन्हा ॥
आरत मग्न रहित बनवारी । गर्बिनके अर्भक नित हारी ॥
नन्दन जाय भंजि रखवाये । पारिजातनिजप्रियहिदिखाये ॥
दो० गरुड़ पृष्ठि धरिदेव तरु चले कृष्णमहिपाल ।
सुद्धि पाय अमरेशतब चल्यो चक्षुकरिलाल ॥
ऐरावत चढ़ि सुरगण संगा । समरहेत आवा अतिचंगा ॥
नारदकहा ताहि समुझाई । काबुधि हीनभयसि सुरराई ॥
हरिशत्रुता योग शिव ताता । वृंदारक पति नहिंसुनुबाता ॥
जानि मूढ़ता कृत मत नारी । जोपै प्रबल रहेउ वृत्रारी ॥
कसन इला सुत रण महँ जीता । केहिकारण तवभयउसभीता ॥
कुंडल छत्र सहज लैगयऊ । अबका तोहिआनबलभयऊ ॥
त्रिपुरजीति हति असुरकराला । दिये छत्र कुंडल सुरपाला ॥
तासुसमर ह्वै है जयकैसे । जयति शशा हरियुद्धनजैसे ॥

दो० भूलि गयो ब्रज की विनय नृपतिमंद सुरेश।
सुनि चेत्यो सुरनाह उर कहभल कहत नरेश॥
शोचि विचारि श्याम प्रभुताई। मंदिरगयउ बहुरि सुरराई॥
प्रभुसानंद गये निज ग्रामा। लखिहरषे सुरतरु नर बामा॥
कल्पबृक्ष सतिभामा धामा। शोभितकियोसमुदश्रीश्यामा॥
पुनि षोड़श सहस्र उद्वाहा। कस्यो बेद विधिसुनुनरनाहा॥
सबके भवन बास प्रभु करहीं। सुनिबुधहृदय नसंशयधरहीं॥
पटरानिन संगनेह बिशेखी। भ्रमत बुद्धि हरि कौतुक लेखी॥
जेहिविधिभौमादिक बधकीन्हा। सोचरित्र नृपहौं कहिदीन्हा॥
द्वाराबति नितनव उत्साहा। चोणिपहोत सबहिसुखलाहा॥
दो० यहि प्रकारलीला अगम करत नित्य भगवान।
मंगल परिहरि तासुपद कस भूलत विषयान॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांभौमासुरबधवर्णनो
नामषष्टितमोऽध्यायः ६०॥
दो० मंगल तरु शाखा बढ़त निज बीजहि के तूल।
पय सींचेन सुस्वादज्यों सोनेके फल फूल॥
जाकी मति में शुद्धता मंगल परै न जानि।
ताको शिक्षा करतही मनमें होत गलानि॥
जल उज्ज्वल खरसूनको नित्त न्हवायो ग्वाल।
बच्छभयो नहिं कोटिकृत तिमिभूरुख तिहुंकाल॥
यहिकारण कबिबुध सुनौ तजौ मूढ़ उपदेश।
ध्यावो राधारमण पद जेहिते मिटै कलेश॥
आन प्रकारन मुक्तिपद लहौतात यहि लोक।
आराधत हरिपद सरज दुहु बिधि होहुबिशोक॥
सुन सैमुखी ग्राम नरनाहा। एककाल प्रभुसहित उछाहा॥
पद्मचक्षु श्रुतितन जलखानी। अहिरकिरीट शीशसुखदानी॥
उर बनमाल पीतपट बासा। लखि प्रभुरूप रूपमदनासा॥

तीनिभुवन शोभा की खानी। प्रभुभा भूपन परत बखानी ॥
चित्रशाल जहँमणिगणभासी। चहुंदिग सोहतबस्तु सुवासी ॥
पलंग मनोहर बरणि न जाई। तहँ राजत सानंद यदुराई ॥
सँगरुक्मिणी महाभा दामिनि। षोड़शनिधिशृंगारितभामिनि॥
शुचि स्नान निर्मल पट सोहै। जावक पगनखपतिमनमोहै ॥
दो० बेणीबंधन शीश कच मांग सिंदूर सोहाय।
भालखौरिभादाअधिक तिलकपोलसुखदाय ॥
कश्मीरी मर्दन सब अंगा। मेंहँदी पगसोहै दुख भंगा ॥
कुसुमाभरण सुहेमौ भूषण। लवंगादि भक्षण श्रम दूषण ॥
रद मंजन ताम्बूल ससामा। चषे अंजन ये षोड़श नामा ॥
वाक्य हास्यमृदु चालि सनेहा। इनते अधिक नारि कृतएहा ॥
श्रीरुक्मिणि तन सोह निकाई। यक रसना नहिं गायसिराई ॥
रुक्मकरणवसुमृग शिशु नैना। हरिकटिइभगतिशुभपिकबैना॥
उपमा त्रिपुरखोजिमनहारा। रुक्मिणिसमरुक्मिणिहिविचारा॥
एक सेज शोभित द्वौनीके। रमाविष्णु अहितल्पगफीके ॥
दो० बिहँसिरुक्मिणी प्रतिकह्यो योंजगमोहनश्याम।
एक बारता मोरिसुनि पुनि उत्तर देबाम ॥
रूपवती गुणमय तू नारी। जनु निज हाथ विरंचिसँवारी ॥
पुनि भीष्मकतनयाबुधिधामा। रतिलजात लखिरूप सुखमा ॥
बलनिधि अतिप्रताप युतभूपा। जग शिशुपालस्वरूपअनूपा ॥
जेहि भयभीत होत रिपुपाका। कुल चिंतमन मोहिंहै बांका ॥
जासु मित्रडर यहिथल आये। बहुनलखानिनपरिहिलखाये ॥
ताहि तिलक दै भूप बुलावा। व्याहनहेत तोहिंचलिआवा ॥
तुम तजिलोकलाजकुलकानी। बिप्र इहां पठयो शुचि ज्ञानी ॥
पितु भ्राता आज्ञा तुम नासी। सुबरपान नहिं जीवहुलासी ॥
दो० याचक मुख कीरति सुनी हमन तुम्हारे योग।
जरासन्ध शिशुपालबल सकलसराहतलोग ॥
प्रबल धनुर्द्धर द्वौ नरनाहा। समर बीरहौं गा तेहि ठाहा ॥

नभंजि भूपनकर भारी। वस्तस लैआयों तोहिं नारी॥
र प्रण समुझि न इच्छामोरी। खलवाहनी विचित्रविधिमोरी॥
भारी पद चहौ सयानी। खोजौ कोउनृपशीलसुज्ञानी॥
ज अनुरूप वरौ कितनाही। दोषन मदकलगतिक्रनयाही॥
रिमुख वचनसुनतअकुलानी। विह्वल धरणिभयी विनुपानी॥
रध श्वास महासुधि हीना। विकलितकुंतललपमाक्षीना॥
दनोपर सोहत लटशाला। चंद्र अमी जनु पीवतकाला॥
दो० देखिदशा विकलित महा उठे कृष्ण अकुलाय।
जान्यो चाहत तजनतन तन भुजचारि बनाय॥
तुरायुध आभादा कर में। मेघवरण द्विजपदशुभ उर में॥
रगहि तेहि उछंग बैठाई। पवनकरयो बहुविधि यदुराई॥
ककर तासु सम्हारत केशा। भये प्रेमवश सुनौ नरेशा॥
मित चेष्टा करत कन्हाई। कहतबनत नाहिं बुद्धिसकाई॥
छत पीताम्बर कर आनन। उरकरभरत कतहुंखलभानन॥
रवार प्रभु ताहि जगावत। अंतरयामी द्विविधा भावत॥
हि प्रकार कछुकाल सिराना। रुक्मिणितनआवातनप्राना॥
न्य धन्य हित प्रिया प्रवीना। जीवन तोर मोर आधीना॥
दो० वचन व्यंग संज्ञातजी हास्य विचारयो नाहिं।
बुद्धि भवन निर्बुद्धि कृत कसकीन्ही यहिठाहिं॥
वधरुधीर हास्य रस जानी। करु सम्हारवपुसुनिमृदुबानी॥
चन वनज खोलिलखुमोहीं। अमित प्रसन्न भयोंहौं तोहीं॥
हँसि बोलु मम चिंता जाई। विनु बोले दुख नाहिं नशाई॥
ती अतन मातु सुनि बाता। नैन पसारि दीख प्रभु गाता॥
रिउछंगलखि आपु लजानी। उरसंकोचि उठीं सुनु ज्ञानी॥
करजोरि चरण शिर दयऊ। पृष्ठि कमल कर परसतभयऊ॥
न्य प्रेम मूरति मम प्यारी। हंसी सत्य निज जीवविचारी॥
षघ्रोभ द्वै हास्य अयोगा। तेहिते तजौ करौ शुभ भोगा॥
दो० कहा वन्दि पद सुनौ पति त्रिभुवन पतिपतिदानि।

बद्योन तुम्हरे योग हम नाथ सत्य तव वानि ॥
कमलाकंत बन्द अज शंकर। द्वैत रहित कारक त्रैशंकर ॥
समता बिनु अयोनिअजनामा। आदि अंतबिनुसबगुणग्रामा ॥
मैं प्राकृती अधम पुनि नारी। तुम्हरे योग न सांचु मुरारी ॥
मुनिवरबदत अकुलभगवाना। सबहित्यागिकीजियपदध्याना ॥
जे मतिमंद भ्रमत संसारा। परिहरि कजपगरतसुखसारा ॥
जोप्रभु बली नरप बहु कहहू। यहअनुचितकसगुरुतालहहू ॥
मोरी जान असुर आराती। प्रबल न तुव तजितेरहजाती ॥
शासन पक अयोनीशाना। तवपदकरत त्रिसंधिकध्याना ॥
दो० बर बरदायक देवनर तव प्रताप जगदीश।
बहुतजन्मकरितप कठिन तवभवहोतमहीश ॥
राजत श्रीमद बशनृप होई। जपतप भजन देत सबुखोई ॥
नीति रहित कृत कर्म पसारा। अंत नरक पदको अधिकारा ॥
निज कृत पूरब कर्म नशावत। सुमति भ्रष्टहुं ओर कहावत ॥
यहि कारण जग क्षुद्र नृपाला। एकहि ओर होत प्रतिपाला ॥
तव गति सदा एकरस स्वामी। सुजन हेत जन्मत रदगामी ॥
बहु अवतार धरहु भव आई। धराभार भंजौ यदुराई ॥
खल दल हरौ स्वधर्म प्रचारौ। बिबिधप्रकार दासनिजपारौ ॥
जापर रावर दया अपारा। सोपद कंज करत आधारा ॥
दो० धन नृपता यौबन बिभव रूप पाय मद होत।
दया धर्मशत तप भजन तवभागतगति पोत ॥
अनुचित जानि दरिद्र निवासा। करत नाथ तुम तासुअवासा ॥
कष्टबिरश नित ध्यावत नाथा। तुवपदसात्त्विनयगाणिशुभगाथा ॥
दारिद बंधु दीन यहि कारण। देतन धनचाहत जेहितारण ॥
पुनिकह प्रभु काशी अधिकारी। इन्द्रदवन तहि सुताडुलारी ॥
अम्बा नाम कस्यो जस कामा। तसमैं करि न सकतपरभामा ॥
स्वयं कंत तजि भीषम संगा। आई भयउ मान कर भंगा ॥
[illegible] गई तास पहँ बांच्योजाको ॥

तेहि हरिआइ दयो तजिनेहा । गङ्गा तीर करयो तप तेहा ॥
दो॰ आराध्यो शंकर चरण करि तप नाथ महान ।
भये प्रसन्नित शंभु तेहि बर दीन्हो सह मान ॥
बरप्रताप त्रियते नर सोई । जानत जेहि हित भईघमोई ॥
भीषम बधकरिहै प्रभुजानत । मौनहेत केहिक्योंनबखानत ॥
सोनहोइहै मोहिंते स्वामी । कृपापयोधि विहंग वरगामी ॥
अरु यहबर्योकिसुनिममगाथा । याचकसुखकीन्होमोहिंनाथा ॥
तुव कीरति गावत बंदीजन । शिवविरंचि शारदसानँदमन ॥
दयाधीश सुनि बिप्र पठायो । बहुदुग्गन कहँ स्वर्ग बसायो ॥
आरत जानि सेवकिनि कीन्ही । महाप्रशंसादासिहि दीन्ही ॥
ज्ञान प्रभाव जान गति मोरी । धन्य प्रमोदिनि नेहकिथोरी ॥
दो॰ प्रीति बश्यहौं सर्वदा वेद बदत यह जानु ।
मन मानी तुवाम अति प्रीति अलौकिकठानु ॥
प्रभुबाणी सुनि मोदमय रुक्मिणि भईनृपाल ।
मंगल सेवा महँ लगी तू भजु मोहन लाल ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णरुक्मिणीहास्यविवाद
वर्णनोनामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥
दो॰ बिनुजाने ब्रत दंड तन तीरथ दुख को रूप ।
जप तप फलदन होत कोउ यह सिद्धांत अनूप ॥
तिलकदिये मालालिये मुक्ति न करतल होत ।
बिनुजाने हरिनाम वय चहुँदिशि भ्रमथी पोत ॥
यहि कारण तजि दुचितई भजिले मोहनपाद ।
जीवन फल जीवतलहै अंत मुक्ति मरयाद ॥
अलसअनखवशसुजनकोउ कैसेहुध्यावैश्याम ।
पावै भव भय विभवयुत बहु आनँद सुरधाम ॥
वेद बदत यह सत्यमत मूरुख बूझत हैन ।
जग बीथिन भरमत फिरत जानत जीवपदैन ॥

मुनिपुनिभयेपोसुनेनरनायक।षोड़शसहसअठत्रियलायक॥
तिनसंगरमणकरतकमलापति। किमिविस्तारवदै मंगल मति॥
सेवा सुरुचि करें बसुरानी। प्रकट गूढ़ जो विनय बखानी॥
कोउ उबटैकोउ प्रसहि न्हवावें। कोउव्यंजन श्रुतिभांतिबनावें॥
कोउ ताम्बूल सप्रेम खवावें। कोउभूनिबसनसुरुचिपहिरावें॥
कुसुम माल कोउ गूंथें राई। समय समय पहिरावें जाई॥
कोउ गुलाब चंदन सुरप्यारी। चरचें अंग अंग सुखकारी॥
कोउ सेवत पग अति सुदपाई। महामोदमय नारि अघाई॥
दो० सकल भांति सुख कृष्ण कहँ देवैं नारि नृपाल।
आननारि यहि भांतिहीं करें सेव तिहुँकाल॥
दश दश सूनु सबन के भयऊ। बरबर धाम लोक यश छयऊ॥
महावृद्धि यदुकुल की राजा। कहतबनतनहिं अद्भुतसाजा॥
एकलक्ष यक षष्टि हजारा। भयं कृष्ण के सुभग कुमारा॥
यकयक दुहिता प्रतितियजाई। सुनुमहीपप्रभुरुप चितलाई॥
सब सुन्दर सगुण गण सारी। आनन प्रभा चंद्रमा भारी॥
कोसमस्त सब नाम बखानै। एकरयाम सबकहँ पहिचानै॥
सुनिसमृद्धि यदुवंश अपारा। रुक्मकीन्हनिजहृदयविचारा॥
कहा काल यहि सम्मत जाई। चंद्रवदनि ममनन यह आई॥
दो० चारुमती जोहैं मगी कृत ब्रह्मा सुत संग।
देहैं ताहि न कोटिकृत यह भावत मम संग॥
करों स्वयंबर भूप बोलाई। यहिमिस दरशदेहिं यदुराई॥
ससुतरुक्मिणिहिबोलनिकेता। पठै पत्र निज बास सचेता॥
आज्ञा कंत केरि निय पाई। पत्र दास्का दयो पठाई॥
रुक्मिणि पाय स्वबंधु सँदेशा। प्रथ्वो तुरतबोलि हृषिकेशा॥
आज्ञा पाय यान चढ़ि चाली। पुत्रसहितसुखितअहिमाली॥
शत्तर भूप भोजकट आई। निरसिरुक्मनवहुविनयसुनाई॥
सादर करि दंडवत सनेहा। निजभगिनिहिं लायोनृपगेहा॥
रुक्म बधू लखि हिय हुलसानी। वंदिचरण बोली मृदुबानी॥

दो० जा दिन ते भा हरण तुव तवते दर्शन आज ।
पायों पूरण पुण्य बश भे दयाल ब्रजराज ॥

सकलभांति करि सिष्टाचारा । प्रीति विवर्द्धयों बड़ब्यवहारा ॥
समयपाय यकदिन असभाषा । मोरे हृदय पर्म अभिलाषा ॥
जेहि विधि दायाकरि मम गेहा । आइउ सहजै मानि सनेहा ॥
तेहिप्रकार सुनि विनय हमारी । चारुमती मम सुता पियारी ॥
निजसुतसँगसम्बंधित कीजिय । यहिप्रमोदद्दुहुँविधिसुखदीजिय ॥
कह्यो नीक जग सुखदाबानी । सखी अहै परिणामगलानी ॥
बंधुबिरोधी सत्य उपाधी । अतनतातभवविदितविपाधी ॥
कलह कठिन जानत सबकोई । सफल न होत मोद मयसोई ॥

दो० कहत आनकृत आनहीं रुक्म रीति यह आहि ।
तेहि अवसर आयो रुक्म वचो पूछि चरचाहि ॥

कछुन अंत अब होइ उपाधी । मतिनिजमैंनिजकर्तलसाधी ॥
श्रुतिभाषत भगिनी सुतलाहिय । दक्षिणदेशस्वसुताबिवाहिय ॥
सुवगृह गुर्ज्जर याम्य प्रदेशा । यामहँ कछुनहिंभयलवलेशा ॥
रूप राशि सुत दुहिता योगा । यह उद्वाहन निंदहिं लोगा ॥
कृष्णबैर पूरुब विनशाऊं । नवसम्बन्ध विविध मुदपाऊं ॥
कीन्ह स्वयंबर सुरुचिवनावा । बहुभूपन कहँ सुद्धि पठावा ॥
अमित नृपाल भोजकट आये बलानिधान सबभांति सोहाये ॥
जुरी स्वयंबर महिप अथाई । परिपूरणनहिं बरणिसिराई ॥

दो० तन शृंगार करि भूपसुत गे प्रद्युम्न यगठाम ।
अवलोके नरपति अखिल सायुधबहु गुणग्राम ॥

सबके हृदय ब्याह उत्साहा । यथा योग राजत नरनाहा ॥
जैति दाम कन्या कर सोहै । देखिरूप सुर नर मन मोहै ॥
मध्य सभा निरखत चहुंआसा । पै न दृष्टि ठहरत कहुंपासा ॥
तदाकाल लखि रूपनिधाना । मोहित सुता भई बिनुमाना ॥
कंधर श्रक मेल्यो अतुराई । आश रहित भे सब नरराई ॥
करत परस्पर सम्मत राजा । यहि समाजभावड़ाअकाजा ॥

यदुवंशी अतिभे - बरियारा। चहुँदिशिदेखिपरतअधिकारा॥
आजुसकलमिलिरणमहिमिरहू। कन्या छीनि पराजय करहू॥
दो० रुक्म देखि सानंद नृप सुत तनया द्वौ लाय।
व्याहवेदबिधिवत कस्यो निज मंदिरमहँजाय॥
बड़ आनंद रुक्म मन छयऊ। दायज भूप बहुत बिधि दयऊ॥
रुक्मिणिसानंद चली निकेता। पुत्रबधू युत सुत कुरुकेता॥
मग रोक्यो बहु भूधर आई। मस्त शाला जे रहे लजाई॥
प्रबल अराति देखि तेहिकाला। अस्त्र शस्त्र लीन्हे क्षणपाला॥
महा धनुर्द्धर कृष्ण कुमारा। को समरथ पावै रणपारा॥
अल्पकाल महँ सब बिचलाये। महा मारु लखि रसपपलाये॥
मंगल मोद सहित यदुराई। गये द्वारका युत कुशलाई॥
आगम जानि अखिलपुरबासी। हित बांधवकवि बिप्रउदासी॥
दो० अगवानी करिलैगये नृप आलय कहँ तात।
बजत बधाई नगर बहु किमि सुख बरणौं जात॥
बिपुल काल बीते मुद एही। गायकहँ असहद मतिकेही॥
जन्म्यो यक प्रद्युम्नके पूता। प्रभु दिगसुधिकीन्ही कोउदूता॥
सुनि हरि गुरु ज्योतिषी बोलाई। पौत्र जन्म घटिका समुझाई॥
ज्योतिष मत पञ्चांग बिचारी। अति प्रमोदमय गिराउचारी॥
शुभ अनिरुद्ध नाम प्रभु धरहू। जातकर्म नाना बिधि करहू॥
पुर मंगलाचार प्रतिधामा। उत्सव पुर किये सुखधामा॥
दुहिता पुत्र जन्म जब सुनेऊ। कृतुदिनबादिरुक्ममनगुनेऊ॥
लिख्यो पत्र कृष्णहि सुखपाई। तिलक वस्तु दीन्ही पठवाई॥
दो० ब्राह्मण आयो श्याम पै लैसुवस्तु अभिषेक।
देखि कृष्णयुत ज्ञातिजन उठिकीन्हा पदटेक॥
बहु सत्कार सहित सन्माना। करि आसीन पूछ भगवाना॥
क्षमाराशि केहिकारण आये। कौन नगर गृहकासु पठाये॥
ग्राम भोजकट मोर निवासा। रुक्मभूप पठवा तुव पासा॥
तव सुत जात तासुसुत जाता। यह सम्बन्ध जगतसुखदाता॥

असकहि पत्र श्यामकरदीन्हा। पढ़िबोलाय बांधवमतकीन्हा॥
सम्मत स्यों लीन्हो अभिषेका। बिप्रहि दानदीन्ह सबिबेका॥
द्विज पठाय आये बलपासा। तिथिबिवाहकरकह्योप्रकासा॥
युगल बंधु गय भूपति पाहीं। बह्यो कार्य्य बिस्तरयुत ताहीं॥
दो० नृप आयसु लहि बंधु द्वौ कस्यो बनाव बरात।
ज्ञाति बंधुहितु संगलै सकल चले यदुजात॥
पुर समीप जब गई बराता। समाचार लहि भीष्मकताता॥
नृपति कलिंगादिक सँगलाई। आवतभयो समुद अगवाई॥
शुभथल सबहि दीन्हजनवासा। जहां न कौनौभांति कुपासा॥
षटरस चारिभांति ज्योनारा। सादर सबहि जिमायभुवारा॥
लग्न समय दुहिता दै दाना। सबिनयकीन्हेसिबड़सन्माना॥
दायज अकथ दयो को गावै। रसना एक पार नहिं पावै॥
भीष्मक नृपमनजानि उपाधी। गयो जहां राजत अबिषाधी॥
करि दंडवत श्याम प्रति कहेऊ। भयउबिवाह अखिलरसरहेऊ॥
दो० अब न बिलंबिय तातह्यां शीघ्रहि जाइय धाम।
रुक्म मित्र आये सकल शरिहोय परिणाम॥
रुक्मिणिपास रुक्म उतआवा। तबतिननिजभ्रातहिसमुझावा॥
बिभु बैरीपति तुब हितु आये। चारिओर सैनायुत छाये॥
जो सुलोक भलिचाहौ लोका। इतउतहैं अबअखिलअशोका॥
तौ हमरे सँग पुरलगि चलहू। जानिबूझिजनिघूझिहिछलहू॥
कत चिंतमन करौ बिनुकाजा। बिदा करतहौं पाहुन राजा॥
पुनि जसकहौ करौं तससाजू। सुखपावै जेहिसकल समाजू॥
असबदिगयउ महीपन पासा। जो पाहुन आये चतुरासा॥
कोउ नृप रुक्महि कहा बुझाई। बड़ दायज दीन्हो तुमभाई॥
दो० पैन कृष्ण मान्यो कछू अभिमानी यदुजात।
यह अचरज संभ्रममहा कहत बनत नहिंबात॥
दूसर प्रथम मूशली पानी। तोहिंअपतिकीन्होसुनुज्ञानी॥
धृकक्षत्रिहि निज रिपु बिसरावै। अजय पाय पुनिमित्रकहावै॥

सुनि सकोप भा रुक्म अपारा। तबकलिंग असबचनउचारा॥
कछु नहिंकाम कृष्णसन आही। बल्दाउहि बोलौ यहिठांही॥
जूपखिलाय हरौ धन ताको। नाशौ गर्व वाहिमद जाको॥
सम्मत तासुरुक्ममन आवा। बिधिबिपरीत ज्ञानबिनशावा॥
आतुर रुक्मरामतट आयो। भूपनकर सँदेश सुनायो॥
हरि रुखपाय चले हलधारी। बिधिकर्तबनिजहृदयबिचारी॥
दो० महिपसभा आये जबहिं उठे सकल शिरनाय।
करि आसीन बहोरि बद सुनौ मनोरथराय॥
जूप खेलिये हमरे साथा। कहतबनतनहिंबचनअगाथा॥
हँसि कह जूप कर्म अति पोचा। खेलिय जो तुम्हार मनरोचा॥
पन्सासारि नृपति भँगवाई। जुरि बैठे सबभूप अथाहँ॥
खेलन लगे रुक्मबल्दाऊ। जीत्यो रुक्मभूप दशदाँऊ॥
अखिल सम्पदा हलधरहारे। बैठे राय कछुक मन मारे॥
व्यंग बचन कलिंग कहिहँसेऊ। राम हृदय लज्जा नृपबसेऊ॥
मुद्रापुनि दशकोटि लगाये। रुक्म सगर्ब मोद उरछाये॥
ते जीते जब मूशलपाणी। तब मिथ्या बोले नृप बाणी॥
दो० युद्ध जूप क्षत्री लखत ग्वाल न जानत ताहि।
सुनत कटुक बाणी नृपति बलकोपे तेहिठाहि॥
क्रोधमरीचि हृदय दवबाढ़ी। धीरजधर्यो कर्योबुधिगाढ़ी॥
सप्त अब्जधन बहुरि लगायो। जैतिपास हरिके कर आयो॥
दुष्ट समाज तदपि नहिंमाना। रुक्म जीति सबकरत बखाना॥
बाढ़ि अनीति लखि भैनभवानी। हार्योजूप रुक्म अज्ञानी॥
नृपसाखी असत्य सबदेहू। धर्म बिहाय दुरित कसलेहू॥
वाक्य सुबर्त्त सुनत बलरामा। क्यौ समर्ष बचन तेहि ठामा॥
वैरभाव नहिंतज्यो सगाई। अबतौ रुक्म मृत्यु तबआई॥
पाप पुण्य परिहरि जगकानी। बर्योतोहिं सुनुरे अज्ञानी॥
दो० सबके सन्मुखही हत्यो रुक्महिं श्री असुरारि।
बांध्यो बहुरि कलिंगको लीन्हो दंत उखारि॥

घानहु नृपनभगाय के बल आये हरिपास।
नृप कर्म अरुरुक्मवध कीन्हो सकल प्रकास॥
सुनिहँसि सब कहँ संगलै गयेद्वारका श्याम।
उग्रसेन आदिक सकल मुदित भये गुणग्राम॥
मंगल विधि लिखनी कठिन मिटैन कोटि उपाय।
यथारुक्म मास्यो गयो तू भजु यादवराय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांअनिरुद्धविवाहरुक्मवधवर्णनो नामद्विषष्ठितमोऽध्यायः ६२॥

दो० इंद्री गन साधेनहीं तिलक लगाये शीश।
साधु कहावत भक्तभव मिथ्यावाद वगीश॥
दुरित सकल मनमें बसत ऊपर ज्ञान बखान।
कपटी अन्यायी जगत कलिसुभक्त परमान॥
यहछल चलिहै लोकमें हरिपुर ह्वै है न्याय।
छलकारी अरु दुर्मती दंड पाय पछिताय॥
तूमंगल तजि दुर्मतिहिभजु निजआतमनित्य।
अंतर प्रेम प्रतीति सों मुक्त होयगो सत्य॥
अथवाराधावल्लभहि ध्याउ त्यागि दुर्भाव।
जीवत सुखपावै घने अंत सुपुर शुभठाव।

अबसुनुनृप वर रुचिर कहानी। ऊषा व्याह कहौं मुदमानी॥
ब्रह्म वंश कश्यप अवतारा। कनककस्यपतासूनुदुलारा॥
बलनिधिसमरअजितजगजाना। नरहरितनतेहिवधभगवाना॥
भक्त शिरोमणि तेहिसुतभयऊ। यशप्रह्लादजगतनृपभयऊ॥
नाम विरोचन ताकर बालक। महाप्रतापी रिपुगणशालक॥
तिनकर सूनु भयउ बलिभूपा। पुण्यरूप जोहिलोकअनूपा॥
बहुमख किये उड्यो सुरपाला। बावनवपुनवछल्योगोपाला॥
नष्टयज्ञ पाताल बसायो। बाणासुर तेहितनय कहायो॥

दो० बलसागर नागर नवल जेहि सम कोउ न लोक।

शोणितपुर में बसत सो वर महिपाल अशोक ॥
नित कैलास जाय हर सोवै। सात्विकदानविविध विधिदेवै ॥
ब्रह्माचार धर्म शुचिधारी। गोजित रहै सदा मन मारी ॥
यकदिन पूज्य प्रेम बश होई। लाग मृदंग बजावन सोई ॥
नृत्यहि शिव गुणगाय अनेका। तजे इष्ट मेधा सविवेका ॥
ताल तरंग शंभु सुनि जागे। गिरिजासुतआये तेहिआगे ॥
भोलानाथ स्वरमरु बजायो। नृत्य कर्म प्रियगुनमनलायो ॥
विविध ताल बाजी गिरि ऊपर। कोश्रस गान जान नृपभूपर ॥
मन प्रसीदि तन रोम प्रसेदा। शंकर शंकर शंकर खेदा ॥
दो० कह्यो बाण प्रति मन्मथो पुत्र तुम्हारे गान ॥
जो इच्छा तव जीव महँ माँगु सोइ बरदान ॥
आरत विनय बचो असुराधी। पुनिकहवचनसुनोनिर्व्याधी ॥
प्रथमअमर करि दीजियस्वामी। कृपाउदधितव चरणन मामी ॥
नृप शिरमौर होउ जग जीता। त्रिपुरनकोउकरिसकैसभीता॥
एवमस्तु शिव कहि पुनिभाषा। मोरे हृदय अपरअभिलाषा ॥
भल बाजे तूतुरुचि बजाये। अतिविनोतिसुतममनभाये॥
बिनु याँचे सहस्र भुज दीन्हा। अजर अमरतोकहँहौंकीन्हा ॥
निरभय निवसो जाय निकेता। अचल विभव भूजौसहचेता ॥
महा मग्न मन बाण नृपाला। पंरिक्रमा शुचिकरयोविशाला ॥
दो० लहि आज्ञा दंडवत करि आयो अपने धाम।
ध्यावे लागि चरण शुभ सुदमय आठो याम ॥
देवासुर नर नाग समेता। जीते सब कहँ सहित निकेता ॥
निजपुर चहुँदिशि कोटबनायो। सदाचार श्रुति सुतयुतभायो ॥
करै अकंटक राज अशोमा। कोकवि वदे विभवकी शोभा ॥
संगरयोग तासुपुर तीनी। स्योनेकजसुतसुजबलभीनी॥
फरकहि अरु सहराय अपारा। बाणासुर हेरे श्रुतिद्वारा ॥
निजमन कहै भिरौं रण कासों। पूजेयुद्ध आश मम जासों॥
कबहुँ करन अद्रि गणचढ़ई। कंदुक केलिमेलि नभकरई ॥

नग नग मर्दत चूरण गिरई। देश विदेश चलितबलाफिरई॥
दो० जब न जुरयो संग्राम जग कोउ समरथ रण धीर।
तब चित शोच्यो असुरपति भई भुजा बलपीर॥
अबपुनिहौंशशिमौलि मनाऊं। निजचितमनसकलकहिगाऊं॥
अस विचारिनृपगा कैलासा। हरसन्मुखकियविनयप्रकाशा॥
शूलपाणि सुर शिरमणिनाथा। सुनियदासदुखजानिअनाथा॥
पौरुष मिलित दयउ बहुबाहू। समर योग पाऊं नहिं काहू॥
कासन देव करौं खताई। बेगि कृपानिधि कहियबुझाई॥
शोचिनाथ भव सुभट बताइय। जासनसमरभूमि सुख पाइय॥
कालग्राम स्वर्भुव पाताला। संगरहित खोज्योंशशिभाला॥
मिला न खग्ग प्रहरण कोई। मम सन्मुख मंडन कृत जोई॥
दो० यहि कारण जस बलदयो, तस कीजिय संग्राम।
होय मनोरथ सफल मम कृपाराशि सुखधाम॥
जोपै अनुचित होइ गोसांई। अपरवीर कोउदेहु बताई॥
अब न समरबिनु धीरज मोहीं। सत्यकहौं दायानिधि तोहीं॥
बिहँसे शंभु सुनत तेहिबानी। अरुकछु उरमहँ लागगलानी॥
खलपालन श्रुति निंदितअहई। जस यहदुष्ट मोर चित दहई॥
सेवक साधजानि बरदयऊ। बरबस समर उपस्थित भयऊ॥
नीचबड़ाई पावत जासन। प्रथमहिंरारि करत जड़तानन॥
चतुर सुजान न नीचहि पालै। वृजिनदानि लखितीनोंकालै॥
अहंकारतरु यहि उरजामा। नशैबेगि नतदुख परिणामा॥
दो० निजकर निहतत दोषहै सेवक सुत श्रुति रीति।
कहत बिबुध सज्जन सकल जबलगि कृतन अनीति॥
जानि अतुराय धीर धरु जीवा। बरबस दरबस भो बल सीवा॥
शत्रु तोरबीते कलुकाला। उपजिहि कृष्णदेव प्रतिपाला॥
तदा काललगि बिकलन होई। गर्वतोर भंजैंगे सोई॥
भा प्रसन्न सुनि विबुधरबानी। बोल्यौ बचन जोरि द्वौपानी॥
अब अवतारिहि पुरुष प्रतापी। बदियदयाकरि अतनस्नाथी॥

जन्मतासु हौं कौन प्रकारा। जनिहौंसोप्रभुकहिय बिचारा॥
तब हर एक ध्वजातेहि दयऊ। कछुरुट धूरजटी उर भयऊ॥
निज निकेत यहि बाँधौजाई। कखौ सचेत सदा रखवाई॥
दो० निजवश जब महितल परै जान्यौरिपु अवतार।
सुनि समोद ध्वज हाथलै बंदि चल्यो तेहिबार॥
भवन आय ध्वज मंदिर बांधी। अहिगौरी शिवआज्ञा कांधी॥
कहै मनाय देव नितबाना। कबउपजिहिममरिपुबलवाना॥
कछुक काल बीते नरराई। बाणावती कन्यका जाई॥
सुनत बाण ज्योतिषी बोलाये। बिशदासन सादर बैठाये॥
सुताजन्मकर समय बताना। सुनि द्विजराज धर्म सुखपावा॥
खग तिथिबार भाल युतयोगा। बेद सहित पञ्चांग सयोगा॥
लग्नेष्टित करि द्विजवर बोला। ऊषानाम महिप आडोला॥
सकल सुवर्त्त रमण शुभथाना। यहिकर परै नृपाल सुजाना॥
दो० सुनि बाणासुर मुदित मन बहुविधि दीन्हेदान।
बिदाकिये खगवर सकल करि सबविधि सन्मान॥
पुनि मंगलामुखी बुलवाई। ते गावहिं शुचिताल बजाई॥
प्रतिदिन आनँदहोय नवीना। पावहिंदानबिपुल द्विजदीना॥
जिमि जिमिवृद्धत कन्या सोई। तिमि तिमिशणप्रफुल्लितहोई॥
जवनगाह्द वयताकर भयऊ। बिद्या हेत पठय तब दयऊ॥
गिरि कैलास सखी के संगा। ऊषा भई मुदित प्रति अंगा॥
भर्गसवाम राज जेहि ठाईं। कहा सुता तहँ शीश नवाई॥
मात पिता शिव गौरिगोसांई। यह दासी सेवा लगि आई॥
विद्या दान देहु सविचारी। जगत विदित दाया कूपारी॥
दो० आरत लखि शंकर प्रिया करि आदर सन्मान।
विद्यारंभ कराइयो कहि गणपति भगवान॥
गिरि कैलाश निकट पुरताको। विदितभुवन बाणासुरशाको॥
नित प्रति जाय पढ़ै अरुआवै। दूसरि ओर न चित्तलगावै॥
अखिल पुराण शास्त्रपढिलीने। तालयंत्र भव आमादीने॥

गान कला उपमा बिनु जानै। सुनि गंधर्व लाज उर आनै॥
हरसँग यक दिन बीण बजावा। शुभसांगीत राग तेहि गावा॥
आगम जानि महेश कृपाला। हिमजाताप्रति कहा हवाला॥
जास्वो काम स्याम उपजावा। महारूप मय होलखि पावा॥
इमि बतरात गये जहँ गंगा। न्हायशंभु सुख लहाअभंगा॥
दो० अभरण पहिरावत भये गिरिजहि मोद बढ़ाय।
सुख पूरण ईशान प्रभु सुनु धराधि मुद पाय॥
अति आनंद मगन मृड होई। डमरु बजावत भे भ्रम खोई॥
तांडव नृत्य नचे सुरसाई। युत सांगीत गान श्रुतिभाई॥
प्रियहि रिझावैं कंठ लगाई। निरखत ऊषा दृष्टि दुराई॥
मदन दाह उपज्यो उर तासू। कंत चाह मन मिटा हुलासू॥
जो भगहोत भक्त प्रिय माना। करतिउं सुख हर गौरिसमाना॥
गौरीउडररहित छवि छीना। तसबिनुपतिअबलाद्युतिहीना॥
अंतरगति अनुमानि मृडानी। बोलिसहित ऊपहि कहवानी॥
तवपति मिलिहिस्वप्नमहँआई। बीते कछुक काल यहिभाई॥
दो० तासु खोज करवायकरि मिल्यो मोदमयबाल।
जनिचिन्तनमनमेंकरो इमिविधि लिखतवभाल॥
गिरिजा वचन सुनत मुदपायो। पुनिविद्यामहँ निजमनलायो॥
सीखि अमित गुण पायउजाई। पिताभवन गइ प्रेम बढ़ाई॥
अति दैदीप्तमान गृह एका। बाण रचायो सहित विवेका॥
तहँ यकांत कन्या कहँ राषा। दीन्ही बहु सेवकनि प्रमाषा॥
ऊषा सखिन सहित तहँ रहई। निजमन भेदन काहुइकहई॥
द्वादश वर्ष भई वय जबहीं। मुखभाशशिभालाजतत्तबहीं॥
भ्रमर श्यामता कुंतल हांसी। चोंटीलखिश्रुतिबिन त्रियत्रासी॥
भ्रूबंकता निरखि धनु लाजै। नैन चालिखंजनगतिसाजै॥
दो० कीर तुंड नासा लजत अधरहि बिंब खजाय।
द्विजदाड़िमनिंदकचतुर कोमलतनअधिकाय॥
कंठ परे बागलदा ब्रीड़ा। कुचश्रीफल कुबलयकृतपीड़ा॥

कटि कृशता हरिकटिहिलजावै। रंभा उरू देखि भ्रमखावै॥
लज्जित होयकणकलसि देही। चम्पा स्वर्ण लता गति येही॥
करपद नख कमल अरुणारे। अंग अंग विधि हाथ सवारे॥
पिक वयनी नवला करि गामी। सुखरूप राशि गुणधामी॥
अब शोभाजुरि जनु तन धारा। को कवि उपमा वदै अपारा॥
यक दिन न्हाय सुगंधि लगाई। सर्वाभरण सजे तन राई॥
स्वच्छवसन विविध शृंगारा। किमिवर्णियप्रतिभाविस्तारा॥
दो० सखिन साथ निज मातु तट गई सुता युत नेह।
तेहि अवसरही नृप सुनु बाणासुर गा गेह॥
दुहिता देखि शोच मन आवा। निजउरपुनिविचारअसलावा॥
व्याहन योग सुता अब भयऊ। इमिवितर्कि शिष्यमाह्वादयऊ॥
ऊषा सुयत गेह नरराई। बाणासुर बहु दैत्य बोलाई॥
रक्षाहित तेहि भवन पठाये। विविधभेद कहितेंसमुझाये॥
सखी चतुरपुनि बोलि नृपाला। सेवा लागि पठई तेहिकाला॥
जाम करी रक्षा सिवकाई। धीर सखी कृत कौरव राई॥
पति हित दानन्हानवत करई। बार बार गिरिजा पद परई॥
रजनीमुख यक दिनन्हवाया। नित्यक्रिया करिशोचबढ़ाया॥
दो० परीसेज निजमनगुणत कब पितु करिहि विवाह।
कौन भांति भर्तार मम मिलि भेटिहि इह दाह॥
कंत ध्यान कृत ऊषा सोई। पश्यो स्वप्न महँ असतेहि जोई॥
पुरुष किशोर बैस युति स्यामा। हिमकरआनन पूरणकामा॥
नयन कंजरत नायक रूपा। नख शिखसोहर चतुरअनूपा॥
पीताम्बर वासित तन राजै। बरही मुकुट सुअंग विराजै॥
छवि सुमनोहर भांति त्रिभंगी। जो बिलोकिबुधिहोतस्वरंगी॥
रत्न जटित अभरण तन धारे। मकराकृत कुंडल द्युतिवारे॥
गल वनमाल अधिकछविदाई। चंचल खंजन चालिलजाई॥
सम्मुख तासु आव यहि भांती। निरखतरूप न हृदयअघाती॥
दो० मोद्यो ऊषा देखि तेहि सो चलिआवा पास।

चूमि लगायो कंठ निज युत सनेह अनयास ॥
प्रीति वलित कीन्ही बहु बातैं । श्रम संकोच भेट सबु जातैं ॥
पुनिसप्रेम शुभ सेज विराजो । हाव सभाव कटाक्षहि साजो ॥
चुंबनआलिंगन शुभ कीन्हा । अखिलप्रकारत्रियहिमुददीन्हा ॥
नेक काल बीत्यो यहि भांती । ऊषा हृदय न प्रीति समाती ॥
कंठ लगावन चाह बहोरी । गई नींद तब नृप बुधिथोरी ॥
मन मलीन दुतिक्षीन सुनारी । जागत भई मदन मतवारी ॥
क्लेशदाह प्रजस्यो उरतासू । भयउ सकल आनँदकरनासू ॥
कहत गये कहँ प्राणप्रियारे । अब न लखतहौं नैन पसारे ॥
दो० बहुरि योग केहि भांति विधि बासन ह्वै है मोर ।
कोबैरी मम नींद हर जेहि दुख भयउ कठोर ॥
अहह बुद्धि मम गहे जो धाई । असह जानि पतिगयउपराई ॥
शेष रैनि अब भय यमराती । तल्प अपार भांति पछिताती ॥
प्रीतम विनु अति प्राण दुखारी । रति पति दाहत देह हमारी ॥
दरशनहित चष अति अकुलाहीं । बचनसुनौलगिश्रुतिविलखाहीं ॥
भुज भेटन चाहैं उर लाई । कंत कहां तुम रह्यो लुकाई ॥
निद्रा किन पुनि आवत मोहीं । बार बार विनवत हौं तोहीं ॥
जो फिरि कंत स्वप्न लखिपाऊं । प्रियजीवहि प्रिय संगपठाऊं ॥
धीरज रहित शिली मुख जाता । शोचतनिशिगतभयउप्रभाता ॥
दो० प्रहर अर्द्ध यकदिन चढ्यो जगी न बाणकुमारि ।
अतिअचरजकी वारता सखियककहत विचारि ॥
पाछिल प्रहर जगत नितरहई । कारणआजुकठिनकोउअहई ॥
बाणप्रधान विदित गुणखानी । कूष्मांड अतिशय विज्ञानी ॥
चित्रशालतासूनु सुजाना । तनया तेहिकर नृपबुधिवाना ॥
नाम चित्ररेखा तहँ जाई । ऊषा दशा लखी दुखदाई ॥
रोदति वैकल निजमन मारे । वस्त्राभरण समस्त विसारे ॥
तब अकुलाय पूछ मृदुबानी । सुताकहिय दुखदशाबखानी ॥
परी विरह दधिलेत उसासा । त्रिविधिविकलाकिनकरतप्रकासा ॥

सोसम चतुर न दूसर आली। बिरच्योआदिपिताअघघाली॥
दो० तीनिलोक चौदह भुवन सबकी गतिहै मोहिं।
वर इंद्रीवर सात दिय कहि समझाऊं तोहिं॥
ममवश सबहि रच्यो करतारा। कार्य्याध्यक्ष मोर अधिकारा॥
वरुणसभा रति मम आधीना। तेहिमिलिकरौंकार्य्यलघुपीना॥
मोहन गति जानौं बहुभाई। पिता तात सुरपति अभिजाई॥
मर्म मोर को जाननहारा। अकर कर्म कर करौं पसारा॥
अपने मुख अपनी प्रभुताई। कहत बनत नहिंजीवलजाई॥
तदपि प्रीतिवश भाष्यों तोहीं। विकलविलोकिनोहिदुखमोहीं॥
मोहिं सर्बज्ञ जानि कहुभेदा। सत्य सुताकरिदेउं अखेदा॥
जो पै प्रपंच धारि नहिं कहई। तौऊषा कलेश बड़ लहई॥
दो० तजि लज्जा संकोच तब स्वप्न सुनायो ताहि।
पुनिकहसुनु तूमानुसम कारण दुखयहआहि॥
अति नवयौवन मोहन रूपा। पुरुष मनोहर सुछबि अनूपा॥
चित्त चोर किमिवरणिबताऊं। तनमन बचन पारनहिंपाऊं॥
अस न दीख मानुष वपु कोई। समता जासु मनौं भ्रम खोई॥
पूजब गौरि मोहिं वर दीना। मिलिहिस्वप्न तुवकंत प्रवीना॥
बुधिबल ताकर खोज कराई। मिल्यो सप्रेम दुखौघ बहाई॥
केहिप्रकार अब प्रीतम पाऊं। को सहाय कर केहिपदध्याऊं॥
नामग्राम कुल पितु नहिंजानौं। कोउपाय यहि दंडहि मानौं॥
असवादि मूर्छि परी शय्यातल। बहुरिउठेअतिबिकलनहींकल॥
दो० तबहिं चित्ररेखा वचो धरु धीरज निज अंग।
तुव चितचोरहिलाइहौं करौंअखिल दुखभंग॥
श्रेष्ठ सृष्टि जहांलगि कीन्ही। गम्यशक्तितहँलगिमोहिंदीन्ही॥
धाम नाम किन वेगिबताइय। दूती जानि न बात दुराइय॥
जानति जो कुल नामसुधामा। बिधुर किमर्थ करतितौबामा॥
सुधापान कोउ मख्यो अमेधा। लिख्यो ललाटदंड मखवेधा॥
अखिलशोचपरिहरुकिनप्यारी। लिखौंचित्र बहु देखु निहारी॥

निज हितुजानिबतायो मोको। अवशि मिलाय देवमैं तोको॥
लेखन वस्तु समस्त मँगाई। बैठी गणपति गिरामनाई॥
गुरुपद ध्याय बुद्धिवश लाई। लिखैलागि मूरति समुदाई॥
दो० तीनिभुवन मुनि नंद लिखि पंचतत्त्व निखिलोक।
हरिपुरादि दिखराइयो तदपि न भई अशोक॥
तब सुर असुर लिखे विधिचारी। यक्ष सहित गंधर्व विचारी॥
किन्नर ऋषिमुनिसुतदिगपाला। लोकपाल अहिद्विजभूपाला॥
त्रिपुर विभूति ताहि दिखराई। पै न वस्तु निजकरतल आई॥
तब यदुवंश लिखै सो लागी। एक एक मूरति अनुरागी॥
लखि अनिरुद्ध कहासुनु माता। यहैचोर ममदुख करगाता॥
खोजियाहि जो मोहिं मिलावै। तौकीरतित्रिलोक तुवआवै॥
कृष्णतनय सुतहै यह आली। महावीर सुतनीभूपमाली॥
नगर द्वारका गुर्जर देशा। तहांवसत अनिरुद्ध सुवेशा॥
दो० नामसुदर्शन चक्र नित हरिआयसु पुरपाल।
आठयाम सुनु सुंदरी प्रविशि सकतनहिंकाल॥
असुरादिक प्रवेश तहँ नाहीं। सुनुकन्यापुनिगुणमनमाहीं॥
कोउन जाय सकतबिनुआयस। पूरखोसकलदिशाभूपनियम॥
विस्मित ऊषाभई उदासा। सुनतवचन दुखमें दुखवासा॥
विकट ठाम तौं मिलब न होई। सहढ़ उपाय परत नहिंजोई॥
देवासुर जहँ प्रविशि न सकई। सूरुखजनसो मग कमतकई॥
हरि प्रताप तुव प्रीतम लाई। रहुसंतोषित देव मिलाई॥
असवादि वस्त्र धारि हरिनामी। गोपीचंदन लै गुणग्रामी॥
ऊर्ध्वपुंड दैतिलक ललाटा। उरभुज छाप कंठ अरु ठाटा॥
दो० तुलसीसक बहुडारि गल कोउशिर भुजमधि मेलि।
हाथ दाम हरि जपकरत चली सखी दुख भेलि॥
आसन पुस्तक कांख दवाई। पर्भै बैष्णव वेप बनाई॥
यहै अहै पाखंड नरेशा। भूलहि चतुरदेखि शुभ वेशा॥
ऊषहि कहेउ नाक मग जाऊं। लायभर्तांतव अवशि मिलाऊं॥

बंचिनि अनिल अश्वअसवारा। रजनी गइ द्वारावति द्वारा॥
अंतरिक्षते महितल आई। कृष्णालय गय हर्ष बढ़ाई॥
तजिहरि आन जान नहिंकाहू। प्रभु समरथ नृप माया नाहू॥
संभवजानि मौन ह्वै रहेऊ। कछुन चित्ररेखा प्रति कहेऊ॥
सोवत सैना जहँ अनिरुद्धा। गई मोहनी रूप प्रबुद्धा॥
दो० ऊषासंग बिहार कृत स्वपने काम कुमार।
देखि पलँग सहखे चली गुणनिधि त्रिय तेहिवार॥
लियेजात स्थापित सपर्यंका। ऊषाहित त्रिय निपट निशंका॥
क्षणमहँ ऊषःगृह पहुंचायो। देखत ताउर अति भयछायो॥
परी चित्ररेखा पद जाई। धन्य धन्य कहिगिरा सोहाई॥
तोर पराक्रम अलख अनूपा। चतुर सुजान को तू अनरूपा॥
परिपूरण प्रण भयउ तुम्हारा। संभव नहिं भव प्रत्युपकारा॥
पर उपकार सरस सुनुजाता। दूसर धर्म न रच्यौ बिधाता॥
नाशवान जड़अहै शरीरा। निजबश हरिय सदा परपीरा॥
स्वारथ परमारथ द्वौ यामैं। समनग्राम आवत निजकामैं॥
बधौताहि ऋणिया हौं तेरी। मोदक दानि तु मोदक मेरी॥
हरिप्रतापभा काज तुम्हारा। क्यों गुणमानों आलिहमारा॥
अबनिज जीवन जीव जगाई। मेटुक दे नहिं कंठ लगाई॥
स्वथल चित्र रेखा गइराजा। मनभावित करि ऊषाकाजा॥
दो० मन प्रसन्न तन भय बलित ऊषा करत बिचार।
केहि उपाय जागै चतुर कंत सकल सुखसार॥
लैकर बीण मधुर सुर साज्यौ। अति गति तारतारसों बाज्यौ॥
ध्वनि अवरेव सुनतही जाग्यौ। बिस्मितचहुँदिश हेरनलाग्यौ॥
अहह दैव यहको सुनि केता। कोलाना मोहिं सेजसमेता॥
इमि संदेहित बिबिध प्रकारा। अत्याश्चर्य्य विवशगुणहारा॥
उत ऊषा संकोचित ठाढ़ी। मंदिर कोण पुलकतनबाढ़ी॥
पति मुख बिधुकर नैन चकोरा। बदत हृदय तुमहीं चितचोरा॥
[illegible] आप। जो सनि मिटै मोर संतापू॥

लाइसि मोहिं कि मोहिगआई। सत्यासत्य न परत लखाई॥
दो० यदपि कहा अनिरुद्ध बहु भांति ताहि समुझाय।
तदपि न बोली सुंदरी रही सु अधिक लजाय॥
तब गहिवाँहि सेज बैठारी। मृदुल सनेहित गिराउचारी॥
मिट संकोच दुहुनकर जबहीं। उपज्यो मदनदाह उरतबहीं॥
करि रस रीति कंठ लपिटाई। आलिंग्यो चुम्ब्यो सुखपाई॥
करिसुखभोगपूछनलागयन। केहिविधिलेश्योसुन्योपुनिकासन॥
मैंगवायो पुनि कौन प्रकारा। सत्य कहिय चितानिहशरा॥
कथा प्रथम सब वरणि सुनाई। स्वप्न चित्ररेखा जिमि लाई॥
प्रभुतुम केहिप्रकार मोहिंजाना। जो तुम जागतहीं पहिचाना॥
जेहि अवसर हौं यहिंचलआयो। तबतुहिंस्वप्नमांझलखिपायो॥
दो० ब्यानन हारिहि जाननहिं तब सँग स्वप्न लुभान।
जागत निरख्यो सत्यही धनि करतब भगवान॥
इमि बतरात निशागत भयऊ। अरुणोदयप्राचीदिशिछयऊ॥
उठि ऊषा बाह्यालय आई। योती दाम जानि शितलाई॥
भयउ प्रभात चंद द्युति नाशी। उग्गणभांतिहितलप्रकाशी॥
नभ अरुणताछयउदिशिचारी। समुदितकुमुदिनिकामतमारी॥
कुमुदिनि मुदितकोक संयोगी। लगे काजउठिमकाल भोगी॥
वैकलगृह कपाट सब ढाकी। पतिगललगीदिनमदबाकी॥
पतिहि दुराय सखिन तट आई। करें लागि लीला सुखदाई॥
सेवे नित्य कन्त चित लाई। गुप्त प्रीतिनहिं परै लखाई॥
दो० उठे सदा तत्कालहीं ऊषा बुद्धि विशाल।
यहिकारण भूपति सुनो समयसुऊषा काल॥
कछु दिन बीते सब सखी जानि गईं यह भेद।
तबतौं ऊषा कंत मय सब दिन रहे अखेद॥
एक दिवस निशि बश नरराई। ऊषा जननि सुता लखआई॥
यह चरित्र तेहि गृहहि देखा। खेलत पंससारि अलेखा॥
तरुण पुरुष सुंदर शशि आनन। मार रूपमा शोभा भानन॥

गृह अंतर दुहिता सँग सोई। करत हास्य रस खेल ठठोई॥
कछु गलानिकछुमनसुखबाढ़ा। कहा न कछु धरिधीरजगाढ़ा॥
गई निकेत होत जिय आनी। अब ससहरिसुतुआनकहानी॥
सोवत कंत जानि इषु जाया। असचिंतमन हृदयउपजाया॥
अहरजनी मैं पति रत रहहूं। बास्तव मर्म न काहुइकहहूं॥
दो० असन होइ प्रगटै दुरित यह प्रसंग संसार।
बहु सन्देह सँयुक्त तिय तब आई गृहद्वार॥
पतिहि अकेल त्यागि गृहआई। पै अधीर पुनि धाम सिधाई॥
यकरक्षक यहचरितबिलोकी। बिस्मित भयउक्षपाजिमिकोकी॥
कह्यो परस्पर लख्यो किनाहीं। बहुत दिवस बीते घरमाहीं॥
आजु निकेत बहिर्तल ताता। आई पुनि गमनी नृप जाता॥
तूनजान मैं कौतुक देखा। नृपभय चित्तन कस्यो परेखा॥
बन्दकपाट रहत सबकाला। भीतर पुरुष एक गुणपाला॥
कतहु हँसत कहुं करत विहारा। कतहूं खेलत खेल अपारा॥
जोपै सत्य यह अहै प्रसंगा। तौकहि नृपहि कराइय भंगा॥
दो० कोउकह अकहन कहि सकत मौनितही ह्वै जाउ।
कह अक्षर बिपरीत नहिं बदबुध कोटि उपाउ॥
कुछ श्रम परै होय दुखभारी। बैरभूप प्रगटै सुखहारी॥
दैवयोग बाणासुर आयो। मंदिरध्वज देखन चितलायो॥
महितल केतु देखि अकुलाना। ध्वजरक्षक प्रति बचनबखाना॥
कोध्वज यह उर्वश गिराई। सुनिचर बोल्यो शीश नवाई॥
विपुलसमय गत भाक्षितिपाला। महितल परी आपुरिपुशाला॥
श्रवणित शिव वर स्मृतभयऊ। चिंता मोद हृदय तेहिक्षयऊ॥
उपज्यो शत्रु कृष्ण संसारा। शुद्धि सत्य जान्यो यहिबारा॥
द्वारपाल यक द्वौ करजोरी। बोल्यो सुनियबिनयप्रभुमोरी॥
दो० अकथ बारता नाथयक कहौं जो होय रजाय।
कसन कथिय अनुचितहि लखि धर्म आपुउरलाय॥
जिअहअमितबयबुद्धिअगाधा। क्षम्यो अबूझदास अपराधा॥

कछुक कालते देखत आहीं। ऊषा बाहर आवत नाहीं॥
कोऊ पुरुष रहत तेहि धामा। श्याम बरण सुंदर गुण ग्रामा॥
बिहँसत क्रीड़ाकरि तेहि साथा। जानत यहन अहै कोउनाथा॥
क्रोधजलज भजस्यो उरतासू। यहिअनमिषहिकरौंअरिनासू॥
सहसा आयो निकट निकेता। लखा लुकायसु अस्त्र सचेता॥
मेघरूप पीताम्बर बासी। ऊषासँग सोवत अनत्रासी॥
बेगिवधौंपै अनुचित सोवत। विविधउपाय नीतिमयजोवत॥
दो० बिपुलखग्ग रक्षक किये सुताभवन तत्काल।
जागतही सुधि दीजिये गयो सभा महिपाल॥
मंत्री मित्रन कह्यो बुझाई। शत्रुमोर आयो यहि ठाईं॥
तनया मंदिर सदल निरोधौ। संगरकरि मम अरिमन बोधौ॥
तुव पश्चातन लागिहिबारा। आगममोर लख्यो गृहद्वारा॥
पाय रजाय सुभट गण गाजे। विविध निसानसमरकरबाजे॥
चले तमीचर तमभा नाका। शोभित सूरकिधौं पतिराका॥
ऊषागार घेर बसु ओरा। गरजेरावत शब्द प्रघोरा॥
तेह्रौ खेलत पन्सासारी। भवाचिंता नरनाह बिसारी॥
ध्वंत निरंत बिलोकि कुमारी। चमूघटा जलधर छबिकारी॥
दो० अस्त्र उदय विद्युल्लता वाहन रववनघोर।
भ्रमवश बोले विविध विधि चातृक दादुरमोर॥
सुनि चातृक वाणी पियगानी। इमिवादिसुतापतिहिलपिटानी॥
तनुवियोग भापा द्विजपापी। तवतनअग्निनयुधिदृढ़कांपी॥
चरवर वाणहि बध्यो प्रसंगा। जाग्यो अरिविरच्यो रणरंगा॥
आतुर नृपति सहायुध धायो। ऊषासद्म पमरि चलिआयो॥
लखि अनिरुद्ध बढ़्यो उरकोपा। वचन व्यंगकहि संगर रोपा॥
कोहसि लोलुप चोर अयाना। घनतन कमलनैन छविमाना॥
मंडु समर किनबाहर आई। यमकर केशन चलिहि उपाई॥
तोमर वचन किती मरशाले। उभय सुनत नृपभये बिहाले
दो० गलित क्लेश ऊषा बध्यो सुनो प्राणप्रिय बैन।

पितु बाहनिलै आइयो अब उपाय कोउहैन ॥
जनि भयभीत होइ तू प्यारी। लवान सकत स्येन रणमारी॥
बधिकि पाव हरि प्रबलशृगाला। निधनकरतमंडुकिमिकाला॥
तू देखत पुर शमन पठाऊं। बहुरिआय तोहिंहृदयलगाऊं॥
बसु नभधरकर शिलकर लीनी। वेद मंत्र बश निजबशकीनी॥
बाहर भवन रिपुहि परचारा। लखिशरशरधनुकोपिसम्हारा॥
चहुँ दिशिते अपार खल धाये। मधि जीमूत किधौं हरिभाये॥
आद्रि बिबिध घेस्यो रिपुपाका। किधौं रामखर त्रिशिरताका॥
हरि सुंडाल यूथ जनु घेरा। राज्यो काम जात तेहि बेरा॥
दो० आयुध छोड़े बिबिध बिधि बरणत बनतन सोय।
भयउ क्रोध अनिरुद्ध उर घात अस्त्र तन जोय॥
मस्यो शिलाद्रिकरदिशिचारी। हरे असुर तम किधौं तमारी॥
चले पलाय प्रबल सुर शाली। खलदलकिधौंनिरखिबनमाली॥
धीरज रहित मत्त खल कैसे। पंचानन यडु निरखत जैसे॥
जे अजेय जग जेय बलिष्ठा। यांचत सदा समर निजइष्टा॥
तेलै जीव चले अकुलाई। यह गति लखि सरोष नरराई॥
सबहि रोकि बोल्यो नयबाणी। सतनअमरकोउभयउनप्राणी॥
कत अपलोक लोकमहँ लेहू। परिहरि धर्म पृष्ठिरण देहू॥
फिरे लजित सुनि भूप रजाई। भिरे समर उर क्रोध बढ़ाई॥
दो० अमितायुध मर्दत असुर पै न लगत तेहि अंग।
हरिमाया दुस्तर सदा करत दुष्ट मद भंग॥
मंत्रित आयुध अफलित होई। अकथ चरितबरणै किमिकोई॥
जो कोउअस्त्र निकट तेहि आवै। शिलाधार भुव छार दिखावै॥
इंद्र कुलिश हर शूल समाना। शिलाघातनृपअसहमहाना॥
शिरभुज कटिलागतमहिपरहीं। अतिभयभीत असुरथरहरहीं॥
लखैं समर नभ बिपुल बराका। धन्य पुत्र इमि बदै सुबाका॥
सर्व कटक कर भयउ निपाता। रहा अकेल बाण पछिताता॥
यद्यअजीतनहिं जयरणलायक। महाबीर रणमहि रिपघायक॥

अब न युद्ध भंडे कुशलाई। नागपाश बांधिसि यदुराई ॥
दो० बंधितगालै निज सभा मन अनिरुद्ध विचार।
जो न गनौं विधि वचन तौ घटैमहत्व अपार॥
ताते दंड सहौं कछु काला। कबहुंक सुधिलैहैं जनपाला ॥
बलकरि भंजों जो विधि पाशा। नीति धर्म द्वौ होइ विनाशा ॥
जौन सहायक होवै तोरा। बोलु ताहि यहिसमयप्रजोरा ॥
क्षणमहँ नतरुवासिहि यमधामा। वृथामित्रइति पुनिपरिणामा॥
यह सुधि पावत राजकुमारी। बह्यो चित्ररेखाहि पुकारी ॥
धृकजीवन मम पति दुखपावै। अवशि मातुकिन यतनबतावै॥
कसन अशोच होह सुनिआनी। अबध कंततुवबलसुधिलानी॥
सत्वर सुधि पावत यदुराई। हलधर सहित आययहिठाई ॥
दो० भंजि अखिल दुर्नाद दल सुत विमोचिलै तोहिं।
द्वारावति चलिजायँगे दृढ़ निश्चय यहमोहिं॥
जाकरसुता सुलक्षणजानत। छलबलकरितेहिनिजगृहआनत॥
रुक्मिणि कथाविदितभवमाहीं। विस्तृतवदियसमयभलनाहीं॥
किमि धीरज उरधरौं सयानी। नागपाश बंधित सुखदानी ॥
भस्मत गनत क्लेश यहि मोरा। सूझत मगन शुभग चहुँओरा ॥
बिपतिविवशपतिधृगमषपाना। पियसँग बधै मोहिं पितुबाना ॥
तौ पूरण आनंदहि पाऊं। सत्यलोक प्रीतम सँग जाऊं॥
अज सुवर्ण विरचै जोभाला। तद्विपरीतन कवनौं काला ॥
भवश्रुतिद्वौ मरयाद मिटाई। पति तटसुख दुखलहिहौं जाई ॥
दो० चलिआई अनिरुद्ध तट मानिन शिचा तासु।
दूतकह्यो बाणहिं चरित सुनिभा नाश बिलासु॥
नृपस्कंध प्रति कहा बुझाई। निजभगिनिहिकिनगृहलैजाई॥
बंधनकरि राखौ सुतज्ञानी। सुधिअनुचितसुनिउरनगलानी॥
ऊषा निकट गयउ चलिसोई। बोल्यो सरुद्ध बचन मुखजोई॥
तूदुष्टिनि अकलंक कलंकिनि। प्रगटी दैवबश्य मति रंकिनि॥
लोकलाज कुलकानि निपाती। तुवमुखलखिविहरतममछाती॥

शमनलोकतोहिंअवशिपठावत। नीति विरोधन अस्त्रचलावत॥
जो भावै जिय कहिय सुभ्राता। सुखपावौं त्यागतयह गाता॥
हर प्रियवर पूरब मोहिंदीना। अब न तजौं यहकंतप्रवीना॥
दो० पतिव्रता कुलवान त्रिय त्यागत निजपति नाहिं।
क्लीव निरच्छस रोग जड़ कोढ़ी लखि उरमाहिं॥
विधि संबंधि जासुसनकीना। सोइप्राणप्रिय सुखदुखभीना॥
आन प्रसंग नरक अधिकारा। तातकन्तमम प्राण अधारा॥
सुनिरिसायचरबल गृह लाई। बन्दिकरयो पुनि आइनपाई॥
अरु अनिरुद्धहि आनअगारा। कारागारित कीन्ह भुवारा॥
प्रिय वियोग अनिरुद्ध अधीरा। उतऊषा उरनृप बढ़ि पीरा॥
तजिजल अन्नभजै असुरारी। कठिन योगकृत भूपकुमारी॥
नारद एक समय तहँ आये। बहु अनिरुद्धहि ज्ञानबुझाये॥
तजो शोच ध्यावो जनपालक। पायसुद्धिआइहि खलघालक॥
दो० पुनि बाणहि समुझायकह जेहिबांधा महिपाल।
कृष्ण पौत्र तेहि जानिये नरतन प्रभु गोपाल॥
जोभावै सो कीजिये मैंकरि चल्यों सचेत।
असबदि नारद ज्ञाननिधि गये सुब्रह्म निकेत॥
मंगल परिहरि सकल छल शुद्धभाव हरिध्याउ।
जा प्रताप बंधन मुचै बहुरिन ऐसो दाउ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांऊषास्वप्नअनिरुद्धग्रहण
वर्णनोनामत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३॥
दो० वेद बदत सब योनि में मिलहो मनुष्य शरीर।
ताहिपाय हरिभजतनहिं दौदिशिहोत अधीर॥
हरिमाया अति प्रबल जेहि मोहे जीव अपार।
बिनु प्रभु कृपा न जीवकर काहू विधि निरधार॥
जो सतसंगतिको भजै तजै मनीषा दोष।
लीन रहै आतम विषे जीवत पावै मोष॥

जोपै ब्रह्मज्ञान में प्रवृतन होवै जीव।
तौ परिपूरण प्रेममय राधावर सुख सीव॥
वेद शास्त्र पौराण में विदित कृष्ण करतूति।
सेवक रुक्मिणि रमणको सकै न माया धूति।

सुनु नृप रुचिर प्रसंग सहेता। बंदिपरे अनिरुद्ध अचेता॥
बीते चारि मास शर धामा। ऊषा विकल रहै वसुयामा॥
गये द्वारका ऋषि वृंदारक। जेगत वैरनेह जन तारक॥
चहुँदिशिपुरबीथिका बिलोकी। जीव चराचर लखे सशोकी॥
यदुवंशी सब निपट उदासा। नर चरित्र कृत त्रिपुरनिवासा॥
चिन्ता मग्न राम युत वैसे। अनुपम उपमाकविकह कैसे॥
बिलपत दारुण सबु रनिवासा। तनय वियोग विकलउरत्रासा॥
लखि देवर्षि सकल जुरि आये। नति युतआरत वचनसुनाये॥

दो० मुनिबर तुम सर्वज्ञहौ सत्य कहौ समुझाय।
कौन देश अनिरुद्धहै मिलै सुकहौ उपाय॥

बोध्यो सबहि तबहिं ऋषिराई। धीरज धरौ तजौ विकलाई॥
परि हरि शोक सुनो मम बानी। विपतितिमिररविहरिसुखपानी॥
जीवत सुत शोणित पुर अहई। नितकलेशमयविकलितरहई॥
ऊषा बाण सुता गुणं खानी। रस्योअव्याहितकामकलानी॥
तोमर जानिसिबंधन कीनसि। कारागार बन्दिगृह दीनसि॥
दारुण समर किये बिनु सोई। मोचिहिनहिंनिजबलमदभोई॥
प्रबल अराति विदितबलिजाता। देवासुरकरि सकत न घाता॥
पुत्र भेदहौं सकल बतावा। बेगि करौं जो बनै बनावा॥

दो० कौतुक ऋषि सुरलोकगे यदुवंशिन उर शोच।
निज निज वुधिवत वदत सबतनमनस्यो रणरोच॥

उग्रसेन प्रति मर्म जनावा। जेहिविधि नारदवचनप्रभावा॥
मंडे विनुरण सूनन पाइय। प्रद्युम्नअद्य किमि पुत्र गमाइय॥
चमूसहितसब मिलिचलिजाहू। करो शत्रुउर शरगद दाहू॥
आयसु सुनत चमूपति साजे। पुंडरीक बानीभट गाजे॥

बजेविविधध्वनिसमर निसाना। अंतर कथा सुनो बुधिवाना॥
द्विजपारूदित प्रभुगुण ग्रामा। सह प्रद्युम्न गये शरधामा॥
रेवति रमण संग कटकाई। तत पश्चात चले भुवराई॥
दल शोभानहिं परत बखानी। उडीरेणु रवि ज्योति छपानी॥
दो० अंधकार छायो धरणि बरणत बनतन भूप।
करी अमर दंती लसत बाजी हारि यहरूप॥
बहुरथ कंचन मयद्युतिकारी। ते जानत जिन दीख निहारी॥
पायक गण अपार नृपजाहीं। रण इच्छा सबके मनमाहीं॥
इमि चतुरंग चमू कुरुकेता। सायुध पंथ विविध छबिदेता॥
बंदीजन बिरदावलि गावहिं। सुभटन हृदय रोष उपजावहिं॥
धृग क्षत्रिहि जो समरपलाई। पुनिधृक नृपननीतिबशभाई॥
समरभूमि जो तजै शरीरा। सुरपुर लहै सौख्य गत पीरा॥
कोक सुंदरी कुमदिनिकूरा। निशिशितभानुलखत अहिशूरा॥
प्रवृतकर्म निज भये अशंका। प्रति प्रदेश यह छयो अतंका॥
दो० द्वादश छोहिणि दलालिये चले जात बलराम।
केहिरक्षहि जगदीश अबकाहि बिधाता बाम॥
बाण राज्य थल सीमा जाई। बिविध उपद्रव कृतभुवराई॥
दाहत कोट दुर्ग मग पाई। भंजत नगर असुर समुदाई॥
दुंदुभि दीह बजत बहुताई। ध्वनिसुनिजगतअखिलमुनिराई॥
यदुबंशी पथ करत उपाधी। श्रोणितपुरपहुँचे निरव्याधी॥
हरिसहसूनु मिले नृपआई। सकलकटकमधि शोभाछाई॥
यथा विभवयुत सभा सोहावै। भूपतिमिलतअधिकछबिपावै॥
अंधकार दिशि चारि दिखाई। पूछत बाण सबहि भ्रमखाई॥
मेघ कि अनी भूप भव केरी। मोरे चित्त कृष्ण अवसेरी॥
दो० कोउपायक तेहिअवसरहि आयकह्यो करजोरि।
राम कृष्ण निज सैनसह आयेपुर रण घोरि॥
लूट्यो देश दुर्ग गण दाहे। नगर ग्राम बहु थलथल दाहे॥
प्रजाओ सुनवनचाम बलिजाता। बोले महा प्रबल जड़ ताता॥

सचिव सुजान सुभट रणकारी। सैनापाल स्वमित्र हँकारी॥
सबहि बुझायकह्यो दलसाजौ। संगर इला कुधर गतिगाजौ॥
समता समर होइगो आजू। शिवप्रसाद वांछितभा काजू॥
बाहिर सन्मुख युद्ध विरोधौ। यदुकुलयूथहिअवशिनिरोधौ॥
पाछे तुव आवत क्षणमाहीं। मंडि धनुषरिपु सद्दलदाहीं॥
आज्ञा पाय सजी खल सैना। शूर चोहिणी सुभट सुखैना॥
दो० सायुधसव आवतभये हरि सन्मुख गल गाजि।
बजत तूर्य्य भेरी पणव बिहँसतभट रण साजि॥
ध्याय सर्पभूषण त्रिशुधारी। रथ चढ़ि चल्यो गर्व उरधारी॥
पहुँच्यो समर वीर रस मंडी। कातरता त्रिभांति नृप खंडी॥
उत शंकर मन कीन विचारा। संकट मम सेवकहि अपारा॥
भक्ति विवश ईश्वर सुखराशी। सत्य व्यवस्था त्रिपुरप्रकाशी॥
छूट्यो ध्यान सुआसन डोला। भव प्रसिद्ध भोला प्रभुभोला॥
अपयश प्रभुता विनशै नेहू। जोन दाससुधि यहिक्षणलेहू॥
करिविचारि अस धरिप्रियअंगा। जटा जूट आभरण भुजंगा॥
विपधर श्वेत किये उपवीता। अमृतपान हर सदा अभीता॥
दो० मुंडमाल गजछालधर आसी विष उरहार।
शूल पिनाक सोहायकर डमरू मर्दित क्षार॥
गौर वपुषकर सोह कपाला। संग भूत अरु प्रेत कराला॥
विकट पिशाच भयक बैताला। डाकिनिशाकिनिभेतनिजाला॥
बहु योगिनी भयंकर रूपा। अनी सभयकर भूर अनूपा॥
आनन ह्रस्व विपुल मुख कोई। पीनवपुप लघुतनगुण जोई॥
रुष्ट पुष्ट दुर्बल लघु सोहै। बहुपद बाहु भणै कवि कोहै॥
शिव शोभा वरणत सकुचाई। शारद शेप कोकवि भकुनाई॥
श्रुतिहरि मणिमुद्राशशिमाथा। गंगाधर शिरपाल अनाथा॥
रोपवलित चपअरुण नृपाला। जनुभवहरणकिभवतेहिकाला॥
दो० मगविलसत सानंदप्रभु श्रोणितपुर गे राय।
देखिबाण हर्षित भयउ पर्यो चरणनजाय॥

तुमबिनुको जनपालक स्वामी। कुसमयशरसुत चरणनमामी॥
अब जय लहौं न कछु संदेहू। नाशौं यदुबंशी दृढ़ एहू॥
धर्म युद्ध कीजै अहि भूषण। जेहि ने कोउ न बिदूषबिदूषण॥
दुहुँदिशि बजत समर के बाजा। बीरक्रोधमय निजपतिकाजा॥
चले अधीरन पुंस पलाई। रावन अस्त्र लखत हरषाई॥
हरि सन्मुख शशिभूषणआये। अमित प्रकार समरअरुझाये॥
भिरयोबाण मूशल धर संगा। करयो बिरुद्ध कालवत रंगा॥
प्रद्युम्न संग स्कंध बिरुद्धेउ। बिविधअस्त्ररणभूमि बिरुद्धेउ॥
दो० भिरे अपर भट समर महि निज निज समताजानि।
महा मारु भइ भूप सुनु दुधा आश अनुमान॥

भुजंगप्रयात छन्द॥

पिनाकै लियोशंभुजु क्रोधभीनै। रमानाथ शारंगयुद्धोषकीनै॥
तज्यो ब्रह्म अस्त्रै भये तेसद्रोहं। हरयोकृष्णतद्वाणतद्वानकोहं॥
सदाचार प्रेरयो अकालंसकालं। महावायुमुंडयोहरयोतेजब्यालं॥
श्रुती जात शंभू प्रचारयोसरोषं। गटीज्वालभूतवालटीबुद्धितोषं॥
प्रलै चीरधारी बिहारी पठायो। तदाकालहीसप्तजिह्वानशायो॥
करी योगमायासुज्वालावनाई। तहीं चारमंडी अनामध्यआई॥
जलाये महाभूत प्रेतौपिशाची। कियेरूपभयकारधौंमृत्युसांची॥
तजे युद्ध दैत्यादि द्वौओरधाये। कहौंहौं कहांलौंमहादंडपाये॥
छं० अतिदंडमय शिवदलभयो सब बाणसैना भगिचली।
यहदशा नैन बिलोकि शंकर शोचमयभे नृपबली॥
बरषायपय शिव अग्निनाश्यो रासि दललीनोसही।
मंगल द्विदिशि भगवान समता युद्ध मंडत रणमही॥
दो० बहुरि कोपकरि करगह्यो नारायण इषु ईश।
जानिभेदत्रोणहिधरयो शोचिससुभिक्षशशिशीश॥
हरि आलस्य बाण धनु धारा। कोपि असुर भव सैन प्रहारा॥
तापताप सब भये अचेता। बधे असुर पुनिकृपानिकेता॥
शिवमन शोच अपार भुआरा। प्रलय समर कर कर्म पसारा॥

हरि रुख लखि बरही आरूढ़ा। गयो नाक बाणज रणगूढ़ा ॥
अंधकार छायो दिशि चारी। हनेबिशिखबहु हरिहिप्रचारी ॥
तोमर तीव्र अनलवत छूटैं। यदुबंशिन कर धीरज टूटैं ॥
व्याकुल बिचलि चले रणधीरा। त्राहि दयानिधि कहतप्रबीरा ॥
मदन श्याम प्रति वदकर जोरी। क्षमा राशि बिनती यकमोरी ॥
दो० चढ्यो मयूर महान रिपु समर करत सुनुतात।
आयसु दीजिय कृपादधि करौं दुष्ट कर घात ॥
पिता रजाय पाय झखकेतू। प्रेरयो बाण तासु बध हेतू ॥
मुयउ गजारि बिशिखबर लागे। गिरयो भूमितल बुधिबलखागे ॥
सुत बिलोकि बाणासुर आयो। अतिआमर्षज्वलितदुखरायो ॥
शरशात शरधर बेगि चढ़ायो। अगणित जिह्वगभूपबहाये ॥
प्रबल अराति बिलोकि कृपाला। हरैलाग सहजै शर जाला ॥
महामारु रण अजित अराती। पूरणबिधिबरणियकेहिभांती ॥
बाज निशान कि बाजन फागा। बन्दी बिरद किधौं खटरागा ॥
रुधिर प्रवाह कि रंग प्रचारा। उड़त अबीर क्षतजछटकारा ॥
दो० भूतप्रेत बैताल बहु योगिनि कृत आनंद।
युद्ध किधौंवरफाग लखि बिहँसत यदुकुलचंद ॥
राग धनासिरि वीर गुहारी। रक्तनदी सारिंग निहारी ॥
अतिअबिबेक समर भयकारा। द्विधानिकलकृतबिबिधबिचारा ॥
कठिनसमर लखि कृष्ण रिसाई। बध्यो बाण सारथि भुवराई ॥
अश्व समेत अचल छितिपागे। हरिकर असुग चञ्चनलागे ॥
बाण अबाहन समर पलाना। तेहिपाछे धाये भगवाना ॥
समाचार सुनि शर महतारी। बिकल भई भूपति बिभिचारी ॥
वेषभयानक कुंतल भंगा। अशुभरूपनगिनत प्रतिअंगा ॥
प्रभु सन्मुख आई चलिसोई। नग्न नारि देखत अघ होई ॥
दो० कृत पुकार रही प्रभू सुनि मूंदे दृग श्याम।
तबलगिखलभगिधामगा प्रभुसजथतिरणधाम ॥
जाइ निकेत बहुरि दल जोरा। असुर प्रबल रणकारिप्रघोरा ॥

चोहनि चन्द्रसाजि बलआवा। निजजननिहिन्नृपसदनपठावा॥
द्वंद्व युद्ध मंड्यो खलरवाई। कहतबनत नहिंबिधिबलराई॥
कोपि श्याम खल दल संहारा। विकलबाणतबतज्योजृम्भारा॥
शिव शरणागत गयउमहीशा। पाहिपाहि कह पाहिगिरीशा॥
सेवक दुखित देखि बनमाली। सामर्षितभे शिवरिपुशाली॥
विषमज्वर प्रेरयो ततकाला। सो आवा हरिकटक नृपाला॥
सहस किरण सम तेजप्रकाशा। अति बलवान रूप दुर्नाशा॥
दो० तीनि शीश नव चरणनृप बाहुतर्क चषकाल।
बेषभयानक जगतजित हरिदलकीन्हसिशाल॥
ज्वरवश विकल भये यदुजाता। कम्पितकायकिचलबलपाता॥
बरबस ज्वलित देह ज्वरजानी। हरिहि पुकारयो आरतबानी॥
विषमज्वर कि त्रिपुर भवकारी। रच्यौ नतभा नाश मुरारी॥
धूमन समान बूझियत याही। बचिय उपाय सुदीसतनाही॥
चमापयोधि क्षमायहिकीजिय। सत्वरदासनकीसुधिलीजिय॥
कादरताभय सकल निहारी। प्रबलविषमज्वर अग्निप्रचारी॥
तब शीतज्वर कृष्ण पठायो। कालकालज्वरपर ज्वरधायो॥
जल्यो जराय शंभुज्वरराई। जानि नाशगा शिवशरणाई॥
दो० जोरिहाथ कह रक्षिये हरि ज्वरते त्रिपुरारि।
तासुवचनसुनिदीनअति हरकहभूपविचारि॥
त्रिपुर न कोउज्वरनाशनयोगा। देवअदेव चक्रि मुनि लोगा॥
बिनु हरिशरण न जीवन होई। सत्यवाक्य कह निजउरजोई॥
प्रभु शरणागत गा ज्वरसोई। सविनय कहामान मदखोई॥
अनुकम्पा निधि रंजन दासा। प्रणतपालयश त्रिपुरप्रकासा॥
पावन पतित करण दुखहारी। जयति सच्चिदानंद बिहारी॥
रमारमण मघवा मदनाशन। मम अपराध चमौ गरुड़ासन॥
शीतज्वर ते मोहिं बचावो। निज बिरदावलिकलितबढ़ावो॥
अजयमादि त्रिदश सुरजाती। सबके कर्ता तुम खलघाती॥
दो० बिरचौ प्रतिपालौ जगत नाशौ निजकर आपु।

माया अगम अपार तुव चहुं दश प्रगट प्रतापु ॥
आयो शरण बच्यो ज्वर आजू । नतुहोत्यो तुव सकलअकाजू ॥
तव अपराध चम्यों धरु धीरा । अब न दयउ ममदासनपीरा ॥
कह ज्वर जो यह सुनै प्रसंगा । ताकर होइ त्रिज्वरकर भंगा ॥
यहसुनि बिदा किया यदुनाहा । गाविपभज्वर न्रप शिवपाहा ॥
इत बाणासुर पुनि युत रोषा । शतशतधनुष चढ़ायअतोपा ॥
संगर महिमहँ प्रभुहि बिचारयो ।पुनिअविवेकितवचनउचारयो ॥
यदपि श्याम तुमसों रणठाना । तदपिजीवनहिंमोर अघाना ॥
अस बदि बिशिखतज्यो भुवराई । जेहिकरि बैकल भैकटकाई ॥
दो० प्रेरिचक्र तव बक्रभर हरयो भुजा बहुतास ।
चारिबाहु राखत भये जानि शंभु निजदास ॥
कटतबाहुभो शिथिल महाना । गिरयो भूमिनृप कुधरसमाना ॥
च्वतज तरंगिनि बही तुराई । भुजभौं मकर व्याल बहुताई ॥
कुंभी कुंभ चक्र उतराहीं । करिकर नक्र बक्र दिखराहीं ॥
सुंडी सृतक तटनि तट जानिय । गृद्धादिकनहात अनुमानिय ॥
काक शृकाल मान्स आहारी । भषत मृताक्ष प्रत्यक्ष निकारी ॥
समर भयउ भयकर किमसाना । क्षणकमूर्छिजागयो पुनिबाना ॥
हृदय हारिगा पुनि हरपासा । रण बृतांत सबकरयो प्रकासा ॥
कहविचारि मृडसुनु दानवपति । समरश्रये हरि क्रोधितभेअति ॥
दो० करि बिनती बश कीजिये जनपालक सुखकारि ।
बाणासुरहि लगाय सँग भे प्रभुपहँ त्रिपुरारि ॥
कृत बिनती करजोरि हर प्रभु सन्मुख सुखपाय ।
जो सुनिभये प्रसन्न हरि लयोबाण अपनाय ॥
तो०छं०जयदेवदयानिधिज्ञानघनं भवताप बिनाशन शुद्धमनं ॥
शरणागत वत्सल देवहरे । जनक्लेश बिनाशक कायधरे ॥
महि भारित पाप बिचारि हिये । च्युत अच्युतहैखल दूरिकिये ॥
जगतारण लोक प्रकाशिदयो । बहुदासन ध्याय स्वधामलयो ॥
लखहीन अनूप अकाम सदा । निर्बाण अगोचर बेद बदा ॥

निरभेद अद्वैत अखेद अहो। गुणकाल अधर्मिक पंथदहो॥
तुवकर्म अपार अखंडित हैं। तिहुंधाम तुहीयक मंडित हैं॥
नभशीश समीर तुश्वासबसै। चष पूषण भूषण में बिलसै॥
लपनीरज श्रीपति शंकरस्यौ। दुहुबाहु मनोहर तू बरन्यौ॥
जलजात तनै तुव बत्सबदा। त्रैधाम बिराजित पेट सदा॥
बहुकूधर अस्थि वनस्पतिहू। सुतनोरुह और शिरोरुहतू॥
जलदानि कहै शुभशुक्र प्रभू। अघपाद बिराजित सत्यबिभू॥
तनभा त्रिपुलोक अभातुम्हरी। निशिद्यौस निमेषसुगत्तिहरी॥
बिभु वैभवह्वौ तुमहीं करता। करता प्रतिपालक औहरता॥
तववाणि चतुर्श्रुति देखिपरै। जेहि पायकलू उरज्ञान अरै॥
यहिरूप सुशोभित बालबनै। अवतार अपार सुकौन गनै॥

दो० जानि सकत को त्रिपुर तुव महिमा यादवराय।
दुखरूपी यहि जगत महँ अधिक अधिक अरुझाय॥

क्लेशउदधि भव बिदित सदाही। चिंतामोह नीरभर जाही॥
कामक्रोध मद दुविधा कोहा। बहुजलजीवदुखितजेहिसोहा॥
तृष्णायुत दुराश गहि राई। सुत वितादि पर्वत बहुताई॥
नानापंथ बीचिका तासू। जायपार अस समरथ कासू॥
तरणि विवेक नाम कैवारा। यकठा मिलै तहोइ उतारा॥
तरणहेत भवजन भवसागर। करतउपाय विविध नरनागर॥
जातनपार भजन बिनुतोरे। कृपासिंधु निश्चय यह मोरे॥
मनुज वपुषलहि तुमहिं बिसारै। संचित कर्म आपनो हारै॥

दो० जेनहिं ध्याये चरणतुव अरुयश गायोनाहिं।
त्यागिअमृततेहिविषपियो अंतहृदय पछिताहिं॥

जाके हृदय कमल तुवबासा। शोभासुक्त त्यागि सब आसा॥
बेदनेति बहु भांतिन गायो। ऋषि मुनि काहु पारन पायो॥
अबदयालह्वै सेवक जानी। बाणासुर शिरदीजिय पानी॥
यहममभक्त काय मनबानी। बरबश भिरयौ मूढ़ अज्ञानी॥
निज कर्तव फल पाय लजाना। देहुभक्ति बिज कृपानिधाना॥

अधिकारिहि न निराशा कीजे। जनप्रहलाद बंश गुणलीजे ॥
बिहँसे कृष्ण सुनत शिववाणी। मोहिंतेहिंएककहतेसबप्राणी॥
नर बिभेद कृत नर्किक होई। कोटि यतन मोहिं लहैनसोई ॥
दो० तन मन तव सेवनकरै द्विविधा तजि त्रैकाल।
अंतमोहिं सो जन लहै सुनोमुदित शशिभाल ॥
जो बर जाहि देहु ईशाना। करत सदाहौं तासु प्रमाना ॥
जानि प्रसन्नित शीश नवाई। सैन सहित गिरिगयगिरिराई ॥
तब बाणासुर पदतल परेऊ। द्वौकरजोरि बिनयबड़िकरेऊ ॥
पुनिकहअबप्रभुचलिममधामा। करियपवित्रकृपानिधिश्यामा ॥
निज सुत जात पुत्रिका दोऊ। बेद रीतिकरि लीजिय सोऊ ॥
चले कृष्ण तब संग भ्रूषकेतू। गये बाण गृह सुत हित हेतू ॥
तहँ बाणासुर चरण पखारी। पादोदक लै भयउ सुखारी ॥
बिशदासन प्रभु कहँ बैठाई। बचो नीतिमय गिरा सोहाई ॥
दो० मुनिसुपर्व दुर्लभ जगत पादोदकहौं लीन।
जन्मजन्मको कलुषबहु दूरिसहज सब कीन ॥
दुर्लभ त्रिपुर नाथ पग पाथा। सुरसरि यहै बिदित भवगाथा ॥
भर्यो बिरंचि कमंडल जाही। शीश कपर्दी राख्यो ताही ॥
त्रिदश पितृ ऋषिराखतमाना। पावनपतित करत जगजाना ॥
नृपति भगीरथ सेइ त्रिदेवा। प्रगटायो प्रभु भवतल एवा ॥
भागीरथी बिदित भइ सोई। जात स्वर्ग परसत जग जोई ॥
दुःकृतहरणिकरणि भवपावन। पुनि अत्राणसोपानसोहावन ॥
अमितजन्म अघन्हात नशाहीं। पानकरततबलोकहि जाहीं ॥
दरशत आन जन्म जनुहारा। अति पवित्र सोहर ध्वनिधारा ॥
दो० अस कहि ऊषा श्यामकहँ लायो प्रभुके पास।
कह्यो दोष क्षमिलीजिये यह दासी अनयास ॥
श्रुतिवत दीन्हेसि कन्यादाना। दायज दयो को कहै प्रमाना ॥
सुत बिवाहि बाणहि समुझाई। चले मुदित तब यादव राई ॥
आनंदित यादव गण चाले। जयतिसमङ्गलद्विजजनप्रतिपाले ॥

नगर निकट आये हरिजानी। धाइचलीं सिगरी रजधानी॥
प्रति गृह भयो मंगलाचारा। मंगलनाद गीत चहुं द्वारा॥
सुर बिमान सोहत बहुनाका। बन्दीजन बरणत शुचिशाका॥
कुसुम माल छोड़त सुरनारी। बिहँसहि देखि मदन मदहारी॥
रुक्मिणि आदिकरैं कुलरीती। लोक बेद बरणी जस नीती॥
दो० निज निज गृह सब जातभे सुन भूपति चितलाय।
ऊषा अरु अनिरुद्ध गृह प्रविशे मोद बढ़ाय॥
ऊषारूप विलोकि त्रिय बिहँसि लगावै अंग।
दै अशीश बहुविधि सजै भूषण विविध सुरंग॥
बाणासुर करबल मथ्यौ दीन्हो बिष्णु स्वरूप।
ताहि त्यागि मंगल कुमति परत विषय के कूप॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषांधकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांऊषाचरित्रवर्णनो
नामचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४॥
दो० यहशरीर क्षणभंगहै करियन नेकभरोस।
यथा बुलबुला नीरको अथवा नाटककोस॥
कृमिकूकुर बायस भषै अंत होइकै क्षार।
तातेतजि मंद मूढ़मन ध्याउसदा करतार॥
कालकालसुतत्रियपितामातुकोशधनजानु।
छूटिजाय यहि ठामहीं संगकासुअनुमानु॥
मार्तंड सुत पुरगये जीव हृदय पछिताय।
तब शोचे का होइमन अबहींभजु यदुराय॥
आन ओर हेरे नतू त्यागि रुक्मिणी कंत।
मुक्तिलहै संशयनहीं भाषत संत महंत॥
सुनिय महीप पुराहरिवंसी। राजा नृग जग कीर्तिप्रशंसी॥
अगणित दिये भूप गोदाना। गिरा शेष नदिसकन प्रमाना॥
गनेजायँ कणिका सरिताल्। अथवा गनकोउतारा जाल्॥
मध्यौ मंख्या दान नपाला। गनिनसकतकबिरगुणपाला॥

तुच्छ पापवश सरट सो होई। पर कृपांध जान सब कोई॥
ताहि मोच्छ कीन्ह्यो यदुनाथा। करिविस्तार कहिय मुनिनाथा॥
अन्नदाता धार्मिक नृप नायक। जासुसुयशसुरनरमुनिभायक॥
केहिअघ अजर विवश व्रपिराई। गिरगिटभयउकहियससुझाई॥
दो० केहि विधि रुक्मिणि रमण तेहि उद्धार्‍यो सुखदानि।
सुनु महीप चित शांति करि कहौं प्रसंग बखानि॥
सूरजवंश नाम नृग राई। नित गोदानदेइ श्रुतिभाई॥
यकदिन प्रात न्हाय नरनाहा। सुरभि सहस दीन्हीसउछाहा॥
रजतमंडि विग पग मढ़िरूपा। ताम्र पृष्ठि बासित सुनु भूपा॥
अन्नदान पुनि दीन्ह नरेशा। अहिमहि वाहन वाहनदेशा॥
दूसर अह पुनि सुरभि मँगाई। संकल्पी नितयक समभाई॥
लियेजात द्विजगो निजधामा। मिल्योअपरब्राह्मणगुणग्रामा॥
मग निरोधि कह सुरभी मोरी। संकल्पी महीश कस तोरी॥
काल्हि नराधि दानमहँ दीन्ही। तूखलअवशितस्करितलीन्ही॥
दो० आजु दान करि दीन्ह नृप बहुमुद्रा युत गाय।
बूझिवाक्य नहिं कहत तुम तस्कर ताकोभाय॥
निज निज वदत भूपपहँआये। समाचार सर्वांग सुनाये॥
जान्यो नृपति दान अनभारी। सत्य बदत दौ विप्र पुकारी॥
संकल्पित संकल्पौं ताता। यह अयानतामम विख्याना॥
सविनय वंदि चरण कहराई। लख मुद्रा यकजन लेभाई॥
दूसर सुरभी लै गृह जाहू। वृथातजौ निजनिज उरदाहू॥
क्रोधित विप्र कोउ नहिं मानत। पुनिपुनि वादभूपप्रतिठानत॥
किमि संकल्पित धन तजिदेहीं। पलटे तासु द्रव्य हम लेहीं॥
यक गो हितन होइ द्विजकैसे। कहौ विचारि मिटै दुख जैसे॥
दो० बहुविधि नृपतिबुझाइयो द्विज तामसवशदोउ।
सुनु क्षितीश गुणज्ञानमय मानन दूमहँ कोउ॥
करत अनीति दान कस राजा। जेहिकृत विप्रलहतदुखसाजा॥
तव गृह रहै न गो हम लेहीं। विना मोल सुरभी तजिदेहीं॥

असकहि महिसुर गे निजगेहा। दुखित भयो नृप कौतुक एहा॥
निजमनकृत विचार पृथ्वीपति। यहिअघईश होइममकागति॥
नित्य क्रियाकृत जन्म सिराना। अंत गहा यम चार सुजाना॥
महिषध्वज तट सो लै गयऊ। दान वृतांत बदत सबु भयऊ॥
धर्मसेतु नृप लखि यमराजा। हरि आसनत्याग्योयुतसाजा॥
करि सत्कार नृपहि बैठावा। प्रीतिसहितइमि बचनसुनावा॥
दो० संकल्पित गोदान किय भयउ पाप यह भाय।
सुकृत विपुलअघ स्वल्पहै प्रथम भोग काराय॥
सो० प्रथम भोगिहौं पाप तापाछे पुनि पुराय फल।
सहिहौं तनधरिताप सुनौ चतुर रविजातनृप॥
सरट होउ गोमति सरितीरा। परि कूपांधलहौ बड़िपीरा॥
द्वापर अंत कृष्ण अवतारा। तिनकरहोइहि तव निरधारा॥
भयउ तुरंत सरट नृप सोई। पस्यो कूपमधि बुधिगतिखोई॥
सघन विपिन कूपांध महीपा। सदा रहै गोमती समीपा॥
बहुत काल क्लेशित तहँ रहेऊ। वृजिनप्रतापविविधदुखसहेऊ॥
द्वापर अंत प्रगट हरि भयऊ। व्रज तजिद्वारावतिथलगयऊ॥
अति सन्तान वृद्धिभइ ताहीं। कोकवि वरणि कहै नरनाहीं॥
यकदिन बालक विपुल नृपाला। मृगयाहितगयघनवनजाला॥
दो० तृषावंत ह्वै बालगण गये कूप तट सोइ।
पस्योसरट परिनाह तन कहतबालयकजोइ॥
सुनि समस्ततेहितट चलिआये। सरट विलोकि महाभ्रमछाये॥
सम्मत करयो निकारौं याको। दिखरावो पुर भूप प्रजाको॥
फेंटा पाग जोरि लटकाये। सर्वोदित ह्वै काढ़न धाये॥
करिनि प्रतिज्ञा यह यदुजाता। बिनु काढ़े न जाब गृहताता॥
बहुरज ग्राम नगर ते लाई। फांस्यो सरट सुनौ भुवराई॥
पौरुष करि यान्यो सुत श्रेनी। सो न हल्यो नृप धर्मनिसेनी॥
महाविकल शोकित सलकरहीं। अचल मेरुवत सरट न तरहीं॥
कोउयककहेसि श्यामप्रति जाई। समाचारशुचिअखिलसुनाई॥

दो० बिहँसि श्याम आये तहां जहां कूपतट बाल।
हरिहि देखि बरणत विपुल बालहाल तत्काल॥
महाराज हम बलकरि हारे। सरट कूपते टरथो न टारे॥
भूत दशामन अखिल विचारी। प्रविशे कूप मध्य बनवारी॥
पद सरोज परस्यो शिरतासू। भयउ महा पूरुष सो आसू॥
क्षोणिप श्याम चरण गहिरहेऊ। करि विज्ञप्ति बहुरि असकहेऊ॥
दयापयोधि दास निज चीन्हों। महा विपतिते मुक्तित कीन्हों॥
पूछत बाल हरिहि भ्रमखोई। कोयह कहिय नाथ समुझाई॥
नृगसों कहाकहौ निजहाला। कहिअवसरटभयउमहिपाला॥
बसत कौनपुर पूरुब आपू। तवमुखकांतिकि विभवप्रतापू॥
दो० प्रभुहि प्रणतिकरि कहा नृप सब जानतहौ आपु।
तदपि प्रसन्नित बदतहौं सुनौ विभव सन्तापु॥
पूषण कुल भूषण नृगनामा। सदादेउँ गोदान अकामा॥
यकदिन संकल्पित गोदीन्ही। दूसर विप्रताहि गहि लीन्ही॥
वाद बदतभौ तटद्वौ आये। मानन तामस वश समुझाये॥
तजिगोनिजगृहगेद्विज दोऊ। मुद्रा लक्षन लीन्हसि कोऊ॥
नित्यक्रियाहौं कृत अघभूला। रंचक पापथूल दुखमूला॥
अंतकवश धर्मालय गयऊ। तहां धर्म अस पूछत भयऊ॥
अतिशय पुण्यतोरि अघथोरा। प्रथमकाहि भोगौ दुहुँ ओरा॥
पापभागि पुनि सुकृतहि लेहू। विविधभांति जीवहिसुखदेहू॥
दो० सरट होउ गोमति निकट अंध कूप मधिजाय।
द्वापरांत अवतरिहि हरि मोक्ष परस तेहिराय॥
यहि कारण यह तनहौं पावा। तुवपदध्यानननघय विनाशा॥
आजु उदितभा भाग्य हमारा। [illegible]॥
तेहिक्षण हरगए लाजव्यमाना। तदारूढ़ ह्वै नृग सुविमाना॥
गो बैकुंठ हरिहि शिरनाई। कहाश्याम निजसुतनबुझाई॥
ब्रह्म दोष सम दोषन आना। ब्राह्मणांश हर अघी प्रमाना॥
संकल्पितनभूलिधनलीजिय। सत्यभापिद्विजकहँसुखदीजिय॥

दै धन द्विजहि लेइ नर जोई। नृग सम दंह अंत तेहि होई॥
सेइय विप्र चरण शुचि भूरी। भवभय हरणि सजीवनमूरी॥
दो॰ द्विजसेवक मम भक्त नर रद बंदक शुचि दास।
समुझावत मग बालकन गये भवन अनयास॥
महा पापते मोचि नृग निज पुर दीन्हो बास।
मंगल भजु श्रीकृष्ण पद भव मंगल दशआस॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांराजानृगमोक्षोनाम
पंचषष्टितमोऽध्यायः ६५॥
दो॰ जे नर पूरब पाप कृत ते उपजत भव आइ।
करत लालसा दोषमय फिरिफिरि ज्ञानगवाइ॥
पीड़ित रोगनसों रहत महा वियोगित नीच।
वेद वाक्य निंदक सदा लहत न सुख भवबीच॥
झगड़ा कहत पुराणसों बहु विधि इतिहासानि।
कल्पितकृत आचार नित बहुसंग अनुमानि॥
बुद्धि आसुरी में पड़े त्यागे ब्रह्मविचार।
आये नरकहि ते रहें अंतहु नरक विहार॥
तूसंगलमन सील सुनि ध्याउ सदा सुखदानि।
जीवत मुद पुनि अंत में होइ पाप सब हानि॥
जिमि बलराम गये ब्रजराई। सो चरित्र बरणों चित लाई॥
मणिमयसदनसुखद तिहुँकाला। शोभित हैं तहँ दीनदयाला॥
तहँ हलपाणि जाय कह ताता। हमरे एक मनोरथ गाथा॥
तव अक्रूर संग मुद पाई। वृन्दावन ते आयउ भाई॥
तव यह प्रण हम कीन्ह सनेहा। शीघ्र आइ देखव पुर एहा॥
गोप सुता माता पितु दोऊ। प्रणसुनिभयमुदितकोउकोऊ॥
गयउ न बहुरि वसे यहि धामा। मिथ्या भई प्रतिज्ञा श्यामा॥
व्रजवासी हैहैं मग हेरत। अवधिभिज्जगसिप्राणहिंघेरत॥
दो॰ जो सम्मत होवै चतुर तो भेटों व्रज लोग।

आनंदहिं मोहिं देखिमव भण पुरवौं यदियोग ॥

जन्मभूमि लखि नैन जुड़ावौं। यशुमतिनंद भेटि सुख पावौं ॥
सबहिंसुभाय आशु फिरिआवौं। प्रणप्रताप निजभूमि बढ़ावौं ॥
जाहु बिलम्बन कीजिय भाई। उठे राम प्रभु सम्मत पाई ॥
सुन्दर स्यंदन चढ़े कृपाला। वृन्दावनहि चले उत्ताला ॥
जेहि पुरजात राम मगमाहीं। सेवकाईकृत अधिपति ताहीं ॥
भेटत भव भूपति हलधारी। पुर अवंतिका गये सुखारी ॥
संदीपन गुरु विद्या दानी। तिनके सदनगये मुदमानी ॥
चरण रेणु शुचिकर शिर धरेऊ। दशदिन रहि सेवाबड़िकरेऊ ॥

दो० आज्ञालै गुरुदेव प्रति चले झटित यदुराय।
कुशलक्षेम महीपसुत गोकुल पहुंचेजाय ॥

देखि नगर शोभा बलरामा। जन्मभूमिकहँ कस्योप्रणामा ॥
पुनिवनदिशिनिरख्योचितलाई। विकलफिरहिसुरभीअबलाई ॥
करणऊर्द्ध वंशी ध्वनि चाहैं। तृण जलरहित चरतबनमाहैं ॥
गोप अपार सुदित यशगावैं। पर्मसौख्यकह जनुबिसरावैं ॥
पुरबासी लघु वृद्ध सनारी। हरियश गानकरैं अधिकारी ॥
प्रभु लीला बिस्तारित वरणौं। प्रीति रीति ग्राहे गति करणौं ॥
गो गोपति त्रियदशा निहारी। करुणामय करुणा उरधारी ॥
चप प्रवाह पय अतिशयदाया। पुर दिशि देखत भूपसमाया ॥

दो० ध्वजपताकरथनिरखिकै जानिश्यामब्रजलोग।
वेद सुताते झटित सब चले तजे संयोग ॥

स्यंदन तज्यो देखि पुरबासी। आनँद मग्न राम गुण रासी ॥
एक एक कहँ कंठ लगाई। भेट्यो समुद सबहि यदुराई ॥
कुशलप्रश्न कीन्ही हितुजानी। सुखददशानिजकह्योतखानी ॥
ततक्षण कह्यो नंद प्रतिकाहू। चढ़ि स्यंदन आये सुतदाहू ॥
समाचार सुनि दम्पति धाये। उपनंदादि अखिलसँगआये ॥
नन्दहि आवत देखि समीपा। सत्वर गमन कियो यदुदीपा ॥
परे चरणतल विनय सुनाई। हृदय लगायो नन्द उठाई ॥

फणिमणिकिधौंमृतकतनप्राना। गतधनपाव किधौंधनवाना॥
दो० गहे यशोदा के चरण चूमि लगायो हीय।
महामोद पायो नृपति रंक निपट कमनीय॥
भेटत सबहि चले हलपानी। नन्द सदनगय मुदउरआनी॥
पूछत कुशल क्षेम नंदराई। उग्रसेन बसुदेव गोसांई॥
सहयदुबंश कुशल मम प्राना। बिस्तृत कीजिय तातबखाना॥
तुम्हरी कृपा सकल कुशलाई। मंगलमय पुरलोग लोगाई॥
यश तुम्हार बरणत दिनराती। दम्पति तृप्ति न हृदयजुड़ाती॥
यशुदा सजलित अक्षबखाना। ममसुधिकतहुंकरतभगवाना॥
चब पूतरि यादव कुल भाना। हमहिंबिसार्योकृपानिधाना॥
जब ते सुत तजि ब्रजकहँगयऊ। तबते ध्वंत चहूं दिग छयऊ॥
दो० सिद्धियामहरिध्यानउर भावनतनधनगेह।
द्वरावति छाये प्रभु पूरण कीन्हो नेह॥
तजी रोहिणिहु प्रीति हमारी। वश अदृष्ट नहिं दोष बिहारी॥
मधुपुर बसत मिलत दिनकाहू। दूरिप्रदेश भयउ उर दाहू॥
बैकल रोदति नृप नंदरानी। प्रभुसमकरतिनकोउभवप्रानी॥
नीलाम्बर समुझावत ताही। करत प्रशंसा नृप बहुताही॥
उठि यशुदा भोजन चहुंखानी। बिरचिजिमायोसुनुनृपज्ञानी॥
लैताम्बूल चखे बलरामा। निरखननगरवीथिअभिरामा॥
मनमलीनप्रभा क्षीण दुलारी। बिरह बिकल भूषणबिनुनारी॥
हरि रसमती तजे जगरागा। गावहिं हरिगुणसहअनुरागा॥
दो० युवतिन निरख्यो हलधरहि परीं चरणतल आय।
चारिओर सेवित खड़ीं सुनु प्रमुदित भुवराय॥
निजप्रण तुम पुर्यो ब्रजआये। पैनहिं प्राणनाथ कहँ लाये॥
कहां बिराजत तन मनहारी। तजीसकल बिधिसुद्धिहमारी॥
काहूकाल सुरतिकृत श्यामा। अथवा भूले लहि धनधामा॥
त्यागिहमहिं जादिनते गयऊ। तबते पुनि न नेहउर ठयऊ॥
एक बार ऊधौ मुख नाथा। योग ध्यान की पठइनिगाथा॥

मथुरहिरहत प्रीति परित्यागी। जरतरहीं हम विरह दुरागी॥
अब दधिकूल पंथ बहु दूरी। रचौ विहार जगत जियसूरी॥
कठिन भये नृपता पद पाई। को सुधिनाम दयउ विसराई॥
दो० जननिजनकजिन परिहरे कहतआन सखि बूझि।
तिनकी प्रीति प्रतीतिकस तू अलिबदत अरूझि॥
वृषभमित्रजा बिनु घटिकाहू। रहत न रहै श्याम विधिकाहू॥
बिपति वियोग विकल बरसाने। बसत अकेलताहि विलगाने॥
कुलकीरति भव लाज बिसारी। सेये हम त्रिबिधाहि विहारी॥
जगकर व्यंग हास्यसह आली। आठभांति बंदे बनमाली॥
ताकर सुफल कलेश वियोगा। खायो निजकर भोगसुयोगा॥
बसिदधितीर कीन्ह बहु व्याहा। षोड़श सहस आठमनचाहा॥
सुत नाती परिवार अपारा। विदितभयउसुनुसखिसंसारा॥
त्यागितिनहिंकेहिबिधिब्रजआवैं। आंछखाय पुनि गायचरावैं॥
दो० अपर कहति जानिदुखकरो ऊधो वचन विचारि।
गहौ चरण बलदेव के जे सांचे तिहुं वारि॥
गौर शरीर प्रीति मग जानैं। स्वप्नौ कपट चित्त नहिं आनैं॥
श्याम छद्म मूरति जग गावे। कहा कहिय उर विरहसनावे॥
उत्तर संकर्षण अस दीना। ईश्वरजानि भजौ छलहीना॥
हरिआज्ञा पुनि निजप्रणजानी। आये तुमहिंमिलनहितसानी॥
अब सब तजौ वियोग कलेशा। ध्यावो सदा सहदहृषिकेशा॥
यहि थल हम रहिहैं द्वै मासा। रासठानि पुरउब तुवआसा॥
मधुषज्ञ रजनि सोहावनआजू। काननआवो सजिसजिसाजू॥
सबहि बुझायरैनि सुखपाई। विपिनगये हलधर सुनुराई॥
दो० सम्मतसम ब्रजनारिहू करि षोड़श शृंगार।
गईं रेवती रमण पहँ हित रहस्य सुख सार॥
निकटजाय किय हरिहिप्रहूना। अस विभांतिहलधर तेहिजूना॥
रजतबरण बासित पट नीला। चक्रइंदु चष दनजलशीला॥
सानुरागकर बीन मृदंगा। मुरली अरु करताल उपंगा॥

अपरयंत्र अगणित कर लीने। गावनलगीं राग रसभीने॥
नृत्यहि भाव बताय सप्रेमा। निरखहिं रेवतिरमणसचेमा॥
गानतान गति नृत्य निहारी। मोहितभे तत्त्वण हलधारी॥
सानँद कर्‍यो वारुणी पाना। ह्वै मदगलित नचे भगवाना॥
अमित कुतूहल नृपवर करहीं। गावत नाचत गहिकरकरहीं॥
सुर गंधर्व यत्त किन्नर गन। निरखतसुखसत्रामोदितमन॥
गावत हरियश छोरि प्रसूना। बारबार कृत प्रभुहि प्रहूना॥
पशुपच्छी गण ध्वनि सुनिधाये। मग्नितजीव रासथलआये॥
जसकौतुककथा श्याम बिलासा। रामकीन्ह तसवाम हुलासा॥
दो० सदाचारगति परिहरी थक मृगांक ततकाल।
झरत करावलिधारजख जगमोद्यो चहुंचाल॥
निशाअंत लखि गृहकहँ आये। अखिलयोषितनबहुसुखपाये॥
इमि मधु माधव रहि द्वौमासा। ब्रज युवतिनमोद्योअनत्रासा॥
रैनिरहस्य दिवस हरि गाथा। करहिं कहहिंयादवकुलनाथा॥
कृत रहस्य यक दिन श्रमपाई। कालिंदिहि प्रभु कहा बुझाई॥
ममतट आउ करौं अस्नाना। आज्ञा लंघत तुव अभिमाना॥
दूरि करौं त्तण महँ हरि जाया। नृपवर बचनन तेहिउरभाया॥
शासन लंघन हृदय बिचारी। कोपे नीलाम्बर रुट भारी॥
हल बल आकर्ष्यो निज ओरा। त्रियन सहित न्हाये बरजोरा॥
दो० टेढ़ भई यमुना नृपति तादिनते तेहि ठाम।
सदन आयमिलिसबनकहँ सानंदितपरिणाम॥
नंदयशोदा आदि दै त्रियनर अखिल बुझाय।
भेंटि विरह दुविधा सकल बिदाभये यदुराय॥
गये द्वारका मोद मय हरिहि सुनाव प्रसंग।
मंगल भजु यदुवर चरण लहै सौख्य प्रतिअंग॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धाकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांबलभद्रव्रजगमनवर्णनोनाम
षष्ठषष्टितमोऽध्यायः ६६॥

दो० ज्यों बालक रचिख्यालबहु क्षणमें देत मिटाय।
तथा ब्रह्म निजशक्ति वश त्रिपुर रचत सुनुभाय॥
हरिकी शक्ति अपार है कोजग जानन योग।
चतुर सुजन बंदत सदा शक्तिहोत विनु रोग॥
ज्योति प्रकाशित चारिदिशि नारायणकी आहि।
मूरख भ्रमत अनेक विधि विबुध विलोकत ताहि॥
विनु जाने भ्रमणा बड़ी जाने नशै कलेश।
ज्ञान कठिन कवि श्रुति वदत फलित ज्ञान चहुंवेश॥
उत्तम शाखा ज्ञान तरु पाय भजै यदुराय।
मंगल मन दृढ़ता गहै भवदधि सो तरि जाय॥

गाथा रुचिर श्रवण नृप करहू। तुमहितुजानिसमुद अनुसरहू॥
पौन्ड्रक नाम भूप यक काशी। बलनिधानभवविभवविलासी॥
विष्णु वेष कीन्हों छल कारी। निजवशकिये पुरुषअरुनारी॥
पीताम्बर धारे वनमाली। मुक्ता मणिसूक कंधरढाली॥
कम्बु चक्रगद कजकर धारे। दुभुज काष्ट निज अंगसवांरे॥
दारु खगेश धरे रुचतुंगा। तदारूढ़ विचरै दुख भंगा॥
वासुदेव पौन्ड्रक निज नामा। कस्योप्रसिद्धजगतगुणग्रामा॥
सबसन निजहि पुजावै पापी। जो न मान तेहि दंडैतापी॥

दो० बहु नृप कीन्हे स्ववश खल उद्यम संगर ठानि।
आन प्रसंग महीप सुनु जोसुनि मिटै गलानि॥

प्रतिपुर नगर लोग इमि कहईं। द्वै अवतार विष्णु कर अहईं॥
मथुरा यदुवंशी हरि एका। जन्म्यो अरुश्रुतिवदतविवेका॥
द्वितिय जन्म वाराणसि आई। सत्य अनृतको वंदिय भाई॥
यह चर्चा छाई चहुं ओरा। सुनि काशिपकरमनभाथोरा॥
हटित बच्यो निज सभहि सुनाई। कोअह कृष्ण द्वारका भाई॥
जाहि कहै जग हरि अवतारा। भक्त हेत हौं नरतन धारा॥
छद्मी श्याम बचौं रण माहीं। प्रचरित होइ धर्म बहु धाहीं॥
दूत बोलि प्रभु पास पठावा। कहिमंदेशभलिभांतिनुझावा॥

दो० कपटरूप मम तुधरे बेगि त्यागु किनताहि।
उद्यम संग्रम नतुकरौं ग्रस्यौ काम अमनाहि॥

हरिपुर सभागयउ चरजोई। करिप्रणाम बोल्यो रुखजोई॥
हरपुर विष्णु पौन्ड्रक अहई। जिनकहँ विश्वईश करि कहई॥
तिनकरनाथ सँदेशा लायउँ। यहिमिम प्रभुतवदर्शनपायउँ॥
आयसुहोइ कहौं करजोरी। अवशितदौ प्रपंच मतिछोरी॥
कह काशिपहौं भव करतारा। प्रतिपालकनाशक श्रुतिसारा॥
कोतू कपट कलेवर भांड़े। जगतलाज तीनों विधिछांड़े॥
जरासंध भयतजि निजधामा। बस्यो द्वारका बशमतिकामा॥
तजि ममवेष ताकुमम शरणा। विधिप्रतिकूलभयउनतुमरणा॥

दो० जोनध्याइहै मोहिंतौ तुहि यदुवंश समेत।
समरमंडि वधिहौं सही चलि द्वागवति खेत॥

हरिमहिभार पालिहौं दासा। पूरणयश भवकरौं प्रकासा॥
निराकार निर्द्वैत महाना। सोहौं पारब्रह्म भगवाना॥
ऋषिवराक नरनाग सचारी। जपतप अर्चा करत हमारी॥
बनजजाततहै भव उपजाऊं। हरिहै शुचिजीविका पठाऊं॥
शंकरयनि नाशौं तिहुंकाला। आदि पुरुषहौं जनगणपाला॥
मत्स्यरूपहौं वेद बचावा। कच्छ धराधरि जगत बसावा॥
शूकरवपु हाटक चषमारा। नर पंचानन भक्त उवारा॥
रघुकुलमणिशनि जनदुखनाशा। बधिसुरारियश विशदप्रकाशा॥

दो० जब जब बाढ़त दुष्टभव ममभक्तन दुखदेत।
तब तबहौं हौंस्ववशजग निज शरीर धरिलेत॥

हरि आसन आसीन कृपाला। सुनतदूतमुखअखिलाहिवाला॥
तस्मिन्समय कोउ यदुजाता। क्रोधितवच्यो दूतप्रति बाता॥
शमन धाम चाहत खल देखा। कहतअबूझितवचन विशेखा॥
दूत निधन भवनीति विरोधा। छद्मीचर चुपभा उर क्रोधा॥
चहियवशिष्ठ बुद्धि चषमूढ़ा। दै विवेकित वचन अगूढ़ा॥
[illegible]

जाइकहौ निज स्वामिहिं भाई। आवत कृष्ण सत्य शरणाई॥
सावधान सब विधिह्वै रहहू। निजकलेशसबविधिकरिदहहू॥
दो० बंदि चरण श्रीकृष्ण के हरपुर गयउ बमीठ।
वासुदेव कृत महिनयो पखो दृष्टि नृपईठ॥
काउत्तर बदु यदुवर दयऊ। चरपदवंदि कहत असभयऊ॥
नाथ सँदेश कहा सबु जाई। भगणोश्यामइमिमोहिंबुझाई॥
विष्णुरूप अवहौं परित्यागी। आवनहौं शरणागत लागी॥
रहैं सचेत भूप बसु यामा। छलकृतगनिनाशनपरिणामा॥
दूत सँदेश कहत चितलाये। तदाकाल बहुचर चलिआये॥
प्रणति सनीति कीन पुनिबोले। सुनो महीपति समरअडोले॥
कस निशिंचत सभामधि राजै। युद्ध चमू नाना विधि साजै॥
यदुपति दल चतुरंग सवारी। पुर निरोध कीन्हो खलहारी॥
दो० सुनि धायो निज कटककै आयो प्रभुदलपास।
संलग्नी तेहि अपर नृप जाकर काशी बास॥
समर निशान तूर्य सहनाई। बजैं भेरि कर्नाल सोहाई॥
ताल मृदंग दुन्दुभी आना। संगर यंत्र अपर विधि नाना॥
रावत सावत प्रबल प्रबीरा। लागे युद्ध काज रणधीरा॥
महा मारु नहिं बरणि सिराई। खग खग समनभरहे उड़ाई॥
कादर विपुल निरखि रणभागे। समरशोर सुनि शंकर जागे॥
वासुदेव पौन्ड्रक युत क्रोधा। प्रभुसन्मुख आयो कृतशोधा॥
अनवद बदत कालवश सोई। बहु यदुजान कहत तेहिजोई॥
हरिस्वरूप कसहरि रणमारैं। श्रुति मारग निबाहि प्रचारैं॥
दो० सकल भूमित लखि कृष्णजू असबदि करयो प्रबोध।
कपटी दुर्गामी बचे अधन कहत श्रुति शोध॥
प्रेरयो चक्र भाषि इमि श्यामा। दारु बाहु भंजौ खग जामा॥
अरुगति बान पलाइन भयऊ। दुष्टभूमि तल मारग लयऊ॥
खंड्यो कंठ चक्र तद बारा। महापापमय तेहिछण तारा॥
काशी पखो भूप शिर तासू। विदित प्रभाव ईशमभजासू॥

त्रियगण निरखि बदें अकुलाई। यहकरता कस अकथकथाई॥
तुमपति देव देव अवतारा। अजर अमर बहुवार पुकारा॥
चणमहँ त्यागि काय स्वर्गयऊ। हमरे तिमिरवेद दिशिभयऊ॥
नाम सुदत्त तनय तेहि राजा। पितुशिरदेखिलहीबड़िलाजा॥

दो० जेहि मारयो ममतातरण ताहि बधौंहौं आजु।
असकहि शिव यज्ञ सोगयउ त्यागि भूपसुखराजु॥

प्रभुवदि ताहि गयेनिज धामा। अस चरित सुनुप्रभरकामा॥
विपुलकाल तप करेसि कराला। भे प्रसन्न सितकंठदयाला॥
निकट आय कह सुतवर मांगू। देहौं तोहि सहित अनुरागू॥
वधौं कृष्ण यह वर मोहिं देहू। पिता वैर जेहि बलवेलेहू॥
यह बरदान असंभव ताता। यतन एकहे यद्कुल पाता॥
वेद मंत्र प्रतिकूल प्रजापी। करिये यज्ञ जगत सन्तापी॥
मख प्रसिद्ध प्रगटिहि यकबाला। महा प्रबल जनु दूसर काला॥
तव आयसुवत काज सवाँरिहि। कृत्या नाम तोर प्रण पारिहि॥

दो० हर अनुशासन पाय खल कयो यज्ञ द्विज बोलि।
प्रगटी कृत्या तासुते धरा शेष शिर डोलि॥

चली द्वारकहि वेपथकर। जेहिकरहोत न भवकरशंकर॥
देश नगर जारत बहुधाई। मनुज निपातत हरिपुर आई॥
गर्जत घोर विविधं पविपाता। भेरयो जलज द्वारका ताता॥
पुर वासी कृत त्राहि पुकारा। बाल युवा धाये प्रभुद्वारा॥
सबहि बोधि प्रभुचक्र पवासा। वधि कृत्या हरपुर कस्त्रासा॥
चल्योसुदर्शन प्रज्वलितआगी। कृत्यानिरखिनगरतजिभागी॥
ताहि भंजि काशी पुरि गयऊ। गृह प्रति चक्र वेद सुतदयऊ॥
प्रजरत नगर विकल नरनारी। देत सुदच्छहि कोटिनगारी॥

दो० बाराणसी जलाय करि गयउ चक्र हरि पास।
सुखीभये यदुजात सब रहे लगे अनयास॥

कलकाशी पुरी नगर निज पावन कराल।

मंगल तजि दुविधा अखिल भजु तू मदन गोपाल ॥
इतिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांनृपतिपौन्ड्रक
मोक्षवर्णनोनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

दो० क्रोध प्रबल प्रजरत हृदय होत बुद्धि विपरीत।
बुद्धि भ्रमे ज्ञानी भ्रमत वदत चतुर यह गीत ॥
ज्ञान नशे यहि जीवकी होत दशा विकराल।
ताते त्यागे क्रोध बुध सुख पावै त्रैकाल ॥
शांतिरूप ध्यावै सदा परमात्मा गुण खानि।
जासुभजनते अखिल मति लहै मोक्षसुखदानि ॥
जीवत सेवै वचन मन तन शुचि रुक्मिणिकंत।
भक्ति मुक्ति पावै सही सत्य सत्य बुधिवंत ॥
जे मूरुख अज्ञान मय तजियै तिनको संग।
ज्ञान चतुरई जगत यह उपजै बुद्धि अभंग ॥

जिमि बलरामद्विविदकपिमारा। कहौं यथा नृप सुत विस्तारा ॥
द्विविदनामकपि अतिबरियारा। सचिव सुकंठ विदित संसारा ॥
भौमासुर कर सखा कहावै। निज बल जो बहुबार लजावै ॥
तेहियकदिन निजसभा बखाना। शूल यक खटकत ममप्राना ॥
मित्र मोर भौमासुर रहई। मर्यो ताहि कृष्ण रण अहई ॥
वैर लेउँ तौ हृदय जुड़ाई। कहि अस उर बड़ मोह बढ़ाई ॥
कोप वलित चषभे अरुणारे। चल्यो द्वारकहि संग बिसारे ॥
नाशत देश नगर अन्याई। दंडत हरिजन ब्राह्मण गाई ॥

दो० जल बरसावत त्रिविध मग बोरत विपुल सजीव।
अग्नि प्रकाशत योगबल कृत विनाश अघसींव ॥

पाहन विहति काहु शिर तोरै। काहुइ पकरि सिंधुमहँ बोरै ॥
चांवत बांधि मनुज बलखानी। बंदि कंदरा कृत अभिमानी ॥
काहू कर शिर बाहु उपाटा। तरु हति काहू करत न काटा ॥
महा विपति किय गुर्जर देशा। मग विपरीतचलत अघवेशा ॥
देवालय मनि थान जो पावै। मूत्र पुरीष रुधिर बरसावै ॥

सब प्रकार भव करत उपाधी। गयोद्धारकहि कुमतिअराधी॥
धरिलघुरूप चढ़्यो हरि धामा। देखि हरीं सुन्दरी ललामा॥
अस बिचारि रैवत गिरिगयऊ। निपटनिशंकशंकतजिदयऊ॥
दो० प्रथमनिभनि रैवतिरमण पुनि मारौंघनश्याम।
अलख रूप निरखत भयो बल बिहार तेहिठाम॥
हरिमद गलित नारि गणसंगा। करत सरोवर तट बहुरंगा॥
न्हात त्रियनसँगकृत सुठिगाना। मदामुदितकिमिकरौंबखाना॥
लखिचरित्र यहद्विविद कुजाती। पादप चढ़्यो भूप उतपाती॥
किलक्योअमितभांतिमतिहीना। कपिलीलाबहुकरथोप्रबीना॥
तर्जत मृगशाखा महिपाला। त्रियनदशनतककरिकपिख्याला॥
जेहिथलधर्योकलशशुचिहाला। अरुजहँ चीर बिराजतवाला॥
तहँ बिट मूत्र कर्यो खल जाई। युवतिन देखा दृष्टि उठाई॥
ह्वै भयभीत त्राहि बच भाषा। लखौ नाथ भयकरमृगशाखा॥
दो० हसत हमहिं अनस्वारथहि बिट मदिरा घटकीन।
बस्त्र अशुचि पुनि सब किये सुनौ कृपाल अक्षीन॥
सुनि तड़ाग तजि बाहिर आई। अबिलोक्योकपिपतिबलदाई॥
डरपायो महि उपल कृपाला। डर्योननेक द्विविदबशकाला॥
जानि वारुणी गलित नृपासू। दपट्यो कीश जटितमृतपासू॥
उतरि दली शाखा भर आवा। किलकिलाइगरज्यो अरुधावा॥
सुरापात्र पटक्यो महि माहीं। फार्यो बिपुल चीर भयनाहीं॥
प्रभु मनजान चली मुख बाली। अहै असुर को डारिय घाली॥
आयुध हलमूशल कर लयऊ। तब तनु कीश बढ़ावतभयऊ॥
कनक भूधराकार भयानक। कपिपातिभयउमहीपअचानक॥
दो० भयउ उपस्थित समरहित गहिकर गिरितरुजूह।
प्रभु मूशल घात्यो जबहिं तब धायो करिहूह॥
पत्री अग जग विपुल बहाये। युद्ध भयानक बनत न गाये॥
निधड़कभिरत उभय रणकारी। कौतुकीय मन बिस्मितभारी॥
दुखितविलोकि बराकअकाशा। हलधरकर्योकोपिकपिनाशा॥

भरत ताहि सुर मुनि आनंदे। वारवार प्रभुके पद बन्दे॥
कुसुमावली अमित वरसावैं। जयजयकहिप्रभुसुयशसुनावैं॥
त्रेता रह्यो रामदल माहीं। विदितकथा वरणयोतेहिनाहीं॥
मित्र हेत निजप्राण गमावा। जगसुलोक उत हरिपुरपावा॥
कानन चर इमिस्वर्ग पठाई। द्वारावति आये यदुराई॥
दो० द्विविद युद्ध वरण्यों सकल प्रभुसन्मुख बलराम।
सुनिहरषे घनश्याम बहु पुर सुखभा प्रतिधाम॥
मंगलमन जो धर्ममय ध्याउ रुक्मिणी कंत।
दुविधा नाशै अखिलभव अरु सुखलहै असंत॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांद्विविदवधवर्णनो
नामाष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८॥

दो० जासुचरित लखिपरतनहिं सुगमअगम विधिदोइ।
चतुर विबुध खोजतयदपि तदपि न जानतकोइ॥
स्ववश विरंचि जेहिकाय निज लीन्हे बहुअवतार।
क्लेश हरे संसार के पतित किये भवपार॥
तासुचरण पंकजभजिय तजिय कृतिम सुरगर्व।
सुखसागर इतमुक्ति उत विनशिजाय दुखगर्व॥
जो विपदा भइ जीवकहँ मर्म मध्य मनुजान।
सो भूल्यो क्यों नीचतू करु यदुवर पद ध्यान॥
नरतन पारस पाय खल खोजत कांच पषान।
त्यागि याहि पुनि अंत में पछितावैं अज्ञान॥

कौरवेशशुचिमनसुनिलीजिय हरियशसुनतद्विचिततजिदीजिय
कहौं लक्षणाकर उद्वाहा। दुर्योधन तनया नरनाहा॥
लखिवरयोग कुरुपअभिमानी। रच्यो स्वयंवर उर मुदआनी॥
धरापाल गुण गण युत जोई। पत्र पठइ बोलभि सब सोई॥
यथा योग सबकी पहुनाई। कर्यो अनेक भांति मनलाई॥
यज्ञ दिवस सुधि पाय नृगया। साम्ब नाम जांबवतीजाया॥

नाग नगर आयो कुरुराया। सादर ताहि सभा बैठाया॥
चहुं दिशि दृष्टि देइ सो देखै। वैभव पति न चित्त निजलेखै॥
दो० वस्त्राभरण बिभूति बहु राजत राज समाज।
अस्त्र शस्त्रमय पंक्तिमय खड़े सुता के काज॥
बहु कौरव सोहत तिन पाछे। महावीर रण काछनि काछे॥
बजतनिशानभांतिकिमिगाइय। अंतर गीत नाद बहुताइय॥
रंग अवनि मधि राजकुमारी। रतिमूरति छबि मनहुंसवांरी॥
हस्त कमल जयमाल सोहाई। त्रिपुर जयति शोभाजनुराई॥
सखीवृन्द संग अक्ष प्रकासा। दुहितामुखभाजनुशशिभासा॥
निरखत भूपति नैन उठाई। काहुगलन माल पहिराई॥
कृष्णतनय तटआई बाला। गल परंतुनहिं डारिसिमाला॥
तबतजि भय संकोच महाना। पकरिताहिघाल्यौनिजयाना॥
दो० चल्यो द्वारकहि बालगहि देखत सब भुवराय।
करण द्रोण भूरिश्रवा कुरुपति रहे लजाय॥
मखबिनाश लखि कुरुपरिसाना। करणहि बोलिमंत्रअसठाना॥
यज्ञभंग कीनसि यहि आई। यह अनीति पुनि सुतरखताई॥
यदुबंशी अन्याय सदाहीं। कुसमय समयकरतभ्रमनाहीं॥
शल्य कहा कुलहीन महाना। राज्यपाय पदशिरपर आना॥
साम्बहि मर्दि सुताकिन लेहू। कतचुपबैठि सुयश निजदेहू॥
सुनि कौरव सकोपि सबधाये। मगनिरोधि बहु अस्त्रचलाये॥
हरिसुत अमित बाण रणमारे। तजितन शवत स्वर्ग सिधारे॥
श्याम सूतभा जीव बिहीना। पदचर धायो समर प्रवीना॥
दो० घेरि कौरवन बांधि तेहि लै आये निज धाम।
सभामध्य नरछोट बड़ करत हँसी परिणाम॥
अबकहँ गयउ पराक्रम तोरा। हर्यौ सुताकेहि बलबर जोरा॥
नृप आयसु बन्दी गृहराखा। नारदआय नरेशहि भाखा॥
बध्यौन भूलि कृष्ण सुतराई। नतुपाछे पछिताहु अघाई॥
मूशलपाणि क्रोध जल जाता। दारुनहोउ बंश युततात॥

तनयबन्दि सुनि हरि बलरामा । ऐहैं सह सहाय तुव धामा ॥
विग्रहसंधि उनहिं सँगकीजिय । दंडन भूपवाल कहि दीजिय ॥
बयकिशोर बुधि हीन नरेशा । कस्यौ अनीति सुयज्ञ सुदेशा ॥
ताहि बुझाय देवऋषि राजा । गये द्वारका श्याम समाजा ॥
दो० देखि मुनीशहि सहसभा उठि बन्दे नृपपाय ।
शुक्लाशन आसन दयो कहतभये मुनिराय ॥
दुर्योधन साम्बहि गहि राखा । विविध दंड दीन्हों मनभाखा ॥
मख विनाशि दुहिता हरितासू । आवत पंथ बन्दिकिय आसू ॥
बेगिसुद्धि लीजिय बनवारी । सुतबध सुनि नतहोहु दुखारी ॥
गर्वबलित कौरव सबजानैं । काहूकीन कानि जगमानैं ॥
शत्रु समान बांधि साम्बूकहँ । दंडिराख बन्दी आलय महँ ॥
सुनि कोपे सिगरे यदुजाता । उग्रसेनि क्रोधित भा ताता ॥
आज्ञा सबहि दयउ दुखमानी । करौ निरोध कुरुप रजधानी ॥
बधि कौरव सुत बेगि छुड़ावौ । हित सम्बंधकानि जनिलावौ ॥
दो० भूपरजायसु पाय नृप जुरे अखिल यदुजात ।
रामआय कह राउप्रति दलन पठाइय तात ॥
अकसर जाय उलाहन देहौं । शिशुहि प्रमोचि कुरुप तेलैहौं ॥
कारण बंधन विविध प्रकारा । समुझिकरौं परिणामअखारा ॥
बिनुमम गमनन प्रगटिहिमर्मा । बूझेबिनु न करिय रणकर्मा ॥
नृपति रजाय पाय हलग्राही । गजपुर चले शोक तरुदाही ॥
कोविद विप्र संगऋषि नारद । अपरसुबुधिगणधर्मबिशारद ॥
पुर बाहिर उपबन कियथाना । मोदित कौतुकऋषिहिबखाना ॥
कृपाराशि विनती मममानिय । भूपसभा गममोर बखानिय ॥
नारद नगर मध्य गयराई । आगम राम बचौ समुझाई ॥
दो० सुनि सचेत है सब चले सभा सहित सुनभूप ।
सुरसरिसुत गुरु द्रोण युत करणसुबीर अनूप ॥
दुर्योधन उर मुद अतिछायो । कह्यो मोर गुरु हलधरआयो ॥
आजु बंदि पद पाप नशाऊं । जीवत चहुंफल करतलपाऊं ॥

पथ बतरात गये उद्याना। विबुधसभायुत जहँभगवाना॥
परसे चरणभूमिपति जाई। अस्तुतिकरयोअमितगुणगाई॥
युत पाटीर चर्चिसृक डारी। पूछि कुशलद्विधाहिविसारी॥
करि बिज्ञप्ति सदन निजलाये। सादर हरि आसन बैठाये॥
छरसचारि विधि व्यंजनसाजा। सबहि जिमाये कौरवराजा॥
आगम हेत पूछ कुरुनायक। आज्ञाहोय करौंनिज लायक॥
दो० उग्रसेन पठवा हमहिं लाये सुरुचि सँदेश।
सुनौ अवनिपति चित्तदे जेहिते मिटै कलेश॥
उचित विरोध हमारे संगा। कुरुपति रहै न प्रीति प्रसंगा॥
तुम शत बंधु प्रबल रिपु घाती। बलबिलोकिविहरत अरिछाती॥
परिहरि नीति ज्ञान कुलकानी। बांधत बालक भैनगलानी॥
दृढ़ सम्बंध नशाव पुराना। शिशुहिदयउदारुणदुखनाना॥
अहंकार बश तज्यो सनेहू। अनुचित कर्म करयोसुतएहू॥
उग्रसेन की नाथ बड़ाई। अवन कृपाल करियंयहिठाई॥
कुल बिनु जानन भूपर कोई। दुखी रहत बहुकछु दिनखोई॥
अस नरेश नृपता महँ मोरी। अनगण अहैंसुनौ गुणचोरी॥
दो० मद छायो लहि राज्य लघु उग्रसेन उरतात।
सो यह तासु प्रताप नहिं भयउ हमारे नात॥
बीते कछुक दिवस सब जानैं। ब्रजग्वाल न सम्बंधित मानैं॥
भोज्यो भोज्य संगतिन केरे। कहत बनत नहिं कर्म घनेरे॥
जादिनते हम किय सम्बंधा। लह्यो राज्य तबते बुधिअंधा॥
सो अब हमहिं डरावत आही। अनुचितउचितबुझातकाही॥
उत्तम जन गुण मानत नाथा। नीचबिसारि देत शुचिगाथा॥
यह संसार प्रसिद्ध कहानी। बालूभीति अकुल पहिचानी॥
इमि बहु व्यंग द्रोण रविजाता। उग्रसेन कहँ भाष्यो ताता॥
भीष्म शल्य आदिककटुवानी। अमितप्रकार अनीतिखानी॥
दो० उठि निजनिज आलय गये गर्वगलित कुरुजात।
देखि अनादर राम तब मन माखे सुनु तात॥

महा गर्वमय अशुभ महाना । उग्रसेन कह व्यंग बखाना ॥
त्रिसुर वंदनिय जेहि पदनवहीं । लखिप्रताप पाहन पयद्रवहीं ॥
बोरौं सकल कुरुज युत ग्रामा । दुखतरुनत बाढ़िहिपरिणामा ॥
हल समृद्धि गजपुर आकर्ष्यौं । बलविलोकिकौरवजियधर्ष्यौं ॥
अति भयभीत पाहि कहिपाही । राम सुयश बहुभांति सराही ॥
कहा क्षमिय अपराध हमारा । शासन भंगनकरव तुम्हारा ॥
बांध्योशिशहि अनीतिबिचारी । सो कृपाल लघुधिषणहमारी ॥
सेवक चूक हृदय नहिं लाइय । कोयश गंग बेरि पुर पाइय ॥
दो० शांतिभये सुनि बिनय बड़ि दयासींव बलराम ।
नगर यथास्थित गंगतट करिदीन्हो गुणग्राम ॥
साम्ब प्रमोचि वेद विधि व्याहा । कीन्हक्षितीश सहितउरसाहा ॥
कन्यादान सघन नृप दयऊ । पुर प्रमोद नानाविधि छयऊ ॥
यौतुकअमित इलापतिदीन्हा । सबिनयहरिहिबिदापुनिकीन्हा ॥
यहि प्रकार कौरव मद घाली । शिशुहिव्याहिलायेरिपुशाली ॥
प्रविशत नगर द्वारका भूपा । भये मंगलाचरण अनूपा ॥
हरिपुर समाचार हल पानी । उग्रसेन पुनि बद मृदुबानी ॥
सुनि विहँसे भूपति अवनीशा । भलकीन्होकुरुपतिमदखीशा ॥
देखि लक्ष्मणा आनन शोभा । हरिरनिवासमनहिंमनलोभा ॥
दो० मान मथत मानीन के नारायण सब काल ।
मंगल तजि अहंकार भजु दुख हर श्रीगोपाल ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांसाम्बविवाहवर्णनोनामै
कोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥
दो० देखि विपति विकलित महा होत जीव अज्ञान ।
तब ध्यावत हरिको अथिर जेहि होवै कल्यान ॥
सुखमें नहिं ध्यावत हरिहि विषयभोग लपिटात ।
महा कृतघ्नी पातकी जीव जगत विख्यात ॥
आनँद और निरानदहु समता जानि सुजान ।

शुक्लकृष्णशशि समनिरखि ध्याउसदाभगवान ॥
छूटि कलेवर जाय यह सेवत जेहि दिन राति।
समन सदन पक्षितायमन नाशै बिषयी भांति ॥
अखिलआशपरिहरिचतुर भजुयदुपतिकजपाद।
सुख पावै दुहुं ओरही बदत बिबुध मनुजाद ॥
नारद मुनिकर मोह बखानौं। दुख तरुवच कुठारितव मानौं ॥
श्रवण करो भ्रम अशुचिबिहाई। एक समय नारद ऋषिराई ॥
निज मन यह कीन्हो सन्देहा। बहु युवती सोहत हरि गेहा ॥
करत गृहस्थाश्रम केहिभांती। समुझतमोरसुबुधिबिकलाती॥
बिना परीक्षा भ्रमन नशाई। इमि बिचारि हरिपुरगे राई ॥
पुर बाहेर निरखे उद्याना। बड़लघुबिटपफलितबिधिनाना॥
अमित वृक्ष शोभित महिलागे। दाता किधौं दीनहित पागे ॥
द्विज कपोत शुक चातकमोरा। बोलत शब्द सुखद घनघोरा ॥
दो० फूले पद्म तड़ाग महँ उठत गंधि सुख दान।
भ्रमत सिली सुख गुंजरत मनों बृतभक्षभान ॥
जलचर बिपुल सरोवर नीरा। करत कुलाहल छूटत धीरा ॥
इमि देखत सरवर सुखदाई। प्रबिशे नगर मध्य मुनिराई ॥
हाटक सदन जटित मणि सोहै। जो बिलोकिबिधिहरमनमोहै ॥
पुरकि द्वितीय शूर परकासा। गृहप्रतिध्वजापताकबिलासा ॥
प्रति अगार शोभा को भावै। गिरा शेषमति लखतलुभावै ॥
बंदनवारि कलश प्रति द्वारा। धूपधूम प्रति धाम पसारा ॥
नगर मलिनता सोइमहिपाला। अघगतिबिषनकोउनरबाला ॥
बिप्र समूह बेद कृत गाना। कहुं मुनीश बैठे सहध्याना ॥
दो० हरिहरि कोउ हरहर रटत कोउ ध्यावतजगमात।
भिरत मल्ल कहुं पशुलरत पुरछबि बरणिनजात ॥
कहुं बहु सुजन करत मखराई। गोदानादि देत मुद पाई ॥
कोउ सुमिरत निज इष्ट सनेमा। पाठ करत आगम सहप्रेमा ॥
कहुं इतिहास पुराण प्रचारा। सुख आयोपुरबिबिध प्रकार॥

कहुँ यदुवंशी सभा सँवारे। जो अवलोकि शक्रमनहारे॥
जहँ लक्ष्मी नारायण राजैं। ऋद्धि सिद्धितहँ शोभासाजैं॥
तीनि भुवन लखिनगर निकाई। हारि हृदय नृप रहतलजाई॥
महा मग्न मन मुनि विज्ञानी। करौं परीक्षा अस अनुमानी॥
केहि त्रियसदन प्रथम हौंजाऊं। दर्शन जहां कृष्णके पाऊं॥
दो० करि विचार रुक्मिणि भवन गये प्रथम ऋषिराय।
देखि मुनिहि वन्दे चरण हरि आदरयो स्वभाय॥
पद पखारि आसन शुचि दयऊ। षोड़श विधिपुनि पूजा कयऊ॥
मुनिवर जहां शांत पद आवै। सुख शोभा सब विधितहँछावै॥
तारण हित हमार परिवारा। दयउ दरश मुनिकृपाउदारा॥
सिंह शब्द सुनिगजगणभागैं। संत गिरा तिमिअघगृहत्यागैं॥
जिमिलखिद्विजपतिअहिविकलाईनिमिलखिसाधुविपतिसमुदाई॥
दै आशिष ऋषिकरयो पयाना। प्रभुमुनिहृदय मोहअनुमाना॥
विहँसि अनेक रूप विस्तारे। ऋक्षसुता गृह मुनिपगधारे॥
देखि प्रभुहि बदि आशिर्वादा। सतिभामा तट गे सविषादा॥
दो० तन उबटत देखो हरिहि घूमि चले मुनिनाथ।
तैल विमर्दित आशिषा देइ न वद श्रुति गाथ॥
जो अजान कोउ करै प्रणामा। तदपिन आशिषवदगुणग्रामा॥
कालिंदी आलय पुनि गयऊ। सेवत प्रभुहि विलोकतभयऊ॥
सूरसुता लखि मुनि गुण खानी। सत्वर हरिहि जगायो आनी॥
जागि तिनहिं वन्देउ यदुनायक। थिरचर जीवत्रिपुरसुखदायक॥
कर्मभानु मन उदयत भयऊ। मुनिवरदरशतिमिरअघगयऊ॥
चलै आशिषा दै गृह आना। गये मित्रविंदा शुभथाना॥
ब्रह्मभोज्य तहँ नैन निहारा। विस्मित बुद्धि ज्ञानमनहारा॥
व्यंजन सरस परोसत श्यामा। ऋषिहिदेखिआदरयोसत्रामा॥
दो० रुचिर समय आयेऋषय भोजन करिय सनेह।
तजियनैक उच्छिष्टह्यां पून होइ मम गेह॥
अवसर नहिं मखकर अनुरागी। वार व्यतीत भयौं सुनहारी॥

तव लगि विप्र जिमाइ पठाइय। ब्रह्मशेष पुनि हमहिंजिमाइय॥
सत्या सदन गये असभाषी। अमतसुमति कौतुक अभिलाषी॥
कृत किल्लोल निरखे अवभानन। निंदत शरद चंद्रमा आनन॥
कुसमय जानि चिन्हारिबिसारी। भद्रा धाम गये भ्रम भारी॥
भोजन कृत देखे खल गंजन। सत्यचिदानंदअलखनिरंजन॥
पुनि लक्ष्मणा सदन बनवारी। कृतस्नान देखे मुनिचारी॥
अति भ्रमवलितऋषयवशमाया। षोडश सहस भवनगे राया॥
दो० ध्यान ध्यान विधि हरि लखे प्रति अगार मुनिराय।
करत गृहस्थी कर्म प्रभु मन बुधि दुविधा भाय॥
नारद हृदय महा भ्रम छयऊ। कहयह कहाचरित बिधिठयऊ॥
जौन सदनहीं जाय विलोकौं। दम्पतिश्यामनिहारिसशोकौं॥
हरि लीला अपार विस्तारी। जो अविलोकि मोरमतिहारी॥
उपज्यो ज्ञान मोह बिनशाना। पारब्रह्म चीन्हौं भगवाना॥
अहह दैव मम बुधिकत नाशी। मनुजसमान जान अविनाशी॥
मम अपराध क्षमो जनपालक। दयाधीशप्रभु अघगणघालक॥
ज्ञानवानहौ आपुहि जानत। वश मूढ़ता मोह उर आनत॥
धन्य ईश माया भवपारा। जावश भ्रमतफिरयोबहुदारा॥
दो० पूछौं काहिको मोहिं कहै मर्म अकथ समुझाय।
एक कृष्ण एते सदन मिले ध्यान अनभाय॥
प्रभ्रमतजायविनयबड़िकीन्हेसि। पूरणब्रह्मजान पुनिचीन्हेसि॥
अहित मुनीश न चिंतित होहू। सुनि ममवाक्य परिहरौ सोहू॥
त्रिपुरमयी माया मम ज्ञानी। जेहिवशत्रिविधबुधिसवप्रानी॥
को द्वितीय समरथ संसारा। जीतिसकै जो तासुपसारा॥
अस भवभूत न विधिउपजावा। जाके हृदय न मोह जनावा॥
कामकला व्याप्यो नहिं काही। कोअसक्रोधदह्यो नहिंजाही॥
मद अबूझताकेहि न लगाई। लोभ न कासु बुद्धि बौराई॥
वृन्दारक मुनि पर्म सयाने। मायामय ऋषि तेपि भुलाने॥
दो० तजो शोच अज्ञानता माया जानि अपार।

तब नारदमन शुद्धभा जब प्रभुभये उदार ॥
पुनि अस्तुतिकरि कहकरजोरी। दयासिंधु बिनती यक मोरी ॥
जो प्रसन्न जनपर सुर स्वामी। अस वरदीजिय अंतरयामी ॥
अनपायन जो भक्ति दयाला। वसै हृदयमम सो तिहुंकाला ॥
बहुरिन अस उपजै उर मोहा। विषयवासनिक नाशै कोहा ॥
एवमस्तु कह यादव राई। सुनिनारद सुखजहो अघाई ॥
बन्दि हरिहिंगे ब्रह्म अगारा। गावतहरियश विविधप्रकारा ॥
हरि मायावश असमुनिज्ञानी। करत परीक्षा लही गलानी ॥
अकथ अनीह विश्व कर्तारा। रुक्मिणिरमण विदितसंसारा ॥
दो० चहै बिथाहन भव सुयश हरि कर्तव मतिहीन।
द्विजप जहांथाके सुकवि मशक अंतरुचिकीन ॥
तूमंगल आनंदमय त्यागि अखिल मदमूल।
आठयाम भजु कृष्णपद यहै ज्ञान को मूल ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विपान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांनारदमायादर्शनो
नामसप्ततितमोऽध्यायः ७०
दो० जोकारज आवश्यलखु सो प्रथमै करिलेह।
मोहमिलितह्वै शिथिल जनि निजकरतलतेदेह ॥
चौरासी लख योनिमहँ नरतन पृत महान।
ताहिपाय मन मूढ़तू ध्यावत निज विपयान ॥
सुमनसतेरह जातिजे ते चाहत नरकाय।
परमात्माध्यावहि सुरुचि सुमन सुखद तनपाय ॥
धृक जीवन विनुहरिभजन धृकतपसी भवलीन।
धृकसम्पति विनुदान धृक विद्यारहित कुलीन ॥
थिरचितभजु यदुवरचरण मिटैंअखिल भवशोग।
सत्य सत्य सुनु सत्यमन वदत वेद बुधलोग ॥
एकसमय प्रभु रुक्मिणिसाथा। रजनीकृत विलास कुरुनाथा ॥
हरिमुख प्रभासिंधु सुत देखी। चख चकोर सुखलहतविशेखी ॥

महामग्न दम्पति भुवराया। अकथअलोक मोदउरछाया॥
क्रीड़ाकरत गौरिगत भयऊ। प्राची अर्कोदय तम गयऊ॥
तमचुर शब्द कस्यो युत शोरा। अंबर अरुण बियोग चकोरा॥
कोकमुदित कोका कुम्हिलाने। विकसे पद्म मित्रगट जाने॥
निशिकर मलिनछुपे द्युतिकारी। जानि बिहान जगे नरनारी॥
भीष्मक सुता लगी गृहकाजा। उठिप्रभु शौचकर्मकिय राजा॥
बपुविशुद्ध करि जाय नहाये। आपन ध्यान आपु उरलाये॥
जप पूजाते भये सुचित्ता। जासुनामनृपनियमनिमित्ता॥
दशन समाज सहोदर बोली। सुनि आई अवनी सुरटोली॥
विविध दक्षिणा देइ कृपाला। किये बिदा भूसुर तत काला॥
दो० करिभोजन तांबूल ले स्वच्छ बस्त्र तन धारि।
सायुधराज समाजगे सदादास सुखकारि॥
भ्राजित भे प्रभुरत्न सिंहासन। सुलछविवरणिनजाइगिरासन॥
तदा काल यक पालक द्वारा। आइप्रणति करिवचनउचारा॥
ब्राह्मण एक द्वार पर आयो। जनु विरंचिवपु आपुबनायो॥
दरश लालसा तेहि उरभारी। विनुआयसुकिमिलाउहँकारी॥
बारन होय बेगिही लावौ। द्विजवरदरश हमहिं करवावौ॥
चररजाय लाहि विप्रहि लायो। तेहिविलोकिप्रभुशशिनवाये॥
मर्म जानिकर गहि गृह आना। रुचिरासन दै बचन बखाना॥
भाषाकिधौं ऋचा श्रुति बानी। केहिनिमित्तआयहुद्विजज्ञानी॥
दो० बदौ तूर्ण सानंद हित करौं स्वबल अनुसार।
दयाराशि सुनुचित्तदे मगध प्रदेश हमार॥
बीस सहस्र भूप बलवाना। बंदि किये मगधीश सुजाना॥
विपति बिभंजन तुमहिंबिचारी। पठवा हमहिं सुनो बनवारी॥
आरत बंधुनाम जग जाना। विपदा हरण त्रिवयभगवाना॥
तुवपद सेवत चारिउ भांती। जरासंधवश विहरत छाती॥
यह सर्वदा रीति प्रभुतोरी। मर्दहु असुर बदत गुणघोरी॥
खल विवर्द्धिलखि धरौ शरीरा। दुष्ट बिनाशि हरौ जन पीरा॥

अष्टापद कश्यप बध कीन्हो। जनप्रह्लाद शोकहरिलीन्हो॥
नक्र बक्र बश पस्यो गयंदा। धायतासु काट्यो भवफंदा॥
दो० अपर अपार प्रसंगइमि को बरणे जनपाल।
महा आपदा विवश हम करुणाकर कल्याल॥
समरथ अपर त्रिपुर नहिंकोई। मोचै बंदि विपति ते जोई॥
जीवनरक्ष बसिकहँ सुखपावें। खलबशसुजनप्राणविकलावें॥
विघ्नकोटि समुद्र अनुमानिय। महा निरंथल बंदि बखानिय॥
नाम तुम्हार दीन रखवारा। अवशिसुद्वंदीजियपहिवारा॥
करुणानिधि सुनि आरतबानी। जरासंध बध बुधि अनुमानी॥
रसा अमर चिंता परिहरहू। विधिकृत जानि धीर उरधरहू॥
मोर नाम जनपाल बखाना। इमिया तजोकलेश नशाना॥
महिसुरप्रभुहि अशीशन लागा। संतापित हवै सह अनुरागा॥
दो० तस्मिन समय महीश सुनु तुम ऋषि नारद सुख पाय।
गावत हरि यश वीणकर आये सरल स्वभाय॥
देखि मुनिहि प्रभुकस्योप्रणामा। करि आसीन पूजगुणधामा॥
मुनिबर तव गतित्रिपुर सदाहीं। कथा प्रसिद्ध अनृतवचनाहीं॥
कछु दिनभये धर्म कुशलाई। तात न हम पाई इचिनाई॥
कह्यो प्रसंग पांडुसुत केरे। जिनकी चिन्ता मुनिमनमेरे॥
को कृत करत आपने गेहा। अधिकप्रश्नहवैसहितसनेहा॥
जीव जीव घटपुर प्रस्थाना। रहत सदा तुव बेद बखाना॥
अन्तरयामी दशा तुम्हारी। बदत सुनोप्रभुतिमिरतमारी॥
यहि चाहमें गजपुर ते आयो। पांडुतनय गृह बहुसुख छायो॥
दो० कीन्ह चहत प्रारंभ शुभ राजसूय मखतात।
महाचिंतमित आपुनिन धुनिपुनि शोचतगात॥
प्रतिमुहूर्त्त सुमिरत तुहिंाई। धर्मसुनु उर मोद बढ़ाई॥
कहत न बिनुसहाय हरिकेरी। पूरण होइ लालसा मेरी॥
मैं लहि युद्धि आपु तट आयो। यह प्रसंग समुद्र प्रभुगायो॥
बेगि कटकसह हरिपुर जाइय। दुमरिआरन चित्त लोलाइय॥

मखसवाँरि कृत आन विचारो। नतकृत भंग होइ विधिचारो॥
नारद गिरा सुनत यदुराई। दूत पठइ ऊधवहि बोलाई॥
कहा मित्र तुम अछल सदाहीं। तुव परोछ भावत कछु नाहीं॥
सम्मत तोर मोहि भलभावत। सिक्तकार्य सुयश भवछावत॥
दो० मख आरंभत धर्मसुत कहा देवऋषि आय।
विपतिविवशउतभूमिपति पठवा हमहिंबोलाय॥
दुहुंदिशिकरबअवश्यककाजा। चलियप्रथमकहँसहितसमाजा॥
उत नरेश संकट महँ पावैं। मम भरोस नाना दुखपावैं॥
पांडुजात इतयज्ञ पसारा। मंग अवलोकत तात हमारा॥
जो तुम्हार सम्मत अबहोई। तुमहँ तात करिय कृत सोई॥
दोनों काज करिब निज हाथा। ताते तुमहिं सुनाई गाथा॥
असभणि मीनित भे असुरारी। मनशोचत ऊधव बुधिधारी॥
प्रभुनिजमन इमिकीन्हविचारा। दासन हेत मनुज-तनधारा॥
प्रभु सर्वदा सुजन हितकारी। महा दुष्टतेहि भजन बिसारी॥
दो० लीनहोत विषयान महँ लहत नरकमें वास।
तू मंगल भज कृष्णपद लहै सौरूय अनयास॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांयुधिष्ठिरसंदेशवर्णनो नामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१॥
दो० कलिमें चारों ओरही विपदा और विकार।
लायरहे सुख है कहां भज त्रिलोक कर्तार॥
भूत प्रेत वैताल वश नर नारी संसार।
पूजन तिनहीं को करत त्यागे ब्रह्म विचार॥
जाकी इच्छा ते भये अज ब्रह्मांड अनेक।
पुनि नाशिमिलिहैं जासुमहँयाउताहिसविवेक॥
दैहिक दैविक तापको भौतिक मानत मूढ़।
तत्व वस्तु सूझे फिरत को बालक को बूढ़॥
जे प्रवीण सज्जन समति ते ध्यावत यदुनाथ।

आनँद पावत विविधविधि रक्षक प्रभुजनसाथ ॥
मुनिवर वचन करालि भानू । पातकनिविड़तिमिरहणभानू ॥
भूपहि कहा सुनौ तजि छोहू । जोसुनिनशैअखिलदलमोहू ॥
विहंग राज प्रतिवद यदुनायक । जाहुसुथाननृपनसुखदायक ॥
मोर सँदेश कहौ यह ताता । कछुदिनगतकरिहौंखलघाता ॥
मुक्ति बन्दिते करौं तुम्हारी । सत्य प्रतिज्ञा चतुर हमारी ॥
अपर अनेक भाँति समुझाई । बिदा कस्यो महिसुरकुलराई ॥
ऊधव संग सभा चलि गयऊ । इमा प्रसंग बखानत भयऊ ॥
उग्रसेन सुधि उत्तरन दीन्हा । तव ऊधव इमि भाषन कीन्हा ॥
दो० दोनों काज अवश्यहैं तदपि सुनौ मतमोर ।
बधौ प्रथम मगधेश रण बढ़ै सुयश जगतोर ॥
पुनिमख गजपुर त्राता हूजिय । महामोदमय राज्य सभूजिय ॥
अमितनृपतिचाहिय हितजागा । अकुलनहोइनअबुधअभागा ॥
बिनक्षितीश गण कृत नहिंपूरे । कारिक रुचिर मनोरथ चूरे ॥
दुगुणादिशा सहस्र महिपाला । बधतजरानिधिमिलिहिंकृपाला ॥
तेगुण मानिकरहि मखकाजा । सादर बिनु बोले ब्रजराजा ॥
एतिक नृपतिन आन प्रकारा । प्राप्तिहोइ करि दीख बिचारा ॥
दिगबिजयीजगजितनरनायक । सहज होहिंमखशाला पायक ॥
तातेपांडु सदन कहँ चलहू । करि बिचारशत्रुहि दलमलहू ॥
दो० जरासंध बड़ धर्मधर दाता बिदित जहान ।
गोद्विज पूजक शत्रुजित वंदीकरत बखान ॥
जो याचत कोउ तासन जाई । देत अशोच ताहि सो राई ॥
वाक्य अनृत नबदत रसाधी । पुरवत बचन सदा मगधाधी ॥
कृत निबाह हितुतात्रय तीनौं । दशसहस्र गजबलतन चीनौं ॥
प्रबल महान तासुसरि भीमा । कृपासिंधु बूझिय निज जीमा ॥
नाग नगर चलि लै सुतवाता । कीजियसहजअरातिनिपाता ॥
मममन यह दृढ़ता विधिचारी । समर भीमरिपु बधिहि प्रचारी ॥
सभ्मतसुनि बिहँसेखल भानन । जलजप्रसिद्धदुष्टकुलकानन ॥

भूप पितासन पाय रजाई। भयोबिपुल यदुजातबोलाई॥
दो० कटक सँभारौ बेगि सब चलौ धर्म आगार।
चमू सहित आये निकर यदुबंशी तेहि बार॥
बसुरानी प्रभुसंग लगाई। सहसहाय गवने मुदपाई॥
दल चतुरंग चल्यो रिपुशाली। गरजतबिपुल शब्दउत्ताली॥
शोभासैन बनत नहिं गाये। बोझित शेषकमठकुम्हिलाये॥
जेहिथलनिवसतरजनीश्यामा। जात तहां बसि सुंदरग्रामा॥
यो जनकैक बास बिस्तारा। होत कुतूहलबिबिध प्रकारा॥
पथमद्वीप शंकत सुधिजानी। आगेमिलतत्यागिरजधानी॥
दै उपहार करत सिवकाई। तिनहिं प्रबोधन यादवराई॥
जिनके फलित भाग्य बड़राजा। तेदेखत हरिसहित समाजा॥
दो० यहि प्रकार पथ काट प्रभु पहुँचे गज पुरतीर।
काहु सुधि दीन्ही नृपहि कोउ नृपलै संगभीर॥
पुरतट आव दुंदुभी देता। सत्वर सुधिलीजियकुरुकेता॥
भूपति बोलि सहोदर चारी। समय मनोहर गिराउचारी॥
कोउक्षितिपालसदलचलिआवा। शोधुलेहुनतबड़पछितावा॥
तब सहदेवनकुल द्वौ धाये। दलबिलोकिसहसाफिरिआये॥
क्षमा पयोधि दास हितकारी। सहबाहन आये बनवारी॥
श्रवणित भा मोदित नृपकैसे। पाय कल्पतरु दारिद जैसे॥
भीमार्जुनहिं पठाव महीपा। युगल बंधुयुत कौरव दीपा॥
चहुं सोदर नृपमन प्रसन्न तर। सामग्री उपहार स्वकरकर॥
दो० बजत निशान अपार द्विज संग करत कृतगान।
गयेश्याम तट बंदि पग पूज्यौ बेगि निधान॥
कुसुम माल डारी गलमाहीं। चर्च्यौं चंदन श्रम हरताहीं॥
पूजत बाट अनेक प्रकारा। चले लिवाय प्रभुहिआगारा॥
अरि अजान भेटे हिय लाई। जनु जीवन फललहाअघाई॥
अंतर बाहिर पुनि सबकाहू। मिले यथोचित हरिनरनाहू॥
भेटि अखिलगतिकिय सन्माना। जोकोटिउमुखहोत न गाना॥

प्रति गृह छयो मोद सब भांती। बिस्तृतराय कही नहिंजाती॥
निवसे तहां असुर मद गंजन। दासबिपतिशशनागबिभंजन॥
अन्तःपुर निवस्यो रनिवासा। कटक गंग तट लहासुपासा॥
दो० सुजन होत धावत सदा राधा बल्लभ मीत।
मंगलतजि दुविधा निकर गाउसमुदहरिगीत॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विपान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णहस्तिनापुरगमन
वर्णनोनामद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२॥

दो० सकल सिद्धि ताको चतुर जाहि ईश अनुकूल।
योगऋक्ष तिथि बार अरु करणसुखद दिगशूल॥
सहज अशुभ ह्वैजात सब हरि प्रतिकूलित जानु।
वृथा जात उद्यम सकल सत्य सत्य यह मानु॥
वशअदृष्ट चहुं खानिजग भ्रमित जीवबहुचिरूप।
शुभकारी शुभठौं लहत अघी बसत दुखकूप॥
उभयाशायहिजीवकी शुभ अरु अशुभ बखान।
सतसंगति करि यत्न बुध शुभगहु यहै प्रमान॥
जेनकेन करि त्यागिभ्रम हरिपद पद्मनि ध्याउ।
नशैकलेश अनेक बिधि क्यों शुभ जन्म गवांउ॥
एक काल हरि सुभग समाजा। बैठे सहित बिप्र ऋषिराजा॥
जन पालक छवि बनत न गाये। शोभा जासु त्रिपुरछबिछाये॥
धर्म तनय प्रभु निकटहिं आई। दीन गिरा मय बिनयसुनाई॥
कर संपुटित नाय शिरबोले। बचन बिनीत भूप अन मोले॥
अज हर बन्दनीय सुखकारी। ध्यावत ऋषय देव नभ चारी॥
अन बद्य अज अद्वैत अनीहा। अलख अगोचर सूक्षम दीहा॥
श्रुति महिधर पद्मासिनि जोई। बदत न भेद लहत पैसोई॥
योगिराज मन कर्तल आनी। सेवत जलज अद्धि रुचिमानी॥
दो० दरश होत दुर्लभ तिन्हैं मानि भक्तिकर नात।
परसावत पद नित हमहिं करत प्रफुल्लित गात।

लाला अकथ अलौकिकठानो। पुनि स्वतंत्र कारज अनुमानो ॥
बूझत भेद न कोउ पुर तीनी। सबकी मतितुव माया भीनी ॥
भवभय भँवर परे सब प्रानी। जाननिसकततुमहिंधनुपानी॥
जग व्यवहार हमारे संगा। प्रतिच्छण करों सनेह अभंगा॥
नाम भक्त वत्सल यहि कारण। दीनबंधु बहु पतित उधारण ॥
जी सनेम पग सेवत तोरे। तजत संग तेहि नाथ न मोरे ॥
मद छल दंभ दूरि प्रभु रहहू। सत आदिनके संकट दहहू ॥
तवप्रसाद पूरी सब आसा। एक मनोरथ ममउर बासा ॥
दो० बिनु आयसु तव दीन हितु करि न सकतहों सोय ।
अवशि बदिय महिपाल मणि कहौं जो संभवहोय ॥
राजसूय मख करौं सनेमा। तुमहिं समर्पि लहौं भव छेमा ॥
सुनत प्रसन्नित भये बिहारी। कहा तात भल बुद्धि बिचारी ॥
नर सुपर्व मुनि तोषित होई। भावैं सबहिं करिय कृतसोई ॥
करत कठिनमख तुमहिं न भाई। बन्धु चारि तुव अतिबलदाई ॥
बिधिन द्वितीयमनुजजगजायो। जेहिबिलोकिरणभीमपलायो॥
शारंगधरन अपर भव कोई। अर्जुन समर अरुझै जोई ॥
युगलबंधु तव प्रबल महाना। करौ यज्ञ मोरे मन माना ॥
प्रथम रजाय सोदरन दीजै। दशदिशिविजयकरैंयशलीजै॥
दो० स्ववश बसावों भूमिपति बहुरि करौं मखठान ।
बोलि बंधु आज्ञादई लहि आयसु भगवान ॥
सदलयाम्य सहदेव सिधाये। नकुल प्रतीची मोद बढ़ाये ॥
सुताधनद कपिकेतु महीशा। प्राचीभीम अभय छितिईशा ॥
हरि प्रताप भंजत मद भूपा। बिजय करत बहुदेश अनूपा ॥
अल्पकाल महँद्वीप पहारा। नन्दखंड जीते सबिचारा ॥
दशौंदिशाके छोणी पाला। निजबशकीन्हसहजचहुंवाला ॥
सबसँग नाग नगर चलिआये। देखिभये बहुभांति बधाये ॥
हरि प्रति जोरि हाथ बदराजा। तुव प्रताप जीता भवसाजा ॥
अब आज्ञा जसहोइ तुम्हारी। करिय नाथ यह बिनय हमारी ॥

दो० कह ऊधव सुनु धर्मसुत तववश भये नरेश ।
मगधराज रह स्ववशहीं यहमम जीव अँदेश ॥

यावदशन जरासिंधि होई । तावतसुफल यज्ञनहिं कोई ॥
नृपति जयद्रथ सुत बरियारा । नाम जराहधि समर जुझारा ॥
दाता धर्मातम गुणराशी । अजितसुयशजगरहामकाशी ॥
संगर कोउन अरूकत तासों । निजवशकरतभिरतरण जासों ॥
जीतैयोग कमल भव कीन्हा । सोहरिजान आनको चीन्हा ॥
ऊधव वचन सुनत मन मोहा । धर्मराज उभय अति कोहा ॥
लखिउदास बोले असुरारी । चिंतादेहु महीप बिसारी ॥
भीमार्जुनहिं संग मम दीजिय । मगधभूपनिजर्तत्रिकरीजिय ॥

दो० कै प्रपंच बल बेदि तेहि लाउव नृप तव पास ।
अथवा रणमहँ निधन करि होवताव अनयास ॥

भूप पुंज बन्दीगृह तासू । मोचत करिहि यज्ञकृत आसू ॥
आयसु विजयपुरुष सहभीमहि । दयोमहीश मुदित ह्वैजीमहि ॥
मगध प्रदेश बाट मभुलीनी । निकटराजगृहसमसतिकीनी ॥
बिप्ररूप धारी अस ताता । करिकालकरिपबदलरविपाता ॥
महिसुर बपुगे भूपद्वारा । पुस्तक कांसत्रिपुंड़ लिलारा ॥
शुक्लबस्त्र मंडित तन सोहर । अंग अंग प्रतिरुचिर मनोहर ॥
जनु बपु तीनि धरेगुण तीनी । अथवा तिहुँपुर देह नवीनी ॥
किधौं त्रिकाल अकथ वरकाया । उपमा अवद शरीर निकाया ॥

दो० गये समय मध्याह्न महँ द्वारपाल गहि पाय ।
कहाजाय मगधेश प्रति वन्दिचरण रुखपाय ॥

द्विजबर समय त्रिसुर समवेही । राजद्वार आयो चायदेही ॥
तेजवलित पंडित गुणखानी । अतिथि कांतिवर विज्ञानी ॥
द्विज सेवक प्रसिद्ध नरनायक । आयोद्वार सुनत वच पायक ॥
बंदिचरण कज विनय बखानी । अंतर सदन गयउ लैज्ञानी ॥
करिआसीनसुभगशुचिआसन । करसंपुटित मांगअनुशासन ॥
लखितन थूल शोच उरआवा । सभय महीपति वचन सुनावा ॥

यदपि विप्र वपु मंडित अहहू। तदपि प्रपंचआपु किनकहहू॥
याच्यमान कृत अंगीकारा। कीन्हों कौन हेत यहि बारा॥
दो० इला देव मंडि वपुष महा बली तुम कोउ।
कपट भाव जस कालहों अवशि बखानौ सोउ॥
आच्छादित द्विज बास शरीरा। भूपति क्रांति दुरात न बीरा॥
पौरुषीय तन समर प्रबीना। सोदर सबल नहौं द्विजदीना॥
अजहरि हर सम भांतितुम्हारी। बदौं मनोरथ निजश्रम भारी॥
जो याचिहौ देब सो आजू। बेगि बखानि कहौ निजकाजू॥
जग प्रसिद्ध दाता द्विजराई। वाक्यमोघ नहिं हमहिंसोहाई॥
राज कलेवर त्रियसुत नाती। दान देत मम रुचिन अघाती॥
पुरा समय सूरज कुल माहीं। हरि बिधु भोदाता भ्रम नाहीं॥
कीरति जासु बिदितदिशिचारी। बदौं तासु नृप चरित बिचारी॥
दो० एक समय नृपता त्रिषय पस्यो दुकाल कलेश।
प्रजहि जिवायो देशपति बिक्रिय करिनिज देश॥
रंक समान भयो धरणीसा। सकल दुखितभे पुरधन खीसा॥
तौने काल परीच्छा कारण। बिश्वामित्र च्यवभवतारण॥
जाय भूप प्रति कह धन देहू। कन्या दान तुल्य फल लेहू॥
सुनतहिमुदित महिपमनभयऊ। सर्बसु निज आलयकरदयऊ॥
तोषितभे न ऋषय बश माया। बेचि भृत्यगण धन दियराया॥
तदपि न संतोषे मुनि ज्ञानी। भूपहि कहा सुनो बर बानी॥
स्वल्प द्रव्य मम काज न होई। यांचौं काहि न दीसति कोई॥
तुम प्रसिद्ध धरमातम दाता। सुनिसुलोकप्रफुलितममगाता॥
दो० श्वपचएक धनवान है जो नृप आयसु देह।
ताहि यांचि द्रव्यहि लहौं मन बिचार दृढ़एह॥
यहिकृत आवत जीव गलानी। यांचौंखलहिं यांचिनृपदानी॥
मुनि मुखवचन सुनतहरिचन्दा। चांडाल थलगे सानन्दा॥
देखि नरप आयो चांडाला। करिप्रणाम तेहिपूछ हेवाला॥
गहने राख़ वर्ष लगि मोहीं। देधनअवशिपूछि मुनिसोहीं॥

नरपति मम सेवाखल कर्मा। केहि प्रकार पुरवौं बरधर्मा॥
आरत मय वाणी नित बोलव। मम आज्ञाते बाहयन डोलव॥
राजस तामस तव उर वासी। केहि बिधिते देहौं नृप नासी॥
नृप मणि तेजादित्य समाना। भृत्यकर्ममम अशुचिमहाना॥

दो॰ ममगृह की रक्षा करौ मृतकन ते करलेहु।
प्रीतिन मानौ काहुकी है हमरे कृत येहु॥

जोपै यह कारज नृप होई। तौ धन देउँ कहैं मुनि जोई॥
बंधक राखौं वर्ष प्रयंता। सुनि बोल्योक्षोणिपबुधिवंता॥
जस सेवा तुम्हार गृह केरी। तसहम करिब अमिपरख हेरी॥
द्रव्य श्वपच दीन्हीं तत काला। जेहि प्रमाणमांग्योश्रुतिपाला॥
निज निकेतगे ऋषि धन ग्राही। भूपसत्य निज हृदय सराही॥
श्वपचायसुव्रत कृत नृप कर्मा। नीति विदितजस सेवकधर्मा॥
विधि बश रोहिताश्वनृपजाता। तदा काल बशभयोअघाता॥
मृतक पुत्रलै भूप कलत्रा। गई मशान भूप रह यत्रा॥

दो॰ चिता बिरचि कीन्हा चह्यो संस्कार जल जात।
तबहि रसाधिप आयकर मांगत भो रुटगात॥

कठिन बिलाप कस्यो सुनिरानी। देखु क्षमाधिहृदयअनुमानी॥
रोहिताश्व यह सुत प्रभुतोरा। मरत तिमिर छायो चहुंओरा॥
मोरे द्रव्य न जो कर देहूं। पुत्र क्रिया करि गृहमग लेहूं॥
जीरण पट मम शिर धनएही। कर महँ नाथ लीजिये तेही॥
सर्बसु दया राशि दिय दाना। बस्यो सूनु सोहर भगवाना॥
परवश नारि स्वामि सिवकाई। विनुकर कर्म करत कठिनाई॥
प्रीति करत मम सत्य नशाई। गतशत जीवनधृक मनुमाई॥
रानी सारत सुनि प्रण राजा। कुमभयमहादुखितगतलाजा॥

दो॰ वस्त्र उतारन हेत नृप रानी स्वकर पसार।
कम्पत भे तिहुंधामतव निरखि सत्य व्यवहार॥

तस्मिनअवसर सुभग विमाना। हरिइच्छा आयोतेहि थाना॥
धन्य गिरा सुरनाक पुकारे। प्रगट्यो प्रभुस्वतंत्र तनधारे॥

जीव दान हरिसुत कहँ दयऊ। ममपुर गमनों आयसु भयऊ॥
जोरि हाथ नृप विनय बखानी। आरतहरण सुनिय ममबानी॥
प्रगटे प्रभुकृतज्ञ धनकाया। तवपदपरसि भयउँ गतमाया॥
बिनु चांडाल न जाउं कृपाला। यहबलत्याग़ीदेवनपाला॥
नृपति अभिप्रिय हृदय विचारी। कहसह स्वपचहोहुनभचारी॥
पुरजन हित तजे दुख होई। ममबिनुदुखित होइ सबकोई॥
दो० विहँसि कहा भगवान तब जाहु सपुर सम धाम।
अवध सहित हरिचंदतव मुक्त भये गुणग्राम॥
सुरपदवी हरि बिभुउत पाई। इतजग उज्ज्वल कीरति छाई॥
दाता होइ अशोच महाना। जाइनदेइअतिथि बिनुमाना॥
अरुतिदेव कठिनतेपठयऊ। अजलनागअतिदिनचलिगयऊ॥
महाक्षुधित ह्वै जलले आवा। पान करनचाहत मुद छावा॥
तबहींतृषित अतिथियकआयो। देजल आरत बचन सुनायो॥
दया बलितहेदिन्हेसि नीरा। प्रफुलितमनकमवचनसधीरा॥
उदक दान बराहरि पुरपायो। जासुचरितभवकविजनगायो॥
बलिप्रसंगजग विदित महीशा। नावतनितशिरहरिदशीशा॥
दो० दान प्रताप प्रसिद्ध भव अपर चरित सुनुभूप।
जो सुनि मुनि दृढ़ता गहै उपजै ज्ञान अनूप॥
उद्दालक षट मास बिताई। भोजन अन करत हराई॥
एक समय कृत अशन भुरायो। अमुकअतिथिपाकालय आयो॥
क्षुधितमलिनमुखभोजनयांचा। विकलविलोकिदयामनरांचा॥
निजभषताहि मुनीश्वर दीना। महासुकृतनिजकरलेकीना॥
ऋषि बशक्षुधापरिहरयो काया। अशनदानफल हरिपुरपाया॥
बृत्रासुरकर अपर प्रसंगा। सुनु नरनाह समोदित अंगा॥
महाबली अमरारि कुजाती। जेहिभ्रासबिबुधबिकलबहुभांती॥
भज उपदेश अवधपुर आये। बासव संयुत आरत छाये॥
दो० कहादधीचिहि सुनो नृप हमहि महा दुख आहि।
वृत्रासुर जीते अखिल जीवन अवन लखाहि॥

जोनिजअस्थि हमहिं नृपदीजै । अस्थि अस्त्र तौरिपु वध कीजै ॥
नित स्वधर्मभिरहिं माहिपाला । रहतसदाक्लेशित तिहुंकाला ॥
तासु अनीक वरण विभिलेखे । अजरअमर बलबुद्धि बिशेखे ॥
बिनु दधीचि के अस्थिनमारिहैं । विविध प्रकार देव धनहरिहैं ॥
पर उपकार सरिस पुरतीनों । दूसरधर्म न भूपति चीनों ॥
यह शरीर मृतिकामय होई । तजे जीव ग्रहणै नहिं कोई ॥
बिहँसि महीप धेनु मँगवाई । तेहि जिह्वा निजकाय चटाई ॥
जंघ अस्थि दीन्हो अमरेशहि । परितोषेउ बहुभांति सुरेशहि ॥

दो० बज्र अस्थि रचि अमरपति हन्यो असुर रणजाय ।
नृपति कलेवर त्यागि लह हरिपुर तेहि फलराय ॥

आन अनेक दानि जग भयऊ । तिनको शुक्रसुयशभवक्षयऊ ॥
जो दृढ़तामय दे नृपदाना । तौनिज स्वारथ करैं बखाना ॥
कृत युगादि महँ मेघ स्माधी । दानी अति सुकृती अनुपाधी ॥
जस प्रताप तससुव नृपछायो । देशांतर बन्दीजन गायो ॥
याचक अभिमत दानि महीपा । जगजित सुनौ धराधिप दीपा ॥
मम अभिलाष पूजिये आजू । दीजियदान भूप निर्व्योजू ॥
याचक यात्वत शोच बिहाई । दातादेत अचिंत सदाई ॥
त्रिया तनय समेत धन गेहा । श्रुतिवत सत्य दानि व्रतएहा ॥

दो० जरासंध कह सुनिय द्विज याचक सदा अधीर ।
तदपिन प्रणदाता तजत दुख सुख सहत शरीर ॥

हरि वामन वपुकपट समेता । याच्योबलिहि जायमखखेता ॥
धरात्रिपाद महीपति दीजिय । पूरणलोक लोक यहलीजिय ॥
शुक्रजानि छल ताहिचितायो । प्रणवशनृपतिचित्तनहिंलायो ॥
रसा सकाय बामनहिं दीन्ही । उज्वल कीरति भूनृपलीन्ही ॥
याचक विष्णु सुकृत कोपावा । सर्वसुलहि हठ हृदय बढ़ावा ॥
वलि वशभये भेटि प्रभुताई । प्रात आपु दरवाजत जाई ॥
यहि कारण निज मर्म बखानों । नाम ग्राम उरशंकन आनौ ॥
तव याचौं सो पावो ताता । अनृतवचनन ममशुचिगाता ॥

दो० वासुदेव ममनामहै यदुवंशी जगजान।
पहिचानत तुम भांतिभलि मथुरा समर प्रमान ॥
भीम भीम रिपुगण रणतापी। पितु भगिनी सुतकुरुजप्रतापी॥
सुभुजसुभाननशिशुरिपुपाका। अर्जुननाम समर भवशाका॥
संगरहित आये तुव पासा। रण परितोषि पुजावहु आसा॥
बिनुसहायपुनिकेहिलगियांचा। कारणतात बदियगुणिसांचा॥
मलकृत दुष्ट करत अपराधा। निजबश अवशिलगावतबाधा॥
अनुचित बूझि स्वबेष दुराई। याच्योभूप मुदित रवताई॥
बिहंसिमगधपतिश्रवणितबानी।कालविवशअहमितअभिमानी॥
मम सन्मुख तू समर पलाना। सोहन संगर तजिय बखाना॥
दो० इषुधीपति त्रियबपु धस्यो पूरुवदेश बिदर्भ।
करत भटाई भव्यता करैबन्दि मतिखर्भ॥
जोपै अनिल सुतकरै गदाई। तोहीं लरौं अवशि मनभाई॥
मोर सरस याके बलकाया। संग्रह संगर करब अमाया॥
भोजहु भोज्य प्रथम तिहुंताता। पाछेभिरौं मुदित सुनिबाता॥
जेंयों सबन बहुरि नरपाला। लोहमयी युगगदा बिशाला॥
देइ समीरिहि आपुन लीनी। सत्य प्रतिज्ञा रिपु बधकीनी॥
सभामंडली तल प्रभुवैसे। भीम मगधपति भुधर जैसे॥
उत्तमांग कटि टोपा काछे। सुरसुरारिधौं प्रफुलित आछे॥
द्धौरण बिदुष गदारिपु घाती। बन्दि हरिहि तर्जे रिपुपाती॥
दो० मत्तनाग समबीर भिंवि भीमहि कह मगधेश।
मर्दु गदा मम अंगतू आयो ब्राह्मण भेश॥
यहिकारण प्रथमहिं नहिं मारौं। अनुचितकरिनिजधर्मप्रहारौं॥
धर्मयुद्ध मम तुव महिपाला। यहाबिबेककसकृत यहिकाला॥
साते आपु अस्त्र निज घातैं। कपट क्षुद्रता त्यागिय बातैं॥
उभयमांझ कोउ गदा न मारैं। युगल बलीनिज धर्म बिचारैं॥
यकसंग अस्त्र बिमर्दत भयऊ। निजनिजघातताकतकिलयऊ॥
दच्छिण बाम हनत बलनाना। रोधित गदा गदा बिज्ञाना॥

तर्जि सस्टभंजैं अनछोभा। त्यागे दोउ जीव कर लोभा॥
हाहाभूत शब्द कृत दोऊ। सुनत शब्द चकृत सबकोऊ॥
दो० बासरभरि कीन्हो समर बिजयी भयउ न कोउ।
रजनी सुख गृह आय नृप एकसँग जेंये दोउ॥
अरुणोदय पुनि समर सिधारे। आये दोउजन मुदितअखारे॥
करत युद्ध पुनिदिवस सिराना। संध्या भवन गये गतभाना॥
यहि प्रकार नित उठि रण भिरहीं। नानाभांति दांउ छलकरहीं॥
दिवस माल कृत रणगतभयऊ। कोउनपराजितभोश्रमछयऊ॥
प्रभु अंतरयामी अनुमाना। इमिनमरिहि मगधेशसुजाना॥
जन्म्यो द्वितन विदित संसारा। जरा राचसी तब तेहि वारा॥
जोरयो यहिविधि करि चतुराई। मूंदिनयनमुखदिहिसिमिलाई॥
सुनि सुधि ससुद जयद्रथ राजा। बोले बहु ज्योतिषी समाजा॥
दो० नाम भणो खग भाव गुणि जरासन्ध यहिनाम।
महा प्रतापी अजर वय अजित सदा संग्राम॥
संधिविलगबिनु निधनन होई। असबदि गये महीश्वर सोई॥
मन बिचारि कारण बधतासू। निजबलपौनजतनहिं प्रवासू॥
कोप्यौ भीम पाय बलभारी। मल्लयुद्ध कियअरिहि प्रचारी॥
भिरयो समर्षित मगध भुवाला। ततक्षणभयउसमरबिकराला॥
सैनचीरि तृण भीम चेतायो। कोप्यो सरुट भेट जब पायो॥
पटक्यो महितल पगपग दीना। करपदगहिद्विकायरिपुकीना॥
अमर नाक कौतुक हित छाये। भीम शीश बहुकुसुम बहाये॥
बहु गंधर्व बजाय निशाना। अबलनसहित करैंकलगाना॥
दो० जयजय ध्वनि भइ व्योमभव पति बधसुनि नृपनारि।
रोदति कृत करुणा अधिक आवति भई दुखारि॥
वंदि-श्याम पदकंह धरि धीरा। जय जन बंधु हरण पर पीरा॥
धन्य धन्य खल हरण कृपाला। ममपतिप्राणलयउयाहिकाला॥
अमित जन्म मुनि यत्नसुकरहीं। महा कष्टलहि भवदधितरहीं॥
मुक्त कंत ममभा अनयासा। सहजममस्तविगतभवआसा॥

अनुचित कस्यो नाथ श्रुतिदूरी। मास्यो भूप धर्म मख मूरी॥
दान गवान्न करै तुव लागी। निशिदिनचरणनलिनअनुरागी॥
सछल ताहि मर्यो रणमाहीं। सुयश सुदेश लहाप्रभुनाहीं॥
करुणामय करुणामय बानी। सुनत दयाल भये सुखदानी॥
दो० नृपति क्रिया निजकर करयो सुत सहदेव बोलाय।
राज्य तिलकतेहि भाल प्रभु श्रीकर करयोस्वभाय॥
विविध नीति समुझाय शुचि मंगल यादवराय।
गोद्विजादि रच्छा प्रजा तनमन करयो सदाय॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांजरासिंधुवधवर्णनोनाम
त्रयसप्ततितमोऽध्यायः ७३॥

दो० विषद बाद वसुयःमरत करत विविध अनुवाद।
जीव भुलायो आपुहीं मायामय सविषाद॥
संचित पुण्य प्रतापबश परारब्ध अधिकार।
विपुल भोग पायउ जगत अंतनिरै निरधार॥
सेवन बिनु यदुनाथ पद गाये बिनुयशतासु।
बिपति बीज बोवतबपुष चेत्रभूठ फल आसु॥
मात तात सुत बंधुको प्रमदा हितु यहिलोक।
दशा स्वप्न समजानि मन ध्याउ चंद्रजनकोक॥
अपस्वारता त्यागिबुध हरियश निशिदिनगाउ।
बिनुश्रम सुख संपाति लहे हरिपुर अंतसुठाउ॥
मुनिवर बचन चंद्रिका तूला। बोलत भूपकोक हिय फूला॥
करि अभिषेक नीति समुझाई। कहा नृपति सहदेव बोलाई॥
जननि जनकको सुतहितुभाई। स्वप्न समान विविध प्रभुताई॥
परिहरि शोक तात तुम जावो। बन्दी सर्वभूप तिनलावौ॥
दंड निरर्थ पिता तव दयऊ। तेहि अपराध कालबशभयऊ॥
कहि मलभूप बन्दि थलआवा। अगजगगुहाशिलात्रहिरावा॥
मोचि अखिलनरपतिमुदमानी। भेट्यो सर्वहिपुलकिमृदुबानी॥

प्रभु सन्मुख लैरसप निकाया। नृपसहदेव बेगिही आया॥
दो० कारागारित छितिपसब नखशमृद्धि शिरकेश।
सकृश गातमनमलिन अति दंडित अब्दकुक्लेश॥
पंक्ति पंक्ति जोरे कर ठाढ़े। मोद मगन पुलकायत गाढ़े॥
धरि धीरज कहजय जन पाला। दास बनज पूषणतिहुँकाला॥
कुमुद असुर दलमोद बिनाशी। कोकदीनजनसौख्यप्रकाशी॥
ताप पापगण विविध कलेशा। खगद्युतिभंजकसुयशसुदेशा॥
बिधुरिपु शोभा हरण स्वभाये। बुधिविवेक जनसूत जगाये॥
मुनि जनजीवजंतु सुखदायक। मोह उलूक चक्षुद्युतिघायक॥
जय जय कृपा पयोधि कृपाला। जन रंजन तिहुँकालदयाला॥
जीवन आश त्यागि शरणाई। तव पद कमल गही यदुराई॥
दो० मृत्यु समय आवा निकट प्रभु तुवलयो बचाय।
मुनि दुर्लभ दर्शन दयो अघगण गयोनशाय॥
सबहि प्रबोधि बहुरि सुरदेवा। सैन बुझायो नृपसहदेवा॥
बंधन काटि चौर करवावा। सबहिन्हवायसुभक्ष जिमावा॥
आच्छादित करिभूषण बासा। अस्त्र शस्त्र युतनृप अनयासा॥
प्रभुतट अखिल भूपखे आवा। नमत बिलोकि मोद उरछावा॥
सायुध चतुर्बाहु हरि भयऊ। सुरदुर्लभ दर्शन नृप दयऊ॥
दर्शत विविध मोह अनुरागा। कुमति कूरता खल दलभागा॥
ज्ञान विवर्द्धिकि अनुभव जागा। प्रभुपदनेह शोच सबत्यागा॥
भवतारण असुरारि गोसाईं। गिंदुक लवन नीरकी नाईं॥
दो० विपति बिभंजन अघहरण बदत सुयश परवीन।
जरासंधते हमहिं हरि मोचि परम सुखदीन॥
दारुण बंदि बिमोचन कयऊ। आरत बंधुलोक यशछयऊ॥
अन्धगृह कूप अंधते मोचिय। बिपुल प्रकार दासमनरोचिय॥
मार मान खल मोहनशाइय। लोभादिक हरिलोकनसाइय॥
अछलअचिन्तनलिनपदध्यावै। तृष्णा दुखदन जीवहिलावै॥
जग अर्णव बोहित पद प्रेमा। चढ़ि उतरहिं हमनाथसछेमा॥

सुनि सज्ञान विरागित बाणी। भे प्रसन्न परस्यो शिरपाणी॥
जिनके हृदय परम अनुरागा। विषयरहित ममपदमनलागा॥
भव बंधन जीवत ही छूटै। मोह मार मूलक इव टूटै॥
दो० मन इंद्रिय पति बदत बुध बंधन मोचन दानि।
शुभअरुअशुभ दुवासना नृप श्रुतिप्रकटबखानि॥
सथिर जीवमन करतल साधे। मनवच क्रम ममपद आराधे॥
विपिनिभवनशुचिमनहिंसमाना।तजौक्षोभयहसमुभिसुजाना॥
निजपुर राज्य करो सह नीती। अविचलममपद राख्योप्रीती॥
हितू समान प्रजा गण पालो। अन्यायी खल रिपुसमघालो॥
गुरु ब्राह्मण गोजन सिवकाई। सकल प्रकार करो चितलाई॥
अनृत वाक्य तजि कामकलाई। क्रोध लोभ अभिमान दुराई॥
सर्बभाव शुचि ममपदध्यावो। यहिकृत तात पर्म्म पदपावो॥
मानी महिप बहुत जग भयऊ। अयशबहायसुयशकोलयऊ॥
दो० अहंकारमय बहु नशे यह यह बलमदलीन।
क्षितिजित मर्त्योंचणक महँ भाषतविबुष प्रवीन॥
बली वेन मद वश मृतुपाई। रावण कथा प्रगट नृपताई॥
भौमासुर अहमित खल आना। कंसादिक त्यागेउनिजप्राना॥
राज श्रीमद नरक बसावत। सुकृत सुदेश महीपनशावत॥
दरश अलौकिक पायो भाई। अब निज धामजाहुसुखपाई॥
बहुत दिवस बन्दी गृह रहेऊ। सुधि परिवार न रंचकलहेऊ॥
नृपता भंग प्रबंधहि करहू। विविध कलेश प्रजाजनहरहू॥
नाग नगर सत्वर पुनि आई। धर्मराज मख देहु कराई॥
मगध राज बाहन धन दयऊ। रत्तक पाय बिदा सब भयऊ॥
दो० स्वथल महीपति सबगये प्रभु अनुशासन पाय।
भेंटि कुटुम्ब समोद पुनि नृपता बांधव नाय॥
हरि मग धेश संग निजलाई। भीमार्जुन युत चले तुराई॥
सानँद मंगल हरि पुर आये। शोभपाय पुरबासी धाये॥
युगल बंधुकर प्रभु अगमानी। लै नृप सभागये मुदमानी॥

उठि अजात अरि भेटत भयऊ । शुचिआसनपुनिहर्षितभयऊ ॥
जरासंध वध श्याम बखाना । श्रवणितश्रवनिपबहुसुखमाना ॥
अखिलनृपतिमोचनसुनिफूला । पावरंक जनु मंगल मूला ॥
इमि बतरात सुद्विजवर लावा । अमितमहीपकटकचलिश्रावा ॥
सब नृपलै उपहार अपारा । मिले धर्मराजहिं सविचारा ॥

दो० हरि आयसु उतरे सकल नाग नगर चहुँ ओर ।
मखशालाके काज हित मन बिनोद नहिंथोर ॥
मंगल हरिदुख हरतनित दासनके दिशिचारि ।
त्यागि भूलभजु तासुपद शुचिमनज्ञान विचारि ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णनृपगणसंयुक्तहस्तिना पुरगमनोनामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

दो० विधि लिपि पलटतहै नहीं कोटि उपाय सुजान ।
करिदृढ़ताभजुयदुवरहि सुखप्रदजिय अनुमान ॥
चिंता भष भुजंगिनी डसत हरत मुद प्रान ।
परित्यागे यहि अखिलविधि नाशै शोचमहान ॥
मूरुख बूझतहैं नहीं गुरु श्रुतिवत उपदेश ।
फिरिफिरिचलतअलीकमगकरितिमिटतसुदेश ॥
शिक्षाशुचिमन सुनतनहिं अभिमानी अघरूप ।
विषय बासनिक ह्वै रह्यो गुणतन ज्ञान अनूप ॥
नरक भोगि दुख पाइकै नीच योनि अवतार ।
सुमंगल तजिश्यामपद करु जनिभ्रानविचार ॥

गुणौ सुनौ कुरुपति चित लाई । वधशिशुपाल कहौं समुझाई ॥
जुरी नागपुर भूप अथाई । यह सुधिपाय अपर भुवराई ॥
शशि भूषण बंशी बलखानी । धर्मालय आये रुचिमानी ॥
सबकर शिष्टाचार समाना । कस्यौ धर्मसुत सह भगवाना ॥
यथायोग मखकर अधिकारा । सौंप्यौ सबहि नृपतितेहिबारा ॥
विहँसि महीशहि कह यदुराई । सुनौ सुचितमनतजिद्विचिताई ॥

हम सहभीम पंथ बिबिभ्राता। कारज आनकरैं शुचिगाता॥
आपु रसामर ऋषय समेता। मखारम्भ कीजिये सचेता॥
दो० आयसुपाय द्विजातिगण मुनितपसानि बोलाय।
यज्ञबस्तु पूछ्यो नृपति कहामुनिन श्रुतिभाय॥
मणिमुद्रा फल फूल सुबासा। तीरथ नीरादिक अनयासा॥
मंगलबस्तु जो नृप मखगाई। मुनि आयसुवत भूप मँगाई॥
करणभाव बेदी थल रखी। निजनिजकार्य्यमुनीशन लेखी॥
भे आसीन प्रमोदित सोई। नृप सभाम तब ग्रंथिक होई॥
द्रोण कृपा बुधिनेन सोहाये। दुर्योधन भ्रातनसह आये॥
अपर महीप प्रशंसित जोई। मखशाला राजे नृपसोई॥
भट अजीत रण कोटिन ठाढे। कृत रक्षाहित आनँद बाढे॥
शशिद्विजपूजनद्विजनकरावा। शालामध्य सुकलश धरावा॥
दो० थापित करिखग करण मति ऋचा उचारेउ बिप्र।
बरण हेत उद्यतभये नृपबर भूप सुक्षिप्र॥
भरद्वाज गौतम मुनि व्यासा। बिश्वामित्र बशिष्ठ सुभासा॥
बामदेव कश्यप मुदपाये। ऋषि जमदग्निपराशर आये॥
अपर मुनीश पारको जानै। सहस अठासी संज्ञा गानै॥
सबके पदपूजे महिपाला। कस्यो बरण दैदान बिशाला॥
निगममंत्र मुनिवर उचरहीं। देवस्थापन श्रुतिवत करहीं॥
मखसंकल्प इलापति कीना। हवनारंभ भयउ छलछीना॥
जयति मंत्रपढ़ि ऋषिवरज्ञानी। आहुतिदेहिं शत्रु मदभानी॥
बिद्यमान बृंदारक लेहीं। सामग्री बहु छोणिप देहीं॥
दो० बेदपाठ महिसुर करहिं होमहिं धर्म भुवाल।
बिगतबिघ्न पूरणभयउ हवन यज्ञतेहिकाल॥
पूरण आहुति मोदित दीन्ही। चिंताअखिल निवारणकीन्ही॥
मुनि सुपर्ब नर आनँद पाई। धन्य धर्मसुत गिरा सुनाई॥
किन्नरयक्ष सतिय गंधर्बा। गावहिं यश समोदमयसर्बा॥
बर्षावहिं प्रसन बहुरंगा। परिपूरण को बदै प्रसंगा॥

पुनि सहदेव बोलि महिपाला। मृदुबाणी कह बचनरसाला ॥
प्रथमतिलक केहिनृपशिरदेहीं। सुयश बिशदहमभूतललेहीं ॥
देव देवको ऋषि मुनि माहीं। सत्य बदौ हम जानत नाहीं ॥
जेहिपद अरिहिम शीशनवाई। मुक्ति पदारथ लहैं बड़ाई ॥
दो० देव देव जानत जगत बिद्यमान यदुराज।
पूजि प्रथम शुभयश लहौ स्वयंसिद्धि सबकाज ॥
अज हरि हर ध्यावत असुरारी। तिनहिं बंदि प्रभुहोहु सुखारी ॥
अज अनादि मायापति जोई। वासुदेव वपु प्रगट्यो सोई ॥
सेवत सुलभ पदारथ चारी। बारबार श्रुतिनीति बिचारी ॥
तरबर मूल मेघरस जैसे। डारत बढ़त सुशाखा तैसे ॥
हरि पूजत तोषत सब प्रानी। संतोषत दशभांति भवानी ॥
सर्गस्थिति लय कृष्णाधीना। लीला अगम अनंत प्रबीना ॥
अलख अगोचर हरिअबिनासी। चरण पलोटत कमलादासी ॥
भक्तहेत नर तन महि धारा। अबद अलोककोजाननहारा ॥
दो० नर व्यवहारहि करत प्रभु लखत भेदकोइ कोइ।
प्रभुमानत तुम बंधु करि हरि माया मतिमोह ॥
सो० हरिते बड़को आन जासु भालकीजिय तिलक।
सुनतहि गिरा प्रमान व्यासादिक बोले समुद ॥
सत्य बदो पंडित गुणखानी। प्रथम पूजिये शारँग पानी ॥
त्रिपुर नाथ बंदित अजबामा। मायापति विशेषि सुखधामा ॥
हरिपूजत सब विधिकल्याना। सुनिमहीप बोले भगवाना ॥
पुंडरीक आसन बैसाये। पटरानिन समेत सचुपाये ॥
षोड़श भांति अरच कुरुनायक। महा प्रसन्न चित्त प्रभुलायक ॥
पुनि मुनिवर पूजे रुचिमानी। विविध दाच्छिणादे अघभानी ॥
बिप्रवृंद शुचि पूजि बहोरी। सुरप्रियतिलककरयोगुणघोरी ॥
कुसुम दाम कंधर पहिराई। बिपुल सुगंधि शरीर लगाई ॥
दो० बिनय बिनीत नरेश किय सबकर बय अनुसार।
सौख्य अकिञ्चन सबहिभा किमि बरणौं बिस्तार ॥

लखिशिशुपालशीशभुवनायो । बहुत बारलगि बैनन आयो ॥
बहुप्रकार अन्तर अनुमाना । बोल्योक्रोधित बचननिदाना ॥
कालभगाइ सकत नहिं कोई । जेहिबशचतुरधिषणपतिहोई ॥
बलमदमय महीप जगजाना । कालविवशबदवाक्यअयाना ॥
मंच बिहाय धरातल आवा । अभय अशोचरोष उरछावा ॥
कटुबाणी कह अनुचित होई । भूप समाज न भाष्यो कोई ॥
बुद्धि चक्षु दुर्योधन भीमा । द्रोण गंग सुतपौरुष सीमा ॥
कृपाचार्य्य आदिक बलदाई । जुरीयज्ञथल नृपति अथाई ॥
दो० यदपि कहावत चतुर सब भेमूरुख यहिकाल ।
मुनिवरमतिधरबुद्धि निधि अपर लोग धीपाल ॥
कोउन महीपति कहा बुझाई । लखि अयोग मम उररिसछाई ॥
नंदगोप सुत पद पुजवायो । जेहिग्वालनसँगभोजनपायो ॥
गहन अशुचिखायोसँगग्वाला । शूद्र प्रताप बढ़यो मखशाला ॥
दुष्ट गहेभूले छितिराई । द्विजपभागकाकहिंदियजाई ॥
पंचानन बलिदियशशवालहि । ईश्वरकरिमान्योसुतग्वालहि ॥
परतियरमण कर्‌यो जगजाना । ताहि साधु समभूपतिमाना ॥
बिबिपितु मातु बिदित संसारा । कोउ न दोषन कर्‌योबिचारा ॥
बड़ आश्चर्य्य कहत बन नाहीं । बिप्र समाज अयोग सदाहीं ॥
दो० नटवर तन नाच्यो बिपिन नारिन युतथलराश ।
पूज्यो भूपति अबुध सम पूरण ब्रह्म प्रकाश ॥
लंपट कर्म जन्म भरि कीना । क्यों ताहि परमाणअधीना ॥
तस्करतारह अहनिशिलीना । अजअनादि तेहियहिथलचीना ॥
बाट दान ग्राह्यो जेहि नीचा । अकुल रमापतिभा मखबीचा ॥
कपट प्रपंच भोग पर नारी । सो परब्रह्म स्वधाम बिहारी ॥
ब्रज पुरहूत मान्यता मेटी । करि अनंत खल माया चेटी ॥
सामग्री द्वितीय तन खाई । नाटकमय गिरि लयो उठाई ॥
अति निलज्ज मख भागसुधारा । गावतनृप त्रिभुवन करतारा ॥
वर्ण धर्म कुल जास न जाना । अलख अगोचर सो भगवाना ॥

दो० वध्यो कंसकरि छद्म वपु तज्यो समर निःलाज।
अपर कर्म निंदक सदा करत रहा ब्रजराज॥
यहि प्रकार दुर्वचन अनेका। कहत भूप शिशुपाल अटेका॥
मध्य सभा हरि आसन श्यामा। मौनितश्रवणितकृतगुणग्रामा॥
प्रति कुवाक्य रेखा यक करहीं। शत अपराध पूर जेहि परहीं॥
गंग सूनु गुरु द्रोण समेता। अपर नराधिप सहकुरुकेता॥
हरि निंदा सुनि रोपित भयऊ। बोले बचन बीर रस छयऊ॥
हे चांडाल कलुष गृह नीचा। निंदत प्रभुहि सभाके बीचा॥
भ्रष्ट होहुनत तजुजियआसा। अवशि देव यमआलय वासा॥
असवदि अस्त्र शस्त्र कर धारे। सबहि वरजि हरि बचनउचारे॥
दो० जनि मंडो रण भूपवर देखो चरित सुनैन।
यहखल आपुहिं नाशिहै चणमहँ संशयहैन॥
शत अपराध क्षमा करि मारौं। प्रथम प्रतिज्ञा हौंन बिसारौं॥
एक अधिक खल करबध करहूं। जुरत सुरासुर समर न डरहूं॥
केहि कारण शतक्षमौअगासा। कृपापयोधि करिय परकासा॥
जन्मा तीनिनैन भुज चारी। सुनि आश्चर्य्य भये नर नारी॥
दमघोषक यहि पितु गुणखानी। बोलि विप्र पूछ्यो मृदुबानी॥
चतुर्बाहु त्रैचष सुत भयऊ। लक्षण वदो मोह उर छयऊ॥
शोधि लग्न तिथि वारसँभाला। ज्योतिपवलवदविपुलद्विजाला॥
उपज्यो पुत्र तेज बल खानी। यशी प्रतापी सुनु नृपज्ञानी॥
दो० जेहिविलोकि विवि भुजनशैं पतनअचयकहोय।
सत्य इलापति जानिये याहि विमर्दै सोय॥
शूरसेन जाता यहि माता। महा देवि संज्ञा विख्याता॥
हमरे सदन सुतहि लै आई। अति चिंतामित रहैं भुवराई॥
मोहिं विलोकि अतिआरतछाई। बचै पुत्र अस गिरा सुनाई॥
हृष्टित झटित गिरे भुज दोई। तीसर चक्षु विनाश लहोई॥
यहव्यवहार लखत दुख मानी। पितु भगिनीइमिवाणिवखानी॥
बंधु तुम्हार अहै शिशुपाला। तवकर तात होइ यहिकाला॥

बध्यो न ममसुत याचे देहू। बिशद सुलोक लोक सुतलेहू॥
समुझिदैव खिपि हृदयबिचारी। दोष एक शत क्षमौ सुखारी॥

दो० मंगलमय गृह सोगई अमर जानि निजसून।
बिनाकिये अपराध शत बधैं कृष्ण कबहूंन॥

इमि बुझाय मंडली महीपा। रेखागनत भये कुरु दीपा॥
शतते अधिक होत रिसबाढ़ी। बोले गिरा प्रमाणिक गाढ़ी॥
अवजानिकुबचबदासिमातिहीना। जीवन तोर बचन आधीना॥
अहमित पुनि दुर्बचन सुनावा। तबहिं सुदर्शन चक्र चलावा॥
खंडयौ शीश सभामहँ तासू। हाहा भूतभयउ दश आसू॥
तेज तासु प्रभु सुखहि समाना। कौतुकदेखि नृपनभ्रममाना॥
जयध्वनिद्विदिशिछायनृपरहेऊ। तीसर मुक्ति निशाचरलहेऊ॥
मुक्तितृतीय कौन बिधि भयऊ। कहोबुझाय ऋषय भ्रमछयऊ॥

दो० मुनिवर शाप प्रतापभा हाटक करयप जाय।
नरहरितन मर्यौं तहां श्रीकर यादवराय॥

द्वितिय जन्म रावण अवतारा। जेहिकर पाक शत्रु मद हारा॥
राम रूप मार्यो जग जाना। यहशिशुपाल तृतीय बखाना॥
उभय पारषद हरिपुर बासी। अहंकार बश च्युतताभासी॥
पूरणमख बिलोकि सुखपाये। पांडुतनय सबभूप बुलाये॥
पहिरावनि सबकी नृप कीन्हा। सात्विकदान सुबिप्रनदीन्हा॥
दानकर्म कुरुपति आधीना। जो रिपुतामय कपट मलीना॥
द्विगुणतिगुणतिहितेअधिकाई। यज्ञभंग हित द्रव्य लुटाई॥
हरि रक्षक जहँ सतन सोहावा। तहँकस भंग ज्ञाननहिं आवा॥

दो० सकल बिघ्न बर्जित भयउ पूरण यज्ञ नृपाल।
निजनिजगृहगयच्छोणिपतिमांगिबिदातत्काल॥
प्रभुकुटुंबयुत भेटिसब गये द्वारकहि राय।
आये हरि सुधि पावतहि घरघर बजी बधाय॥
मंगल जानि बिसारहीं मूरख यादव राय।

तूललतजिभगुताय पद गाय गाथशुचिभाय ॥
इतिश्रीमद्विविधकिविचित्यकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांशिशुपालमोक्षवर्णनो
नामपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५॥

दो० कालप्रबल सबजगु भषत जड़ चेतन चहुंआनि।
अजरअमरसवतमहजनि भजहरिसुसमदजानि॥
सेवत प्रेत अचेत भव पूजत विषयी देव।
भंत प्रेत थल वासि हैं हरिपदवर्हैं न भेव॥
समुफावत बुधवेद नित सन्त सुजान सदाय।
तदपि न मानत मूढ़नर भव दधि बुड़त धाय॥
मुक्ति देत जनको सदा राधा बल्लभ सत्य।
इतउत सहज स्वभावहीं मेटत विविध अपथ्य॥
यहिकारण परिहरिहरिहि आनसुयश जनिगाउ।
मंगल प्रेम प्रताप सों चतुर मुक्ति पद पाउ॥

मुदित सुकृत लखि पूरण राजा। कुरुपति उर दुखभाभुत लाजा॥
सो कारण विस्तार समेता। बादिपशुपाल मुनियसहेता॥
धर्मराज नृप बर विज्ञानी। यज्ञस्थल महीप अनुमानी॥
कार्याध्यक्ष किये यहिरीती। राख भीमसम गृह युत प्रीती॥
अर्चा कर्म सौंप सहदेवहि। विदुष जान पूजाके भेवहि॥
द्रव्यधाम अधिकार सक्षमा। नकुलहि सौंपदेय सद्धमा॥
सेवा कर्म सुरुचि अधिकारा। मगहि समर्प्यो नृप तेहिवारा॥
करहिं श्याम आदर सत्कारा। धोवत चरण भूपज्योनारा॥

दो० जूठपात्र वाहिर धरहिं प्रभु अधिकार सनेह।
दानकर्म दुर्योधनहिं सौंप्यो शुचि मनमह॥

काजयोग्य नृप आन विचारी। कियेधर्मसुत मख अधिकारी॥
सबनिष्फट करहिं निजकाजा। मनभाषित दुर्योधन राजा॥
अगणित द्रव्यदान मिसदीन्हीं। यज्ञभंग हित मनसाकीन्हीं॥
मनचितमन नाशकृत होई। दिनप्रतिक्रि वृभ्त नहिंसोई॥

जोपै होत खल इच्छा काजा। तौनहोत भवमख शुचिसाजा॥
दुष्ट प्रकृति नहिं शुभकृत करहीं। छूंछे अखिल मनोरथ परहीं॥
मूरुख अबुध सदाकर सोई। चक्र चिह्न वृद्धकधन जोई॥
सो कुरुकेत हाथ द्युति कारी। तेहि प्रताप बाढ़त धन भारी॥

दो० भयउ धर्मसुत द्वितियनृप मम प्रभुतामहँ आय।
जेहिविधि नाशौं सोकरौं यहिइरषा कुरुराय॥

सो० हरि सप्रेम जेहिठाम रक्षक सतन महीपसुनु।
कैसेहोय अकाम नहिं शोच्यो कुरुपति अबुध॥

हियहार्‍यो करि विविध उपाई। पूर्‍योमख निर्विघ्न नृराई॥
अपरचरित सुनु महिप सुजाना। गये द्वारकहि जब भगवाना॥
तब सबकर करि आदर भाऊ। बिदाकर्‍यो पहिराय सचाऊ॥
समुद बन्दि नृप सहित सहाई। निज निज देशगये मुदपाई॥
सह परिवार धर्म्म महिपाला। कुरुपतिसहितचलेतेहिकाला॥
धुवनंदातट . हेल नहाना। पहुंचेबहुविधिबजत निशाना॥
करभ तुरग रथ विपुल पदाती। बरणत बनत न पूरण भांती॥
न्हाय सबामचले मुदमानी। मयकृत धामगये सुनुज्ञानी॥

दो० अर्जुन मणिमय गृहरचे निरखत दृष्टि भ्रमाति।
हरि आसन तेहि गेहनृप सोहतभे यहिभांति॥

मागध सूत बन्दिजन पायक। जयध्वनिकृतअपारगुणगायक॥
नभसबाम सुरकृत कलगाना। नटत नाटकी संयुत माना॥
अंतःपुर बिधुबदनी गावहिं। निजसुरसुरतियशब्दलजावहिं॥
सोह सभासद विपुल बराका। धर्मराज शोभित रिपुपाका॥
तेहिपाछे सबाम कुरुराई। सभाद्वार आयो द्विविधाई॥
बहुऐश्वर्य बिभव सँगतासू। कपटसनेहमिलितचितजासू॥
भ्रामिकसदनमयासुरकीन्हा। जलथलथलथलथलजलचीन्हा॥
द्वाराद्वार अवार सुवारा। किमिबरणियगृहभ्रामिकअपारा॥

दो० प्रविश्यौ कुरुपति भ्रमितथल लखिजलजानि परान।
वस्त्रउठाये बुद्धिबिनु भयउ क्षितिप अज्ञान॥

अग्रागमन कस्यो बड़ि लाजा। जानिसुथलजलप्रविशोराजा॥
क्लेदित बसन लखा कुरुराई। हँसे सभासद नृपति ठठाई॥
सदनोपर त्रियहँसी महीपा। पितुसमान कहिकुरुकुलदीपा॥
धर्मराज निज हँसी दुराई। बिहँसि हृदय सुखलयोघुमाई॥
बिहँसत सबहि देखि कुरुकेता। बैठि सभाकह क्रोध समेता॥
महा बिलज्जित भांति बिसारे। तेहिच्छण नल प्रतापजनुहारे॥
कृष्ण सहाय पाय अभिमाना। भयउ महीपबिदितजगजाना॥
कुल प्रधानता कानिगयाई। हास्य हमार कस्यो सुवराई॥

दो॰ जो जीवत हों भूमितल तौप्रण सुनौ नृपाल।
करों सलज्जित सभामहँ तुम कहँ कौनो काल।
हरिप्रताप छायो जगत जानत सब नर नारि॥
बिदितन ध्यावत ईश्वरहि मंगल दीखबिचारि।

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांदुर्योधनमानभंगवर्णनोनाम
षट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६॥

दो॰ उपजत महितेथूलसब नाशि मिलत महिमाहिं।
लवण होत जल खारते होत नीर भ्रम नाहिं॥
यहिप्रकार जल थल बसे जीव ब्रह्मलवमान।
लिप्त होत पुनि ब्रह्म महँ बदत बेद बिज्ञान॥
महा प्रलयमें जीव जे द्विविधि सुकृत अघकार।
मोक्ष पदारथ लहतहैं कह सर्वांग बिचार॥
जोगति मुनिजन योगजग महायुक्ति करिलेत।
सोपावत हरिपद भजे समुझत सुबुधि सुचेत॥
जानत पै मानत नहीं माया बश अज्ञानि।
तूभजुयदुपतिनलिनपद मुक्तिदानिअनुमानि॥

रुचिर प्रसंग पाप जग मोरा। सुनौकुरुपतजि कुमतिप्रघोरा॥
शालव नाम दैत्य बलखानी। नृपशिशुपालहितूअभिमानी॥
कुंढिनपुर रुक्मिणि उद्वाहा। भयउ पराजित सो नरनाहा॥

दुखितहृदयमन बिपुलगलानी।बिबिधभांतिनिजमन अनुमानी॥
केहिउपाय जीतौं घनश्यामा। मनमलीन चिंत्यो परिणामा॥
आराध्यो गिरीश चितलाई। क्षुधा तृषा बासना बिहाई॥
इन्द्री जीति तपस बड़ कीन्हा। आतप बरषा शीत न चीन्हा॥
तनमनभजै चरण शिरमाली। बर्ष एक इमि तपसा पाली॥
दो० अति प्रसन्न ह्वै चंद्रधर कहा मांगु बरदान।
अजर अमरवत होहुं मैं अनक्षय सहकल्यान॥
हर बद.अजर अमर को भाई। सुनु मम गिरा मनोरथ दाई॥
तोहिं मायासुर देइहि जाना। इंगतज्ञ सो चलिहि सुजाना॥
गति त्रिलोक महँ ताकर होई। मोर बाक्य सुत मृषान होइ॥
मयनमिलै अभिमतफलदानी। रथदीजिय जनपाल सुपानी॥
तेहिअवसर यकयानसोहावा। मणिमयमय तत्क्षणलैआवा॥
धनदबिमान लजाय निहारी। पाययान जड़ भयउ सुखारी॥
बंदि हरहि भारथ आरूढ़ा। चल्यो द्वारकहि बुद्धिबिमूढ़ा॥
पाय शोध हरिगजपुर आहीं। पुरी निरोध करयो चहुं धाहीं॥
दो० पुर निवासि बहुदुख लहैं खल बल माया कीन।
तरवर जल शिखि बृष्टि कृत हरि पुर दुष्टअधीन॥
उपल क्षार बरषा कहुँ करहीं। झंझावायु कतहुं परचरहीं॥
महाबिपति प्रभु पुर दिशिचारी। दुखित भये खग पशुनरनारी॥
बिकलित बाल युवाबहु काली। बदत त्राहि दुखहर बनमाली॥
आरत बदत भूपतट आये। करि प्रद्युम्न खल कर्म सुनाये॥
बेगिसुद्धि लीजिय छितिपाला। मीनकेतु बोले ततकाला॥
अवशि सूनु मर्दौं खल जाई। हरिबिनुयहिजड़बिपतिमचाई॥
रिपु बलखानि हृदय निहशंका। संबर शत्रु सदा रणबंका॥
सजि सहाय नृप आयसु मानी। असुर सूत गे रण बिज्ञानी॥
दो० देखो साम्बहि भिरतरण बैकल चित झषकेत।
धरौ धीर मर्दौं असुर पितु प्रताप रण खेत॥
रे अघखानि अबुधि अन्याई। बरबस मृत्यु इहां तोहिंलाई॥

अस्त्र शस्त्र करधरु करिचेता । देखिहि यमपुर सैन समेता ॥
जुरे समरद्धौ संगर ज्ञाता । कोप्यो असुर सुनौ कुरुजाता ॥
मायाबल तम निविड़ उपाया । दिवसनिशासमदलभ्रमछाया ॥
तेजबाण छोड्यो तन हीना । विनश्योतिमिरप्रकाशप्रवीना ॥
पूषण तुल्य असुग नभधाये । कुहर चणक महँ दूरि वहाये ॥
तोम्रफली संगरहि अपारा । मार मार खलदल हियहारा ॥
रथहिताकि मार्‌यो बहुबाना । अस्त व्यस्त भाहर प्रदयाना ॥
दो० अति व्याकुलह्वै नीचतब रणतजि गयउ पलाय ।
पुनिक्षण बीतत प्रगटभा तमचर माया भाय ॥
करतविविधविधि निश्चरमाया । कहुंयक्षपकहुं बहुकनकाया ॥
देव दैत्य नर समर प्रचारै । महाबली संगर क्रिमिहारै ॥
रण उद्यम अनेक विधि कयऊ । हरिसुतसमरदुखितमनभयऊ ॥
शालव सचिव द्विविद बरियारा । समरभूमि प्रगट्यो तेहिवारा ॥
करिछल चरण मार उरमारा । मूर्छितधरा पर्‌यो बिकरारा ॥
स्मृति रहित सुत समर निहारा । बर्‌योंकृष्णतनद्विविदपुकारा ॥
सुनियादव दलहिय अकुलाना । भिरेसमरक्रोधित तजिमाना ॥
सूतवाजि स्यंदन अतुराई । गयउ नगरलै रति पतिराई ॥
दो० पुरछायो आतंकयह जागिकहा झषकेत ।
सूतकर्‌यो अनुचित महा रणतजि जान अचेत ॥
क्षत्री युद्ध पलावत जोई । पावँर तासु प्राण जग होई ॥
सुभट प्रबल रणतायन तजहीं । कादरजीव स्वभिय लै भजहीं ॥
श्याम जात यदुकुल विख्याता । तूदेख्यो रण काहि पलाता ॥
अथवा हमहिं पलात निहारा । समुझि हृदय लायो दरवारा ॥
यदुवृतांत जगश्रवणिहि जोई । कादर बूझिहँसिहिभव सोई ॥
विनुस्वारथदियतिलककलंका । धृगजड़निरबुधिनिपटनिशंका ॥
क्रोधितलखिजलचरअसवारहि । तज्यो यानसारथितदवारहि ॥
करसंपुटित कहा सुनु नाथा । बूझतविपुलनीतिश्रुतिगाथा ॥
दो० रदत नीति जोरण गिरे रथी अचेत सुजान ।

सूत घालिरथ तुरत देहि लावै शुचि बस्थान ॥
सो० सूभिपरै जो सूत ताहि मरके रथपती।
यह विज्ञान विनूत बदत चतुर सज्जन सुमति ॥
चरण घातउर रिपुबल घाल्यो। मुर्छितभयउद्धुचितउरशाल्यो ॥
प्रबल अराति जूभिलै भागा। स्वामि बचैचित हितअनुरागा ॥
कोअनीति यहि कृत अधमाई। तोषितह्वै प्रभुकहिय बुभाई ॥
सुनिभाशांति क्रोध अधिकारा। बहुरि सारथी बचन उचारा ॥
दंडएक गत व्यथा नशानी। चलिय समर मंडिय विज्ञानी ॥
उर उपहास गलानि नलाइय। धर्मयहै निज प्राण बचाइय ॥
बिपदासहि सम्पतिहि बचावै। त्रिय सुत हित धनधामबहावै ॥
प्राणहेत परिवारहि तजई। जीवन धन पाये हरिभजई ॥
दो० अबचलि रिपुमाया हरौ बधौ शत्रु संग्राम।
नीरदयो आचमन किय उर सुमिरे घनश्याम ॥
चलु जहँ द्विविद करतरण घाऊ। ध्याय पितहि धारयोरथपाऊ ॥
झटित सूत तब तुरग चलाये। पवन बेग गति हेरिलजाये ॥
द्विविद पास जबगे असुरारी। मेघ गरज जनु गिरा उचारी ॥
कत खल भिरत चमूके संगा। मम सन्मुख करु दृढ़रणरंगा ॥
जहँ शिशुपाल गयउ तहँ तोही। पठवौं अवशि सत्य सुरद्रोही ॥
साभिमान दुर्बचन उचारा। लायो काल ग्रासि यहिवारा ॥
असकहि असुर पवार्यो बाना। मध्य बिभंजे सुत भगवाना ॥
द्वंद युद्ध जिमि खल असुरारी। कोप्यो हरिसुत शत्रु निहारी ॥
दो० ताक्षण शर शिरतासुको खंड्यो नृप तेहि काल।
असुर सैन साम्बू बध्यो खगपतिधौं दल व्याल ॥
शाल्व लरत रैनि दिन राजा। यदुबंशी धन्वा रण भ्राजा ॥
करत युद्ध बीते दिन माला। हरिपुरवासी भये बिहाला ॥
त्राहि त्राहि हरि पाहि पुकारैं। हरिपुरदिशिनिशिदिवसनिहारैं ॥
प्रभु अंतरयामी अनुमाना। नगर द्वारका बिपति महाना ॥
सबल अराति न मम बिनु मरई। ज़रि सुरमनुज युगनबरुलरई ॥

मिराजहौं स्वप्न बिलोका । मम पुरबासी निपटसशोका ॥
असुर उपद्रव बहु विधि ठाना । विकलजुगतरणसुतबलवाना ॥
आयसु वेगि देहु पुर जाहूं । खलसैनाहिंतृणनलाशीखिदाहूं ॥
दो॰ हलधर युत प्रभु चलनभे राउरजायसु पाय ।
पुर बाहर असगुन सगुन देखिपरेद्वौ भाय ॥
ाम भाग मृगिनी पग धारा । सन्मुखश्वानशीशझफकारा ॥
दाहिन द्रोण शब्द शुचि करहीं । विस्मित लखिहरिजूकछुउरहीं ॥
दाऊ तुम पाछे ससमाजा । आयउ अग्रचलत कहराजा ॥
ागवंत हय द्विजप लजावन । जनुमद झंझावायुनशावन ॥
ुर समीप प्रभु दीख निहारी । पीडनअसुरसबहिदिशिचारी ॥
िकल यदुबंशी संग्रामा । आरत बदत त्राहि हरि रामा ॥
ंडत समर धीर उर धारे । विविधायुधत्यागतअविचारे ॥
ण अवलोकि उपस्थित भयऊ । अरितृणक्रोधअनलउरछयऊ ॥
दो॰ तस्मिन अवसर भूप सुनु हलधर सैन समेत ।
पहुंचे प्रभुतट त्रास गत लखौ तात रण खेत ॥
असुर विवश जन प्रजा दुखारी । शासन करत विविध रणरारी ॥
पुरजन रक्षा हित चलि जाहू । खल बनक्रोधजलजकरिदाहू ॥
संतत मिलब आय क्षणमाहीं । विधिकर्तव बूझतभ्रमनाहीं ॥
मूशलपाणि नगर चलिगयऊ । सुखिलहिपुरबासिनसुखलयऊ ॥
प्रभु प्रद्युम्न ढिग आतुर आवा । बंदि तातपद शंखबजावा ॥
मृतक प्राण दारिद सुर पादा । पाये सैन श्याम अविषादा ॥
जयध्वनि पूरिरही पुर दोई । आनँद बरणिनसककविकोई ॥
दृष्टत प्रभुहि असुर नभ धावा । पावक विशिख मंडिदलआवा ॥
दो॰ विहँसिश्याम शारँग लयोत्यागे षोड़श बान ।
स्यंदन सूत विनाशियो महितल परयो अमान ॥
सो॰ गिरतहि उठयो सम्हारि तीव्र बाण प्रभुकरहयो ।
भाष्यो दुष्ट प्रचारि आजु समर मर्दन करौं ॥
वध्यो भौम शंखासुर भारी । सकलहयोशिशुपालअघारी ॥

समर विदुषहौं विदित जहाना । ममसन्मुखअबबचिहिनप्राना ॥
परिहरि छद्म मंडुरण द्रोही । महाकाल सम देखुन मोही ॥
बिशिखासुर धरणीसुत जोई । यमपुर मगहेरतु तुवसोई ॥
बेगिपठाय ज्वलनि उरभेटौं । चलिहिनकपटचालितवचेटौं ॥
त्रिपुर पलाय प्राण प्रिय जानी । तदपिनबचो मृत्यु नियरानी ॥
मूरुख अभिमानी मति हीना । अनुचितवदतहोतबलछीना ॥
समर धीर बरबीर प्रसूरा । अनृतन कहत करत रिपुचूरा ॥

दो० विद्यमान अरिसमर लखि कत निरर्थ कृतबाद ।
कोपिदुष्ट घाल्यो गदा भाषि विविध अनुबाद ॥

सहजगदा काढ्यो यदुनायक । जयध्वनिबोलिउठेरणपायक ॥
खलउर हरयो गदा बनवारी । मायाओट भयउ बिबुधारी ॥
बिकलित रहेउ दंड द्वैमूढा । नरतन रच्यौ कपट मतिगूढा ॥
हरि अविदूरि बच्यौ करजोरी । सुनियदयानिधि बिनतीमोरी ॥
दूतदेवकी मात पठायो । नाथसँदेश कहन हौं आयो ॥
पितु बसुदेव बंदिखल कीना । नानादंड बांधि तेहि दीना ॥
बदि अंतरित असुरपति होई । मायामय बसुदेव रचोई ॥
बहुरि कृष्णके निकटहि लायो । दुर्मति इमि दुर्बचन सुनायो ॥
कृतकृत समरन पितहि बचावत । जगउपहासलाजनहिं आवत ॥
असि कठोर यहिशीश उतारौं । पाटौंसिंधु मृतक दलमारौं ॥
पुनि बधितोहिं अकंटक होहूं । निजबल समकर्तब करुतोहूं ॥
इमिमाषि हरिसन्मुख नरराया । काटितासु शिर भूमि गिराया ॥

दो० शक्तिछेदि उरध कियो देखिचमू बिलखानि ।
भये अचिंत सचिंत नृप मायाकृत अनुमानि ॥

मायामोह श्याम तन नाहीं । नरइव चरित करत रणमाहीं ॥
अल्पक बिस्मित है धनु धारा । सदढ ज्ञान इमिचित्तविचारा ॥
लिख्योनबिधिखलकरपितुमरना । विद्यमानहलधर किमिहरना ॥
त्रिदश त्रिजगनरअसुरसमाजा । जीतै योग राम नहिं राजा ॥
[illegible] । खल माया अपार भ्रमछायो ॥

ज्ञान चक्षु पितु सदन बिलोकी। अश्रुककृष्णनृपमयेअशोकी ॥
जड़हि प्रचाख्यो काल समाना। सुनत शब्दभा अंतरधाना ॥
अस्त्र शस्त्र त्यागे चढ़ि नाका। भंज्यो कृष्ण सूत रथ चाका ॥
दो० पख्यो नीरनिधि उठ्यो पुनि आयो प्रभु ढिगराय।
क्रोधित ह्वै जगदीश तब दीन्हों चक्र चलाय ॥
छं० दीन्हो चलाय सुचक्र प्रभु तेहि तासुशिर खंडन कख्यो।
छिनुशीश धर रणभूमि लोठ्यो वृत्त जनु मघवा हख्यो ॥
मणितासु शिरते माहिपरी प्रभु मुखहि तेजसमाइयो।
यदुजात जय सुरमालवर्षि अपारधा सुख पाइयो ॥
दो० मर्दि दुष्ट रक्षतसदा निज दासन घनश्याम।
मंगलतजि छलभाव नित करु हरिचरण प्रणाम ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांशालवदैत्यवधोनामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

दो० मनचिंतत सोहोत नहिं शुभ अरु अशुभ प्रवीन।
यहि कारण कोविद चतुर करत नहीं मनदीन ॥
हरि हर बिधि जेहि अंशते प्रगट होत बुधिवान।
तेहिध्यावततजिदुचित मतिलहतअंतकल्यान ॥
जनपालक घालक असुर धर्म प्रचारक जोय।
निज इच्छा तन बिरचिभव कृष्ण रूपभासोय ॥
किये चरितनाना जगत सूचक सुक्ति सुजान।
शिखि दाहक अघहरि सदा गावत बेद पुरान ॥
समयभवन तेहिजाय बुधवदतशास्त्र सतिभाय।
जोगावत यदुपति सुयश द्विविधादोष दुराय ॥
सुनुकौरवकुल कुमुद निशाकर। बदौं कृष्णयशअघतमभाकर ॥
बक्र दंत शिशुपाल सहोदर। विदुरथयुतजिमिनव दामोदर ॥
जबते समर मख्यो शिशुपाला। तबते द्वौअति रहत बिहाला ॥
बंधुबैर प्रभुमन खल चाहैं। निजसुखदारुशोकशिखिदाहैं ॥

बहु विचारमनजड़ नितकरहीं। जयतिलहेके हिविधिरणलरहीं॥
शाल्व विविद मरतदल साजा। द्वारावती गये सुनु राजा॥
चहुँदिशिनगरनिरोधिसुजाना। बरषे अस्त्र शस्त्र विधिनाना॥
भेन्द्र अरघधायो आतंका। सलदलत्रविपुरजनउरशंका॥
दो० पायशोध स्यंदन चढे असुर वेगु बन ज्वाल।
पुर बाहर थितभे प्रभु जहं दुर्बुध शिशुपाल॥
प्रभुहि बिलोकि क्रोधउरबाढ़ा। बक्रदंत सन्मुख भा ठाढ़ा॥
बोल्यो अनुचित बुद्धि दुराई। द्विजपतिश्रुतिविपुलछिकिडराई॥
प्रथममार निजशरअरिभ्राता। देखिहिअवशिनगरहरिजाता॥
रहे नंबत समय पछिताऊ। यहिकारणकरु प्रथमहि घाऊ॥
नतपरिताप हृदय अतिहोई। आयो काल देख मन जोई॥
विविध सुभट घाते संसारा। अबभा मरण स्वा करतारा॥
इमि दुर्बचन बहुत खलभाषे। श्याम अनुतर नृप मनमाषे॥
मर्धो गदा बीच हरि काटी। जानत सकलसमर परिपाटी॥
दो० दुष्ट बहुरि दूसरि गदा गहि कृत युद्ध अपार।
अति व्याकुल यादव चमू प्रेरिफक तेहिबार॥
बध्यो बक्रदंतहि यदुराई। तासु तेज लय गयउ समाई॥
बिदुरथ तासु मरण लखि धावा। जनु मंदरगिरि तनुधरिआवा॥
बेगिहतो प्रभु देव पुकारे। यहि जीवत बड़ त्रास हमारे॥
चक्रमेलि भंग्यो शिर तासू। पौरुष प्रगट भूमितल जासू॥
एक बाण बधि अपर सहाई। देवन दीषि पुहुप झरिलाई॥
किन्नर चारण सह गंधर्बा। सिद्ध साध विद्याधर सर्बा॥
जयध्वनिबदि प्रसून झरलाई। वामन सहयश गान प्रवाई॥
प्रभु कर्त्तव सबभांति अलोकी। करतदास निजसदा अशोकी॥
जय अरु विजय पारषद दोई। द्वारपाल तुव पुरके सोई॥
मुनिवर शाप विप्रशतनतीनी। भये असुरप्रभु तुमगति दीनी॥
धन्यभक्त रंजन भगवाना। करिप्रणामगे विबुध सुजाना॥
भयउ यथाथितनगर विशेखी। बक्रदंत बिदुरथ बधदेखी॥

दो० समररच्यो बहु जोरिभट निज निज हित अनुमानि ।
कुरु पांडव निज जयति हित सुनो राम बलखानि ॥
कहा करिय दुहुं ओरहितु दोनों चहत सहाय ।
जाहुतात अहि नगर तुम मम सम्मत उरलाय ॥
मैं तीरथ करि आतुरताई । मिलिहौं समर भूमि तल भाई ॥
प्रभु प्रस्थान ताहि क्षणकीना । गे कुरुक्षेत्र अचिंत प्रवीना ॥
मूशल पाणिगमन किय राजा । भवतीरथ थलसाधसमाजा ॥
न्हात मिलत उर मोद बढ़ाये । नैमिषविपिनसमयवशआये ॥
देखि यज्ञकृत विविधमुनीशा । प्रीतिसहितध्यावतजगदीशा ॥
दूसर ओर बिमल सिंहासन । सोहत सूत बिगतभववासन ॥
कहत कथा शुचिमुनिन सुनाई । रेवतिरमण गये तेहि ठांई ॥
सौनकादि लखि मूशल पानी । उठि बंदे सुनु भूपति ज्ञानी ॥
दो० उठ्यो न आसनते चतुर पौराणिक धरमज्ञ ।
क्रोधित ह्वै बोलत भये हलधर तब कटुबज्ञ ॥
बकता अस मूरुख केहि कीना । व्यासासन मतिहीनहिंदीना ॥
भक्तिवंत ज्ञानी सविवेका । बक्ता चहियकुमतिअहिकेका ॥
मान रहित परमारथ लीना । मोह बिगत बर्जित छलदीना ॥
यह स्वारथ रत बड़ अभिमानी । लोभी अविवेकी अज्ञानी ॥
सोहन याहि पुराणिक गादी । बधै योग यह पुरुष कुबादी ॥
हनत परन्तु बिपुल अघ होई । ब्राह्मण अवध बदत बुधलोई ॥
यहिथलते यदि बेगि निकारौं । बिप्र जानि नहिं अस्त्रप्रहारौं ॥
तब सौनकआदिकऋषिज्ञानी । बोले बिनय सहित मृदुबानी ॥
दो० तुम ज्ञानी धरमज्ञ प्रभु धीर बीर बलखानि ।
क्षमाकरौ अपराध यहि ब्रह्म बंश अनुमानि ।
अजमख काज लागि इहथापा । असबिचारित्यागियपरितापा ॥
व्यासासन गर्बित अनुमानिय । आनभांतिनहिंचिंताआनिय ॥
उठिन प्रणाम कियो महि नाथा । यह अपराध क्षमियबरगाथा ॥
द्विजबर साधु बिदित संसारा । बधकीन्हें प्रभु अज्ञ अपारा ॥

क्षत्री तन तम विप्र सँहारौं। कोमल कहे कि धर्म प्रचारौं॥
क्षमा जन्म मर्यादा हेता। शोचिय हृदय चंद्रकुल केता॥
वचन वृथा किमि जाय हमारा। बूझत सब विधिवाक्य तुम्हारा॥
यदपिबध्य अनुचित विधिचारी। तदपि मूढ़ता कियबहि भारी॥
दो० रोषरहित कुश सुत बपु मास्यो मुशल पानि।
विधिकर्तव विपरीत नृप भई जीव की हानि॥
सुत मरत भा हाहाकारा। त्राहि त्राहि कहु ऋषिनपुकारा॥
निपट उदास भये मख कारी। पुनि विवेक युत गिरा उचारी॥
भिदे न कमलजात लिपिताता। संभव होत कहत श्रुतिज्ञाता॥
दोषन तुमहिं करौ अब सोई। यज्ञभंग जेहि नाथ न होई॥
धर्म धुरीण अहो तुम स्वामी। मुनि बोले प्रभु अंतरयामी॥
तजौ गलानि भंग मख नाहीं। मुनि प्रवीण जानत त्रिबिधाहीं॥
करगहि सुत तनय हलधारी। कह्यो बचन आसन बैठारी॥
पितुते अधिक करिहि वकताई। मम प्रसाद पाइसि अमराई॥
दो० गत चिंता कीजिय विविध यज्ञ कर्म मुद मानि।
प्रफुलित भे मुनिवर सकल बीती अमितगलानि॥
प्रभु कर्तव अतिशय अगम को भवै जाननहार।
तू मंगल तजि मोह भ्रम भजु हरिचंद विस्तार॥
इतिश्रीमद्दिग्विजयिकलिपावनकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांवक्ददंतविदूरथसूतवध बर्णनोनामअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥
दो० निजनिज स्वारथ निरत सब परमारथ रतकोइ।
दुख सुख पौवत अंतमें करणी समनरदोइ॥
हरिमाया बश जीव जड़ भवबीचिका भ्रमात।
विनुध्याये हरिपद नलिन शमनभवन पछितात॥
चतुर सुजन तजि दुचित नित ध्यावत राधानाथ।
मेटत कलुष अनेक विधि यथाजक मलपाथ॥
जे नहिंगावत कृष्ण यश ते मूरख पशुतूल।

अधिक मूछ दाढ़ीरची सींग पूछ की भूल ॥
विषय तजीसाधनसमुझि मलिनदुखदतिहुंकाल ।
आराधत हरिपद सरुज खलहित विषय मराल ॥
हरि आयसु सुतसूत बरासा। शोभित ह्वै किय वचनप्रकासा ॥
मुनिजन मुदित करण मखलागे। विविधदुचित दुविधापरित्यागे ॥
तेहिअवसर जाल्व लवजाता। प्रबल प्रचंड दैत्य विख्याता ॥
कृत अवलोकि रोष उपजाई। कुटिल मीचुवश तज्योभलाई ॥
मख विध्वंस हेत लवपूता। माया मय प्रगटे जीमूता ॥
मुदिर अनीघन बास अपारा। बर्षत रुधिर मूत्र मलधारा ॥
गर्जत पयद प्रलय करभारी। डरपे सबऋषि तिमिर निहारी ॥
अकथ उपद्रव आन प्रकारा। कीन्हसि दुष्टभूप तेहि बारा ॥
दो० पट इंदुर त्रासत अहित निमिखल लखि शुभ काज ।
बिकल ऋषय त्रासित महा कहत त्राहि ब्रजराज ॥
जड़ अनीति बलदेव निहारी। हरिजनसकलदुखितपुनिभारी ॥
हल मूसल आवाहन कीन्हा। अंतरयामी जनदुख चीन्हा ॥
इच्छावत आयुध चलि आये। पाय अस्त्र प्रभुऋषय बुझाये ॥
धरौधीर खल मरण विचारी। हलबल बलखींच्यो खलभारी ॥
मूसल मर्दि तासु शिर तोरा। रुधिर प्रवाह मिल्यो चहुंओरा ॥
मरत असुर सुर बरषहिं फूला। कहिजयजय प्रभुमंगलमूला ॥
सब मुनिभे प्रसन्न यहि भांती। पक्षी यथा पाव जलस्वाती ॥
करि अस्तुति मखकृत अनुरागे। हलधर चलत भये नृपआगे ॥
दो० कृत यात्रा आये जहां कुरु पांडव संग्राम ।
भिरत भीम भूपति प्रबल कौतुकीय घनश्याम ॥
रामहिं देखि द्विजन अनुरागे। जानि बंधुगुरु पायन लागे ॥
अजजनि तात करौंवताई। मित्र तात सबगये नशाई ॥
वंशरहे कुरु पांडव केरा। करौ सनेह तजो भट भेरा ॥
युगल सुभट वदपदशिरनाई। अवन तात त्यागा रणजाई ॥
पुनि कुरुपति कह आरतवाणी। हलधर प्रति नरनाह बखानी ॥

हे गुरुदेव कृपानिधि ज्ञाता। रणभाहोत होय जो ताता॥
सो केवल हरिसम्मत पाई। स्वामिन गामम बंश नशाई॥
सेन श्याम रणछल कृत ताता। कोवापुरे पांडुके जाता॥
दो० दारु पुतरि नटुवा विवश जिमिनाचत बहुनाच।
तिमि ममकर नृत्तत सदा पांडुतनय यह सांच॥
हरिछल भीषम मृत्यु बताई। द्रोण मुयोयद्रुपति कपटाई॥
दुश्शासन भुजभीम उखारी। केवल कृष्ण छद्महितकारी॥
अपर सहायक बंधुनृपाला। राघव जिम्ह भये बशकाला॥
अनुचित समर कराय दयाला। तुरवाये मम जंघबिशाला॥
अपर कहौं का बिह्वल बाता। जीते पांडुश्याम उत्पाता॥
करुणामय दुर्योधन बानी। सुनत रामउर भई गलानी॥
प्रभु अविदूरि आय कह भाई। कस अधर्ममय रच्यौ लराई॥
क्षत्री धर्म धर्म संग्रामा। परिपूरण तुम गुणपति धामा॥
दो० शूरनभुज जंघा हरत भिरत रंकप्रति एक।
कारण अवशि बुझाइयै तात समर अविवेक॥
कुरुपति धर्म रहित अन्याई। छलकरि धर्महिं यूप हराई॥
दुश्शासन द्रुपदी गहि लावा। मध्यसभा चाहसि नँगियावा॥
दुर्योधन कह नारि उघारी। तात जंघ मम देह बिठारी॥
महा सती पांडव की नारी। तेहि लज्जा राखी बुधिचारी॥
जेहिकर कुंतल गह दुश्शासन। भुजतोख्योसोसुतअहिआसन॥
कुरुपति जंघा तेहि दुख तोरी। यहि महँ तात कौन ममखोरी॥
अपर अनीति करी कुरुराई। सो अयोग बरणी नहिं जाई॥
यहि कारण नहिंमिटिहि लराई। कस्यौ न तात विशेषि उपाई॥
दो० कृष्ण वचन सुनि राम तव बहु विचारमन आनि।
गये द्वारकहि मुदित मन हरिकर्त्तव अनुमानि॥
पद शिर नाय नृपति पितु भेटे। उचित अंग नहिं एक्कहु मेटे॥
अपर बंधु जन मिले समोदा। हरिपुर बढ़्यौ प्रमोद यशोदा॥
तीरथ विपुल भूमितल कीन्हे। सकल प्रकारदान प्रभु दीन्हे॥

भा अपराध एक बड़ भारी। कहिन सक्तजेहिबुद्धिहमारी॥
कृत तीरथ नैमिष चलि आये। तहां सूत वधभयउ स्वभाये॥
बहुरि जाय नैमिष बन ताता। दर्शन मस्ककरि न्हाय प्रभाता॥
ब्रह्म भोज्य करिहौं पुनि आई। यह कृत द्विजवध पाप नशाई॥
वेगि जाहु सुत मानि रजाई। दर्शन नैमिषवन अघ जाई॥

दो० बहुयदुवंशी साथ लै हलधर कखौ पयान।
न्हाय नैमिषारस्य दिय बिप्रन श्रुतिवत दान॥

छं० बहुदान सादर मान युतदै पाप पूरब नाशियो।
पुनि आय द्वारावति मनोहर ब्रह्मभोजप्रकाशियो॥
ब्राह्मणऋषयअनगणितयदुवरनेवातिभोज्यजिमायो।
अघहरण आशिष विप्रदै गमने सुनतसुखपाइयो॥

दो० ज्ञाति जाति अनजाति जे हितू उदासी कोय।
सबहि जिमायो मोदमय आनंदे सब सोय॥
यह चरित्र पावन मरम सुनै जोनर अरु नारि।
मंगल कृष्ण प्रतापसों जाय शमन पुर हारि॥

इतिश्री मद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्ण प्रियायां
मंगलदासविरचितायांवलरामतीर्थयात्रावर्णनो
नामैकोनाष्टाशीतितमोध्यायः ७९

दो० जे न भजत राधारमण बिषय बदारत नित्य।
तिनके मुख अहि भवन सम जीह दादुरी सत्य॥
द्रवत न हृदय सनेह बश यदुपति पद जिनकेर।
पवि कठोर चाहिय कहा उरन होय मत मेर॥
श्रवत सलिल नहिंसुनि चरित पर्म पदारथ दानि।
मोर पंख सम नैन तेइ कहत चतुर अनुमानि॥
धृक नरतन जो विषयरत तजिहरि चरण सनेह।
श्वान कोलमल मूढ़मय बदत वेद नित एह।
मंगलवार अपार तोहि समुझाये मनमूढ़॥
परिहरि हरि पद कमलमूढ़ आन ओर जनि ढूंढ़।

सुखद सुदामा चरित बखानौ। सुनौ महीप ओघ अघभानौ॥
याम्य सुता शुचि द्रविड़ प्रदेशा। बिप्र वणिक तहँ बसत सुवेशा॥
धन अधिकता धनद मदहारी। प्रभुपद निरत अखिल नरनारी॥
नृपता तहाँ विप्र वर करहीं। श्रुति विपरीत चरण नहिं धरहीं॥
प्रजासुखी विधि चारि नृपाला। गिरिधर चरण भजहिं तिहुंकाला॥
जप तप मखकृत दे शुभदाना। करत साध ब्राह्मण सन्माना॥
इंद्रीजित सब लोग लोगाई। भक्त प्रपंच रहित सुनुराई॥
बसत देश तेहि बिप्र सुदामा। हरि गुरु बंधु चतुर गुणधामा॥
दो० विधिवश दुखी अपार सो मनमलीन तनक्षीन।
अकथ दशाको कहै नृप सब प्रकार द्विजदीन॥
बिपति बिबशदुखबिबिध प्रकारा। कोउ न ताकर करत सहारा॥
प्रमदा तासु सती बुधिधामा। सभयकहापतिप्रतिशुचिबामा॥
नाथ प्राण प्रिय बिपति महाना। मीत बन्धु नहिंतजिभगवाना॥
जीवन वृथा कृपाल विचारिय। करि उपाययहि दंडहिदारिय॥
एक बात मोरे मन आई। बिपति हरण यादव कुलराई॥
पूरब नाथ एक दिन भाखा। हरिगुरु बंधु मित्र अनभाखा॥
त्रिपुर नाथ हरि अज करतारा। कृष्ण चरित को जाननहारा॥
जोपै जाहु श्याम पहँ नाथा। दारिद नशै बढ़ै कल गाथा॥
दो० चारि अर्थ दाता बिदित पारब्रह्म यदुराय।
नारिबाक्य सुनि बिप्रवर बोल्यो बैन रिसाय॥
कर्माक्षर नहिं मिटत अयानी। बदत वेद कवि कोविद ज्ञानी॥
रचत लोक बिधि कर्म प्रतापा। जनु कुलाल भाजन पुरथापा॥
नरतन विष्णु धरत बहु नारी। कर्माधीन तु देखु बिचारी॥
विविध करयौ भिक्षातट बामा। भ्रमत सूर शशि नित प्रति ठामा॥
कोउन मेटत बिधि लिपि श्यामा। याचत मान जाइ परिणामा॥
को अज वरण जान जग माहीं। हरि सन्मुख दुर्लभ कछु नाहीं॥
जाकर नाम भजत सुरगादी। पावत दास वदत श्रुति बादी॥
भेटत सकल दरिद्र नशाई। जाइय नाथ मोद मन लाई॥

दो० बिनुदीन्हे नहिं देत हरि हौं दीन्हा नहिं दान ।
मानभंग सब भांतिही करुमम बचन प्रमान ॥
बिबुध नीति इमि कृत उपदेशा । बिपति काल पुनि होइ कुवेशा ॥
मित्र द्वार भूलिहु नहिं जाई । काटहि काल यहै चतुराई ॥
यह मित्रता कौन द्विजराई । जौन कुकाल सुहृद गृहजाई ॥
अरुन सहाय करै हितु सांचा । सम्पति मांझ बहुत परिरांचा ॥
दीनबन्धु पुनि हितू तुम्हारे । हरिहि बिपति बिश्वासहमारे ॥
भूपति जहां न पावत जाना । तहां नारिको मम परमाना ॥
सुनत नाम सादर यदुराई । भेटिहि तुमहिं प्रमोद बढ़ाई ॥
प्रियहठ हेरि कहावर ज्ञानी । बदत शास्त्र असनीति सुजानी ॥
दो० गुरू भिषजहरि जन हितू भूपति सचिव महीश ।
जाइभेट बिनु चतुर नहिं इन गृह कहत मुनीश ॥
यथा शक्ति चाहिय उपहारा । तंदुल त्रिय लाई तेहि वारा ॥
बांधि बस्त्र द्विज कांख दबाई । सुमिरि गणेश चल्योभुवराई ॥
मारग मन इमि करत बिचारा । विधिनलिख्योधनमोरलिलारा ॥
एक लाभ होइहि सुखदाई । अघजाइहि पदपरसि नशाई ॥
अंतरयामी श्याम सुजाना । दुखित भक्तआवत बिनुत्राना ॥
गति प्रचंड दीन्ही तेहि ऐसी । बायु प्रघोर घोर गति जैसी ॥
हरिपद सुमिरत पद बिसराये । लोक यामपुर निकटहि आये ॥
दधिमधि नगर इंद्रपुर तूला । किधौंसकल सुख मंगलमूला ॥
दो० बन उपबन चहुंओर कल शुक पिक बिहँग समाज ।
बरणिसकत कबिकुशल किमि जहँराजत ब्रजराज ॥
पुरप्रबिश्यो करिगणपतिध्याना । देखेसदन कणक द्युतिभाना ॥
संत बिप्रहरि पद रति राजा । परमारथ मयकृत मखकाजा ॥
यूथ यूथ सोहत यदुजाता । जनु पुरहूत बिबुध शुचिगाता ॥
कहुं गोदान अन्न कर दाना । कहुंध्यावत मुनिजन भगवाना ॥
कृष्ण चरित गावत कहुं लोगा । जोसुनिनाशतअखिलप्रयोगा ॥
पुरबासी आनँद मय राजैं । ब्रह्म सुखहिबर बशजनुलाजैं ॥

पूछत कृष्ण सदन बर बानी। देखत चरित जातद्विजज्ञानी॥
प्रभु मंदिर तटगा द्विज नायक। बंदि चरण बोल्यो बरपायक॥
दो० दयाधीश द्विज बर बंदिय कहां जाइँगे आप।
हरिदर्शन की लालसा जिनकरअधिक प्रताप॥
अंतर सोहर शुक्र निकेता। तहां बिराजत यदुकुल केता॥
भीतर चलि जाइय अनत्रासा। परि पूरण ह्वैहै तुव आसा॥
द्वारपाल कर पाय रजाई। अंतर भवन प्रविश सुखपाई॥
दूरिहि ते हरि द्विज पहिंचाना। मित्र सुदामा सुखद सुजाना॥
आतुर धाय चले बनवारी। बंदि चरण कीन्ही अकवारी॥
कागहि चले जगतपति भूपा। करि आदर हितुता अनुरूपा॥
निजआसन दै पाद पखारे। पादोदक लै बचन उचारे॥
कहौ सखा गृहकी कुशलाई। पुनि चंदन चरच्यो सुरराई॥
दो० षोड़श विधि पूज्यो द्विजहि गुरु बांधव अनुमानि।
प्रफुलित तनगदगद भये प्रीति अलौकिक जानि॥
सहं रुक्मिणि पटरानि सिहानी। अपर नारिनर अचरज मानी॥
निज मनव्यंग बदत इमिभूपा। दुर्बल दारिद बिप्र कुरूपा॥
महा पुण्यको पूरब कीन्ही। यहमान्यता श्यामजेहिदीन्ही॥
सबकरजानि भ्रमित मनश्यामा। पूंछ सुदामहिं कथाललामा॥
कहौ मित्र सुधि तुम कहँ होई। गुरु पाठक गृह हमतुम दोई॥
इंधन हेतु गये घन कानन। आयसु दयउ गुरू अघभानन॥
दारु भार धरि शीश सिधाये। अर्द्ध प्रमाण पंथ जब आये॥
बरष्यो जल तब मूशल धारा। मिट्यो चिह्न मगभा दुखभारा॥
दो० निशिकाटी यक बिटप तल महा शीत जलखाय।
खोजहेत गुरु देव पुनि प्रात गये दुख पाय॥
हृदय लगायो देइ अशीशा। लै आये घरकहँ रद ईशा॥
जादिनते त्यागी चटसारा। तबते मिलबन भयउ तुम्हारा॥
अरु न सुद्धि पायउ कछु भाई। करिअनीति मोहिंदियबिसराई॥
अस मित्रता धर्म नहिं ताता। जो परिहरयो प्रीति कलनाता॥

पुरा सुकृतभा आजु सहाई । दर्शन दयो मानि मित्राई ॥
पावन धाम भयउ सबभांती । मोहिंसुखभाजलचातृक स्वाती ॥
त्रिपुर व्यवस्था जानत ताता । पूछत हमहिं कुशल की बाता ॥
उर पुर वास रहै सबही के । सुकृतमूल पुनि जीवन जीके ॥
दो० सुनत चरित बूझौ सबन गुरु बांधव द्विजराज ।
मंगल असको दीनहितु करुण सकल सुखसाज ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांसुदामाद्वारिकागमनो
नामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

दो० मोह रज्जु बंधन पखो छूटव कठिन सुजान ।
विविध वासना उरबसे जीवहि नर्क निदान ॥
उपदेशत गुरुजन यदपि ज्ञान मनोहर बाणि ।
तदपि सुनत नहिं मूढमति विष पावत निजपाणि ॥
यथाशब्द सुनि मोर कर अहि व्याकुल है जात ।
तथा कहत राधा रमण पाप पहार बिलात ॥
हरिमाया दुस्तर महा तरत कोउ मतिधीर ।
छल परिहरि जे शुद्धमति सेवत पद यदुवीर ॥
प्रगट लखत चहुं ओरही मुक्ति पदारथ दानि ।
मंगल मूरुख अंध किमि जानै हृदय गलानि ॥
कहा कहौं प्रिय संकट बाता । जीवन वृथा न उदर अघाता ॥
नित हरि बासर रहत हमारे । अंतर गति सब प्रगट तुम्हारे ॥
समुझि मनोरथ द्विजबर केरा । बोले बिहँसि श्याम तेहि बेरा ॥
प्रिय प्रिय कुछ दीन्हो उपहारा । दीजिय वेगि बन्धु त्रुधि सारा ॥
कहि कारण सो कांख दबाये । क्षुधानलित जठराग्नि लुभाये ॥
सह संकोच विप्र नरनाहा । मौनित कछु न कहा उछाहा ॥
बरबस प्रभुद्विज लखि संकोची । गाठरि कांख आपुकर मोची ॥
खोलिसुतंदुल अतिरुचि मानी । युगमुष्टिका भषे नृप ज्ञानी ॥
दो० तृतिय मुष्टिका लेतही रुक्मिणि कर गहि लीन ।

कृपासिंधु कस दान यह होत आपुही दीन ॥
उभय लोक प्रभुता किय दाना। तीसर देत कलेश महाना॥
कौन धाम बसिहो यदुराई। पाछे देहु कहाँ समुभाई॥
सम स्वभाव द्विजराज सुशीला। रागरहित त्यागी बर लीला॥
पाय विलोक विभवन उछाहा। जनु निस्प्रेही धन अनचाहा॥
लाभ हानि दुखसुखस्ट तोषा। पापपुण्य सम लखत अदोषा॥
अति अधिकार महाधनकेरा। केहि कारण भाकरिय निवेरा॥
भामिनि पर्म मित्र द्विज मोरा। महा गुणी भव बासन भोरा॥
मग्न सर्वदा मम पद नेहा। समुफत तन धन नारिन गेहा॥
दो० संसारिक सुख इंद्र सुद जानत तृण समनारि।
त्रिपुर दान के योग यह निजमन देखु विचारि॥
सो० कहि कहि विविध प्रसंग ज्ञान नीति तपसा मयी।
रुक्मिणि को भ्रम भंग करत भये यादव पती॥
बहुरि ब्रास भोजन विधिचारी। रुक्मिणि रचेउ देव सुदकारी॥
सुरुचि सुदामहिं कृष्ण जिमायो। ताम्बूल दै सेज विछायो॥
मगश्रम गलित गयउ द्विज सोई। सकल सुद्धि तन मन करलोई॥
भव कलहि बोलाय यदुनायक। शासन दयउ बचन बरलायक॥
हाटक भवन जटित रतनाई। रचो सुदामापुर सुखपाई॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि तहँ भरहू। बेगिहि तात विलंब न करहू॥
जग सुबस्तु कोउ रहे न थोरी। कांक्षा रहित होइ गुणधोरी॥
आयसु मानि चल्यो भवकारी। क्षणमहँ रच्येउ नगर श्रुतिधारी॥
दो० बन्दि चरण दै शोध पुनि निजस्थल गयउ नृपाल।
सुख सोवत बीती निशा जागेउ प्रातःकाल॥
उठि महिदेव शौच कृत कीन्हा। न्हाय भजन पूजन मन दीन्हा॥
नित्य क्रियाकरि गे हरिपासा। मांग्यो बिदा जीव धन आसा॥
प्रेममग्न प्रभु उतर न दयऊ। द्विज बंदन करि मारग लयऊ॥
पंथ विचारत इमि नरराई। यांच्यो धन न रही गुरुताई॥
जो मांगत सम्पति सह लोभा। हरि उर होत अधिक परिक्षोभा॥

मोह मग्न मोहिं जानि मुरारी। धन दै देते प्रीति बिसारी॥
आपुसमुझि कछु द्रव्य न दीन्ही। यह भलिबात संत प्रिय कीन्ही॥
जो ब्राह्मणी पूछि है आई। विविध प्रकार देब समुझाई॥
दो० आदर मान अपार विधि कीन्हो मम यदुराय।
दीन्ह द्रव्य जनु त्रिपुर की मुदित गयउँ हौं पाय॥
पुनि कछु समुझि दुसह दुखराजा। मनमाप्यो भूसुर सुख साजा॥
बहु बिचार निज हृदय उपाई। ग्राम निकट आयउ द्विजधाई॥
तहां न दीख भवन पुर सोई। अति आश्चर्य विप्र उर जोई॥
वासव पुर सम नगर निवासा। पुरवासी सुर द्विज मन त्रासा॥
अहह कमल सुतगति प्रतिकूला। एक विहाय द्वितिय दुख मूला॥
बिपति बश्य सबु जन्म गमायउँ। आनँद एक दिवसनहिं पायउँ॥
टूटधाम रह सोपि नशावा। केहि अघ प्रिया वियोग सहावा॥
तजौं काय विनु प्राणपियारी। पूछौंकाहि मिलै कहँ नारी॥
दो० क्लेश बलित गृह द्वारपर द्वारपाल तट जाय।
कहा कहौ कहि कर सदन बोल्यो चर शिरनाय॥
सो० राधाबल्लभ मीत नाम सुदामा विप्रवर।
प्रविशिय तात अभीत यह मंदिर तिनकर रुचिर॥
दूरिहिते लखि ब्राह्मणि धाई। बहु भूषण भूषित शुचिनाई॥
नख शिख लसत मनोहर बासा। मलित गंधितनु मुख विधुभासा॥
युत सहचरिन गहे पदराई। कर संपुटित कहा, मुसुकाई॥
नाथ ठाढ़ कहि लगि गृह द्वारे। अंतहपुरहि कस न पगधारे॥
जनि विस्मित हूजिय शुचिभाथा। बूझिय गुप्तदान यदुनाथा॥
आयसु विश्वकेता तुव पाछे। क्षणमहँ रच्यो निकेत सु आछे॥
कत छल करत नारि लखि भोरा। स्वर्ण सदन सम भाग्य न मोरा॥
करिदाया मम धाम वताइय। अपर प्रसंग न भूलि चलाइय॥
दो० बहुरि बुझाये कामिनी हरि प्रताप सद्भांति।
गयउ विप्र अंतर सदन बढ़ी बदन विधुकांति॥
महाविभव लखि हृदय सकाना। मन उदाम नृप मोदन माना॥

कृपापयोधि जगत नर नारी। लहि वैभव सब होत सुखारी॥
बिकलित नाथ भयउ केहि कारण। कहिय मनोरथ शोच निवारण॥
बड़ि ठगिनी मोहनि नरमाया। ठगि ठगि सकल जगत भरमाया॥
प्रभुअनकृपा बिदित प्रिय भयऊ। जेहि कारण अगणित धनदयऊ॥
यांचे बिनहिं द्रव्य प्रभुताई। अमित दीन्ह कवि सकत न गाई॥
दोष रहित प्रभु शोच बिसारिय। मम बासना स्वचित्त बिचारिय॥
निज इच्छा जो देइ कृपाला। सो लीजिय अनत्रास दयाला॥

दो० बोध भयउ सुनि प्रिय वचन तनमन उपज्यो मोद।
इन्द्र धनद पदवी नृपति लाजत बिभव यशोद॥
सुख सोवत नित हरि कृपा भजत सुमन यदुराय।
अस प्रतिपालक दास पद मूढ़ देत बिसराय॥

सो० पाठक श्रोता जोय यहि प्रसंग के भूपवर।
लहैं विविध सुख सोय जीवत अंत सुधामहरि॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांसुदामादारिद्रहरणवर्णनो
नामैकाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

दो० बित्त रहित परिवार जिमि वन बिहीन कासार।
फल बर्जित पादप यथा विश्वा बिनु भृंगार॥
नीति बिवर्जित नृपति जस कपट बलित निजमीत।
संन्यासी बैराग बिनु स्वर बिहून जनु गीत॥
कृपण द्रव्य धार्मिक कुमति ज्ञान चतुरई हीन।
संत शांति संतोष बिनु कर बिहीन करि दीन॥
सुभट अस्त्र बिनु नृप असत याचक गुणहि बिहाय।
यथा वृथा ये सब बिबुध बदत चतुर कबिराय॥
तथा जगत हरि भक्ति बिनु नर शरीर निहकाज।
यहि कारण मन मूढ़ तू ध्याउ चरण ब्रजराज॥

कुरुक्षेत्र जिमि यदुपति आये। सो प्रसंग सुनु सुरुचि सुभाये॥
एक समय हरि पर्व विचारा। युगल बंधु गे नृप दरबारा॥

करि जोहार मृदु बचन बखाना। सुनियमहीपति ज्ञाननिधाना॥
विपुल कालगा भूप सिराई। पूषण पर्ब परयो अब आई॥
करिय पर्ब कुरुक्षेत सोहावा। महासुकृत पाइय श्रुतिगावा॥
दान देइ जो तेहि थल कोई। सहस गुणा फल पावै सोई॥
सुनि प्रभु बचन पूछ यदुजाता। बड़ प्रभाव तीरथ विख्याता॥
सो केहिकारण भयउ दयाला। विस्तृतकथाकहिय यहिकाला॥
दो० ज्ञान ध्यान तप तेजमय मुनि जमदग्नि सुजान।
त्रिसुत तासुके जेठ तन परशुराम जग जान॥
सो० युत विराग तजु धाम परशुराम गुण ज्ञानमय।
तपसा हित परिणाम चित्रकूट निवसत भये॥
मृड पद जलज अंचल सोध्यावैं। द्वितिय वासना चितनहिंलावैं॥
मुनिवर नारि सहित तजिधामा। तपलगिवनहिं गये परिणामा॥
नाम रेणुका ऋषि वर नारी। पतिव्रता पति प्राणपियारी॥
सहसबाहु त्रिय भगिनी तासू। वैभव विपुल विदितजगजासू॥
चलिरेणुका सदन तेहि आई। दयो निमंत्र प्रमोद बढ़ाई॥
अमुक दिवस अनुजा रुचिमानी। ममनिकेत भोज्यो अगलानी॥
बिहँसिकहिसिभगिनिसुनिलीजै। कटक समेत निमंत्रण कीजै॥
नातरु चुपकि बैठि गृह रहहू। भूपन नेवतिय तपसिनिअहहू॥
दो० अति गलानियुत रेणुका गई भवन मन मारि।
लखि उदास मुनिवर कह्यो सारत कहि लगिनारि॥
कंत बात सुनि रोय बखाना। भगिनी कीन्ह मोर अपमाना॥
सकल प्रसंग पतिहि समुझावा। प्रियदुखनिरासिऋषयदुखपावा॥
बेगिनिमंत्र सहित कटकाई। स्वामिरजाय नेवति पुनिआई॥
हयहय प्रति त्रिय कहा प्रसंगा। बिहँस्यो बहुसुनि नृपमदरंगा॥
कत मतिहीन बिप्र अपमानिय। कहियकहाजाकरगतिजानिय॥
मुनि रिपुपाक सभा चलि गयऊ। बंदि चरण शुचिआसनदयऊ॥
कामधेनु दीजिय सुरराई। निवति जिमावौं हयहयजाई॥
बेगिहि देव देव पहुंचाई। सुनि वासव गोदीन्ह मँगाई॥

दो॰ लायधेनु राखी सदन बहुरिगये नृपपास।
चलि ससैन भोजन करिय यहमम चित्तहुलास॥
अगणित चमू संग नृपलाई। मुनिगृहगा उर शोच बढ़ाई॥
इच्छा भोजन सबहि जिमावा। लज्जितनृपउर अचरजआवा॥
कृत विचार निजमन भूपाला। सामग्री अगणित छहुंकाला॥
द्विजवर कहाँपाव विधि आजू। भाखि समोदित भयउ समाजू॥
कोउविभेद संक्षिप्त अपारा। भयउ न प्रगट शोच हियहारा॥
मांगि बिदा घर आतुर आई। पठवा महिसुर भेद बुझाई॥
कहिवल तापस निधन भिखारी। सबहि जिमायो अचरज भारी॥
यह कारण विस्तार समेता। बूझिय जाय ऋषीशनिकेता॥
दो॰ कहिये बहुरि बुझाय मोहिं पुनि हौं करौं उपाय।
देखि विप्र पुनि आइकह कामधेनुहै राय॥
तेहि प्रभाव तब कटक जिमावा। निश्चित समाचार हौं पावा॥
भूसुर बहुरि बसीठी जाहू। सबबिधि चतुरनिपुणतुमआहू॥
कामदुधा मांगत महिपाला। समुझायो भयभेद बिशाला॥
सहसा विप्र ऋपयतट आवा। सहसार्जुन सन्देश सुनावा॥
मोर न कामधेनु महिदेवा। देतेउँ नतरु मानि नृपसेवा॥
लायउँ मांगि ईश्ते काली। कहचाहतअनुचित भुजमाली॥
दै न सक्त हम कोटि उपाई। इलादेव बहु नृपहि बुझाई॥
कहिसि महीपहि मुनिवरबानी। सुनिसक्रोधभाजइअभिमानी॥
दो॰ विपुल सुभट पठये तुरत बरबस लाइय धेन।
खोलि सुरभिते लैचले मुनिवर हृदयकदेन॥
मारग रोकि ऋषय भाठाढ़ा। लखिअनीति उरक्रोधितगाढ़ा॥
सहसबाहु सुनि तेहि थल आई। ऋषिशिर असिकाट्योदुखदाई॥
कामदुधा भगि हरिपुर गयऊ। पतिबधसुनतप्रियहिदुखभयऊ॥
उर मर्दत कर करत बिलापा। कन्त समीप गई उरतापा॥
शिरध्वनि प्राण नाथ कहिटेरै। अकसर बिपिनदिशादश हेरै॥
रुदन शब्द सुनिचके दिगीशा। तप आमन चौंके ग्रातीशा॥

अंतरयामी बिदित बिचारी। जनक मरण लखिभये दुखारी॥
कलकुठार कर धनुशारंगा। प्रज्वलितक्रोधजलजप्रतिअंगा॥
दो० मृतक पितातट आयमुनि जननिहिं पूछ प्रसंग।
सकल बखान्यो रेणुका बाढ़्यो रोष अभंग॥
प्रथम शत्रु बध करिहौं भाई। जनकक्रिया पुनि करौं सुभाई॥
जो सुत पितुकर बैर न लेवै। पाँवर प्राण जीव जग सेवै॥
जलभव पितु शोणित समताही। जननीबदत नीतिअसआही॥
असभणि भूप सभा चलिगयऊ। सरुट बचन इमिभापत भयऊ॥
रेखल अबुध बेणुकुलभागी। हन्योजनकममकेहिहितलागी॥
करु परितोष समर महँ मोरा। शमन ग्राम आलय भातोरा॥
असकहि परशु प्रघोर सिधारा। तबहिं सहस भुज धनुशरधारा॥
मंड्यो संगर अति बिकराला। कौतुक लगे देव दिगपाला॥
दो० चारिदंड बीती भिरत कोपित ह्वै भृगुनाथ।
हरी बाहु बहु बाहुकी बहुरि निपात्यो माथ॥
गिरत महिप आई कटकाई। विविध अस्त्र मंडेउ रवताई॥
रोष बलित भृगुवर दल काटा। रण थल रुंड मुंड करि पाटा॥
घूमि जनक मृतु कर्म सम्हारा। अम्बहि बरणयो ज्ञान अपारा॥
शंभुयज्ञ पुनि तेहिथल ठाना। संतोपित भे सुर मुनि नाना॥
भयउ प्रसिद्ध क्षेत्र तब सोई। न्हात पर्व सुकृती नर जोई॥
व्रत मख दान न्हात फल ताता। लहतसहसगुणजगविख्याता॥
यह प्रसंग सुनि अखिल सिहाने। मृदु विनीत बच हरिहि बखाने॥
अब न बिलंब करिय गुणराशी। परशिक्षेत्रअघ दीजियनाशी॥
दो० उग्रसेन प्रति बर्यो प्रभु सुनु महीप चितलाइ।
क्षेत्र न्हान सबु पुर चलिहि को रहिहै रखवाइ॥
रक्षक करि अनिरुद्ध कुमारा। चलिय पर्व हित करिय न बारा॥
बोलि कुमार श्याम समुझावा। लघु बड़ पर्व हेत मन लावा॥
तात रहौ पुरकी रखवारी। रुचिरायसु मम हृदय विचारी॥
पालौ प्रजा देश द्विज गाई। आउब बेगिहि क्षेत्र नहाई॥

कोटि पर्व फल आयसु दाता। जाइय अवशि रहौं गृह ताता॥
सुतहि समर्पि राज्य प्रभुताई। पितु नृप हितु सोदर सँग लाई॥
युवती वृन्द शिविक असवारा। स्वयं सिद्धि कहि चले भुवारा॥
धर्मधुरीण अपर जन जोई। अक्लन संयुत गवने सोई॥

दो० पुर बाहर सब मिलि चले प्रभु रनिवास समेत।
बजत तूर्य्य भेरी विविध सबविधि शोभादेत॥
मारग में बीते घने दिवस कुरुप यदुराय।
सानँद मंगल क्षेत्रपर सम्यक पहुँचे जाय॥

पर्व समय नृप सकल नहाये। युत शुचिता श्रम दोष बहाये॥
इम कम्बोज जान नर जाना। भूषण वसन अस्त्र परिधाना॥
रत्न अन्न धन विविध प्रकारा। यथा शक्ति दीन्हो सविचारा॥
याचक दीन भूप सम भयउ। दारिद दुरित दान लहि गयऊ॥
निवसे तहँ त्रैलोक विभूषण। दास गदी बन जातक पूषण॥
प्रभु आगमन सुनत क्षितिपाला। कुरुक्षेत्र आये उत्ताल॥
सैन सहित शोभित सबभांती। भेटि हरिहि शीतल कियछाती॥
कुरु पांडव निज चमू समेता। प्रभुहि मिलन आये कुरु खेता॥

दो० गांधारी कुन्ती द्रुपदि भानासती समेत।
आनि मिली रनिवास कहँ दुहुँदिशिशोभादेत॥

कुंती श्री वसुदेव ढिग जाई। मिलि आरतमय गिरा सुनाई॥
सुनिय भ्रात हौं महा अभागी। दुखित रहत जेहि दिनसे मांगी॥
सुधि बिसरायो करि उद्वाहा। दया परिहर्‍यो यादव नाहा॥
भव सुखकरण श्याम बलरामा। अनुकंपा त्यागी वर कामा॥
भगिनी वचन दीनता साने। सुनि बोले वसुदेव सयाने॥
परवश जगत रच्यो अविनासी। काल कर्म डारी गल फांसी॥
प्रज्ञ अज्ञविधि लिपि नहिं जानत। वश मूढ़ता बृथा दुखमानत॥
हरिइच्छा सर्वविधि अविचारा। कंस वश्य दुख लहा अपारा॥

दो० नारायण आधीन जग कत तुम होत अधीर।
भजो सदा जनपाल पद मेटो बिषयक पीर॥

अनुजहि ज्ञान बुझाइ बहूता। सन्मानी कहि विविध प्रभूता॥
बहुरि सभा आये बसुदेवा। सेवत हरिहि जहां नरदेवा॥
दुर्योधन सबन्धु आसीना। सोहत धर्म सम्राट प्रवीना॥
अपर क्षोणिपति करत प्रशंसा। कहिजय जनमन मानमहंसा॥
उग्रसेन कर अधिक बड़ाई। करत महीप शोच बिसराई॥
बड़भागी सुकृती तुम राजा। दरशत सदा चरण व्रजराजा॥
संचित पाछिल कृत अघनाशा। सकलसौख्यमहिमाजसभासा॥
शिव विरंचि मघवादिक जोई। खोजत चरण कमल रजसोई॥
दो० सोपावत तुम सहजही प्रभुरचत चित चाहि।
यशी प्रतापी सुकृतमय तुम सम दूसर नाहि॥
मुनि योगीश यती गुणखानी। जासु भेद कोउ सकत न जानी॥
सो प्रभु नित तव आज्ञाकारी। धन्य तपस क्षितिपाल तुम्हारी॥
त्रिपुर ईश पूरण पद जोई। बंदत तुमहिं प्रात उठिसोई॥
ज्ञानराशि मद रहित महीपा। सुनत प्रशंसा कृष्ण समीपा॥
निज निज रुचि नृप करत बड़ाई। वरवर सुद्धि दई अस भाई॥
नन्दादिक ब्रज लोग समूहा। न्हात क्षेत्र दै दान प्रभूहा॥
न्हाय नंद उपनंद सुभाये। हरि बसुदेव निकट चलिआये॥
उठि बसुदेव सुहृद उर लावा। मृतक प्राण सम आनँद पावा॥
दो० मणिगत हरि लहि फणिधप कामि कामना पाय।
युगलमित्र तिमि मुदितभे बोले यादवराय॥
तात कुशल कुल बंधु समेता। मिल्यो बहुतदिनग तहितसेता॥
जेहिविधि राम श्याम कहँ पाला। यदुपतिपाछिल वंशहिवाला॥
बड़ उपकार सखातुम कीन्हा। प्रतिफलनिपुरनमप्रभुदिन्हीन्हा॥
सुनि बसुदेव बचन नँदराई। बोले चक्षुमेघ स्रवाई॥
गदगद कंठ दीनता बानी। कोहम धन्य सखा बिज्ञानी॥
पापराशि हैं हरि चरण बिसारे। पूरण पुण्य प्रताप तुम्हारे॥
हरि हलधर यशुदा पदवन्दे। मातु बिलोकि पर्म आनन्दे॥
नन्दहि करि प्रणाम पुनि राई। मिले सखन कहँ मोद बढ़ाई॥

दो० गोपीगण आये तहां हरिमुख चंद निहारि।
नैन चकोरन सुख दयो पूरब पुण्य बिचारि॥
यशुदा नन्द गोप सहवामा। प्रभुहिंबिलोक्योसबहिंअकामा॥
मुख अनूप पायो मुसुकाई। ममगति उपमा सकल न गाई॥
सबहि अशक्त नेह प्रभुजानी। मोह बिनाशक गिरा बखानी॥
भक्ति मोर उर धरैं जो ज्ञानी। भवदधि पारलहैं सो प्रानी॥
मन बच क्रम मम कस्यो सनेहा। जीत्यो तदपि न संशय एहा॥
शिव अज तुमसमनहिंबड़भागी। तनमनधनअर्प्योमोहिंलागी॥
ध्यान बस्यो नहिं मुनि मन माहीं। सो तुम सँग मैं रह त्रिविधाहीं॥
अलख अरूप निगम मोहिं गावै। सब के उर पुर बास लखावै।
दो० पंचतत्त्व जिमि देह में तिमिहौं थिर चर माहिं।
ब्रह्मजानि बंधो सबन दुबिधा दुख कछु नाहिं॥
नीति वदत प्रभुदास कह प्रतिपालत छहुकाल।
मंगल जानिकि परिहरिय हरिपद सुखदबिशाल॥
इतिश्रीमद्विविधाकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णबलरामकुरुक्षेत्रगमन
बर्णनोनामद्व्यष्टाशीतितमोऽध्यायः ८२॥
दो० क्षर अक्षर लघु थूलपुनि सगुण अगुण प्रभु एक।
विचरत निज माया विवश विभु ब्रह्मांड अनेक॥
आतप दिवस नशात ज्यौं पूषण नाश विहीन।
बहुरि होत बासर विभुव आतप हरि आधीन॥
तथा तीनि पुर ब्रह्म महँ नाशि मिलत भ्रम हीन।
प्रगटत वाके अंशवश बरणत वेद प्रवीन॥
अलख अगोचर अकथ अज माया रहित मुकुंद।
कृष्णरूप प्रगट्यो जगत जगहित दया समुंद॥
तेहि ध्याये बिनु सर्वथा हानि चारिहू ओर।
मन मूरख सुनि सीखमजु हरि यह कर्तब तोर॥
मनिगण अर्णव निकृष्णज्ञाता। कह्यो महीपहि प्रफुलित गाता।

जिमि द्रुपदी पूछ्यो रुक्मिमानी । कह प्रसंग रुक्मिणी बखानी ॥
सो चरित्र सुनु भरत नरेशा । श्रवणित कटै कराल कलेशा ॥
एक दिवस कुरु पांडव नारी । प्रभु वामांगिन पास सिधारी ॥
मिलि आसीन पूछि कुशलाई । हरियश कल बरण्यो शुचिभाई ॥
चरचा वढ़त व्याह परसंगा । चल्यो रसाधि सुनौ अलभंगा ॥
कह द्रुपदी रुक्मिणिहि सुवानी । निजविवाहगतिकहियबखानी ॥
महाभाग्य भा उदित हमारा । तब भेट्यो वसुदेव कुमारा ॥
दो० पितुवर यांच्यो श्याम कहँ वंधु रुक्म मति हीन ।
तिलक कस्यो शिशुपाल शिर सुनतभई दुधिदीन ॥
सजि बरात भव भूप बोलाई । व्याहनहित आयो दिनपाई ॥
सो सुधिलहि मम जीव सशंका । सुमिस्यो मन हरिपद कंजपंका ॥
पक्षिराज यक बोलि सुभाई । हरिढिग पत्र दयो पठवाई ॥
अखिल बिनयमय सोहर पाती । सजनीजनदुख शशमृगघाती ॥
द्विजवर प्रभुहि देइ सँगलावा । आगम कहि मोहिं धीर धरावा ॥
व्याह दिवस पितु आयसु मानी । पूजन गौरि गइउँ सुनि रानी ॥
खल दल चहुँदिशि रक्षक भयऊ । यह सुधि पायश्यामतहँगयऊ ॥
निपट निशंक सकल दल फारी । मम समीप आये बनवारी ॥
दो० गहिकर रथ धरिलै चले सुनि धाई जड़व्यूह ।
समर मंहि जीत्यो भगहि अरि क्षयकरन समूह ॥
आइ द्वारका कस्यो बिवाहा । यथा वेद वरस्यो उत्साहा ॥
मम पितु दायज दयो अपारा । क्रिमिणाहाँ प्रसंग बिस्तारा ॥
पुनि सतिभामा व्याह बखाना । जामवन्त उद्वाह सुजाना ॥
कालिंद्री कर वद उत्साहा । भद्रा व्याह भयो नरनाहा ॥
सत्या मिलन बखान वहोरी । सुनु सखोद भूपति गुण घोरी ॥
बहुरि मित्रविंदा सुख भाषा । व्याह लक्ष्मणा बर्ग्यो अमापा ॥
अपरज कृष्ण प्रिया बहुताई । सबकर कथा कही सुनराई ॥
सुनि द्रौपदी मुदित मन राजा । पूछे आन विविधविधि साजा ॥
दो० सबहि भेटि निज वास नृप गईं कुरु पांडव नारि ।

मंगल भजु यदुनाथपद दुविधा दोष बिसारि ॥
इतिश्रीमद्विविधकलिकल्मषध्वंसकरादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांबंगीतवर्णनोनाम
त्रैअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

दो० दूत प्रेरणा वश भ्रमत जीव अनेक कुभाव।
बार बार नरकहि लहत सुथल कौन विधि पाव॥
जो देखा नहिं बुध बदत सो ताहत मन नीच।
समुझि लेह निज ध्यान में भूल भँवर भव बीच॥
सखिर अथिर क्यों होत तू ब्रह्म अंश शुचि रूप।
निज आतम में लीनरहु यह विज्ञान अनूप॥
शिक्षा गुरु श्रुति शीश धरि प्रचरिय दृढ़ता साथ।
मोक्ष मोद ह्वै ओर है सहित मनोहर गाथ॥
आराधत राधावरहि होत सुकृत की खानि।
जानि बूझि क्यों जगतमहँ खोजत मन बिषयानि॥
सूर किरण मुनि वचन उचारा। नृप अज्ञान तिमिर परिहारा॥
भ्रम दुर्भाव भ्रम श्रुति नाशा। मोह निशाकर हरयो प्रकाशा॥
ज्ञान सुमति फूले कज कोका। आयो आतप सुयश सुलोका॥
मोह निशागत जगे विवेकी। काम क्रोध तस्कर गति छेकी॥
उभय बंधु नृप यादव जाता। सोहत सभा सुरुचि सुखताता॥
देश देश के अपर भुआला। बैठ सभा तन तेज बिशाला॥
तेहि अवसर हरि दर्शन आसा। सुनि वशिष्ठ आये दुर्वासा॥
विश्वामित्र पराशर ज्ञानी। भरद्वाज भृगुवर सुर ध्यानी॥
दो० मारकण्डेय पुलस्त्य मुनि युत नारद नरराय।
सहस अठासी ऋष्य वर आवत भे तेहिठाय॥
आवत सुनिगण भूपति जानी। उठे सभासद सब विज्ञानी॥
अभिवंदन करि किय आसीना। आशिष जैतिलहीं अघहीना॥
सबके चरण कृपानिधि धोये। पादोदक लीन्हो भ्रम खोये॥
सकल सभाशिर पदजल मेला। मुदित नरेश भये तेहिबेला॥

पुनि श्रुतिवत पूजे मुनिराई। जोरि हांथ इमि गिरा सुनाई॥
अकथ भाग्य मम कस्यो प्रकाशा। जेहिवश दरशलहे अघनाशा॥
संत दरश धौं न्हान त्रिबेनी। अभिमतप्रद हरिधाम निसेनी॥
जेहि निज नैन दोष बिसराई। देखे संत चरण मुनिराई॥
दो० खोय पाप रुज तेहि मनौं पाई त्रिपुर बिभूति।
महिमा पद रज बिदितभव सुधि बुधिज्ञान प्रसूति॥
प्रभु बिनती कृत सवछल हीना। हृदय बिचारत ऋषय प्रवीना॥
आदि अनंत ज्योति तिहुधामा। त्रिसुरत्रिगुणमयअजहरिवामा॥
सो प्रभुता तजि दास बड़ाई। करत कहिय उत्तर कह भाई॥
निज जन महिमा कृत बिस्तारा। बरबस भुलवत नर अवतारा॥
बरु बिषान जामै हय शीशा। अवैअनलशशि हिमदिवसीशा॥
तदपि न मृषा होय हरि बानी। माया अगम अपार बखानी॥
उठि देवर्षि प्रमोद बढ़ाई। मृदुल मनोहर गिरा सुनाई॥
सुनौ सभासद मुनि महिपाला। हरिमाया अजान गुण काला॥
दो० बिरचत कमलज बपुष बनि पालत है द्विजकेत।
रुद्ररूप नाशत जगत पूरण शक्ति समेत॥
मन गोतीत अलख अविनाशी। चिदानंद विज्ञान विलाशी॥
योनि रहित इच्छा वपुधारी। बेदनीति कहिगिरा विचारी॥
इनकी कृपा हृदय असज्ञाना। प्रगट सुनौनरपति मुनिनाना॥
जनरंजन भंजन खल जूहा। करण प्रचार सुधर्म्म समूहा॥
निरमानत भव विविध शरीरा। पूत चरित कृत हरिजर पीरा॥
इमि नारद वहुविनय बखानी। चाह्यो गवन करन मुनिज्ञानी॥
तब बसुदेव जोरिकर भाषा। मुनिवरममउरअसअभिलाषा॥
नरतन लहि किमि कर्म पसारा। जीवत छूटै ऋषि गुण वारा॥
दो० असउपाय कोउ बदिय मुनि कर्म पाश छुटिजाय।
नारद बोले वचनवर समय सोहावन पाय॥
सुनौ सभासद मम बर बानी। हरिमाया दुस्तर श्रुति गानी॥
बिजयी त्रिपुर न जीत्यो कोई। प्रभु इच्छा अपार गो गोई॥

सुनि बसुदेव बचन मुनिजूहा। कह्यो न अचरजश्रुतिमग्रूहा॥
निकट निवास प्रभाव न जानत। कल्पित बहु बिचार उरआनत॥
जिमिसुपर्व सरितीर निवासी। न्हात कूपजल ज्ञान प्रनासी॥
जलज सुगंधि शिलीमुखजोहत। बहुयोजन चलि ताकहँटोहत॥
जलचर बिबिध संगनित रहहीं। शुचिसुगंधितै कतहुँन लहहीं॥
मणि गुणहारि मोती दरिनागा। जानि न सक्त करतअनुरागा॥
दो० सीप न जानत गुलिक गति एण सुगंधि प्रधान।
तिमि यादवगण भ्रमितमति हरिमहिमा नहिंजान॥
जिनकर नाम कोटि भवहारी। बिदितत्रिलोकश्यामअसुरारी॥
तिनके चरण त्यागि जगमाहीं। मुक्ति पदारथ दूसरनाहीं॥
पुनि नारद बसुदेव बुझाये। सुनौ वेदबद बदौं उपाये॥
जपतप व्रतमख शुभगति दाता। करत बिपुलजन जगबिख्याता॥
करौ यज्ञ यहिथल चित लाई। सामग्री समस्त मँगवाई॥
कह बसुदेव यज्ञ करवाइय। दुबिधा दोष सकल बहिराइय॥
मखशाला रचि देवी रेखी। आन कर्म सब किये बिशेखी॥
सतिय आय बसुदेव बिराजे। बन्दि मुनिन मख काजसाजे॥
दो० भूपति सेवक ऋषय गण लगे सुमख के काज।
वेद वाक्य पढ़ि मुनिवरन आरंभ्यो नरराज॥
बिबिध मंत्रपढ़ि आहुति देहीं। देव सदेह भाग सबलेहीं॥
मख प्रारंभ जानि सुरनाका। छाये किन्नर आदि बराका॥
बहुनिसान हनि जै ध्वनि करहीं। शुक्लकर्म्म लखि उरमुदभरहीं॥
अरु वर्षावत पुहुप सुमाला। छहुँदिशिप्रमुदितसबतेहिकाला॥
इत मंगलाचार कृत नारी। मागध सूत भिक्षु जयकारी॥
परिपूर्ण्यो मख बिघ्न बिहाई। पूरण आहुति दयउ सोहाई॥
सालंकृत कीन्हे द्विज बृंदा। यदुपति उरअतिबढ़्यो अनंदा॥
आशिष सुमनपढ़्यो मुनिरायो। नृप पुनि नरनायक पहिरायो॥
दो० याचकगण कहँ धनदयो जनु मयूर धनतोष।
बहुरि जिमायो सबहि नृप भोजन छरसअदोष॥

नरपति अखिल विदा लै गयऊ। जीवन सुफल सबनिकरभयऊ॥
नारदादि मुनि सकल सिधाये। नंद सहेत बहुरि चलिआये॥
आरत दशा कहत बन नाहीं। करुणादिदिशिअभितमनमाहीं॥
गोपी गण अतिआरत ठाढ़े। उत यदुजात शोच उरबाढ़े॥
जो जेहिभाव बदत सो सोई। चहत बियोग न दुहुँदिशिकोई॥
नंदहिं हरि बलराम बुझावा। मोह प्रबलता सकल मिटावा॥
वस्त्राभूषण शुभ पहिराई। अगणित द्रव्य दयो सुतराई॥
पठवा नंदहि स्वन समेता। कछु दिन आपुरहे कुरुखेता॥

दो० न्हायचले प्रभु द्वारकहि सब कहँ संग लगाय।
मंगल मंगलमय गली काटि पहुँचे जाय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायां वसुदेवयज्ञवर्णनोनाम
चतुरष्टाशीतितमोऽध्यायः ८४॥

दो० यह मनचोर लबार ठग अधम अलीन अलाज।
करिय न याकर कहा बुध लखि परिणाम अकाज॥
शुभवासी शुचि जीव है दुर्वासी मनजातु।
जीवाज्ञा कीजिय सुचित मन आयसु परिमातु॥
काहूविधि वश होत नहिं मन गति अधिक समीर।
योग और वैराग्य सों याहि धरत मति धीर॥
सब इंद्रिन को भूपमन साधत सब सिधि जाय।
नतरु वासना उरवसी लै जाइहि वहि ठाय॥
मनहिं रोकि निज वशकरै ध्यावै राधानाथ।
मुक्ति लहै संशय नहीं वदत वेद यह गाथ॥

मुनिवर कहा सुनिय नरराई। युगल बंधु यक दिन सुखपाई॥
पितु गृह जातभये रुचि मानी। उठे देखि वसुदेव सुज्ञानी॥
नारद वचो अहा कुरुखेता। सुमिरि सोबात उठे नृपकेता॥
द्वौ करजोरि कहा शिरनाई। अलख अगोचर तुम यदुराई॥
अविनाशी कमलापति स्वामी। देवदेव तव चरण नमामी॥

अगुण सगुण प्रभु ज्योति सरूपा। शशि दिनकरतुलवत अनरूपा॥
पंचतत्व निज अंश उपाये। विविध लोक माया निरमाये॥
अनुपम अकथ ईश तव माया। विधि हर काहू पार न पाया॥
दो० सुर नर मुनि तिर यग त्रिपुर माया केहि न भुलाव।
कारण सूक्षम थूल बपु तुम यक यादवराव॥
तव महिमा कर मर्म गोसाईं। वेद नेति कह कहत सकाईं॥
अरि हितु रहित सदा सम भाऊ। पितु सुत सोदर मातु न काऊ॥
केवल प्रीति प्रतीतिक नाता। मानत सर्व जन जन त्राता॥
अचला भार हरण तन धारा। यश सुखमद जन जग बिस्तारा॥
अगणित पतित किये निस्तारा। वेद प्रभुत्व प्रसिद्ध पुकारा॥
मोपर कृपा कृपा अनुकूला। करि निस्तार करो जन तूला॥
जरा मरण बंधन मिटि जाई। गाऊं तव यश मोद बढ़ाई॥
कत पितु सेवक करत बड़ाई। अनुचित उचित इधा चतुराई॥
दो० भगवति गति तिहुँ काल में सब विधि अहै अपार।
अबतक भयउ न जगत कोउ जो करि सक निरधार॥
घट घट ज्योति ब्रह्म परकासा। लखि न परत तेहि निर्गुण भासा॥
कारक हारक पालक सोई। है प्रभु अवद अगोचर जोई॥
प्रतितन लिशालिश बिचारा। पद्मिनि दल जल कत निर्धारा॥
मुख अभास दर्पण महँ देखी। मिलितरहितकरमकेविशेखी॥
भू अकाश जल अग्नि समीरा। पंचतत्व मय अखिल शरीरा॥
तिन के मध्य अंश भगवाना। जीव नाम कहि प्रगट बखाना॥
बंधन मुक्ति होतयँ काकी। कुमति सुमति मय मेधाजाकी॥
नहिं प्रतिबिंब सुकृत अघकारी। आपु आपु जगरहा पसारी॥
दो० प्रभुमुख वचन महीप सुनि मौनगही बसुदेव।
वंदिपितहि पुनि जात भे मातासन नरदेव॥
देखि मुखारबिंद महतारी। मुदित भई भूपति बिधिचारी॥
हृदय लगाय सुखद बैठारा। पुनि अंबा इमिवचन उचारा॥
क्लेश विवर्जित सौख्य निकाया। है सदन सनिय यदराया॥

एक विधुर उरदारुण मोरे। कहिय वेगि परिहरिय न भोरे॥
बन्धु व्यकारवधे तुवकंसा। उपजे प्रथम हमारे अंसा॥
बिसरतते न मोहिं दिन काहू। दिवस निशा उर अंतर दाहू॥
धरोधीर जननी मुनिबानी। सकसुत बेगि मिलावैं आनी॥
धमवदिगे पाताल सुरारी। प्रभुआगमसुनिविलिगुणधारी॥
दो० धाय मिल्यो दंडवत करि विनती विविध प्रकार।
निज मंदिर आनीन करि पूजाद्रव्य व्यकार॥
चरणामृत लिय पाद प्रक्षाली। सबविधि संतोष्यो वनमाली॥
मांग्यो सहविहसि रजाई। आगम हेत कहिय यदुराई॥
प्रथम सुनो इतिहास पुराना। कृतयुग महँ बिज्ञान निधाना॥
नाम मरीची मुनिवर वादी। सतवका हरिजन अविषादी॥
ब्रह्मचार निरत मन बानी। उरना तासुप्रिया गुणखानी॥
षटसुत तासु रूप सफरीशा। तरुणबुद्धिमय जनजगदीशा॥
गये प्रजापति तट दिन एका। हँसेनिनहिं करिवह अविवेका॥
नख शिख कोप व्याप तनतासू। दीन्हो शाप भूप तेहि आसू॥
दो० असुर होहु तुम जाइ खल कपट रूप अज्ञान।
हँस्यो हमहिं अनरवाच्यहिं अब न तात कल्यान॥
सुमत शाप कम्पित भे सोई। बुधिबल विपुल चातुरी खोई॥
सुमय विनय युत गिरा बखानी। क्षमो हमार दोष शुचिज्ञानी॥
यौवनरूप अङ्ग धनपाई। खोवत विविध भांति चतुराई॥
है अधीर पदतल सब परेऊ। हृदय प्रजापति दाया भरेऊ॥
मृषा न होइहि शाप हमारा। बहुप्रकार करि दील विचारा॥
मोक्ष उपाय वदिय जन जानी। बहुरि प्रजापति गिराबखानी॥
दूसर जन्म कर्म्म वशपाई। दशहि कृष्ण पदमोचहु भाई॥
तन परिहरि शापित मुनिजाता। हिरण्यकशिपु पुत्र भे ताता॥
दो० जन्मे पुनि वसुदेव गृह निधने कंस मँगाइ।
मरतगहे माया सकल यहि थल राखे आइ॥
मम जननिहि तिनकर दुखभारी। बिधुरत दिवसरैनि व्रतधारी॥

यहिहितहीं आयउँ तुव द्वारा। बेगि दीजिये बन्धु ब्यकारा॥
विहँसि बिरोचनसुत सुतलावा। सौंपे हरिहि मोट डुमावा॥
अगणित धन दीन्हो उपहारा। बंधुन सहित चले तेहि बारा॥
मातहि दियेपुत्र सब आई। निरखितिनहिं सुखमादोभाई॥
समाचार पुरवासिन पाये। कौतुक लागितिथाजनधाये॥
देवकिदुख तिनकर बड़शापा। नस्योसमयतेहिरयामप्रतापा॥
पुर आनंद छयो दिशिचारी। बदतनिकर जयजयबसुरारी॥
दो० श्रम प्रभुजन डुलहरण जो सूरुज तेहि बिसराय।
विषय वासना में रमत मंगल भक्षुचित लाय॥
इतिश्रीमद्विविधकलिकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांदेवकीमृतकपुत्रयाचनो
नामपंचाशाशीतितमोऽध्यायः ८५॥
दो० जौन वस्तु प्रिय होत अति तेहि राखत युतनेह।
प्राणनाथ यदुनाथ पद नहिं सेवत नर देह॥
कोल श्वान खग काक लौ पोच शुद्ध ममजानि।
नरतनविनु यदुपति भजन अशुचि बदैं प्रणजानि॥
केवल स्वारथ ध्यान लगि मनुज रचे करतार।
मोह क्रोधमय मूढ़ नर किमि हवैं निरधार॥
पछितावैं गे शमन पुर मानी कामी क्रूर।
जे न भजत यादवपतिहिं गहे मोह तरु मूर॥
सीस मनोहर अघहरण सुखप्रद गुरुजन देत।
शुद्धस्मृति करि हृष्ट मन सकल ताहि सुनि लेत॥
जिमि अर्जुन हरावते आये। हयो सुभद्रहि मोह बढ़ाये॥
अरु जिमि मिथिला रहें मुरारी। कथासो रुचिर कहौं बिस्तारी॥
चितदे सुनो नृपति सुख रूपा। सब प्रकार तुव बुद्धि अनूपा॥
प्रभु अनुजा देवकि की जाई। नाम सुभद्रा विदित बड़ाई॥
रूपवती रति कोटि लजावनि। अंग अंग प्रति नारि सुहावनि॥
भई विवाह योग जब वाला। वसुदेवहि भा शोच विशाला॥

यदुबंशी सुत युगल बोलाई। अभिमत वचन बह्यो मृतुताई॥
सुताभई अब योग विवाहा। केहि दीजिय असको नरनाहा॥
दो० कह हलधर पितु नीति यह व्याह बैर युत नेह।
कीजिय सदा समान सँग परम धर्म्म है एह॥
दुर्योधनहिं दीजिये वाला। विदित राज अधिराज भुवाला॥
कीरति विमल सहित गुरुताई। यह विवाह सब विधि समताई॥
हरिकह दुहिता पंथहि दीजिय। लोकसुलोकसकलविधिलीजिय॥
मौन भये सब हलधर बानी। भाई सबहि जो श्याम बखानी॥
लघु बड़ कहा पंथ जयकारी। व्याहकरौ सुनि विनय हमारी॥
सम्मत सुनि माथे बलरामा। उठिगे तुरत त्यागि सो धामा॥
रोषित रामहिं लोग निहारी। मष्टभये नहिं गिरा उचारी॥
समाचार सुनि पांडव जाया। संन्यासीवत रूप बनाया॥
दो० दंड कमंडलु मृग त्वचा पुस्तक कांख दबाय।
सुथल बैठ द्वारावती शुभ मृगछाल बिछाय॥
चारिमास पावसऋतु काटी। योग यतन प्रगटी परिपाटी॥
हरि बिनु भेद न जान्यो कोऊ। पहिचान्यो कहि सका न सोऊ॥
सेवहिं सकलअतिथि अनुमानी। परमभक्त जानैं बड़ ज्ञानी॥
केहिन भुलावत ठग निज काजी। वहु प्रपंच कौतुक गति साजी॥
प्रभुजान्यो पै कहा न काऊ। चीन्हिसकल भुलयो प्रभुनाऊ॥
एक दिवस मूसलधर राजा। भवन गये लै भोजन काजा॥
भोजन करत पंथ मन लाई। इतउत निरखत दृष्टि दुराई॥
सहसा चितये दूसरि ओरा। लख्यो सुभद्रहि यों चितचोरा॥
दो० विधुबदनी छवि निरखते इन्द्रीपति मन मोह।
उपज्यो काम महान नृप उरमा संगम कोह॥
रहित निमेष स्वरूप निहारा। निजमन कीन्हे विविध विचारा॥
अहह दैव किमि यह तियपाऊं। किंतु प्रमाद नृपनातिजि जाऊं॥
उतहि सुभद्रा मोहित होई। कख्यो विचार नेह उर गोई॥
भूपति क्रांति न है संन्यासी। उत्तम ठाम सुधाम विलासी॥

कर्म प्रबल जेहि बश तन त्यागा। बच्यस तपसभाव मन लागा॥
उठि यर्कात गृह बैठी बाला। मिलहि पंथयहशोच विशाला॥
गुडाकेश भोजन करि राई। निज आसन आयो दुचिताई॥
बहु चिंता कृत बुधिबल खोई। धीरज तासु हृदय नहिं होई॥
दो० घने दिवस बीते नृपति परयो पर्ब शिवराति।
हर अर्चन बाहर नगर गेजन नानाजाति॥
तहां सुभद्रा संग सहेली। रथ चढ़ि गवनी भूप सकेली॥
समाचार सुनि अर्जुन धायो। कर गांडीव वाण चलि आयो॥
मंदिर बाहर बीर प्रबीरा। ठाढ़ रह्यो त्रिय हेत सधीरा॥
पूजि हरिहि हरि भगिनी आई। देखि समोह भयउ कुरुराई॥
ताजि संकोच शोच गहि बांहा। रथहि चढ़ायत भा नरनाहा॥
गजपुर मग लीन्हो धनुधारी। खबरिगई यह नगर मझारी॥
सुनि सकोध भे राम अपारा। निज आयुध लै कांधे धारा॥
अरुण चक्षु भृकुटी करि बांकी। ररद शब्द गरजे रिपु ताकी॥
दो० बलकन भे रुट बलित है कहा असंभव काज।
ममभगिनी प्रीतम हरी भिक्षुक कुलको लाज॥
बर्षो अखिल संन्यासी जाई। जुरे जगत रथ देउँ नशाई॥
क्षोणिप योग सुता विधुरूपा। हेरसि भिखारी अधन अरूपा॥
बलकत रामहि भूप निहारी। प्रद्युम्न अनिरुध साम्ब सुधारी॥
अपर प्रतिष्ठित यादव आये। जोरि हाथ मृदुवचन सुनाये॥
आयसु हमहिं देहु हलपानी। गहिअरिहि बेगिदिखावहिआनी॥
समर चाउ हमरे उरभारी। सुनत चले हल मूसल धारी॥
तेहि अवसर आये घनश्यामा। नानाविधि समुझायो रामा॥
भिक्षुक नहिं अर्जुन हरिमागा। परिहरिक्रोध करिय अनुरागा॥
दो० शूरसेन दुहिता तनय कुरुकुल विदित सुजान।
इषुधीपति अरु मीतमम करयो कर्म अज्ञान॥
सोहत समर न काहु प्रकारा। परम धर्म नहिं तात हमारा॥
यदपि सुहृद अनुचित कृत कराई। प्रीतम तासु दोष परिहरई॥

धर्म वेद मत ज्ञान विरुद्धा। गुड़ाकेश सँग ठानत युद्धा॥
प्रीति प्रतीति नशाइ हमारी। तात हृदय निज देखु विचारी॥
प्रभुमुख वचन सुनत दुखपात्रा। मन उदास अधशीश नवात्रा॥
बहुरि सरोष वचन वद राई। यह समस्त तुम्हरी भ्रमताई॥
जारि भवन खोजे जल जाई। बड़ मूढ़ता नहैं चतुराई॥
जो आपनि पति खोवै कोई। वधै अवशि तेहि पंडित सोई॥

दो० तव सम्मत भगिनी हरी अर्जुन तपसी भेश।
नत समरथ का तासुकी चापि न सकत सुरेश॥

कोपि धरामंडलिहि निपातौं। तुव अरि अमर राजहू घातौं॥
करि न सकत कछुतव प्रतिकूला। तीनिभुवन शाखा तरु मूला॥
असबदि मौन गही सगलानी। वैठिरहे प्रभु आयसु जानी॥
उत बासव सुत निज पुर जाई। श्रुतिवत व्याहकर्यो दिनपाई॥
समाचार सुनि दिवस बिवाहा। पटभूषण हयगण गजगाहा॥
दायज मिसहरि नगर पठाये। भये समोद पांडुसुत पाये॥
दुहुंदिशि प्रीति भाव नृप भयऊ। पाछिल दोष शोक सबुगयऊ॥
अपर प्रसंग सुनौ नृप ज्ञानी। कहौंतुमहिं भलिभांतिवखानी॥

दो० परम भक्त सुत देव युत भव प्रसिद्ध बहुलास।
यक भूपति यक विप्रवर मिथिला तिनको वास॥

परम सनेह विचारि कृपाला। रथचढ़िमिथिलहिंचलेसुकाला॥
तिरहुति गवन सुनत मुनिराई। नारदादि आये मुद पाई॥
मिलि सप्रेम प्रभुसाथ सिधाये। नाना नगर देश चलि आये॥
जेहि प्रदेश आवत असुरारी। मिलत महीपति तहां अगारी॥
पूजि भेटदै पाप दुराई। जात सदन जीवन फलपाई॥
यहि प्रकार वहु दिवस विताई। मिथिला निकट पहूंचे जाई॥
हरि आगम सुनि उभयतेधाये। कृतअभिलाष जीवगुनिनाये॥
महा अधम हम जग विख्याता। देइ दरशधौं विधिजनत्राता॥

दो० कृपारूप मंगल करण जन दुख हरण त्रिकाल।
आये निजजन जानि प्रभु धन्यवरण विधिभाल॥

रूप त्रिभंगी देखि सिहाने। पदतल परे दंड अनुमाने॥
कर परस्यो शिर शारँग पानी। कहा भक्त तुम द्वौ बड़ज्ञानी॥
चरणरेणु किय तिलक खिलारा। जीवनमुक्त भये तेहिबारा॥
सुनौ नाथ हम पतित पुरानी। कुमतीकूर कुटिल अभिमानी॥
पावन कस्यो दरशदै स्वामी। जरा मरण छूटा द्विजगामी॥
उभय चहहि हमरे घर रहई। पै न प्रसिद्ध मनोरथ कहई॥
मुनि मंडलिहि बंदिद्वौ फूले। गृह धन राज बिषय रसभूले॥
अंतरयामी क्षितितन धारी। युगल सदन निवसे बनवारी॥
दो० बहुत दिवस रहि ज्ञानदै बिदाभये यदुराय।
मुनि गण पठये पंथते बहुप्रकार समुझाय॥
गये द्वारकहि कृष्णजी दासन देइ बड़ाय।
मंगल अस जनपालकहँ सूददेत बिसराय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासविरचितायांसुभद्राहरणश्रीकृष्णमिथिलागमनवर्णनोनाम षष्ठाष्टशीतितमोऽध्यायः ८६॥

दो० मोद बढ़त जिमिजीवँ कहँ ज्ञानी गुणी मिलाप।
बुद्धि प्रतोषित होत तिमि कृष्ण नामके जाप॥
अंधनैन लहि चतुर जस मूक सुवाणी पाय।
नृपता लहि नर रंक पुनि साधक साधन भाय॥
ज्ञानी पूरण पदलहै ध्यानी पाय सुदेव।
कामी पावत कामना नामी पदवी सेव॥
सूरजकर लागि कोक जिमि सदा प्रमोदित होत।
जन्म पाय लहि भक्ति तस मेधाकरत उदोत॥
महा मूढ़ते जगत महँ जे न भक्ति रसलीन।
अंत शमनपुर दुष्टमति दंड पाइहैं पीन॥
जोरि युगलकर भूप बखाना। सुनियमुनीश्वरज्ञाननिधाना॥
प्रथम बखो मुनिवर बरबानी। बेद विनय हरिकेरि बखानी॥
सो प्रसंग जन जानि बखानिय। ममसन्देहबिविधविधिमानिय॥

सुनौ सथिरमन तजि दुचिताई । कहौं कथासो आनँद पाई ॥
प्राण बुद्धि मन इंद्रिय धर्मा । अर्थ काम मोक्षादिक कर्मा ॥
सबकर रचनहार है जोई । निर्गुण ब्रह्म कहावत सोई ॥
जब ब्रह्मांड रचत रुचि मानी । सगुण होत तब सोदर ज्ञानी ॥
अगुण सगुण यहि कारणएका । कवि पंडित श्रुति करतविवेका ॥
दो० जौन प्रश्न तुम भूप किय नर नारायण पास ।
सो नारद मुनि समय यक पूछचो सदढ़ अत्रास ॥
कहौं सो कथा भेद भ्रम त्यागी । जानि सत्य तुम कहँअनुरागी ॥
सत्य लोक मुनि वृंद समेता । तप कृत नर नारायण चेता ॥
तहँ देवर्षिबार यक गयऊ । मिलि सभीतपूछत असभयऊ ॥
अकल अनीह ब्रह्म अविनासी । चिदानंद घट घट प्रतिवासी ॥
बेद बखान बिनय किमि तासू । समुझाइय भ्रमलहै बिनासू ॥
सुनु बराक मुनि संशय हीना । यथा प्रश्न तुम कस्यो प्रवीना ॥
सप्त ऋषय जन लोक निवाशा । यह सन्देह सुनिन परकाशा ॥
सबहि सनंदन कहि समुझावा । मोह प्रबलता सकल मिटावा ॥
दो० कह नारद प्रभु बसतहौं सदा काल जन लोक ।

जय सत्य चित आनंद पूरण पुरुष जय स्वनिवाशकं ॥
जय शरण रक्षक ज्योति माया नाथजय समर्थी धरे ।
जय त्रिपुर कारक हरण पालक पर्म विभु पूरण हरे ।
चैतन्यहै पुनि जगत बिरंचिय जीव बंदि बिनाशही ।
श्रुति प्रबल माया नाथ तुव दंव्यो सबहि गसि पासही ।
माया रहित शुचि जीव है तवरूप प्रभु पहिंचानहीं ।
तजि मोह द्रोह बिचार उत्तम सुयश बरतव गानहीं ।
अज्ञान वश माया परे तिहुँकाल बिदित कहा कहैं ।
माया प्रमोचत तुमहिं चीन्हें बहुरि निज पदवी लहैं ।
तुव रहितको सामरथ जीते अजित माया गुण मई ।
जाके हृदय जलजात निवसौ मुक्ति जनुताकहँ दई ॥
कल ज्ञान रूप बिलास सज्जन मोक्ष पद दायक बदा ।
दोषित सबहि संभव अभावहि प्रगट यह कौतुक सदा ।
उपजैं नशैं तव अंशते पुनि तुमहिं माँझ समात हैं ।
महिते यथा चहुं खानितन तेहि माहिं पुनरपि जातहैं ॥
सो० पूजे कोनौ देव जनु अर्चत प्रभु पद कमल ।
बिदित नाथ यहि भेव जिमि पूषण बहुरूपके ॥
ज्ञान दृष्टि निरखत चतुराशा । गत द्विभाव प्रभु एक प्रकाशा ॥
निविड़ अपार प्रमोहन माया । जीतिन सकत त्रिपुर धरिकाया ॥
सतरज तमरचि त्रिगुण बनावौ । तीनि देव बनि काम चलावौ ॥
निरमानव पालव लयकारा । यह समस्त माया उपचारा ॥
माया मर्म जान नहिं काहू । तुमहिं बिहाय तत्पदी ताहू ॥
बिन न भा माया कर कोई । अहै न नाथ अगारिज होई ॥
जीवहिं उचित भजे पद तोरे । देह सनेह सो तृण सम तोरे ॥
ध्यावत लहै मुक्ति कल्याना । अपरबिधिबिनती किय नाना ॥
दो० सुनु नारद कहि यह कथा ऋषय सनंदन धीर ।
निकर प्रबोधे नाशिभ्रम पन्नग बचन अहीर ।
अरण्योऋषिहिसबनसुनिबानी । तनमन बचन प्रीति उर आनी ॥

कौतुक मुनिसुनि चरित सुहावा। वहु प्रमोद भूपति वर पावा॥
मिट्यो मोह दुविधा द्विजराई। नर नारायण विनयो भाई॥
क्षोणिप यह प्रसंग जो सुनई। परिहरि अशुचिभाव जो गुनई॥
भक्ति मुक्ति विनु संशय पावै। त्रिविध कर्म बंधनहि वहावै॥
वेदस्तुति मुनिवर जो गाई। नारायण नारदहि सुनाई॥
नारद भयो व्यास मुनि पासा। दासजानि मुनिकह्यो प्रकासा॥
सोहौं तुमहिं नरेश बखानी। आरोहण हरिपुर सुख खानी॥

दो० जप तप व्रत मष दान फल यह प्रसंग दातार।
मंगल पूरण ब्रह्म जो सोई कृष्ण अवतार॥
हरिहि भजे तजि दुर्मतिहि इंद्रीमन वश लाय।
अभिमत फल जीवत लहै अंत मोक्ष है जाय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विपान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांवेदस्तुतिवर्णनोनाम
सप्ताष्टाशीतितमोऽध्यायः ८७॥

दो० बहुत अंत मिलिमत कियो गज पहिंचानन लागि।
धाय छुयो तन नाग कर विविधठाम अनुरागि॥
सूर्पभीति अति सर्परद सुंडि स्तम्भ नमान।
परसि बतावत बादमय गलित मूढ़ अभिमान॥
तथा पंथ बहु जगतके हरिहि बखानत सांच।
पैनहिं सूझत कोटि विधि नाचत माया नाच॥
एक गहै दृढ़ता सहित परिहरि पंथ द्वितीय।
मुक्ति लहै दुविधा तजै तोषित होवैजीय॥
समुझि यहै निज जीवहौं ध्यावत राधानाथ।
को घरघर भरमत फिरै अहित पसारै हाथ॥

प्रभुगति अकथ भूप तिहुंकाला। कहतबनतनहिंचरितविशाला॥
हरिहर रीति सदा बिपरीती। दारिदि होइ करै जो प्रीती॥
सो दृढ़ता लगि दंड दिखावैं। पुनि निजधाम सुघरबिनशावैं॥
आन देव पूजक नर जोई। धनी गुणी जन मंडन सोई॥

जेहिते भूलहि जीव अपारा। त्यागें ध्यावेंन चारि प्रकारा॥
सम्पतिसुख विषयक अघदाई। हरिहर चरण प्रीति गतिगाई॥
शिव केशव विधि एक समाना। समुभौ प्रकट कर्म जो नाना॥
हरि कमलापति अंतरयामी। विमलाकंत शंभु सुरध्यानी॥
दो० बेंदी मस्तक भाल शशि वनमाला शिरमाल।
भूषितयादव बाम शुचि विदित तीनि षटकाल॥
चक्रपाणि जनरंजन श्यामा। हस्त त्रिशूलविदित गुणग्रामा॥
धरणीधर नारायण जानिय। सुरसरिधरण शंभुअनुमानिय॥
मुरलीनाद लोक सुखदाई। शृंगी शब्द हरण जड़ताई॥
सुखद लोक बैकुण्ठ निवासा। बसत सदा शिवगिरि कैलासा॥
जास्यो काल जन्म यदुराई। मृत्युंजय दिय भ्रमन जराई॥
हरि ग्वालन संग कीन्ह बिहारा। जटी भूतगण, विविध प्रकारा॥
प्रभु चर्चत निजतन पाटीरा। रुद्र विमर्दत भूति शरीरा॥
वस्त्र पीत आच्छादित श्यामा। कृशपति त्वच धारे शुभधामा॥
दो० हरिपाठक नृप निगमके आगमपाठक रुद्र।
पालक संहारक विदित दोनों ज्ञान समुद्र॥
मोरमुकट कचजूटशिर असुर बिनाशकजोइ।
यज्ञसूत्र अहिकंधर अंतरयामी सोइ॥
पक्षिराज बाहन असुरारी। नन्दीगण कामारि सवारी॥
अपर निधान विविध परिधाना। नृपतुल्वता करिय किमिगाना॥
उभय जीवतारक भगवाना। सेइय जाहि सत्य मनमाना॥
एक काल की रुचिर कहानी। धर्मराज प्रति श्याम बखानी॥
कुंतिज जेहिपर हौं अनुकूला। दारिद ताहिदेत दुखशूला॥
सो कारन यह अहै नरेशा। मीतन भिन्न देश परदेशा॥
सोदर पुत्र कलत्र सुजाती। मात तात भगिनी युतनाती॥
दारिद लखि सब जात पराई। जीव विराग गहत तबधाई॥
दो० उपजतही बैरागके मोह अनी नशिजात।
मोह बिना शत शुद्धमति मोहिं अनुरागतजात॥

भजन प्रताप गहत निरवाना। विषय गलित भूपति धनश्राना॥
सुनौ परीक्षित तुम बड़ ज्ञानी। आन देव पूजत जेप्रानी॥
ते अभिमत फलपावत अहईं। मुक्ति न कोटि जन्म लगि लहईं॥
एक चरित्र अपर सुनु भूपा। कहौं तोहिं इतिहास अनूपा॥
शंकर प्रकट तीनिपुर भोला। तिनकर चरित सुनौ अनमोला॥
कश्यप तनय वृकासुर नामा। तपहित चल्यो त्यागि वरधामा॥
मारग मिले देवऋषि ताही। कस्यो दंडवत भाग्य सराही॥
जोरि युगल कर विनय सुनाई। दीन गिरा पूछ्यो नरराई॥
दो० अज हरि हर तिहुं देव में शीघ्रदानि वर कौन।
जानिदास करुणायतन मोहिं कहिय किनतौन॥
ध्यावैं ताहि कर्म मन वानी। इच्छित वर पावौं मुनि ज्ञानी॥
आरत जानि मुनीश सुजाना। कहा रुद्रसम दानि न आना॥
आशुतोष भव विदित प्रमाना। रीझत थोरेहि तप जगजाना॥
सहस्रबाहु हर तप किय जाई। दीन सहस्र भुजा बलदाई॥
सहजहिं क्रोधि नाथ तेहि कीन्हा। प्रगट प्रसंग कथान प्रवीन्हा॥
इमि बुझाय सुरपुर मुनि गयऊ। खल आसीन तपसथल भयऊ॥
शिव प्रसन्न हित यज्ञ पसारा। निजशिरपल कर हवनप्रचारा॥
सुरदिन बीते नृप कृत एही। अष्टम दिवस भयउ सन्देही॥
दो० शिर अरपौं ईशान हित असमन कस्यो विचार।
ह्वै प्रसन्न प्रगटित गहा करतेहि हर नेहिवार॥
कतशिर हरत असुर पतिप्यानी। तोषित हौं वर मांगु सुवानी॥
गंगाधरहि बिलोकि सुरारी। पस्यो चरण तल दशा बिसारी॥
पुनि सचेति कर जोरिबखाना। सुनियकृपानिधि हर भगवाना॥
जोजन जानि प्रसीदति स्वामी। यह वर दीजिय अंतरयामी॥
धरौं जासु शिरकर गिरिराई। भस्म नाथ ततच्छण ह्वै जाई॥
विनु बिचार वृषभध्वज भाषा। मम प्रताप पूरै अभिलाषा॥
शाप अबूझ देव वर दाना। दायक ब्यापक नहिं कल्याना॥
कामी कुटिल असुर महिपाला। हरशिर करधर चह तेहिकाला॥

दो० तासु मनोरथ बूभिकृ्ड बिस्मित चले पराय।
पृष्ठि लग्न धावतभयो त्रिपुधराष्ट्र कुराय॥
जेहिथल शंकर जात पलाई। जात तहां पाछे जड़राई॥
तीनि धाम बिकलित भव धाये। पुर बैकुण्ठ भयातुर आये॥
क्षोशित बिमलावरहि निहारी। बिप्ररूप धारचो असुरारी॥
खल सन्मुख आये तेहि बारा। बिहसि मनोहर बचन उचारा॥
बीर ब्रती तुम खलपति अहहू। इंदत तपहि अर्थ निजकहहू॥
सकल भेद कहि असुर बुझावा। बचें शंभु सो करिय बनावा॥
अस बिचारि कल गिरा सुनाई। क्त मूरखता करो मति पाई॥
बड़ आश्चर्य मोहि भा आजू। ज्ञानी तुम भूल्यो गुण साजू॥
दो० बेष दिगंबर बावला बिष भक्षी तप कारि।
तासु बचन हढ़ होइ किमि निज मनलेहु बिचारि॥
जोपै समर्थ होत यह भाई। कत भिक्षाटन करत सुभाई॥
तन बिभूति मर्दित अहि हारा। बेष भयानक अशुचि व्यकारा॥
भूत प्रेत संग बसत मशाना। करत कौन हर बचन प्रमाना॥
नहिं पतियाहु त करो परीक्षा। मानि असुरपतिमम बर शिक्षा॥
निज शिर धरो हस्त भ्रम जाई। सत्यहोइ तो परै लखाई॥
हरि माया भ्रजहरिहि भ्रमावै। भ्रपरजीव तेहि कस तरिजावै॥
माया बिवश सुनत प्रभुबानी। धरयो आपु शिरकर अज्ञानी॥
तुरत भस्म तेहियल भा सोई। जयसुर बदत चरित यह जोई॥
दो० मोक्ष पदारथ तेहि दयो निज थल गे ईशान।
धन्य कृष्ण मुनिजन बदत कृपाराशि भगवान॥
सो० जो यह सुनै प्रसंग मनसा वाचा कर्मणा।
तासु होइ भ्रव भंग मंगल कृष्ण प्रतापसों॥
इतिश्री.मद्विविधकलिकलिपान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांवृकासुरमोक्षवर्णनो
नामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८॥
दो० अभय रहैं हरि भजें नित समय पापकी ओर।

तेज्ञानी संसार महं नतर अबुध मतिभोर ॥
विषय भोगकी वासना भक्ति वासना दूरि ।
अमृत पीवत मूढ़ मति त्यागि सजीवन मूरि ॥
अमर पदारथ कर लगै अमरनाथ पद जोपि ।
बिनु ध्याये राधारमण बृथा जानिये सोपि ॥
सर्बकाल दृढ़ता सहित काम मोह बिसराय ।
जोगावै श्रीकृष्ण यश तेहिसम नहिं सुरराय ॥
निष्प्रेही जे जगत महं आतमवित् गुणरूप ।
तेपिभजत मम स्वामि पद उत्तमतत्व अनूप ॥
भूप मुकुटमणि अवसर एका । वाणीसरितट ऋषिसविवेका ॥
बैठ करहिं चर्चाबहु भाई । कोउ मुनिकहासबहिंशिरनाई ॥
कमलजात हरि गंगाधारी । त्रिसुर प्रसिद्ध जान नरनारी ॥
को बड़ लघुजानिय केहिभांती । निजमतिसमवरणियमुनिज्ञाती ॥
अज बड़ बदत चतुर मुनिकोई । शारँगपाणि भणत भ्रमखोई ॥
सादर शंकर कहैं कोउ गावै । एकौ बात न सत्य दृढ़ावै ॥
भयो काहु असनृप तेहिबारा । मंत्र एक हम नीक बिचारा ॥
जाइ परीक्षा कोउ मुनि करई । लघु बड़ कहै जानिजोपरई ॥
दो० सत्य कहैं ताजि पक्ष मति तौ मानौ सतिभाय ।
सम्मत करिपठवा भृगुहिजेहिते मोह नशाय ॥
मुनिवर प्रथम ब्रह्मपुर गयऊ । मौनित सभा विराजित भयऊ ॥
अनुचित कीन्हा त्यागि प्रणामा । परिक्रमा विनती अभिरामा ॥
सुतहि बिलोकि अजहि रिसव्यापी । अनाचार शठता मेधापी ॥
शापित कीन्ह चहा तेहि बारा । पुत्रनेह नहिं शाप उचारा ॥
सतगुण रहित रजोगुण लीना । भृगुनिजपितहिज्ञानमतिचीना ॥
तजि अजधाम गयउ कैलासा । जहां उमा शिव करत बिलासा ॥
हर अविदूरि उपस्थित भयऊ । आशिर्वाद प्रणाम न कयऊ ॥
मुनिहिं देखि मृड उठि हरषाई । चाहा मिलन सुकंठ लगाई ॥
दो० शंकर दुकर पसार जब बैठि गयउ तब सोय ।

हास्य जानि कोपित भये शशिधर द्दुविधा भोय ॥
तासु निधन लगि लीन त्रिशूला। निजमनउमा कहा प्रभु भूला ॥
करिविनती पद नीरज लागी। विप्र न बधिय अवध अनुरागी ॥
पुनितुव अनुज बाल वय नाथा। कत अबूझकरि बिहरियमाथा ॥
शिशुताचूक साधुजन त्यागैं। बरुअपमान करैं नहिंलागैं ॥
भव बुझाय साधे हिमिजाया। भृगु शंकरहिं तमोमय पाया ॥
परिहरिगिरि कैलास ऋषीशा। गरुड़ध्वजतट गयउ महीशा ॥
हरिमणि जटित सेज मय फेना। सोवत तेहि प्रभुभूपसुखेना ॥
रमा बामदिशि शोच बिहाई। हरिउर चरण हना मुनिजाई ॥
दो० कठिन घात पद उर लगी जागि परे असुरारि।
भृगुहिदेखि तजिसेज हरिकह्यो बिविध मनुहारि ॥
मुनिवर चरण चूमि धनु पानी। चापन लगेसकल मदभानी ॥
पुनि वर गिरा कहेउ मुनि सुनहू। मम अपराधक्षमौजनिगुणहू ॥
हृदय मोर अति कुलिश कठोरा। कोमल चरण ऋषय वर तोरा ॥
बिनजाने ममउर पद घाला। सहेउदंड बिनु काज बिशाला ॥
तजौ दोष निजमन परितोषी। ज्ञान निधान सुजन संतोषी ॥
सुनि प्रभुबचन बिनयमुनिकीना। जानि भेद निजमारगलीना ॥
मुनि मंडलिहि सपदि चलिआये। सरस्वती बरकूल सोहाये ॥
सब प्रसंग कहि ऋषिन सुनावा। सुनत मोह भ्रम विपुल नशावा ॥
दो० अज राजस हर तमगुणी बूझयो विविध प्रकार।
सत्य सतोमय विष्णु हैं लघुवड़ करौ विचार ॥
सो० मोह भूल विध्वंसि जानि परम पददा हरिहिं।
मुनिगण विविध प्रशंसि भक्ति अनूपम उरधरी ॥
अंतर चरित श्रवण अब करहू। प्रभुमहिमा उदार उर धरहू ॥
उग्रसेन कृत राज सनीती। सेवक राम श्याम श्रुतिरीती ॥
प्रजा पाल धर्म्मिष्ट महीशा। शिवदधीचि हरिचंद सरीशा ॥
परिजन पुरजन निरत स्वधर्मा। कृतविधान निगमागमकर्मा ॥
ज्ञानी गुणी धनी मद हीना। नारद शुक्र घनद पद क्षीना ॥

द्विज वर एक द्वारिका बासी। धार्मिक शीलवान गुणरासी॥
विधिबश तासु तनय मृतुपाई। सुनुमरण ललिद्विजअकुलाई॥
मृतक पुत्र नृप द्वारहिंलावा। आरत वलित कोपमनछावा॥
दो० उग्रसेन प्रति कटुवचौ धर्म रहित अन्याय।
दुष्कर्मी लोभी अघी प्रगट अहौ नृपराय॥
तुम्हरे कर्म प्रजा दुख पावै। कपट धर्म सब भुवन कहावै॥
शिशु मम सुवउ पापतव भूपा। मोहिं प्रचारयो विनु नृप कूपा॥
इमि बहुव्यंग नृपहि सो भाखी। गयउ भवन मृत सुत तहँराखी॥
यहि प्रकार बालक वसुवाके। मुये समस्त नयन मृतु ताके॥
क्रम क्रम राजद्वार धरि आवा। भूसुर धीरवान भ्रम छावा॥
नवम सुत जन्मा गृह तासू। ग्रस्यो मृत्यु देखिजन बाथासू॥
तव महिदेव अधीरज भयऊ। विलपत सभा माँझ चलि गयऊ॥
घोर शब्द करि करत बिलापा। निंदित गत उर दारुण तापा॥
दो० प्रभुहि हेरि महिदेव कह धृक महीप अघखानि।
सेवक प्रजहि बहोरि धृक बसहि देश तेहि जानि॥
धृक धृक विविध भाँति पुनि मोही। वसत नगरनृप पातकिजोही॥
जो करतेउं प्रथमें पुरुयागा। तौन मरत सुत अहौं अभागा॥
समरथ सकल भाँति यदुराई। पैन भयउ दुख काल सहाई॥
रोदत वदत विपुल द्विज सोई। उतरनदेत सभासद कोई॥
सबहि अवाक देखि धनुधारी। विकलितकहद्विजद्युतिनिहारी॥
वक्त निरर्थ विप्र केहि काजा। सुनत सभासदनहिंपुनिराजा॥
धनुपति प्रजापाल कोउ नाहीं। कत खेदित हूजिय मनमाहीं॥
गुरु द्विज गो हरिजन रखवाई। करत प्रभुति जेहि भूप सुहाई॥
दो० वीरवती दाया मयी सोन देखियत विप्र।
जाहु भवन निश्चित तुम मम आयसु सुनि छिप्र॥
अबपुनि प्रसव काल जबहोई। ममढिग आयउ संशयखोई॥
सहसाहौं चलिहौं तव संगा। हरिताप करिहौं मृतुभंगा॥
अर्जुन बचन सुनत द्विज कोपा। कोहसि मनुज अबुधि भ्रमगोपा॥

बलहरि अतन अनिरुद्ध बिहाई। अपर सखासद को असभाई॥
निजबल विजय काल करि लेई। जीवदान मम सुनुहिं देई॥
अभिमत वासव तनय बखाना। इला सुरषे न मोहिं पहिचाना॥
धनंजय हौं पांडु कुमारा। जगजीत सुयश विदित संसारा॥
करौं प्रतिज्ञा इमि वर बानी। मृत्यु जीति तव हरौं गलानी॥
दो० जोन बचावौं कालतो सुनो सत्य द्विजराय।
मृतक सूनु जे सकल तुव अवशि मिलावौं आय॥
सो० बृथाहोत प्रणतात गांडीव धनु सहित हौं।
प्रविशि धनंजय गात तजौं जाउं पुनि नरक महँ॥
प्रण सुनि तोषित गा निजधामा। प्रसवकाल आवा परिणामा॥
गुडाकेश धनुलयो बिलोकी। चलेउ करन महिसुरहि अशोकी॥
असुग पंजरा तेहि गृह लायो। असजहँ पवन प्रवेश न पायो॥
संधानित कर चापनगसा। चहुँदिगसदन फिरै भ्रमसांचा॥
अत्युपचार बुद्धि सजि ठाना। विजयपालप्रभुगतिहिं भुलाना॥
उपज्यो मृतक पुत्र सुखराई। चल्योपंथ निज हृदय लजाई॥
मनमलीन मुख कांति हुराई। बैठेउ कृष्ण निकट शिर नाई॥
जानि मर्म कछु कहन मुरारी। प्रभुकृतज्ञ निज जन मदहारी॥
दो० तेहि पाछे आवत भयउ रोदत बदत सुवेद।
वासव सुतहि बिलोकि तेहि कहे बचन कटु एद॥
रेरेमीरु कूर बकवादी। धृकजीवन तव करसि विषादी॥
अधम नपुंसक बिप्र विरोधी। कहि असत्य तव मोहिं प्रबोधी॥
जोन समर्थ रहे मृतु जीता। तौप्रण कतवलकरयो अभीता॥
क्षत्री धर्म रहित अब भयऊ। सुखदरशाय अयशजगलयऊ॥
सत्य प्रतिज्ञा चहत जोकीना। द्रुपद भ्रणकस पुरहन लीना॥
मृतक पुत्र मम देह मंगाई। अब सुलोक लागि करिय उपाई॥
महागलानि ग्रसित भगराई। लुब्धतनसती कामि जनुभाई॥
कर इषुधीशर कटि तूणीरा। गयउ शमनपुर कुंजिज धीरा॥
दो० देखतही हसिनु उठि बिनय जोरि कर कीन्ह।

स्वागत पूछि समोद पुनि भूप सुआसन दीन्ह ॥

केहिकारणआगमनवखानिय । अनुरागमनिकचित्तअनुमानिय ॥
हेत बखानि कहा हरिमीता । महिपध्वज सुनि भाष सप्रीता ॥
बालक इहां तात नहिं आये । नत देत्यों मन मोदबढ़ाये ॥
विस्मित दुखित तजेजिय आसा । चला बिहाय दंडप्रद वासा ॥
निजगति सरिस खोजबहुधामा । पै न मिले सुत भ्रम बसु यामा ॥
द्वारावति पछिताय निदाना । आयो सुमिरत पद भगवाना ॥
दारु चिता रचि पावक लाई । जरन लाग बैठ्यो हरि ध्याई ॥
गर्व रहित प्रभुदास निहारी । तेहि थल तब आये बनवारी ॥

दो० बिहसि हाथ गहि प्रभुभणेउ सखा तजौ कत प्राण ।
प्रण तुम्हार पूरण करौं अवशि गहौ धनु बाण ॥

यान मँगाइ चढ़े पथ साथा । खोजन सुवन चले यदुनाथा ॥
प्राची दिशि लंघे निधि साता । लोकालोक कुधर विख्याता ॥
तासु निकट जब गये मुरारी । तज्यो स्वयान पंथ अघहारी ॥
गुफा भयानक निपट अँधेरी । प्रविशत शक्ति न सुरपति केरी ॥
कोटिभानुवत चक्र प्रकाशू । अग्रागमन करत तमनाशू ॥
तेहि पाछे अर्जुन हरिजाहीं । भ्रमित अत्राम शंक उरनाहीं ॥
मूँदि नैन पुनि प्रविशे नीरा । पुर अनन्त पहुंचे सुनु धीरा ॥
तहां करत अहिनाथ विलासा । मणिमय धाम सूरछवित्रासा ॥
नैन खोलि देखा वर गेहा । त्रिपुरभवन नहिंकोउसमनेहा ॥
शेष शीश सिंहासन सोहर । तेहिपर पूरण पुरुष मनोहर ॥
मेघवरण विधुमुख अकलंका । जलज नैन धनु स्रूपंका ॥
अनुपम नासा रुचिर कपोला । शिर किरीटमणि जड़ित अमोला ॥

दो० श्रुति विचित्र चितचोर शुचि राजत कुंडल लोल ।
भुज प्रलंब उर विस्तरित गल मणि माल अमोल ॥
नखद्युति भानु अनेक सम उन्नत कंध विशाल ।

कंबु कण्ठ उपवीत जनु त्रिसुर निवास नृपाल।
सुंदर उदर बिराज त्रिरेखा। केहरि कटि किमि कहिय बिशेखा॥
पद उपमा नहिं मम मन भासी। श्रमित पतितगण पापमनासी॥
पीत बसन आच्छादित राई। बिघुद्रास कि सुरसरि गाई॥
रूप मोहनी धारण कीन्हे। सोहत कृपासिंधु जन चीन्हे॥
अज हर बासवादि सुर सेवें। तन धारण फल जीवत लेवें॥
अज बिलोकि चकृत मग भयऊ। श्यामरूप दूसर निरमयऊ॥
परे दंड इव अर्जुन श्यामा। कीन्हआठगतिसुबिधिप्रणामा॥
स्वारथ कृष्ण कहा सब गाई। सुनि बालक दिये तुरत मँगाई॥

दो० अर्जुन उर संदेह लखि शेष शयन भगवान।
श्रीमुख इमि बरणत भये गिरा सुबेद प्रमान॥

तुम विविकाय अंश मम अहहू। चितविचारि निज संशयदहहू॥
भारहरण महिमा अवतारा। मम दासन सुखदेन अपारा॥
सो तुम असुर अखिल संहारे। किये दासभव सकल सुखारे॥
मंदारक मुनिभये अत्रासा। जाहु भवन पूजीतव आसा॥
बंदि चरण हरि आयसु पाई। पथ हरि चले शिशुन सँगलाई॥
आय द्वारका द्विज सुत दीन्हे। दुख अघताशु दूरि प्रभुकीन्हे॥
पुर मंगल छायो चहुँ पासा। त्रिविध नारिनर लहा सुपासा॥
जोयह चरित सुनै चितलाई। पुत्र शोक तेहि होइ न भाई॥

दो० इमि राखत प्रणदासकर मदनशाय यदुराय।
मंगल मूरख मोहमय ताहि देत बिसराय॥

इतिश्री मद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांद्विजकुमारागमनो
नामनवाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८६॥

दो० जिनकी मुक्ति न कोटि बिधि परे बिषय दधि मूढ़।

पारजात ते सरलगति हरिपश त्राण अरूढ़॥
पहिचान्यो जान्यो सुन्यो गान्यो मान्यो नीक।
जग असार बड़ भार है हरि गुण गानव ठीक॥
परसि परतनहिं मोह मय ज्ञान नैन बिनु सोय।
पारस अंधा खोटमणि कहत बुद्धि निज खोय॥
गुरु दयाल पद उर धरे मारग सेवे तासु।
मंगल मत मुनिजन बदत मुक्तिलहै अनयासु॥
मुक्ति विपुल सिपयानकी मुक्ति मुक्ति है एक।
ध्यावै हरि परि हरि कपट तन मन सहित विवेक॥

पुरी द्वारका श्याम बिराजैं। नव वसु चतुराशा नृप भ्राजैं॥
प्रति गृह बित्त यक्षपति तूला। नरनारी गण मंगल मूला॥
बसनाभूषण भूषित रहईं। नवश्रृंगार वेष नव गहईं॥
पुर वीथिका अमल बर सोहैं। चरचित गँधि देव मन मोहैं॥
रुचिर बजार न बरणि सिराई। जहं छाई त्रिलोक प्रभुताई॥
देश देशके वणिक अपारा। क्रय विक्रय कृत वस्तु बजारा॥
नगरकुतूहल किमि कहिजाई। बहु लीला कृत लोग लुगाई॥
जहंतहं विप्र वेद ध्वनि करहीं। पाप समूह अघिनकर हरहीं॥

दो॰ यदपिन पापी नगर कोउ प्रभुदरशन परसाद।
तदपि वेद संचित हरत गावत कवि मनुजाद॥

घरघर आगम पाठ पुराना। प्रभुगुण जन गावैंकल गाना॥
बाहन विविध देखि मन लोभैं। स्थगज तुरी पुवाहन शोभैं॥
रथी महारथि हय रय स्वामी। शूर बीर रावत भट नामी॥
भीर भूप दरबार अपारा। को कवि बरणि करै निरधारा॥
मागध सूत वंदि जन गावैं। अन्न बस्त्र धन हाटक पावैं॥
न्याय न्याय मय पक्ष बिहाई। उग्रसेन कृत हरि मतपाई॥
किमि प्रभुता सब कहौं बखानी। माया ब्रह्म बास अनुमानी॥
धनि यदुभूप हरण दुख दीना। आन चरित मनु चतुर प्रवीना॥

दो० पुर भूपति गृह विभव अस हरि त्रिय गणके संग।
बिलसत नानारूप धरि विरचित अमित सुरंग॥

प्रेमासक्त त्रिया कहुं सोई। प्रभुहि सिंगारहि संशय खोई॥
कतहूं श्याम मिलित अनुरागा। आभूषहिं प्रमदान सरागा॥
बहु प्रकार क्रीड़ा अरु लीला। अकथकरहिं यदुनाथ सुशीला॥
एक समय निशि में जनपाला। करत विहार संग त्रिय जाला॥
हरिकौतुक लखि विपुल वराका। यानारूढ़ित सोहहिं नाका॥
वीण पखावज झांर बजावैं। तूर्य्य निशानश्याम यश गावैं॥
जिन देखा यह चरित अलोका। प्रफुलित भये यथादिन कोका॥
करतकिलोल मनहिं असभावा। जलक्रीड़ाअबकरिय स्वभावा॥

दो० प्रियन साथलै दीन हितु गये सरोवर पास।
सब रसलीला बहुरची अभय दीख सुरदास॥

सरतट दिशि चकई पतिहीना। सारत भाषत गिरा मदीना॥
तासु शब्द सुनिकह यक नारी। पिय वियोग तैं निपट दुखारी॥
कसन कंत सेवै मनवानी। जसहमस्वामि चेरिजगजानी॥
कोउ त्रिय कहत हेरि जलरासी। क्यों रत्नाकर रहत उदासी॥
अह निशि थिरता गहंतन ताता। कासु वियोग कष्टतव गाता॥
दूसरि कहतन जानत आली। भुवन रतनगत भयउ विहाली॥
लखि निशिभानुवदतकोउवाला। दधिसुत राजरोगसोहि शाला॥
घटत बढ़त जेहि वशनित अहहू। तन मन मलिनन धीरज गहहू॥

दो० प्राणनाथ मुखदेखिवा गति मति तज्यो क्षपीश।
जसहम प्रेमासक्तहैं विहसी नारि क्षितीश॥

कोकिल पर्वत मेघ समीरा। सब कहँ हंसहिं युवति वरवीरा॥
करि कौतूहल धाम बिराजे। काम कोटि लखि रूपहि लाजे॥
यहि प्रकार त्रिय सेवा करहीं। वांछित फल उर मोदहि भरहीं॥

षोडश सहस अष्टशत नारी। जो प्रथमैं बरणी बिस्तारी॥
सबके दश दश तनय सोहाये। वीर ब्रती धर्मज्ञ कहाये॥
अरु सबके घर यक यक कन्या। रूप शील गुण मय शुचिधन्या॥
अगणित नृप तिनकी संताना। नहिं समर्थ जो करौं बखाना॥
तीनि कोटि अरु सहस अठासी। यक शतपाठ शाल परकाशी॥

दो० पढ़त तहां संतान सब आगम निगम पुरान।
यहि प्रमाण पाठक विविध किमिहौं करौं बखान॥
एक एकते अधिक है रूप शील गुणमाहिं।
यशी प्रतापी विभव मय केहिसन गाय सिराहिं॥

छं० केहिविधिबरणिगुणकहौं भूपतिश्यामगति अविचारहै।
यहदशम हरियश सुचिन भयेउ पापगणक्षयकार है॥
कह ब्रज.चरित द्वारावती नर नारिजे कोउ गाइ हैं।
अनयास कृष्ण प्रतापते मनि मुक्ति करतल लाइहैं॥
द्विज क्षत्रधारी वैश्य पुनि सहशूद्र जो चित लाइकै।
हरिचरित गानै कलुष भानै लहै हरिपुर धाइकै॥
तप दानमष व्रततीर्थ फल निजहस्त सहजहि सोकरैं।
मिटिजाय दुख उत्पति मरणक्यों जठरजननी पगधरैं॥
निज बुद्धिसम हौं दशमबरणी सहज रिपु बैरहि तजो।
यदुनाथ चरित उदारमन गुणि रैनि दिन चितदै भजो॥
मैं मूढ़ हीन कुजाति विद्या हीन यह भाषा रची।
तजिदोषकविताजानिगतिकविसुजनहरियशमतिपची॥
संसार यह दधि अगमहै बिनु तरणि को पारै लहै।
गुरु वाक्य केवट नावहरियश वाट चढ़ि पारहि गहै॥
कायस्थ हौं लघु वरण भव हरिभक्ति उत्तम जानिकै।
यहदशमवरण्यों मुदितमनसों स्वबश बुधिनिजआनिकै॥
दो० वेद नैन मयनंद धर संवत मारग मास।
शनितिथि हरिपूरण भयउ रुचिर ग्रंथअनयास॥

धन्य गुरू धनि श्यामपद रजनिजमस्तकलाय।
सुखद चरित बर्णनकस्यो दुबिधा दोष बहाय॥
जाके उर पुर ज्ञान बस जासु हृदय बुधि नैन।
ताहि त्यागि भगवान यश जग दूसररसहैन॥
जय जय राधारमण प्रभु जय गुरु देव दयाल।
जन्म जन्म मंगल चहतपदरज प्रीति बिशाल॥
जबलगि जग जीवत रहौं दुखरुज करै न पीर।
अंत लहौं निर्वाणपद नशै अखिल भवभीर॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांद्वारकाविहार बर्णनोनाम नवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इतिश्रीमद्भागवते दशमस्कन्धेसमाप्तं शुभमस्तु

कविप्रियामूल ॥

श्रीकेशवदासजी रचित जिसमें काव्यके सम्पूर्ण अंग विधि सहित बर्णन कियेगये हैं ॥

कविकुलकल्पतरु ॥

भूषण चिन्तामणिजी रचित—जिसमें अति रुचिर छन्दों में नायकाभेदकी परीबातें लिखी हैं

सीतारामविवाहसंग्रह ॥

रामप्रताप चित्रकारी श्रीस्वामी जयनगरनिवासी रचित इसमें सीता महारानी और रामचन्द्रजीके विवाहकी सम्पूर्ण कथा छंदोंमें वर्णितहै कागज सफ़ेद है ॥

द्वादशमहावाक्यप्रश्नावली ॥

जिसमें प्रत्येक देवता व महात्माओं के नामपर प्रश्नका क्रम बांध कर प्रत्येक प्रश्नोंका फलाफल चौपाई में दर्शायागया है अर्थात् जिस नामपर अंगुली रक्खे उसी अंककी चौपाईमें फलाफल देखलेवै ॥

रसिकप्रियासटीक ॥

इसमें उत्तमोत्तम रसिक पुरुषोंको परमप्रिय कवित्त और सवैया छन्द वर्णित हैं और महाराजा काशीनरेशजी की आज्ञानुसार सरदार कविने भाषामें टीकाभी किया है ॥

शंकरदिग्विजय ॥

जिसका उल्था स्वामीरामकृष्णजी भारती ने अनेक छन्दों में किया जिसमें श्रीपरब्रह्म शिवस्वरूप धर्मरक्षक शंकराचार्यजी महाराजके जीवन चरित्र और अनेक मतवादियों से शास्त्रार्थ करके दिग्विजयके इतिहासहैं ॥

विजयचंद्रिका ॥

सरही ग्रामनिवासि मंगलदासजी रचित-इसमें जैमिनिपुराणान्तर्गत श्रीरामचन्द्रजीके अश्वमेधकी कथा व श्रीजानकी परित्याग लवकुश आदि का घोरयुद्ध अतिमणीय मालती आदि अनेक छन्दों में वर्णित है ॥

सूरसागरजलीकलम ॥

सूरदासजी विरचित-जिसमें अत्यन्त ललित २५ हजारके अनुमान भजनहोंगे जिनसे सैकड़ों कृष्णावतारकी विस्तारपूर्वक लीला वर्णितहैं ॥

रागप्रकाश ॥

राजामाधवसिंह कृत-इसमें अच्छे २ कल्याण, खेमटा, ठुमरी और अद्धा आदिहैं और सब रागोंके प्रमाण भी हैं ॥

ख़यालातमातादीन ॥

लखनऊ निवासी लालामातादीन कायस्थकृत- जिसमें ब्रह्म ज्ञान के मार्गपर लावनी व ख्यालहैं ॥

नवरत्नभाष्य वृन्दावनविलास ॥

बाबू श्यामलाल रचित-जिसमें रासलीलाके सम्पूर्ण पद औ गाने के दोहे लिखेहुये हैं ॥

वीणाप्रकाश ॥

तर्जुमा कानूनसितार भाषा पं० प्यारेलालकृत-इसमें सितारे के ठाट, परदोंपर सीखने के लिये अंक, मिजराव वगैरहकी तरकीब भी और मीड़ोंके क़ायदे और अन्तमें सबराग और रागिनियांपद समेत लिखीहैं जिनसे गान विद्या में बहुतही जल्दी बोध होताहै ॥

आनन्दसागर ॥

मुंशीजगन्नाथसहाय संग्रहीत-इसमें अच्छे २ प्राचीन व वर्त्तमान समय के कवियोंके बनायेहुये उत्तम २ राग हैं ॥